



CA FOUNDATION • PAPER 1 • ACCOUNTING

विद्यार्थी नोट्स

विषय-दर-विषय • अक्टूबर 2026 संस्करण • हिन्दी



11 अध्याय • 33 इकाइयाँ • 228 विषय • 524 वर्गीकृत प्रश्न

ICAI Study Material 2026 July + Scanner Accounting 2026 October V1

यह पुस्तिका कैसे काम करती है

प्रत्येक विषय के लिए सबसे पहले “पहले पढ़ें” पंक्ति में बताए गए Study Material के अनुच्छेद पढ़िए। इसके बाद कौशल-स्तरों पर क्रम से उतरिए — प्रत्येक स्तर वह कौशल बताता है जो परीक्षक ने उस विषय पर वास्तव में माँगा है, और उसी स्तर पर अभ्यास के लिए Scanner के ठीक वही प्रश्न देता है।

विषय-सूची के बाद आने वाला खंड — **इन नोट्स का उपयोग कैसे करें** — प्रश्न-पंक्ति, ICAI की Manner of Assessment, और कौशल-मिश्रण आपकी तैयारी में क्या बदलेगा, यह समझाता है। आरम्भ करने से पहले उसे एक बार अवश्य पढ़िए।

विषय-सूची

इन नोट्स का उपयोग कैसे करें.....	8
विषय रैंकिंग — परीक्षा भारांक मार्गदर्शिका.....	11
अध्याय 1: सैद्धांतिक ढाँचा (महत्त्व: A).....	20
इकाई 1.1: लेखांकन का अर्थ एवं क्षेत्र (महत्त्व: B).....	20
विषय 1: परिचय — अवधारणा आधार.....	20
विषय 2: लेखांकन का अर्थ.....	21
विषय 3: सामाजिक विज्ञान के रूप में लेखांकन का विकास — अवधारणा आधार.....	21
विषय 4: लेखांकन के उद्देश्य — अवधारणा आधार.....	22
विषय 5: लेखांकन के कार्य.....	22
विषय 6: बहीखाता — अवधारणा आधार.....	23
विषय 7: बहीखाता और लेखांकन में अंतर.....	24
विषय 8: लेखांकन की उप-शाखाएँ.....	25
विषय 9: लेखांकन सूचना के उपयोगकर्ता.....	25
विषय 10: अन्य विषयों से लेखांकन का संबंध — अवधारणा आधार.....	26
विषय 11: लेखांकन की सीमाएँ.....	27
विषय 12: समाज में Accountant की भूमिका.....	28
इकाई 1.2: लेखांकन अवधारणाएँ, सिद्धांत एवं परंपराएँ (महत्त्व: A).....	28
विषय 1: अवधारणाएँ, सिद्धांत एवं परंपराएँ — एक अवलोकन.....	29
इकाई 1.3: पूंजीगत एवं राजस्व व्यय तथा प्राप्तियाँ (महत्त्व: C).....	31
विषय 1: परिचय — अवधारणा आधार.....	31
विषय 2: पूंजीगत और राजस्व व्यय निर्धारित करने के आधार.....	32
विषय 3: पूंजीगत व्यय और राजस्व व्यय.....	33
विषय 4: पूंजीगत प्राप्तियाँ और राजस्व प्राप्तियाँ.....	35
इकाई 1.4: आकस्मिक परिसंपत्तियाँ और आकस्मिक देयताएँ (महत्त्व: D).....	36
विषय 1: आकस्मिक परिसंपत्ति — अवधारणा आधार.....	36
विषय 2: आकस्मिक देयताएँ.....	37
विषय 3: देयताओं और आकस्मिक देयताओं में अंतर.....	39
विषय 4: आकस्मिक देयताओं और प्रावधानों में अंतर.....	39
इकाई 1.5: लेखांकन नीतियाँ (महत्त्व: D).....	41
विषय 1: लेखांकन नीतियों का अर्थ.....	41
विषय 2: लेखांकन नीतियों का चयन.....	42
विषय 3: लेखांकन नीतियों में परिवर्तन.....	43
इकाई 1.6: मापन-विषय के रूप में लेखांकन (महत्त्व: D).....	43
विषय 1: मापन का अर्थ — अवधारणा आधार.....	44
विषय 2: मापे जाने वाले Objects/Events — अवधारणा आधार.....	44
विषय 3: मापन का Standard/Scale — अवधारणा आधार.....	45
विषय 4: मापन-विषय का Dimension — अवधारणा आधार.....	45
विषय 5: मापन-विषय के रूप में लेखांकन — अवधारणा आधार.....	45
विषय 6: मूल्यांकन के सिद्धांत.....	46
विषय 7: मापन और मूल्यांकन — अवधारणा आधार.....	47
विषय 8: लेखांकन अनुमान — अवधारणा आधार.....	48
इकाई 1.7: लेखांकन मानक (महत्त्व: D).....	48
विषय 1: लेखांकन मानकों का परिचय — अवधारणा आधार.....	48
विषय 2: लेखांकन मानकों के उद्देश्य.....	49

विषय 3: लेखांकन मानकों के लाभ और सीमाएँ.....	50
विषय 4: भारत में लेखांकन मानकों के निर्माण की प्रक्रिया.....	51
विषय 5: भारत में लेखांकन मानकों की सूची — अवधारणा आधार.....	52
अध्याय 2: लेखांकन प्रक्रिया (महत्त्व: A).....	53
इकाई 2.1: मूल लेखांकन प्रक्रियाएँ - जर्नल प्रविष्टियाँ (Basic Accounting Procedures: Journal Entries) (महत्त्व: B).....	53
विषय 1: दोहरा लेखा प्रणाली (Double Entry System).....	53
विषय 2: दोहरा लेखा प्रणाली के लाभ.....	54
विषय 3: खाता (Account) — अवधारणा आधार.....	55
विषय 4: डेबिट और क्रेडिट (Debit and Credit) — अवधारणा आधार.....	55
विषय 5: लेन-देन (Transactions).....	56
विषय 6: लेखांकन समीकरण पद्धति.....	57
विषय 7: परंपरागत पद्धति (Traditional Approach).....	58
विषय 8: खातों का आधुनिक वर्गीकरण.....	59
विषय 9: जर्नल (Journal).....	60
विषय 10: जर्नल के लाभ.....	61
विषय 11: GST का लेखांकन.....	62
इकाई 2.2: खाता-बही (Ledgers) (महत्त्व: D).....	63
विषय 1: परिचय.....	63
विषय 2: खाता-बही खातों का प्रारूप — अवधारणा आधार.....	64
विषय 3: पोस्टिंग (Posting).....	65
विषय 4: खाते का संतुलन.....	66
इकाई 2.3: तलपट (Trial Balance) (महत्त्व: D).....	66
विषय 1: परिचय — अवधारणा आधार.....	67
विषय 2: तलपट तैयार करने के उद्देश्य.....	67
विषय 3: तलपट की सीमाएँ.....	68
विषय 4: तलपट तैयार करने की विधियाँ — अवधारणा आधार.....	69
विषय 5: उचित खाते द्वारा समायोजित तलपट.....	70
विषय 6: तलपट तैयार करने के नियम.....	70
इकाई 2.4: सहायक पुस्तकें (Subsidiary Books) (महत्त्व: A).....	72
विषय 1: परिचय.....	72
विषय 2: सहायक और प्रधान पुस्तकों में अंतर — अवधारणा आधार.....	73
विषय 3: क्रय बही (Purchases Book).....	74
विषय 4: विक्रय बही (Sales Book).....	75
विषय 5: विक्रय वापसी अथवा आवक वापसी बही.....	76
विषय 6: क्रय वापसी अथवा जावक वापसी बही.....	78
विषय 7: मुख्य जर्नल का महत्त्व (Journal Proper) — अवधारणा आधार.....	79
इकाई 2.5: रोकड़ बही (Cash Book) (महत्त्व: D).....	79
विषय 1: रोकड़ बही - सहायक और प्रधान दोनों पुस्तक.....	79
विषय 2: रोकड़ बही के प्रकार.....	80
विषय 3: रोकड़ बही प्रविष्टियों की पोस्टिंग — अवधारणा आधार.....	82
विषय 4: फुटकर रोकड़ बही (Petty Cash Book).....	82
विषय 5: Credit/Debit Card से बिक्री — अवधारणा आधार.....	84
इकाई 2.6: त्रुटियों का सुधार (Rectification of Errors) (महत्त्व: B).....	84
विषय 1: परिचय — अवधारणा आधार.....	84
विषय 2: त्रुटियों के चरण — अवधारणा आधार.....	85
विषय 3: त्रुटियों के प्रकार.....	85
विषय 4: त्रुटियाँ खोजने के चरण — अवधारणा आधार.....	87
विषय 5: त्रुटियों का सुधार.....	88

अध्याय 3: बैंक समाधान विवरण (Bank Reconciliation Statement) (महत्त्व: B).....	91
विषय 1: परिचय.....	91
विषय 2: पृष्ठभूमि — अवधारणा आधार.....	92
विषय 3: बैंक पास बुक (Bank Pass Book) — अवधारणा आधार.....	92
विषय 4: बैंक समाधान विवरण (Bank Reconciliation Statement - BRS).....	93
विषय 5: बैंक समाधान विवरण का महत्त्व.....	94
विषय 6: Cash Book Balance और Pass Book Balance के समाधान की प्रक्रिया — अवधारणा आधार.....	95
विषय 7: बैंक समाधान की विधियाँ (Methods of Bank Reconciliation).....	96
अध्याय 4: माल-सूची (Inventories) (महत्त्व: A).....	99
विषय 1: अर्थ (Meaning) — अवधारणा आधार.....	99
विषय 2: माल-सूची का मूल्यांकन (Inventory Valuation).....	100
विषय 3: माल-सूची मूल्यांकन का आधार (Basis of Inventory Valuation).....	101
विषय 4: माल-सूची अभिलेख प्रणालियाँ (Inventory Record Systems).....	102
विषय 5: माल-सूची की लागत निर्धारित करने के सूत्र/विधियाँ (Formulae/Methods to Determine Cost of Inventory).....	103
विषय 6: माल-सूची की गणना (Inventories Taking).....	105
अध्याय 5: मूल्यहास एवं परिशोधन (Depreciation and Amortisation) (महत्त्व: B).....	108
विषय 1: परिचय.....	108
विषय 2: मूल्यहास के मापन के कारक.....	109
विषय 3: मूल्यहास प्रदान करने की विधियाँ.....	111
विषय 4: Property, Plant and Equipment की बिक्री/निपटान पर लाभ या हानि.....	112
विषय 5: मूल्यहास की विधि में परिवर्तन.....	114
विषय 6: Property, Plant and Equipment की अनुमानित उपयोगी आयु में संशोधन.....	115
विषय 7: Property, Plant and Equipment का पुनर्मूल्यांकन.....	116
विषय 8: अमूर्त परिसंपत्तियाँ (Intangible Assets) — अवधारणा आधार.....	117
विषय 9: परिशोधन (Amortisation).....	118
अध्याय 6: विनिमय बिल एवं प्रतिज्ञा-पत्र (Bills of Exchange and Promissory Notes) (महत्त्व: C).....	120
विषय 1: विनिमय बिल (Bills of Exchange).....	120
विषय 2: प्रतिज्ञा-पत्र (Promissory Notes).....	121
विषय 3: विनिमय बिल और प्रतिज्ञा-पत्र में अंतर.....	122
विषय 4: विनिमय बिल एवं प्रतिज्ञा-पत्र का लेखा अभिलेखन.....	123
विषय 5: बिल की अवधि (Term of a Bill) — अवधारणा आधार.....	124
विषय 6: बिल की समाप्ति/देय तिथि (Expiry/Due Date) — अवधारणा आधार.....	124
विषय 7: अनुग्रह दिवस (Days of Grace).....	124
विषय 8: बिल की परिपक्वता तिथि (Date of Maturity) — अवधारणा आधार.....	125
विषय 9: दर्शनी बिल (Bill at Sight) — अवधारणा आधार.....	125
विषय 10: तिथि के बाद देय बिल (Bill after Date) — अवधारणा आधार.....	126
विषय 11: बिल की देय तिथि की गणना.....	126
विषय 12: नोटिंग शुल्क (Noting Charges).....	127
विषय 13: बिल का नवीनीकरण (Renewal of Bill).....	128
विषय 14: बिल की पूर्व-परिपक्वता भुगतान एवं छूट (Retirement & Rebate).....	129
विषय 15: दिवालियापन (Insolvency).....	130
विषय 16: सुविधा बिल (Accommodation Bills).....	132
विषय 17: वसूली हेतु भेजे गए बिल (Bills for Collection) — अवधारणा आधार.....	133
विषय 18: Bills Receivable और Bills Payable Books — अवधारणा आधार.....	133
विषय 19: समेकित प्रश्न (Integrated Problems).....	134
अध्याय 7: एकल स्वामियों के अंतिम खातों की तैयारी (महत्त्व: B).....	136
इकाई 7.1: गैर-विनिर्माण संस्थाओं के अंतिम खाते (महत्त्व: B).....	136
विषय 1: परिचय — अवधारणा आधार.....	136

विषय 2: अंतिम खातों की तैयारी — अवधारणा आधार.....	137
विषय 3: व्यापार खाता (Trading Account).....	137
विषय 4: लाभ एवं हानि खाता (Profit and Loss Account).....	139
विषय 5: कुछ समायोजन और उनका लेखांकन उपचार.....	140
विषय 6: तुलन-पत्र (Balance Sheet).....	142
विषय 7: लेखांकन प्रक्रिया का क्रम / लेखांकन चक्र — अवधारणा आधार.....	143
विषय 8: प्रारंभिक प्रविष्टि (Opening Entry) — अवधारणा आधार.....	144
विषय 9: प्रावधान और संचय (Provisions and Reserves) — अवधारणा आधार.....	144
विषय 10: वित्तीय विवरणों की सीमाएँ.....	145
विषय 11: समेकित प्रश्न (Integrated Problems).....	145
इकाई 7.2: विनिर्माण संस्थाओं के अंतिम खाते (महत्त्व: D).....	147
विषय 1: परिचय — अवधारणा आधार.....	147
विषय 2: उद्देश्य — अवधारणा आधार.....	147
विषय 3: विनिर्माण लागत (Manufacturing Costs).....	148
विषय 4: विनिर्माण खाते का प्रारूप (Design of Manufacturing Account).....	149
अध्याय 8: गैर-लाभकारी संगठनों के वित्तीय विवरण (महत्त्व: A).....	151
विषय 1: परिचय — अवधारणा आधार.....	151
विषय 2: प्राप्ति एवं भुगतान खाते की प्रकृति.....	151
विषय 3: आय एवं व्यय खाता.....	153
विषय 4: तुलन-पत्र (Balance Sheet).....	155
विषय 5: शैक्षणिक संस्था.....	158
अध्याय 9: अपूर्ण अभिलेखों से खाते (महत्त्व: C).....	160
विषय 1: परिचय.....	160
विषय 2: Single Entry System के प्रकार — अवधारणा आधार.....	161
विषय 3: पूंजी तुलना द्वारा लाभ का निर्धारण.....	161
विषय 4: पूर्ण लेखांकन सूचना प्राप्त करने की तकनीकें.....	163
अध्याय 10: साझेदारी एवं LLP खाते (महत्त्व: C).....	166
इकाई 10.1: साझेदारी खातों का परिचय (महत्त्व: D).....	166
विषय 1: परिचय: साझेदारी क्यों? — अवधारणा आधार.....	166
विषय 2: साझेदारी की परिभाषा एवं विशेषताएँ.....	166
विषय 3: सीमित दायित्व साझेदारी (LLP).....	167
विषय 4: साधारण साझेदारी फर्म और LLP में अंतर.....	169
विषय 5: साझेदारी विलेख (Partnership Deed) की मुख्य धाराएँ.....	170
विषय 6: साझेदारों की शक्तियाँ — अवधारणा आधार.....	172
विषय 7: साझेदारी फर्म के खाते (Accounts) — अवधारणा आधार.....	172
विषय 8: लाभ-हानि विनियोजन.....	173
विषय 9: स्थिर एवं परिवर्तनशील पूंजी.....	174
इकाई 10.2: साझेदारी खातों में ख्याति (Goodwill) का व्यवहार (महत्त्व: D).....	175
विषय 1: ख्याति (Goodwill).....	175
विषय 2: ख्याति के मूल्यांकन की विधियाँ.....	176
विषय 3: ख्याति के मूल्यांकन की आवश्यकता — अवधारणा आधार.....	178
विषय 4: साझेदार के प्रवेश पर ख्याति का मूल्यांकन — अवधारणा आधार.....	178
विषय 5: नए साझेदार के प्रवेश पर ख्याति (Goodwill) का लेखांकन व्यवहार — अवधारणा आधार.....	179
विषय 6: लाभ-विभाजन अनुपात में परिवर्तन पर ख्याति का लेखांकन व्यवहार — अवधारणा आधार.....	179
विषय 7: साझेदार की सेवानिवृत्ति अथवा मृत्यु पर ख्याति (Goodwill) का लेखांकन व्यवहार.....	180
इकाई 10.3: नए साझेदार का प्रवेश (महत्त्व: C).....	181
विषय 1: परिचय — नए साझेदार का प्रवेश — अवधारणा आधार.....	181
विषय 2: पुनर्मूल्यांकन खाता अथवा लाभ-हानि समायोजन खाता.....	181

विषय 3: तुलन-पत्र में आरक्षित निधियाँ.....	183
विषय 4: नए लाभ-विभाजन अनुपात की गणना — अवधारणा आधार.....	185
विषय 5: अप्रत्यक्ष ख्याति (Hidden Goodwill).....	185
इकाई 10.4: साझेदार की सेवानिवृत्ति (महत्त्व: D).....	186
विषय 1: परिचय — साझेदार की सेवानिवृत्ति — अवधारणा आधार.....	187
विषय 2: लाभ-प्राप्ति अनुपात (Gaining Ratio) की गणना.....	187
विषय 3: साझेदार की सेवानिवृत्ति पर परिसंपत्तियों एवं देयताओं का पुनर्मूल्यांकन — अवधारणा आधार.....	188
विषय 4: संचय (Reserves) — अवधारणा आधार.....	189
विषय 5: सेवानिवृत्त साझेदार को अंतिम भुगतान — अवधारणा आधार.....	189
विषय 6: साझेदार के ऋण का किस्तों में भुगतान — अवधारणा आधार.....	190
विषय 7: संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी (Joint Life Policy).....	190
विषय 8: पृथक जीवन बीमा पॉलिसी.....	191
विषय 9: समेकित प्रश्न.....	192
इकाई 10.5: साझेदार की मृत्यु (महत्त्व: D).....	194
विषय 1: परिचय — साझेदार की मृत्यु.....	194
विषय 2: कुछ मामलों में निवर्तमान साझेदार का बाद के लाभ में हिस्सा पाने का अधिकार — अवधारणा आधार.....	195
विषय 3: मृत साझेदार के वैधानिक प्रतिनिधियों को देय राशि — अवधारणा आधार.....	195
विषय 4: मृत्यु की दशा में विशेष लेन-देन: संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी (Joint Life Policy).....	196
विषय 5: मृत्यु की दशा में विशेष लेन-देन: पृथक जीवन बीमा पॉलिसी.....	197
विषय 6: मृत्यु की दशा में विशेष लेन-देन: मृत साझेदार के हिस्से का भुगतान.....	198
विषय 7: समेकित प्रश्न.....	199
इकाई 10.6: साझेदारी फर्मों एवं LLP का विघटन (महत्त्व: D).....	201
विषय 1: परिचय — साझेदारी फर्म एवं LLP का विघटन — अवधारणा आधार.....	201
विषय 2: साझेदारी के विघटन की परिस्थितियाँ — अवधारणा आधार.....	201
विषय 3: विघटन के परिणाम.....	202
विषय 4: विघटन पर साझेदारी की पुस्तकों का समापन.....	203
विषय 5: साझेदार की दिवालियापन के परिणाम — अवधारणा आधार.....	204
विषय 6: साझेदार की दिवालियापन से उत्पन्न हानि.....	205
विषय 7: क्रमिक भुगतान (Piecemeal Payments).....	207
विषय 8: सीमित दायित्व साझेदारी (LLP) का समापन.....	208
विषय 9: समेकित प्रश्न.....	209
अध्याय 11: कंपनी खाते (महत्त्व: A).....	211
इकाई 11.1: कंपनी खातों का परिचय (महत्त्व: D).....	211
विषय 1: परिचय.....	211
विषय 2: कंपनी का अर्थ — अवधारणा आधार.....	212
विषय 3: कंपनी की प्रमुख विशेषताएँ — अवधारणा आधार.....	213
विषय 4: कंपनियों के प्रकार.....	213
विषय 5: लेखा-पुस्तकों का रख-रखाव — अवधारणा आधार.....	214
विषय 6: वित्तीय विवरणों की तैयारी — अवधारणा आधार.....	215
इकाई 11.2: अंशों का निर्गम, जब्ती और पुनर्निर्गम (महत्त्व: A).....	215
विषय 1: परिचय — अवधारणा आधार.....	216
विषय 2: अंश पूंजी (Share Capital).....	216
विषय 3: अंशों के प्रकार.....	217
विषय 4: नकद के लिए अंशों का निर्गम.....	218
विषय 5: अंशों की सदस्यता — अवधारणा आधार.....	219
विषय 6: छूट पर अंशों का निर्गम.....	220
विषय 7: प्रीमियम पर अंशों का निर्गम.....	220
विषय 8: अधिक सदस्यता और आनुपातिक आवंटन.....	221

विषय 9: बकाया कॉल और अग्रिम कॉल.....	222
विषय 10: बकाया कॉल और अग्रिम कॉल पर ब्याज.....	223
विषय 11: अंशों की जब्ती (Forfeiture).....	224
विषय 12: जब्त अंशों का पुनर्निर्गम.....	226
विषय 13: नकद के अतिरिक्त प्रतिफल के लिए अंशों का निर्गम — अवधारणा आधार.....	227
इकाई 11.3: डिबेंचरों का निर्गम (महत्त्व: D).....	228
विषय 1: परिचय — अवधारणा आधार.....	228
विषय 2: अर्थ.....	228
विषय 3: डिबेंचरों की विशेषताएँ.....	230
विषय 4: डिबेंचर और अंशों में अंतर — अवधारणा आधार.....	230
विषय 5: डिबेंचरों के प्रकार.....	231
विषय 6: डिबेंचरों का निर्गम.....	232
विषय 7: सहायक प्रतिभूति के रूप में डिबेंचरों का निर्गम.....	233
विषय 8: नकद के अतिरिक्त प्रतिफल के लिए डिबेंचरों का निर्गम.....	234
विषय 9: डिबेंचर निर्गम पर छूट/हानि का उपचार.....	235
विषय 10: डिबेंचरों पर ब्याज.....	236
इकाई 11.4: बोनस निर्गम और अधिकार निर्गम का लेखांकन (महत्त्व: D).....	237
विषय 1: बोनस अंशों का निर्गम.....	237
विषय 2: अधिकार निर्गम (Right Issue).....	239
इकाई 11.5: अधिमान अंशों का मोचन (महत्त्व: D).....	241
विषय 1: परिचय — अवधारणा आधार.....	241
विषय 2: प्रतिदेय अधिमान अंश जारी करने का उद्देश्य — अवधारणा आधार.....	241
विषय 3: Companies Act के प्रावधान - Section 55 — अवधारणा आधार.....	242
विषय 4: पूर्ण भुगतान किए गए अंशों के मोचन की विधियाँ.....	242
विषय 5: अवितरित लाभों के पूंजीकरण द्वारा अधिमान अंशों का मोचन.....	244
विषय 6: आंशिक रूप से माँगे गए अधिमान अंशों का मोचन — अवधारणा आधार.....	246
विषय 7: पूर्णतः माँगे गए किंतु आंशिक भुगतान वाले अधिमान अंशों का मोचन — अवधारणा आधार.....	246
इकाई 11.6: डिबेंचरों का मोचन (महत्त्व: D).....	247
विषय 1: परिचय — अवधारणा आधार.....	247
विषय 2: डिबेंचरों का मोचन — अवधारणा आधार.....	247
विषय 3: डिबेंचर मोचन आरक्षित निधि.....	248
विषय 4: डिबेंचरों के मोचन की विधियाँ.....	248

शुरू करने से पहले

इन नोट्स का उपयोग कैसे करें

Scanner का प्रत्येक प्रश्न पढ़ा और वर्गीकृत किया गया है — **इस पेपर में 524 प्रश्न** — उसी कौशल-ढाँचे पर जिसे ICAI स्वयं प्रकाशित करता है। ये नोट्स syllabus के क्रम पर नहीं, इसी वर्गीकरण पर बने हैं। इस पृष्ठ पर दिए गए दस मिनट पूरी पुस्तक के उपयोग का तरीका बदल देंगे।

1. एक विषय का ढाँचा

इसे इस प्रकार पढ़िए	
पहले पढ़ें	Study Material के ठीक वही अनुच्छेद जिन पर विषय टिका है। नोट्स पढ़ने से पहले Study Material खोलकर उन्हें पढ़िए — नोट्स यही मानकर लिखे गए हैं।
नोट्स	विषय वास्तव में जिस बात पर टिकता है — coverage के लिए नहीं, परीक्षा के लिए लिखा गया। संक्षिप्त, और परीक्षा से एक रात पहले दोबारा पढ़ने योग्य।
कौशल-स्तर	प्रत्येक स्तर वह कौशल है जो परीक्षक ने उस विषय पर वास्तव में माँगा है; साथ में कुछ पंक्तियों का मार्गदर्शन और अभ्यास के लिए Scanner के ठीक वही प्रश्न। स्तरों को छपे हुए क्रम में ही पढ़िए — ये कम माँग वाले कौशल से अधिक माँग वाले कौशल की ओर बढ़ते हैं।
अवधारणा आधार	वह विषय जहाँ तक परीक्षक अभी पहुँचा नहीं है। यह वैकल्पिक नहीं है — केवल अभी तक पूछा नहीं गया है, और परीक्षा-योग्य है। इस पेपर में ऐसे 84 विषय हैं।

2. प्रश्न-पंक्ति कैसे पढ़ें

PQ 5.24 • PYQ 2026-Sep [2] (b) • 10M • Pg 173		LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
पंक्ति का अंश	वह आपको क्या बताता है		
PQ 5.24	Scanner का अपना प्रश्न-क्रमांक। PQ व्यावहारिक प्रश्न, TQ सैद्धान्तिक प्रश्न।		
PYQ 2026-Sep [2] (b)	कहाँ पूछा गया — PYQ विगत परीक्षा, MTP mock test paper, RTP revision test paper — फिर वह sitting, और उस पेपर में उसका क्रमांक।		
{C}	Case-scenario प्रश्न।		
DESC • TF • SN • DB	सैद्धान्तिक प्रश्न का प्रकार: वर्णनात्मक, सत्य/असत्य, संक्षिप्त टिप्पणी, अन्तर बताइए। व्यावहारिक प्रश्नों पर ऐसा कोई tag नहीं होता।		
10M	अंक, जैसे Scanner में छपे हैं। जहाँ स्रोत अंक नहीं छापता वहाँ रिक्त — RTP प्रायः नहीं छापते।		

पंक्ति का अंश	वह आपको क्या बताता है
Pg 173	Scanner का वह पृष्ठ जहाँ प्रश्न और उसका उत्तर छपा है।
LEVEL II अनुप्रयोग	ICAI का कौशल-स्तर, और उसके भीतर का कौशल। खंड 3 इन्हें समझाता है।
8× पूछा गया	वही प्रश्न विगत परीक्षाओं, mock tests और revision tests में इतनी बार पूछा जा चुका है। इन्हें सर्वोच्च प्राथमिकता दीजिए।
कठिन	प्रश्न कितना माँग वाला है — उसके अंकों और उसमें पूछी गई अलग-अलग बातों की संख्या के आधार पर।

3. आकलन की रीति — प्रत्येक कौशल आपसे क्या माँगता है

ICAI एक **Skill Assessment Specification Grid** प्रकाशित करता है। उसमें तीन कौशल-स्तर दिए गए हैं, और **Manner of Assessment of Skills** स्तम्भ में प्रत्येक स्तर को दो अलग-अलग कौशलों के रूप में वर्णित किया गया है। वही छह कौशल इस पुस्तक में चलने वाले बैंड-शीर्षक हैं।

कौशल	स्तर	परीक्षक आपसे क्या कराना चाहता है	ध्यान देने योग्य directive verbs
स्मरण (Remembering)	Level I	जो सीखा है उसे उसी रूप में प्रस्तुत कीजिए।	Define · List · State · Name · Enumerate · Recognise
समझ (Understanding)	Level I	उसे समझाइए और सन्दर्भ में रखिए — यह दिखाइए कि नियम जैसा है वैसा क्यों है, यह आपने समझा है।	Describe · Explain · Distinguish · Identify · Illustrate · Outline
अनुप्रयोग (Application)	Level II	ज्ञान, अवधारणा अथवा तकनीक का प्रयोग कीजिए अथवा उसे दिखाइए। प्रश्न हल कीजिए।	Apply · Calculate · Determine · Prepare · Reconcile · Record · Perform · Use · Conduct · Demonstrate
विश्लेषण (Analysis)	Level II	मूल कारण पहचानने के लिए अलग-अलग क्षेत्रों के पारस्परिक सम्बन्ध जाँचिए और निर्णय का समर्थन करने वाला प्रमाण खोजिए।	Analyse · Discuss · Compare and Contrast · Examine · Develop · Monitor · Prioritise · Align · Communicate
मूल्यांकन (Evaluation)	Level III	समस्या का आकलन कीजिए और विवेक से निष्कर्ष तक पहुँचिए।	Advise · Evaluate · Recommend · Review · Select · Assess
संश्लेषण (Synthesis)	Level III	आँकड़ों और सूचनाओं को जोड़िए, प्रासंगिक तथ्यों को अप्रासंगिक से अलग करते हुए।	संश्लेषण के लिए ICAI कोई verb नहीं देता।

ICAI **Application** और **Analysis** के verbs दो अलग सूचियों में छापता है, इसलिए वह विभाजन स्वयं Institute का है। Level I और Level III के लिए वह एक-एक संयुक्त सूची छापता है — अतः **स्मरण और समझ** के बीच तथा **मूल्यांकन और संश्लेषण** के बीच की रेखा verbs की प्रकाशित सूची पर नहीं, ICAI के Manner of Assessment के वर्णन पर

आधारित है।

CA Foundation का आकलन केवल Level I और Level II पर होता है — Prospectus इस पाठ्यक्रम के लिए Level III स्तम्भ नहीं छापता, इसीलिए ऊपर की अन्तिम दो पंक्तियाँ धूसर हैं। मूल्यांकन और संश्लेषण Final से आरम्भ होते हैं।

4. कौशल-मिश्रण आपकी तैयारी में क्या बदलेगा

ICAI इस पेपर को अंकों के आधार पर **Level I 5-20%** और **Level II 80-95%** श्रेणीबद्ध करता है। इससे दो बातें निकलती हैं, जिन्हें चूक जाना आसान है।

- **पढ़ लेना तैयारी नहीं है।** पाँच में से चार अंक प्रश्न हल करने के लिए हैं, उसका वर्णन करने के लिए नहीं। जिस विषय को आप समझा तो सकते हैं पर कभी हल नहीं किया, वह विषय तैयार नहीं है।
- **पेपर का सन्तुलन प्रत्येक अध्याय का सन्तुलन नहीं है।** प्रत्येक अध्याय अपने ICAI कौशल प्रोफ़ाइल पैनेल से आरम्भ होता है, जो बताता है कि उस अध्याय के अंक वास्तव में कैसे बँटे हैं और उसकी तैयारी के लिए इसका क्या अर्थ है। कुछ अध्याय लगभग पूरे सैद्धान्तिक हैं; कुछ में सिद्धान्त नाममात्र है। अध्याय आरम्भ करने से पहले वह पैनेल पढ़िए।

5. पुस्तक के आरम्भ में दो मार्गदर्शिकाएँ

यह किसलिए है	
विषय रैंकिंग	वर्गीकृत Scanner प्रश्नों में अपने हिस्से के आधार पर प्रत्येक परीक्षित विषय की रैंकिंग, और संचयी coverage पर A, B अथवा C श्रेणी। श्रेणी A कुल प्रश्नों के पहले 60% को समेटती है — पहले उन्हें पूर्ण अधिकार तक तैयार कीजिए।
महत्त्व ग्रेड	विषय-सूची में प्रत्येक अध्याय और इकाई के सामने छपा A-D ग्रेड। यह ICAI का syllabus भारांक संकेत है जैसा Scanner उसे प्रकाशित करता है, और प्रश्न-आवृत्ति की रैंकिंग से अलग है। जहाँ दोनों असहमत हों, वहाँ दोनों में से ऊँचे मानक पर तैयारी कीजिए।

अध्ययन प्राथमिकता मार्गदर्शिका

विषय रैंकिंग — परीक्षा भारांक

पहले पढ़ें: इस पुस्तिका का प्रत्येक वह विषय जिसे परीक्षक ने वास्तव में पूछा है, नीचे 524 वर्गीकृत Scanner प्रश्नों में अपने हिस्से के आधार पर — सभी 33 इकाइयों को मिलाकर — रैंक किया गया है, और संचयी coverage पर A, B अथवा C श्रेणी दी गई है। **श्रेणी A (रैंक 1-30)** सभी वर्गीकृत प्रश्नों के पहले 60% को समेटती है। **श्रेणी B (रैंक 31-52)** अगले लगभग 15% जोड़ती है, जिससे coverage लगभग 75% हो जाता है। **श्रेणी C** शेष 25% है: एक लम्बी पूँछ, जिससे अंक निकालना धीमा है और जिसका बहुत-सा भाग A और B की तैयारी करते समय स्वतः तैयार हो जाता है। **पृष्ठ** स्तम्भ बताता है कि उस विषय के नोट्स किस पृष्ठ पर आरम्भ होते हैं।

#	श्रेणी	अध्याय	विषय	हिस्सा	संचयी	पृष्ठ
1	A	लेखांकन प्रक्रिया	त्रुटियों का सुधार	5.0%	5.0%	88
2	A	सैद्धांतिक ढाँचा	अवधारणाएँ, सिद्धांत एवं परंपराएँ — एक अवलोकन	4.8%	9.7%	29
3	A	बैंक समाधान विवरण (Bank Reconciliation Statement)	बैंक समाधान की विधियाँ (Methods of Bank Reconciliation)	4.6%	14.3%	96
4	A	गैर-लाभकारी संगठनों के वित्तीय विवरण	तुलन-पत्र (Balance Sheet)	3.8%	18.1%	155
5	A	अपूर्ण अभिलेखों से खाते	पूर्ण लेखांकन सूचना प्राप्त करने की तकनीकें	3.6%	21.8%	163
6	A	मूल्यह्रास एवं परिशोधन (Depreciation and Amortisation)	Property, Plant and Equipment की बिक्री/निपटान पर लाभ या हानि	2.9%	24.6%	112
7	A	सैद्धांतिक ढाँचा	पूँजीगत व्यय और राजस्व व्यय	2.5%	27.1%	33
8	A	कंपनी खाते	जब्त अंशों का पुनर्निर्गम	2.3%	29.4%	226
9	A	कंपनी खाते	पूर्ण भुगतान किए गए अंशों के मोचन की विधियाँ	2.3%	31.7%	242
10	A	माल-सूची (Inventories)	माल-सूची की गणना (Inventories Taking)	2.1%	33.8%	105
11	A	गैर-लाभकारी संगठनों के वित्तीय विवरण	आय एवं व्यय खाता	2.1%	35.9%	153

#	श्रेणी	अध्याय	विषय	हिस्सा	संचयी	पृष्ठ
12	A	एकल स्वामियों के अंतिम खातों की तैयारी	समेकित प्रश्न (Integrated Problems)	1.9%	37.8%	145
13	A	सैद्धांतिक ढाँचा	पूँजीगत प्राप्तिyaँ और राजस्व प्राप्तिyaँ	1.5%	39.3%	35
14	A	लेखांकन प्रक्रिया	त्रुटियों के प्रकार	1.5%	40.8%	85
15	A	साझेदारी एवं LLP खाते	पुनर्मूल्यांकन खाता अथवा लाभ-हानि समायोजन खाता	1.5%	42.4%	181
16	A	साझेदारी एवं LLP खाते	समेकित प्रश्न	1.5%	43.9%	192
17	A	साझेदारी एवं LLP खाते	समेकित प्रश्न	1.5%	45.4%	199
18	A	मूल्यह्रास एवं परिशोधन (Depreciation and Amortisation)	मूल्यह्रास प्रदान करने की विधियाँ	1.3%	46.8%	111
19	A	मूल्यह्रास एवं परिशोधन (Depreciation and Amortisation)	मूल्यह्रास की विधि में परिवर्तन	1.3%	48.1%	114
20	A	कंपनी खाते	बोनस अंशों का निर्गम	1.3%	49.4%	237
21	A	लेखांकन प्रक्रिया	जर्नल (Journal)	1.1%	50.6%	60
22	A	लेखांकन प्रक्रिया	विक्रय बही (Sales Book)	1.1%	51.7%	75
23	A	एकल स्वामियों के अंतिम खातों की तैयारी	विनिर्माण खाते का प्रारूप (Design of Manufacturing Account)	1.1%	52.9%	149
24	A	साझेदारी एवं LLP खाते	ख्याति के मूल्यांकन की विधियाँ	1.1%	54.0%	176
25	A	साझेदारी एवं LLP खाते	साझेदार की दिवालियापन से उत्पन्न हानि	1.1%	55.2%	205
26	A	लेखांकन प्रक्रिया	रोकड़ बही के प्रकार	1.0%	56.1%	80
27	A	माल-सूची (Inventories)	माल-सूची मूल्यांकन का आधार (Basis of Inventory Valuation)	1.0%	57.1%	101
28	A	विनिमय बिल एवं प्रतिज्ञा-पत्र (Bills of Exchange and Promissory Notes)	दिवालियापन (Insolvency)	1.0%	58.0%	130
29	A	साझेदारी एवं LLP खाते	साझेदारी विलेख (Partnership Deed) की मुख्य धाराएँ	1.0%	59.0%	170

#	श्रेणी	अध्याय	विषय	हिस्सा	संचयी	पृष्ठ
30	A	साझेदारी एवं LLP खाते	क्रमिक भुगतान (Piecemeal Payments)	1.0%	59.9%	207
31	B	कंपनी खाते	डिबेंचरों के मोचन की विधियाँ	1.0%	60.9%	248
32	B	लेखांकन प्रक्रिया	GST का लेखांकन	0.8%	61.6%	62
33	B	माल-सूची (Inventories)	माल-सूची की लागत निर्धारित करने के सूत्र/विधियाँ (Formulae/Methods to Determine Cost of Inventory)	0.8%	62.4%	103
34	B	मूल्यह्रास एवं परिशोधन (Depreciation and Amortisation)	परिचय	0.8%	63.2%	108
35	B	एकल स्वामियों के अंतिम खातों की तैयारी	लाभ एवं हानि खाता (Profit and Loss Account)	0.8%	63.9%	139
36	B	एकल स्वामियों के अंतिम खातों की तैयारी	कुछ समायोजन और उनका लेखांकन उपचार	0.8%	64.7%	140
37	B	एकल स्वामियों के अंतिम खातों की तैयारी	तुलन-पत्र (Balance Sheet)	0.8%	65.5%	142
38	B	गैर-लाभकारी संगठनों के वित्तीय विवरण	प्राप्ति एवं भुगतान खाते की प्रकृति	0.8%	66.2%	151
39	B	साझेदारी एवं LLP खाते	सीमित दायित्व साझेदारी (LLP)	0.8%	67.0%	167
40	B	साझेदारी एवं LLP खाते	स्थिर एवं परिवर्तनशील पूंजी	0.8%	67.7%	174
41	B	साझेदारी एवं LLP खाते	तुलन-पत्र में आरक्षित निधियाँ	0.8%	68.5%	183
42	B	सैद्धांतिक ढाँचा	आकस्मिक देयताओं और प्रावधानों में अंतर	0.6%	69.1%	39
43	B	सैद्धांतिक ढाँचा	लेखांकन नीतियों में परिवर्तन	0.6%	69.7%	43
44	B	सैद्धांतिक ढाँचा	लेखांकन मानकों के लाभ और सीमाएँ	0.6%	70.2%	50
45	B	लेखांकन प्रक्रिया	दोहरा लेखा प्रणाली के लाभ	0.6%	70.8%	54
46	B	लेखांकन प्रक्रिया	तलपट तैयार करने के नियम	0.6%	71.4%	70
47	B	लेखांकन प्रक्रिया	परिचय	0.6%	71.9%	72
48	B	लेखांकन प्रक्रिया	क्रय बही (Purchases Book)	0.6%	72.5%	74

#	श्रेणी	अध्याय	विषय	हिस्सा	संचयी	पृष्ठ
49	B	लेखांकन प्रक्रिया	विक्रय वापसी अथवा आवक वापसी बही	0.6%	73.1%	76
50	B	लेखांकन प्रक्रिया	क्रय वापसी अथवा जावक वापसी बही	0.6%	73.7%	78
51	B	मूल्यहास एवं परिशोधन (Depreciation and Amortisation)	Property, Plant and Equipment का पुनर्मूल्यांकन	0.6%	74.2%	116
52	B	विनिमय बिल एवं प्रतिज्ञा-पत्र (Bills of Exchange and Promissory Notes)	बिल का नवीनीकरण (Renewal of Bill)	0.6%	74.8%	128
53	C	विनिमय बिल एवं प्रतिज्ञा-पत्र (Bills of Exchange and Promissory Notes)	सुविधा बिल (Accommodation Bills)	0.6%	75.4%	132
54	C	अपूर्ण अभिलेखों से खाते	पूंजी तुलना द्वारा लाभ का निर्धारण	0.6%	76.0%	161
55	C	साझेदारी एवं LLP खाते	लाभ-हानि विनियोजन	0.6%	76.5%	173
56	C	कंपनी खाते	बकाया कॉल और अग्रिम कॉल	0.6%	77.1%	222
57	C	कंपनी खाते	अंशों की जब्ती (Forfeiture)	0.6%	77.7%	224
58	C	कंपनी खाते	डिबेंचरों का निर्गम	0.6%	78.2%	232
59	C	कंपनी खाते	डिबेंचर निर्गम पर छूट/हानि का उपचार	0.6%	78.8%	235
60	C	कंपनी खाते	डिबेंचरों पर ब्याज	0.6%	79.4%	236
61	C	सैद्धांतिक ढाँचा	बहीखाता और लेखांकन में अंतर	0.4%	79.8%	24
62	C	सैद्धांतिक ढाँचा	लेखांकन की सीमाएँ	0.4%	80.2%	27
63	C	सैद्धांतिक ढाँचा	आकस्मिक देयताएँ	0.4%	80.5%	37
64	C	लेखांकन प्रक्रिया	लेखांकन समीकरण पद्धति	0.4%	80.9%	57
65	C	लेखांकन प्रक्रिया	पोस्टिंग (Posting)	0.4%	81.3%	65
66	C	लेखांकन प्रक्रिया	तलपट तैयार करने के उद्देश्य	0.4%	81.7%	67
67	C	लेखांकन प्रक्रिया	रोकड़ बही - सहायक और प्रधान दोनों पुस्तक	0.4%	82.1%	79
68	C	लेखांकन प्रक्रिया	फुटकर रोकड़ बही (Petty Cash	0.4%	82.4%	82

#	श्रेणी	अध्याय	विषय	हिस्सा	संचयी	पृष्ठ
			Book)			
69	C	बैंक समाधान विवरण (Bank Reconciliation Statement)	बैंक समाधान विवरण (Bank Reconciliation Statement - BRS)	0.4%	82.8%	93
70	C	बैंक समाधान विवरण (Bank Reconciliation Statement)	बैंक समाधान विवरण का महत्त्व	0.4%	83.2%	94
71	C	माल-सूची (Inventories)	माल-सूची अभिलेख प्रणालियाँ (Inventory Record Systems)	0.4%	83.6%	102
72	C	मूल्यह्रास एवं परिशोधन (Depreciation and Amortisation)	मूल्यह्रास के मापन के कारक	0.4%	84.0%	109
73	C	विनिमय बिल एवं प्रतिज्ञा-पत्र (Bills of Exchange and Promissory Notes)	विनिमय बिल और प्रतिज्ञा-पत्र में अंतर	0.4%	84.4%	122
74	C	विनिमय बिल एवं प्रतिज्ञा-पत्र (Bills of Exchange and Promissory Notes)	बिल की देय तिथि की गणना	0.4%	84.7%	126
75	C	विनिमय बिल एवं प्रतिज्ञा-पत्र (Bills of Exchange and Promissory Notes)	नोटिंग शुल्क (Noting Charges)	0.4%	85.1%	127
76	C	विनिमय बिल एवं प्रतिज्ञा-पत्र (Bills of Exchange and Promissory Notes)	बिल की पूर्व-परिपक्वता भुगतान एवं छूट (Retirement & Rebate)	0.4%	85.5%	129
77	C	एकल स्वामियों के अंतिम खातों की तैयारी	व्यापार खाता (Trading Account)	0.4%	85.9%	137
78	C	साझेदारी एवं LLP खाते	साझेदारी की परिभाषा एवं विशेषताएँ	0.4%	86.3%	166
79	C	साझेदारी एवं LLP खाते	ख्याति (Goodwill)	0.4%	86.6%	175
80	C	साझेदारी एवं LLP खाते	अप्रत्यक्ष ख्याति (Hidden Goodwill)	0.4%	87.0%	185
81	C	साझेदारी एवं LLP खाते	विघटन पर साझेदारी की पुस्तकों का समापन	0.4%	87.4%	203
82	C	साझेदारी एवं LLP खाते	सीमित दायित्व साझेदारी (LLP) का समापन	0.4%	87.8%	208

#	श्रेणी	अध्याय	विषय	हिस्सा	संचयी	पृष्ठ
83	C	साझेदारी एवं LLP खाते	समेकित प्रश्न	0.4%	88.2%	209
84	C	कंपनी खाते	नकद के लिए अंशों का निर्गम	0.4%	88.5%	218
85	C	कंपनी खाते	छूट पर अंशों का निर्गम	0.4%	88.9%	220
86	C	कंपनी खाते	बकाया कॉल और अग्रिम कॉल पर ब्याज	0.4%	89.3%	223
87	C	कंपनी खाते	नकद के अतिरिक्त प्रतिफल के लिए डिबेंचरों का निर्गम	0.4%	89.7%	234
88	C	कंपनी खाते	अधिकार निर्गम (Right Issue)	0.4%	90.1%	239
89	C	कंपनी खाते	अवितरित लाभों के पूंजीकरण द्वारा अधिमान अंशों का मोचन	0.4%	90.5%	244
90	C	सैद्धांतिक ढाँचा	लेखांकन के कार्य	0.2%	90.6%	22
91	C	सैद्धांतिक ढाँचा	लेखांकन की उप-शाखाएँ	0.2%	90.8%	25
92	C	सैद्धांतिक ढाँचा	लेखांकन सूचना के उपयोगकर्ता	0.2%	91.0%	25
93	C	सैद्धांतिक ढाँचा	समाज में Accountant की भूमिका	0.2%	91.2%	28
94	C	सैद्धांतिक ढाँचा	पूँजीगत और राजस्व व्यय निर्धारित करने के आधार	0.2%	91.4%	32
95	C	सैद्धांतिक ढाँचा	देयताओं और आकस्मिक देयताओं में अंतर	0.2%	91.6%	39
96	C	सैद्धांतिक ढाँचा	लेखांकन नीतियों का अर्थ	0.2%	91.8%	41
97	C	सैद्धांतिक ढाँचा	लेखांकन नीतियों का चयन	0.2%	92.0%	42
98	C	सैद्धांतिक ढाँचा	मूल्यांकन के सिद्धांत	0.2%	92.2%	46
99	C	सैद्धांतिक ढाँचा	लेखांकन मानकों के उद्देश्य	0.2%	92.4%	49
100	C	सैद्धांतिक ढाँचा	भारत में लेखांकन मानकों के निर्माण की प्रक्रिया	0.2%	92.6%	51
101	C	लेखांकन प्रक्रिया	दोहरा लेखा प्रणाली (Double Entry System)	0.2%	92.7%	53
102	C	लेखांकन प्रक्रिया	लेन-देन (Transactions)	0.2%	92.9%	56
103	C	लेखांकन प्रक्रिया	खातों का आधुनिक वर्गीकरण	0.2%	93.1%	59

#	श्रेणी	अध्याय	विषय	हिस्सा	संचयी	पृष्ठ
104	C	लेखांकन प्रक्रिया	जर्नल के लाभ	0.2%	93.3%	61
105	C	लेखांकन प्रक्रिया	परिचय	0.2%	93.5%	63
106	C	लेखांकन प्रक्रिया	खाते का संतुलन	0.2%	93.7%	66
107	C	लेखांकन प्रक्रिया	तलपट की सीमाएँ	0.2%	93.9%	68
108	C	बैंक समाधान विवरण (Bank Reconciliation Statement)	परिचय	0.2%	94.1%	91
109	C	माल-सूची (Inventories)	माल-सूची का मूल्यांकन (Inventory Valuation)	0.2%	94.3%	100
110	C	मूल्यहास एवं परिशोधन (Depreciation and Amortisation)	Property, Plant and Equipment की अनुमानित उपयोगी आयु में संशोधन	0.2%	94.5%	115
111	C	मूल्यहास एवं परिशोधन (Depreciation and Amortisation)	परिशोधन (Amortisation)	0.2%	94.7%	118
112	C	विनिमय बिल एवं प्रतिज्ञा-पत्र (Bills of Exchange and Promissory Notes)	विनिमय बिल (Bills of Exchange)	0.2%	94.8%	120
113	C	विनिमय बिल एवं प्रतिज्ञा-पत्र (Bills of Exchange and Promissory Notes)	प्रतिज्ञा-पत्र (Promissory Notes)	0.2%	95.0%	121
114	C	विनिमय बिल एवं प्रतिज्ञा-पत्र (Bills of Exchange and Promissory Notes)	अनुग्रह दिवस (Days of Grace)	0.2%	95.2%	124
115	C	विनिमय बिल एवं प्रतिज्ञा-पत्र (Bills of Exchange and Promissory Notes)	समेकित प्रश्न (Integrated Problems)	0.2%	95.4%	134
116	C	एकल स्वामियों के अंतिम खातों की तैयारी	वित्तीय विवरणों की सीमाएँ	0.2%	95.6%	145
117	C	एकल स्वामियों के अंतिम खातों की तैयारी	विनिर्माण लागत (Manufacturing Costs)	0.2%	95.8%	148
118	C	गैर-लाभकारी संगठनों के वित्तीय विवरण	शैक्षणिक संस्था	0.2%	96.0%	158

#	श्रेणी	अध्याय	विषय	हिस्सा	संचयी	पृष्ठ
119	C	अपूर्ण अभिलेखों से खाते	परिचय	0.2%	96.2%	160
120	C	साझेदारी एवं LLP खाते	साधारण साझेदारी फर्म और LLP में अंतर	0.2%	96.4%	169
121	C	साझेदारी एवं LLP खाते	साझेदार की सेवानिवृत्ति अथवा मृत्यु पर ख्याति (Goodwill) का लेखांकन व्यवहार	0.2%	96.6%	180
122	C	साझेदारी एवं LLP खाते	लाभ-प्राप्ति अनुपात (Gaining Ratio) की गणना	0.2%	96.8%	187
123	C	साझेदारी एवं LLP खाते	संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी (Joint Life Policy)	0.2%	96.9%	190
124	C	साझेदारी एवं LLP खाते	परिचय — साझेदार की मृत्यु	0.2%	97.1%	194
125	C	साझेदारी एवं LLP खाते	मृत्यु की दशा में विशेष लेन-देन: संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी (Joint Life Policy)	0.2%	97.3%	196
126	C	साझेदारी एवं LLP खाते	मृत्यु की दशा में विशेष लेन-देन: पृथक जीवन बीमा पॉलिसी	0.2%	97.5%	197
127	C	साझेदारी एवं LLP खाते	मृत्यु की दशा में विशेष लेन-देन: मृत साझेदार के हिस्से का भुगतान	0.2%	97.7%	198
128	C	साझेदारी एवं LLP खाते	विघटन के परिणाम	0.2%	97.9%	202
129	C	कंपनी खाते	परिचय	0.2%	98.1%	211
130	C	कंपनी खाते	कंपनियों के प्रकार	0.2%	98.3%	213
131	C	कंपनी खाते	अंश पूंजी (Share Capital)	0.2%	98.5%	216
132	C	कंपनी खाते	अंशों के प्रकार	0.2%	98.7%	217
133	C	कंपनी खाते	प्रीमियम पर अंशों का निर्गम	0.2%	98.9%	220
134	C	कंपनी खाते	अधिक सदस्यता और आनुपातिक आवंटन	0.2%	99.0%	221
135	C	कंपनी खाते	अर्थ	0.2%	99.2%	228
136	C	कंपनी खाते	डिबेंचरों की विशेषताएँ	0.2%	99.4%	230
137	C	कंपनी खाते	डिबेंचरों के प्रकार	0.2%	99.6%	231

#	श्रेणी	अध्याय	विषय	हिस्सा	संचयी	पृष्ठ
138	C	कंपनी खाते	सहायक प्रतिभूति के रूप में डिबेंचरों का निर्गम	0.2%	99.8%	233
139	C	कंपनी खाते	डिबेंचर मोचन आरक्षित निधि	0.2%	100.0%	248

हिस्सा % Scanner से लिया गया प्रश्न-आवृत्ति संकेत है — अर्थात् वास्तव में क्या पूछा गया है। प्रत्येक अध्याय और इकाई के सामने छपा **महत्त्व ग्रेड (A-D)** ICAI का अपना भारांक संकेत है, जैसा Scanner की front matter में प्रकाशित होता है। दोनों अलग-अलग बातें मापते हैं; जहाँ वे भिन्न हों, वहाँ दोनों में से ऊँचे मानक पर तैयारी कीजिए। इनके अतिरिक्त **84 विषय** Scanner की frequency tables में घोषित हैं पर उन पर अभी कोई प्रश्न नहीं है; नोट्स में उन्हें **अवधारणा आधार** का बैज दिया गया है और यहाँ रैंक नहीं किया गया।

अध्याय 1

सैद्धांतिक ढाँचा

Theoretical Framework

37 विषय • 72 वर्गीकृत प्रश्न • महत्त्व: A

ICAI कौशल प्रोफ़ाइल Level I 5–20% • Level II 80–95% — यह अध्याय है **सिद्धान्त-प्रधान**

Level I — स्मरण एवं समझ	97.0%	164 में से 159 अंक
Level II — अनुप्रयोग एवं विश्लेषण	3.0%	164 में से 5 अंक

इकाई 1.1: लेखांकन का अर्थ एवं क्षेत्र

Meaning and Scope of Accounting

P1-C1-U1.1 • महत्त्व B • अध्याय में Rank 3 • श्रेणी B • अध्याय के 11.1% प्रश्न • 8 प्रश्न

विषय 1: परिचय

P1-C1-U1.1-T01 • Introduction

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं • पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §1.1 पढ़िए: लेन-देनों और घटनाओं के माध्यम से चलने वाली आर्थिक गतिविधियाँ, स्टेशनरी की दुकान तथा नगर निगम के उदाहरणों सहित।

नोट्स

आर्थिक गतिविधियाँ: प्रत्येक व्यक्ति/संस्था (वेतनभोगी व्यक्ति, क्लब, व्यवसाय, कंपनी, स्थानीय प्राधिकरण, सरकार) आर्थिक गतिविधियाँ करती है — ये सदैव व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं होतीं, कुछ सामाजिक हित भी उत्पन्न करती हैं; और ये गतिविधियाँ “लेन-देन तथा घटनाओं” के माध्यम से सम्पन्न होती हैं।

लेन-देन बनाम घटना: लेन-देन का अर्थ है “व्यवसाय, किसी कार्य का निष्पादन, अथवा समझौता”, जबकि घटना का अर्थ है “कोई घटित बात, जो लेन-देन(नों) के परिणामस्वरूप हो” — जैसे माल का क्रय/विक्रय, निवेश और चुकाया गया किराया लेन-देन हैं; और अर्जित अधिशेष (SM के उदाहरण में ₹42,000) तथा शेष बचा माल घटनाएँ हैं।

लेखांकन क्यों: हर कोई अपने लेन-देनों/घटनाओं का अभिलेख और निर्णय लेने में सहायक पर्याप्त सूचना चाहता है — लेखांकन उन आर्थिक गतिविधियों के मापन से सम्बन्ध रखता है जिनमें आर्थिक साधनों का अन्तर्वाह और बहिर्वाह होता है, इसका प्रयोग सार्वभौमिक है, और इसका लक्ष्य विवेकशील निर्णयकर्ताओं की सूचना-आवश्यकताएँ पूरी करना है — इसीलिए इसे व्यवसाय की भाषा कहा जाता है।

विषय 2: लेखांकन का अर्थ

P1-C1-U1.1-T02 · Meaning of Accounting

पहले पढ़ें Study Material का Para 1.2 पढ़िए: 1961 की AICPA परिभाषा, 1966 की American Accounting Association परिभाषा, तथा लेखांकन के छह प्रक्रियात्मक पहलू (अभिलेखन, वर्गीकरण, सारांशीकरण, विश्लेषण, व्याख्या, संप्रेषण)।

नोट्स

1961 (AICPA Committee on Terminology): “लेखांकन वह कला है जिसमें कम-से-कम आंशिक रूप से वित्तीय प्रकृति वाले लेन-देनों और घटनाओं को मुद्रा के रूप में महत्वपूर्ण ढंग से अभिलिखित, वर्गीकृत और सारांशित किया जाता है तथा उनके परिणाम की व्याख्या की जाती है।”

1966 (American Accounting Association): “आर्थिक सूचनाओं की पहचान, मापन और संप्रेषण की वह प्रक्रिया, जिससे खातों के उपयोगकर्ता सूचित निर्णय और विवेकपूर्ण मत बना सकें।” — अब उपयोगकर्ताओं तक संप्रेषण लेखांकन का ही अंग है।

छह प्रक्रियात्मक पहलू: (1) अभिलेखन — मूलभूत कार्य; Journal/सहायक बहियाँ। (2) वर्गीकरण — समान लेन-देनों का समूहन; Ledger। (3) सारांशीकरण — तलपट और वित्तीय विवरण। (4) विश्लेषण — P&L तथा तुलन-पत्र की मदों के पारस्परिक सम्बन्ध। (5) व्याख्या — उपयोगकर्ताओं के लिए अर्थ और महत्व स्पष्ट करना। (6) संप्रेषण — अन्तिम चरण: प्रतिवेदनों, अनुपातों और graphs के माध्यम से परिणाम पहुँचाना। पहले दो (तथा तलपट) bookkeeping हैं; शेष लेखांकन।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए — इस संस्करण में कोई प्रश्न नहीं

- यह सिद्ध कर सकें कि लेखांकन में संप्रेषण सम्मिलित है — आधुनिक (1966 AAA) परिभाषा लेखांकन को ‘आर्थिक सूचनाओं की पहचान, मापन और संप्रेषण की प्रक्रिया’ मानती है, जिससे उपयोगकर्ता सूचित निर्णय ले सकें।
- समझाइए कि 1961 की पुरानी परिभाषा (अभिलेखन, वर्गीकरण, सारांशीकरण, व्याख्या) आज अधूरी क्यों मानी जाती है — विविध स्वामित्व और वैश्वीकरण ने परिणामों के संप्रेषण को लेखांकन का आवश्यक कार्य बना दिया है।
- सत्य/असत्य के उत्तरों में कारण सदैव प्रक्रियात्मक चरणों से जोड़िए: अभिलेखन मूलभूत कार्य है, और संप्रेषण अन्तिम चरण, जो विश्लेषित सूचना अन्तिम उपयोगकर्ताओं तक पहुँचाता है।

विषय 3: सामाजिक विज्ञान के रूप में लेखांकन का विकास

P1-C1-U1.1-T03 · Evolution of Accounting as a Social Science

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §1.3 पढ़िए: मिस्र/बेबीलोनिया/यूनान/रोम/चीन और कौटिल्य से लेकर Luca Pacioli तक का इतिहास, विकास के चार चरण, तथा लेखांकन सामाजिक विज्ञान क्यों है।

नोट्स

इतिहास: जड़ें लगभग 4000 ईसा पूर्व (मिस्र के कोषागार) तक जाती हैं; बेबीलोनिया में इसका प्रयोग छल से हुई हानि पकड़ने में हुआ; कौटिल्य के अर्थशास्त्र में भारत में लेखांकन अभिलेखों के रख-रखाव का वर्णन है; और Luca Pacioli की Summa de Arithmetica, Geometria, Proportio et Proportionalita (वेनिस, 1494) दोहरा लेखा पर पहली पुस्तक है, जिसमें Debit (Dr., इतालवी debito अर्थात् स्वामी को देय) तथा Credit (Cr., credito/लैटिन credo अर्थात् विश्वास) शब्द प्रयुक्त हुए।

चार चरण: (i) प्रबन्धन-लेखा (Stewardship Accounting) — धनी व्यक्तियों के प्रबन्धक अपने प्रबन्धन का आवधिक लेखा देते थे, यही वित्तीय लेखांकन की जड़ है; (ii) वित्तीय लेखांकन — संयुक्त पूंजी कंपनियों तथा स्वामित्व और प्रबन्ध के पृथक्करण के साथ वित्तीय विवरणों का प्रकटीकरण विधि द्वारा ढाला गया; (iii) प्रबन्ध लेखांकन — बीसवीं शताब्दी का विकास, जो प्रबन्ध के निर्णयों में सहायक है; (iv) सामाजिक उत्तरदायित्व लेखांकन — अभी निर्माणाधीन चरण, जिसमें उठाई गई सामाजिक लागतों (प्रदूषण, समाज के साधनों का उपयोग) तथा सृजित सामाजिक लाभों (रोजगार, बेहतर उत्पाद) का लेखा किया जाता है।

सामाजिक विज्ञान: मूल कसौटी यह है कि लेखांकन समग्र समाज के लिए कितना उपयोगी है — यह सामाजिक हित के लिए सूचना उत्पन्न करता है, सामाजिक प्रयोजन पूरा करता है, सामाजिक प्रगति में योगदान देता है और उसके साथ ढलता है, अतः यह सामाजिक विज्ञान है।

विषय 4: लेखांकन के उद्देश्य

P1-C1-U1.1-T04 · Objectives of Accounting

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §1.4 तथा उसका चार्ट पढ़िए: व्यवस्थित अभिलेखन से लेकर शोधन-क्षमता तक के पाँच उद्देश्य।

नोट्स

पाँच उद्देश्य: (i) लेन-देनों का व्यवस्थित अभिलेखन (book-keeping — journal, ledger, तलपट); (ii) परिणामों का निर्धारण — P&L A/c अवधि का लाभ (जब आय व्यय से अधिक हो) अथवा हानि दिखाता है; (iii) वित्तीय स्थिति का निर्धारण — तुलन-पत्र किसी समय-बिन्दु पर परिसंपत्तियाँ (जो उसके पास हैं) और देयताएँ (जो उस पर देय हैं) बताता है; (iv) विवेकपूर्ण निर्णय के लिए वित्तीय विवरणों के माध्यम से उपयोगकर्ताओं को सूचना देना; (v) शोधन-क्षमता की स्थिति जानना — देयताएँ देय होने पर अल्पकाल में (तरलता) और दीर्घकाल में (शोधन-क्षमता) चुकाने की सामर्थ्य।

विषय 5: लेखांकन के कार्य

P1-C1-U1.1-T05 · Functions of Accounting

पहले पढ़ें Para 1.5 पढ़िए — लेखांकन के छह मुख्य कार्य: मापन, पूर्वानुमान, निर्णयन, तुलना एवं मूल्यांकन, नियंत्रण, तथा सरकारी विनियमन एवं कराधान।

नोट्स

छह कार्य: (a) मापन — विगत निष्पादन तथा वर्तमान वित्तीय स्थिति का मापन; (b) पूर्वानुमान — विगत आँकड़ों से भावी निष्पादन का अनुमान; (c) निर्णयन — विवेकपूर्ण निर्णयों के लिए प्रासंगिक सूचना; (d) तुलना एवं मूल्यांकन — लक्ष्यों के सापेक्ष निष्पादन, तथा नीतियों और आकस्मिक देयताओं का प्रकटीकरण; (e) नियंत्रण — परिचालन की कमजोरियाँ पहचानना और feedback देना; (f) सरकारी विनियमन एवं कराधान — नियंत्रण तथा कर-संग्रह के लिए सूचना।

इन्हें अलग रखिए — चार उद्देश्य: व्यवस्थित अभिलेखन (book-keeping); परिणामों का निर्धारण (P&L); वित्तीय स्थिति का निर्धारण (तुलन-पत्र); तथा उपयोगकर्ताओं को सूचना का संप्रेषण (वित्तीय प्रतिवेदन)।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 1 प्रश्न

- 4 अंक के प्रश्न के लिए कोई भी चार कार्य एक-दो पंक्तियों में समझाने को तैयार रहिए — जैसे मापन (विगत निष्पादन और वर्तमान वित्तीय स्थिति मापता है), पूर्वानुमान (विगत आँकड़ों से भावी निष्पादन का अनुमान लगाता है)।
- तुलना एवं मूल्यांकन को लक्ष्यों के सापेक्ष निष्पादन के आकलन तथा नीतियों/आकस्मिक देयताओं के प्रकटीकरण के रूप में समझाइए, और नियंत्रण को परिचालन की कमजोरियाँ पहचानने तथा feedback देने के रूप में।
- लेखांकन के कार्यों को उसके उद्देश्यों (व्यवस्थित अभिलेखन, परिणामों का निर्धारण, वित्तीय स्थिति, शोधन-क्षमता) से मत मिलाइए — दोनों सूचियाँ अलग रखिए।

TQ 5.1 · PYQ 2025-Jan [1] (b) {C} · वर्णनात्मक · 4M · Pg 3

LEVEL I
समझ (Understanding)

मध्यम

विषय 6: बहीखाता

P1-C1-U1.1-T06 · Book-keeping

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §1.6 और §1.6.1 पढ़िए: book-keeping का अर्थ, उसके विधिक निहितार्थ तथा उसके दो उद्देश्य।

नोट्स

अर्थ: book-keeping वह क्रिया है जो व्यावसायिक परिचालनों से सम्बन्धित वित्तीय आँकड़ों को महत्वपूर्ण और क्रमबद्ध ढंग से अभिलिखित करने से जुड़ी है — यह लेखांकन-कार्य के प्रक्रियात्मक पहलुओं को समेटती है, अभिलेख-रखने का कार्य इसी में आता है, और इसकी प्रक्रियाएँ अन्तिम उत्पाद अर्थात् वित्तीय विवरणों से निर्धारित होती हैं; लेखांकन सावधान और कुशल book-keeping प्रणाली पर ही टिका है।

उद्देश्य: (i) लेन-देनों का पूर्ण अभिलेखन — सभी लेन-देनों का व्यवस्थित और तार्किक ढंग से पूर्ण एवं स्थायी अभिलेख, जो व्यवसाय पर उनका वित्तीय प्रभाव दिखाए; (ii) वित्तीय प्रभाव का निर्धारण — अवधि के सभी लेन-देनों का समग्र रूप से व्यवसाय की वित्तीय स्थिति पर सम्मिलित प्रभाव।

विधिक पक्ष: कंपनियों की पुस्तकें और वित्तीय विवरण Companies Act से निर्देशित होते हैं, बैंक/बीमा अपने विशेष अधिनियमों से; एकल स्वामित्व और साझेदारी के लिए कोई विशिष्ट विधान नहीं है।

विषय 7: बहीखाता और लेखांकन में अंतर

P1-C1-U1.1-T07 · Distinction Between Book-Keeping and Accounting

पहले पढ़ें Para 1.7 का छह बिंदुओं वाला तालिकाबद्ध अन्तर सीखिए, और यह विचार भी कि book-keeping अभिलेखन का चरण है जबकि लेखांकन सारांशीकरण का — लेखांकन वहीं से आरम्भ होता है जहाँ book-keeping समाप्त होती है।

नोट्स

मूल विचार: book-keeping अभिलेखन का चरण है; लेखांकन सारांशीकरण का — लेखांकन वहीं से आरम्भ होता है जहाँ book-keeping समाप्त होती है। क्रम इस प्रकार है: Book-keeping $\subset$ Accounting $\subset$ Accountancy। छह बिंदुओं का अन्तर:

1. Book-keeping लेन-देनों के अभिलेखन से जुड़ी प्रक्रिया है।	लेखांकन अभिलिखित लेन-देनों के सारांशीकरण से जुड़ा है।
2. यह लेखांकन का आधार बनाती है।	इसे व्यवसाय की भाषा माना जाता है।
3. वित्तीय विवरण इस प्रक्रिया का भाग नहीं हैं।	वित्तीय विवरण book-keeping के अभिलेखों के आधार पर बनते हैं।
4. इन अभिलेखों की सहायता से प्रबन्धकीय निर्णय नहीं लिए जा सकते।	प्रबन्ध इन्हीं अभिलेखों के आधार पर निर्णय लेता है।
5. Book-keeping का कोई उपक्षेत्र नहीं है।	इसके अनेक उपक्षेत्र हैं: वित्तीय लेखांकन, प्रबन्ध लेखांकन आदि।
6. इससे व्यवसाय की वित्तीय स्थिति ज्ञात नहीं की जा सकती।	वित्तीय स्थिति लेखांकन प्रतिवेदनों के आधार पर ज्ञात की जाती है।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 2 प्रश्न

- कम-से-कम चार अन्तर-बिंदु दोहरा सके: book-keeping लेन-देन अभिलिखित करती है/आधार है; लेखांकन सारांशीकरण करता है/व्यवसाय की भाषा है; और वित्तीय विवरण तथा प्रबन्धकीय निर्णय लेखांकन के अंग हैं, book-keeping के नहीं।
- समझाइए कि book-keeping का कोई उपक्षेत्र नहीं है और उससे वित्तीय स्थिति नहीं दिखती, जबकि लेखांकन के अनेक उपक्षेत्र हैं (वित्तीय, प्रबन्ध लेखांकन आदि) और उससे वित्तीय स्थिति निर्धारित होती है।
- क्रम-चार्ट स्मरण रखिए: Book-keeping, Accounting के भीतर है और Accounting, Accountancy के भीतर।

TQ 7.2 • PYQ 2025-Jan [1] (a) (v) {C} • सत्य/असत्य • 2M • Pg 4

LEVEL I
समझ (Understanding)

सरल

TQ 7.1 • PYQ 2024-Sep [1] (b) {C} • अंतर बताइए • 4M • Pg 3

LEVEL I
समझ (Understanding)

विषय 8: लेखांकन की उप-शाखाएँ

P1-C1-U1.1-T08 • Sub-Fields of Accounting

पहले पढ़ें Para 1.8 के पाँच उपक्षेत्र एक-एक पंक्ति के विवरण सहित कंठस्थ कीजिए: वित्तीय, प्रबन्ध, लागत, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा मानव संसाधन लेखांकन।

नोट्स

पाँच उपक्षेत्र: (i) वित्तीय लेखांकन — ऐतिहासिक; बाह्य उपयोगकर्ताओं के लिए P&L और तुलन-पत्र पर समाप्त होता है। (ii) प्रबन्ध लेखांकन — नियोजन, नियंत्रण और निर्णयन के लिए आन्तरिक reporting; इसमें लागत लेखांकन भी सम्मिलित है। (iv) सामाजिक उत्तरदायित्व लेखांकन — उठाई गई सामाजिक लागतों और सृजित सामाजिक लाभ। (v) मानव संसाधन लेखांकन — मानव संसाधनों में किए गए उन निवेशों की पहचान, परिमाणन और प्रतिवेदन, जो परम्परागत लेखांकन में नहीं आते।

(iii) लागत लेखांकन (ICMA, England): “लागत के लेखांकन की वह प्रक्रिया जो आय और व्यय के, अथवा जिन आधारों पर उनकी गणना होती है उनके, अभिलेखन से आरम्भ होती है और लागतों के निर्धारण तथा नियंत्रण के लिए आवधिक विवरणों एवं प्रतिवेदनों की तैयारी पर समाप्त होती है।”

स्मरण (Remembering) कंठस्थ कीजिए • 1 प्रश्न

- गिनाइए: (i) वित्तीय लेखांकन — ऐतिहासिक, बाह्य उपयोगकर्ताओं के लिए P&L और तुलन-पत्र बनाता है; (ii) प्रबन्ध लेखांकन — नियोजन, नियंत्रण और निर्णयन के लिए आन्तरिक reporting; (iii) लागत लेखांकन — लागत का निर्धारण और नियंत्रण।
- (iv) सामाजिक उत्तरदायित्व लेखांकन — उठाई गई सामाजिक लागतों और सृजित सामाजिक लाभों का लेखा; (v) मानव संसाधन लेखांकन — मानव संसाधनों में उन निवेशों की पहचान, परिमाणन और प्रतिवेदन जो परम्परागत लेखांकन में नहीं आते।
- 5 अंक के वर्णनात्मक उत्तर के लिए लागत लेखांकन की ICMA (England) वाली परिभाषा कंठस्थ कीजिए।

TQ 8.1 • PYQ 2023-Dec [6] (b) • वर्णनात्मक • 5M • Pg 4

LEVEL I
स्मरण (Remembering)

मध्यम

विषय 9: लेखांकन सूचना के उपयोगकर्ता

P1-C1-U1.1-T09 • Users of Accounting Information

पहले पढ़ें Para 1.9 पढ़िए — उपयोगकर्ताओं का आन्तरिक और बाह्य में वर्गीकरण तथा आठ वर्ग (निवेशक, कर्मचारी, ऋणदाता, आपूर्तिकर्ता/लेनदार, ग्राहक, सरकार, जनता, प्रबन्ध) और प्रत्येक क्या देखना चाहता है।

नोट्स

दो वर्ग: आन्तरिक उपयोगकर्ता (स्वामी/प्रबन्ध — विस्तृत प्रतिवेदन) तथा बाह्य उपयोगकर्ता (सामान्य प्रयोजन के वित्तीय विवरण)।

आठ वर्ग और उनके हित: (i) निवेशक — खरीदें/रखें/बेचें; संस्था के टिकने, फलने-फूलने और लाभांश देने की सामर्थ्य। (ii) कर्मचारी — स्थायित्व, वृद्धि; पारिश्रमिक और सेवानिवृत्ति लाभ। (iii) ऋणदाता — मूलधन और ब्याज का समय पर भुगतान। (iv) आपूर्तिकर्ता/लेनदार — देय चुकाने की सामर्थ्य; इसी से उनकी उधार-नीति बनती है। (v) ग्राहक — निरन्तर आपूर्ति संस्था के स्थायित्व और लाभप्रदता पर निर्भर है। (vi) सरकार — विनियमन, साधनों का आबंटन, मूल्य-नियंत्रण, शुल्क और कर। (vii) जनता — स्थानीय अर्थव्यवस्था में योगदान: रोजगार, स्थानीय आपूर्तिकर्ताओं को संरक्षण। (viii) प्रबन्ध — अपने निर्णयों का प्रभाव, तथा आगे के निर्णयों का आधार।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 1 प्रश्न

- सत्य/असत्य का जाल: 'ग्राहक खातों के उपयोगकर्ता नहीं हैं' — असत्य; ग्राहक संस्था के स्थायित्व और लाभप्रदता से सरोकार रखते हैं, क्योंकि उनका अपना काम माल की निरन्तर आपूर्ति पर निर्भर है (जैसे किसी रासायनिक आपूर्तिकर्ता पर निर्भर pharma कंपनी)।
- प्रत्येक उपयोगकर्ता का हित बता सकें: निवेशक — खरीदें/रखें/बेचें और लाभांश देने की सामर्थ्य; ऋणदाता — मूलधन और ब्याज की वापसी; कर्मचारी — स्थायित्व, वृद्धि और सेवानिवृत्ति लाभ; सरकार — विनियमन और कर।
- आन्तरिक उपयोगकर्ताओं (स्वामी/प्रबन्ध, जिन्हें विस्तृत प्रतिवेदन मिलते हैं) और बाह्य उपयोगकर्ताओं (जिनके लिए सामान्य प्रयोजन के वित्तीय विवरण बनते हैं) में अन्तर कीजिए।

TQ 9.1 · PYQ 2025-Jan [1] (a) (ii) {C} · सत्य/असत्य · 2M · Pg 6

LEVEL I
समझ (Understanding)

सरल

विषय 10: अन्य विषयों से लेखांकन का संबंध

P1-C1-U1.1-T10 · Relationship of Accounting with other Disciplines

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §1.10 (a)–(e) पढ़िए: लेखांकन का अर्थशास्त्र, सांख्यिकी, गणित, विधि और प्रबन्ध से सम्बन्ध।

नोट्स

अर्थशास्त्र: मूल्य, आय और पूंजी-रक्षण की धारणाएँ लेखाकारों ने अर्थशास्त्रियों से लीं, किन्तु उन्हें व्यवहार के अनुरूप ढाल लिया (जैसे भावी आय के वर्तमान मूल्य के स्थान पर अर्जन-लागत को व्यावहारिक मूल्यांकन-आधार बनाना); और सूक्ष्म स्तर के लेखांकन आँकड़े जुड़कर वृहद् स्तर के आर्थिक निर्णय-मॉडलों का आँकड़ा-आधार बनते हैं।

सांख्यिकी और गणित: लेखांकन के आँकड़े पाई-पाई तक सटीक होते हैं, जबकि सांख्यिकी प्रतिनिधि मूल्यों/प्रवृत्तियों से काम लेती है — सांख्यिकीय विधियाँ (अनुपात, काल-श्रेणी, समपार तुलना, रुग्णता के लक्षणों के लिए multiple

discriminant analysis) व्याख्या में सहायक हैं; दोहरा लेखा को बीजगणितीय/matrix रूप में रखा जा सकता है, और ब्याज, annuity, मूल्यहास, किराया-क्रय तथा lease की गणनाओं के लिए अंकगणित एवं बीजगणित पूर्वपेक्षा हैं।

विधि और प्रबन्ध: लेन-देन Contract Act, Sale of Goods Act, Negotiable Instruments Act से शासित होते हैं, और Companies Act वित्तीय विवरणों के प्रारूप निर्धारित करता है — लेखांकन विधि को प्रभावित करता है और विधि से प्रभावित भी होता है; प्रबन्ध में लेखाकार की भूमिका महत्वपूर्ण है, क्योंकि लेखांकन सूचना का बड़ा भाग प्रबन्ध के निर्णयों के लिए ही बनता है और प्रणाली को प्रबन्ध के प्रयोजन के अनुरूप ढाला जा सकता है।

विषय 11: लेखांकन की सीमाएँ

P1-C1-U1.1-T11 · Limitations of Accounting

पहले पढ़ें Para 1.11 की सात सीमाएँ सीखिए, जिन्हें वित्तीय विवरणों का मूल्यांकन करते समय ध्यान में रखना चाहिए — ये लेखांकन की मान्यताओं, परम्पराओं और व्यक्तिगत विवेक से उपजती हैं।

नोट्स

मूल कारण: लेखांकन की मान्यताएँ, परम्पराएँ और लेखाकार का व्यक्तिगत विवेक ही उसकी सीमाएँ बन जाते हैं — विवरण कभी पूर्णतः आत्मनिष्ठता से मुक्त नहीं होते। **सात उदाहरण:** (1) गैर-मौद्रिक तत्त्व (कर्मचारियों की निष्ठा, कौशल) इनमें स्थान नहीं पाते; (2) तुलन-पत्र केवल बनाने की तिथि की स्थिति दिखाता है, भविष्य की नहीं; (3) मुद्रास्फीति जैसे परिवर्तन उपेक्षित रहते हैं; (4) लेखांकन सिद्धांत कभी-कभी परस्पर टकराते हैं; (5) अनुमान व्यक्तिगत विवेक पर टिके होते हैं (संदिग्ध ऋण, मूल्यहास की विधि, माल-सूची का मूल्यांकन); (6) मानव संसाधन नहीं दिखाए जाते — उनका कोई मान्य मौद्रिक मूल्यांकन नहीं; (7) एक ही मद के लिए वैकल्पिक नीतियाँ हेर-फेर का अवसर देती हैं।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 2 प्रश्न

- 4-5 सीमाएँ कारण सहित समझाइए: गैर-मौद्रिक तत्त्व (कर्मचारियों की निष्ठा, कौशल) छूट जाते हैं; तुलन-पत्र केवल बनाने की तिथि की स्थिति दिखाता है, भविष्य की नहीं; और मुद्रास्फीति/मूल्य-स्तर के परिवर्तन उपेक्षित रहते हैं।
- साथ ही: लेखांकन सिद्धांत कभी-कभी परस्पर टकराते हैं; अनुमान (संदिग्ध ऋणों का प्रावधान, मूल्यहास की विधि, माल-सूची का मूल्यांकन) व्यक्तिगत विवेक पर टिके होते हैं; और एक ही मद के लिए वैकल्पिक नीतियाँ हेर-फेर का अवसर देती हैं।
- सत्य/असत्य: 'अन्तिम खातों से प्रकट परिणाम और स्थिति पूर्णतः यथार्थ नहीं होते' — सत्य; आँकड़े काफी हद तक लेखाकार के व्यक्तिगत विवेक और नीति-चयन का परिणाम होते हैं, इसलिए विवरण कभी आत्मनिष्ठता से पूर्णतः मुक्त नहीं होते।

TQ 11.2 · RTP 2025-Jan [1] (v) · सत्य/असत्य · Pg 7 **3× पूछा गया**

LEVEL I
समझ (Understanding)

सरल

TQ 11.1 · PYQ 2018-Nov [1] (b) {C} · वर्णनात्मक · 4M · Pg 6 **8× पूछा गया**

LEVEL I
समझ (Understanding)

मध्यम

विषय 12: समाज में Accountant की भूमिका

P1-C1-U1.1-T12 · Role of Accountant in the Society

पहले पढ़ें Para 1.12 (सेवा-क्षेत्र) पढ़िए — चार्टर्ड अकाउंटेंट समाज को कौन-सी सेवाएँ देता है, तथा उद्योग, सार्वजनिक क्षेत्र, राजकोषीय नीति और आर्थिक वृद्धि में उसकी भूमिका।

नोट्स

आरम्भिक पंक्ति: लेखाकर्म अब वित्तीय विवरण बनाने, उनकी व्याख्या करने और उनका अंकेक्षण करने के अपने सामान्य क्षेत्र से आगे बढ़ चुका है — चार्टर्ड अकाउंटेंट अब कंपनी विधि, कराधान और सामान्य प्रबन्ध में भी सेवा देते हैं। Goethe के शब्दों में यह “मानव मस्तिष्क का सबसे सुन्दर आविष्कार” है।

छह सेवा-क्षेत्र: (i) लेखा-पुस्तकों का रख-रखाव — शुद्ध परिणाम और वित्तीय स्थिति; (ii) सांविधिक अंकेक्षण — प्रत्येक limited कंपनी के लिए सत्य और उचित चित्र पर प्रतिवेदन; (iii) आन्तरिक अंकेक्षण — प्रबन्ध का वह उपकरण जो जाँचता है कि खाते उचित सुरक्षा-उपायों सहित ठीक से रखे जा रहे हैं; (iv) कराधान — कर मामलों का संचालन तथा कर अधिकारियों के समक्ष प्रतिनिधित्व; (v) प्रबन्ध लेखांकन एवं परामर्श — नियोजन, नियंत्रण और विशेष निर्णयों के लिए आन्तरिक reporting; (vi) वित्तीय परामर्श — निवेश, बीमा, व्यवसाय-विस्तार, अन्वेषण, पेंशन।

स्मरण (Remembering) कंठस्थ कीजिए · 1 प्रश्न

- मुख्य सेवा-शीर्ष कंठस्थ कीजिए: लेखा-पुस्तकों का रख-रखाव, सांविधिक अंकेक्षण, आन्तरिक अंकेक्षण, कराधान, प्रबन्ध लेखांकन एवं परामर्श सेवाएँ, तथा वित्तीय परामर्श।
- वित्तीय परामर्श के अन्तर्गत उप-क्षेत्र स्मरण रखिए: निवेश, बीमा, व्यवसाय-विस्तार, वित्तीय अन्वेषण तथा पेंशन योजनाएँ।
- यदि और सेवाएँ पूछी जाएँ तो ये भी गिनाइए: सचिवीय कार्य, अंश-पंजीकरण, कंपनी का गठन, receivership/समापन, मध्यस्थता, लागत-खाते तथा सूचना सेवाएँ।
- 4 अंक के उत्तर में पहले आरम्भिक पंक्ति लिखिए — लेखाकर्म वित्तीय विवरण बनाने, उनकी व्याख्या करने और अंकेक्षण के अपने सामान्य क्षेत्र से आगे बढ़ चुका है; चार्टर्ड अकाउंटेंट अब कंपनी विधि, कराधान और सामान्य प्रबन्ध में भी सेवा देते हैं — और फिर पाँच-छह सेवा-क्षेत्र गिनाकर संक्षेप में समझाइए।

TQ 12.1 · PYQ 2020-Nov [1] (b) {C} · वर्णनात्मक · 4M · Pg 7 **6× पूछा गया**

LEVEL I
स्मरण (Remembering)

मध्यम

इकाई 1.2: लेखांकन अवधारणाएँ, सिद्धांत एवं परंपराएँ

Accounting Concepts, Principles and Conventions

P1-C1-U1.2 · महत्त्व A · अध्याय में Rank 1 · श्रेणी A · अध्याय के 34.7% प्रश्न · 25 प्रश्न

विषय 1: अवधारणाएँ, सिद्धांत एवं परंपराएँ — एक अवलोकन

P1-C1-U1.2-T01 · Concepts, Principles and Conventions - An Overview

पहले पढ़ें Para 2.5 पर अधिकार कीजिए — बारहों अवधारणाएँ (इकाई, मुद्रा-मापन, आवधिकता, उपार्जन, मिलान, चालू संस्था, लागत, वसूली, दोहरा पक्ष, रूढ़िवादिता, संगति, तात्त्विकता) — तथा आधारभूत लेखांकन मान्यताओं पर Para 2.6।

नोट्स

बारह अवधारणाएँ (Para 2.5): (a) इकाई — व्यवसाय स्वामी से पृथक है; व्यवसाय के धन से किए गए स्वामी के व्यक्तिगत भुगतान आहरण हैं, जो पूंजी में घटाए जाते हैं, व्यवसाय का व्यय नहीं; (b) मुद्रा-मापन — केवल वही लेन-देन दर्ज होते हैं जो मुद्रा में मापे जा सकें, और वह भी एक ही मौद्रिक इकाई (देश की प्रचलित मुद्रा) में; (c) आवधिकता — अनन्त जीवन को कार्य-योग्य लेखांकन अवधियों में बाँटा जाता है (प्रायः 1 अप्रैल-31 मार्च), जिससे निष्पादन मापा जा सके और 'उपार्जन' सार्थक बने; (d) उपार्जन — "आय और लागतों की मान्यता तब, जब वे अर्जित/उपगत हों, न कि तब जब धन मिले या चुकाया जाए" (उपार्जन आधार, नकद नहीं); (e) मिलान — आवधिक लाभ = आवधिक आय - मिलाए गए व्यय (उपार्जन पर आधारित); (f) चालू संस्था — संस्था "निकट भविष्य में अपना कार्य चलाती रहेगी", उसका न तो समापन का आशय है न परिचालन का पैमाना तात्त्विक रूप से घटाने की आवश्यकता; (g) लागत — परिसंपत्ति ऐतिहासिक/अर्जन लागत पर मूल्यांकित, जो वस्तुनिष्ठता के कारण चुनी जाती है; (h) वसूली — परिसंपत्ति के मूल्य में परिवर्तन तभी गिना जाता है जब वह वसूल हो जाए; (i) दोहरा पक्ष — प्रत्येक लेन-देन के दो पक्ष होते हैं, जिससे $\text{Equity} + \text{Liabilities} = \text{Assets}$ बनता है (दोहरा लेखा का मूल); (j) रूढ़िवादिता — भावी आय की प्रत्याशा मत कीजिए, सम्भावित सभी हानियों का प्रावधान कीजिए; (k) संगति — एक अवधि से दूसरी अवधि तक वही लेखांकन नीतियाँ; (l) तात्त्विकता — नगण्य मदें छोड़ी जा सकती हैं, महत्वपूर्ण मदें प्रकट करनी ही होंगी।

तीन आधारभूत लेखांकन मान्यताएँ (Para 2.6): चालू संस्था, संगति, उपार्जन — इनका पालन हो तो कुछ लिखने की आवश्यकता नहीं (ये मान ली जाती हैं); और इनमें से किसी का पालन न हो तो उस तथ्य का वित्तीय विवरणों में विशेष रूप से प्रकटीकरण अनिवार्य है।

परम्पराएँ एवं मापन (संक्षिप्त टिप्पणियाँ): लेखांकन परम्पराएँ समय के साथ अपनाए गए लेखांकन व्यवहार/प्रचलन से उपजती हैं, सूचना की गुणवत्ता सुधारने के लिए विश्व की accountancy संस्थाएँ इन्हें बदल सकती हैं, और इनका सार्वभौमिक प्रयोग आवश्यक नहीं; मापन मुद्रा में होता है — जिसके चार आधार हैं: historical cost, current cost, realisable value तथा present value।

व्यवहार में रूढ़िवादिता: चालू परिसंपत्तियों का 'लागत अथवा बाजार मूल्य, जो कम हो' वाला नियम यहीं से आता है; इसमें विवेकशीलता, तटस्थता और सत्यनिष्ठ प्रस्तुति अपेक्षित है, और (आलोचकों के अनुसार) इससे आय तथा तुलन-पत्र की परिसंपत्तियाँ कम दिखती हैं; प्रत्याशित लाभ कभी दर्ज नहीं होते — इसीलिए लेनदारों पर छूट का प्रावधान नहीं किया जाता।

सत्य/असत्य के आधार-बिंदु: मिलान उपार्जन पर ही आधारित है (जो पूर्वदत्त/बकाया व्यय तथा उपचित/अनर्जित आय का समायोजन करता है); उपार्जन का अर्थ नकद मिलने/चुकाने पर दर्ज करना नहीं है — वह नकद आधार है; तात्त्विकता केवल राशि पर नहीं, व्यवसाय के आकार, सूचना की प्रकृति एवं स्तर तथा निर्णयकर्ता के स्तर पर भी निर्भर करती है; इकाई अवधारणा का अर्थ है कि संस्था स्वामी की पूंजी के लिए उसके प्रति दायी है; और संगति सुधरी हुई लेखांकन विधियाँ अपनाने से नहीं रोकती।

स्मरण (Remembering) कंठस्थ कीजिए · 2 प्रश्न

- तीन आधारभूत लेखांकन मान्यताएँ कंठस्थ कीजिए — Going Concern, Consistency, Accrual — और प्रकटीकरण का नियम: यदि इनका पालन किया गया है तो कोई प्रकटीकरण आवश्यक नहीं; यदि पालन नहीं किया गया तो उस तथ्य का विशेष रूप से प्रकटीकरण अनिवार्य है।
- 'Measurement' पर संक्षिप्त टिप्पणी: लेन-देन मुद्रा (प्रचलित currency) में मापे जाते हैं; चार आधार हैं — historical cost, current cost, realisable value और present value।
- 'Accounting conventions' पर संक्षिप्त टिप्पणी: ये समय के साथ लेखांकन व्यवहार एवं प्रचलन से उपजती हैं, accountancy bodies द्वारा बदली जा सकती हैं, और इनका सार्वभौमिक प्रयोग आवश्यक नहीं।

TQ 1.13 · RTP 2023-Dec [19] (iv) · संक्षिप्त टिप्पणी · Pg 16	8× पूछा गया	LEVEL I स्मरण (Remembering)	सरल
TQ 1.19 · RTP 2024-Sep [18] (i) · संक्षिप्त टिप्पणी · Pg 19	9× पूछा गया	LEVEL I स्मरण (Remembering)	सरल

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 23 प्रश्न

- प्रत्येक अवधारणा को 2-3 पंक्तियों में उदाहरण सहित समझाइए — परीक्षा में बार-बार चालू संस्था, उपार्जन बनाम नकद/उपार्जन आधार, आवधिकता, तात्त्विकता, रूढ़िवादिता, मुद्रा-मापन, वसूली और मिलान पूछे जाते हैं।
- सत्य/असत्य के जाल: रूढ़िवादिता से तुलन-पत्र की परिसंपत्तियाँ कम दिखती हैं (सत्य); उपार्जन का अर्थ नकद आधार नहीं है (असत्य); मिलान उपार्जन पर आधारित है (सत्य); मुद्रा-मापन = एक ही मौद्रिक इकाई में अभिलेखन (सत्य); तात्त्विकता केवल राशि पर नहीं, व्यवसाय के आकार, सूचना की प्रकृति और निर्णयकर्ता के स्तर पर भी निर्भर है; और स्वामी द्वारा निकाला गया माल Purchases में क्रेडिट होता है, Capital में नहीं।
- 'अन्तर बताइए' वाले युग्मों का अभ्यास कीजिए: चालू संस्था बनाम लागत अवधारणा, मुद्रा-मापन बनाम मिलान, तथा आधारभूत लेखांकन मान्यताएँ (जो मान ली जाती हैं, केवल तीन) बनाम लेखांकन नीतियाँ (जो चुनी और प्रकट की जाती हैं)।
- रूढ़िवादिता = सभी सम्भावित हानियों का प्रावधान, किसी लाभ की प्रत्याशा नहीं ('लागत अथवा बाजार मूल्य, जो कम हो'); सूक्ष्म बात — लेनदारों पर छूट का प्रावधान (जो प्रत्याशित लाभ है) नहीं किया जाता, यही रूढ़िवादिता के अनुरूप है।

TQ 1.8 · PYQ 2023-Jun [1] (a) (i) {C} · सत्य/असत्य · 2M · Pg 13		LEVEL I समझ (Understanding)	सरल
TQ 1.9 · PYQ 2023-Jun [1] (b) {C} · वर्णनात्मक · 2M · Pg 14		LEVEL I समझ (Understanding)	सरल
TQ 1.11 · PYQ 2023-Dec [1] (a) (i) {C} · सत्य/असत्य · 2M · Pg 14	8× पूछा गया	LEVEL I समझ (Understanding)	सरल
TQ 1.12 · PYQ 2023-Dec [1] (b) {C} · वर्णनात्मक · 2M · Pg 15	4× पूछा गया	LEVEL I समझ (Understanding)	सरल
TQ 1.14 · PYQ 2024-Jun [1] (b) (ii) (1) {C} · वर्णनात्मक · 1M · Pg 17		LEVEL I समझ (Understanding)	सरल
TQ 1.15 · PYQ 2024-Jun [1] (b) (ii) (2) {C} · वर्णनात्मक · 1M · Pg 17	3× पूछा गया	LEVEL I समझ (Understanding)	सरल
TQ 1.16 · RTP 2024-Sep [1] (a) · सत्य/असत्य · Pg 18	7× पूछा गया	LEVEL I समझ (Understanding)	सरल

TQ 1.21 • PYQ 2025-Jan [1] (a) (i) {C} • सत्य/असत्य • 2M • Pg 20	LEVEL I समझ (Understanding)	सरल
TQ 1.1 • PYQ 2019-Jun [1] (b) • अंतर बताइए • 4M • Pg 10 4× पूछा गया	LEVEL I समझ (Understanding)	मध्यम
TQ 1.2 • PYQ 2020-Nov [1] (a) (vi) {C} • सत्य/असत्य • 2M • Pg 11	LEVEL I समझ (Understanding)	मध्यम
TQ 1.3 • MTP 2021-Oct [1] (a) (i) {C} • सत्य/असत्य • 2M • Pg 11 3× पूछा गया	LEVEL I समझ (Understanding)	मध्यम
TQ 1.4 • PYQ 2021-Dec [1] (c) (i) {C} • वर्णनात्मक • 4M • Pg 12	LEVEL I समझ (Understanding)	मध्यम
TQ 1.5 • PYQ 2022-May [1] (b) (ii) {C} • वर्णनात्मक • 4M • Pg 12 3× पूछा गया	LEVEL I समझ (Understanding)	मध्यम
TQ 1.6 • PYQ 2022-Nov [1] (a) {C} • सत्य/असत्य • 4M • Pg 12	LEVEL I समझ (Understanding)	मध्यम
TQ 1.7 • MTP 2023-Apr [1] (a) (i) {C} • सत्य/असत्य • 2M • Pg 13	LEVEL I समझ (Understanding)	मध्यम
TQ 1.10 • RTP 2023-Dec [1] (i) • सत्य/असत्य • Pg 14	LEVEL I समझ (Understanding)	मध्यम
TQ 1.17 • RTP 2024-Sep [1] (g) • सत्य/असत्य • Pg 18 2× पूछा गया	LEVEL I समझ (Understanding)	मध्यम
TQ 1.18 • RTP 2024-Sep [2] • वर्णनात्मक • Pg 18 9× पूछा गया	LEVEL I समझ (Understanding)	मध्यम
TQ 1.22 • RTP 2025-Jan [2] (a) • अंतर बताइए • Pg 20 2× पूछा गया	LEVEL I समझ (Understanding)	मध्यम
TQ 1.23 • PYQ 2025-May [1] (a) (ii) {C} • सत्य/असत्य • 2M • Pg 21	LEVEL I समझ (Understanding)	मध्यम
TQ 1.24 • PYQ 2025-Sep [1] (a) {C} • सत्य/असत्य • 6M • Pg 21	LEVEL I समझ (Understanding)	मध्यम
TQ 1.20 • MTP 2024-Dec S1 [1] (b) {C} • अंतर बताइए • 4M • Pg 19 6× पूछा गया	LEVEL I समझ (Understanding)	मध्यम
TQ 1.25 • PYQ 2026-Sep [1] (b) {C} • वर्णनात्मक • 4M • Pg 22	LEVEL I समझ (Understanding)	

इकाई 1.3: पूंजीगत एवं राजस्व व्यय तथा प्राप्तियाँ

Capital and Revenue Expenditure and Receipts

P1-C1-U1.3 • महत्त्व C • अध्याय में Rank 2 • श्रेणी A • अध्याय के 30.6% प्रश्न • 22 प्रश्न

विषय 1: परिचय

P1-C1-U1.3-T01 • Introduction

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं • पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §3.1 पढ़िए: आवधिक व्यावसायिक परिणाम निकालने से पहले लेन-देनों को पूंजीगत अथवा राजस्वगत के रूप में

क्यों विश्लेषित करना आवश्यक है।

नोट्स

अन्तर: राजस्वगत व्यय लेखांकन अवधि के परिचालन/आय से सम्बन्धित होता है, अथवा उन मदों से जिनका लाभ उस अवधि से आगे नहीं जाता; पूंजीगत व्यय स्थायी लाभ उत्पन्न करता है और एक से अधिक लेखांकन अवधियों तक आय-अर्जन में सहायक होता है — किसी व्यय का पूंजीकरण तभी हो सकता है जब वह भावी लाभों की स्पष्ट धाराओं से सीधे जुड़ा हो।

स्थान: राजस्वगत व्यय उसी वर्ष के P&L A/c में जाते हैं, और पूंजीगत व्यय तुलन-पत्र के परिसंपत्ति पक्ष में जाकर प्रत्येक वर्ष लाभ के उपयोग के आधार पर P&L में हस्तान्तरित होते हैं — अर्थात् दोनों अन्ततः P&L तक पहुँचते हैं, और मुख्य निर्धारक तत्त्व समय है; व्ययों की मान्यता मिलान सिद्धांत से होती है (कब और कितना आय के विरुद्ध प्रभारित किया जाए)।

सावधानी: यह अन्तर काफी कठिनाई पैदा करता है — अनेक दशाओं में पूंजीगत और राजस्वगत के बीच की रेखा बहुत महीन होती है।

विषय 2: पूंजीगत और राजस्व व्यय निर्धारित करने के आधार

P1-C1-U1.3-T02 · Considerations in Determining Capital and Revenue Expenditures

पहले पढ़ें Para 3.2 पढ़िए — पूंजीगत और राजस्वगत व्यय में अन्तर करने की पाँच मूल कसौटियाँ: व्यवसाय की प्रकृति, आवर्ती स्वरूप, व्यय का उद्देश्य, आय-अर्जन क्षमता पर प्रभाव, तथा राशि की तात्त्विकता।

नोट्स

पाँच मूल कसौटियाँ (Para 3.2): (a) व्यवसाय की प्रकृति — फर्नीचर का व्यापारी के लिए राजस्वगत व्यय है, पर किसी अन्य व्यापार के लिए पूंजीगत व्यय (परिसंपत्ति); (b) आवर्ती स्वरूप — बार-बार होने वाले व्यय (मासिक वेतन, किराया) राजस्वगत हैं; कभी-कभार होने वाले, अनावर्ती व्यय (परिसंपत्तियों का क्रय) पूंजीगत हैं, जब तक वे नगण्य न हों; (c) व्यय का उद्देश्य — सामान्य रख-रखाव/मरम्मत राजस्वगत है, पर उत्पादन-क्षमता बढ़ाने वाली बड़ी मरम्मत पूंजीगत; (d) आय-अर्जन क्षमता पर प्रभाव — लाभ चालू अवधि तक सीमित हो = राजस्वगत; एक से अधिक लेखांकन अवधियों तक आय अर्जित कराने वाला व्यय = पूंजीगत; (e) राशि की तात्त्विकता — राशि का सापेक्ष अनुपात अन्तिम छननी है।

सुधार बनाम मरम्मत का नियम: किसी स्थायी परिसंपत्ति पर सुधार/मरम्मत का व्यय P&L में प्रभारित होता है यदि अपेक्षित भावी लाभ न बदलें, किन्तु जहाँ अपेक्षित भावी लाभ बढ़ जाएँ वहाँ वह परिसंपत्ति के पुस्तक-मूल्य में जोड़ा जाता है।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 1 प्रश्न

- प्रत्येक कसौटी उदाहरण सहित समझाइए: व्यवसाय की प्रकृति (फर्नीचर के व्यापारी के लिए फर्नीचर राजस्वगत व्यय है, अन्यो के लिए पूंजीगत); आवर्ती बनाम अनावर्ती (मासिक किराया बनाम परिसंपत्ति का क्रय)।

- व्यय का उद्देश्य: सामान्य रख-रखाव/मरम्मत राजस्वगत है, पर उत्पादन-क्षमता बढ़ाने वाली बड़ी मरम्मत पूंजीगत।
- आय-अर्जन क्षमता पर प्रभाव: लाभ चालू अवधि तक सीमित = राजस्वगत; एक से अधिक लेखांकन अवधियों तक लाभ = पूंजीगत; और राशि की तात्त्विकता अन्तिम छननी है।

TQ 2.1 · PYQ 2021-Jul [1] (b) · अंतर बताइए · 4M · Pg 26 5× पूछा गया

LEVEL I
समझ (Understanding)

मध्यम

विषय 3: पूंजीगत व्यय और राजस्व व्यय

P1-C1-U1.3-T03 · Capital Expenditures and Revenue Expenditures

पहले पढ़ें Para 3.3 (मुख्य अन्तर की तालिका) और विशेषकर Illustrations 1, 2, 6 तथा 8 पढ़िए — झोपड़ियों, overhaul, नवीकरण, licence, प्रतिस्थापन और ध्वंस पर आने वाले क्लासिक सत्य/असत्य इन्हीं से उठाए जाते हैं।

नोट्स

मूल अन्तर (Para 3.3): पूंजीगत व्यय एक से अधिक लेखांकन अवधियों तक आय-अर्जन क्षमता में योगदान देता है (स्थायी लाभ, तुलन-पत्र में परिसंपत्ति के रूप में, और लाभ के उपयोग के साथ P&L तक पहुँचता है); राजस्वगत व्यय केवल चालू अवधि की आय उत्पन्न करता है और उसी वर्ष P&L में प्रभारित होता है — मुख्य निर्धारक तत्त्व समय है।

पूंजीगत व्यय	राजस्वगत व्यय
लाभ दीर्घ अवधि तक	लाभ केवल चालू अवधि में
व्यवसाय की क्षमता बढ़ाता है अथवा उसकी लागत घटाता है	व्यवसाय की अर्जन-क्षमता बनाए रखता है
उदाहरण: मशीन, कार, फर्नीचर का क्रय	उदाहरण: मरम्मत एवं रख-रखाव, कर्मचारियों का वेतन

मानक पूंजीगत निर्णय (Illus. 1, 2, 6, 8): सिनेमा-गृह के निर्माण के लिए आवश्यक अस्थायी झोपड़ियाँ (निर्माण लागत का भाग); पुरानी खरीदी मशीन का overhaul (उसे कार्यशील दशा में लाना — स्थायी लाभ); खरीदे गए पुराने भवन की पहली बार मरम्मत/सफेदी; सिनेमा चलाने/कारखाना आरम्भ करने का licence (व्यवसाय चलाने का अधिकार, पूर्व-परिचालन, जो amortise होता है); परिचालन-व्यय घटाने पर किया गया व्यय (दीर्घकालिक लाभ); ईंधन-दक्षता के लिए rings और pistons बदलना (सुधार — लागत घटाकर अर्जन-क्षमता बढ़ाता है); उसी स्थल पर बड़ा भवन बनाने के लिए पुराने भवन का ध्वंस; रेस्तराँ के cabins 10 से 13 करने वाला नवीकरण (भावी आय-क्षमता बढ़ाता है); मशीन की स्थापना पर मजदूरी/परिवहन (मशीन की लागत में जुड़ते हैं); सम्पत्ति अर्जित करने का विधिक शुल्क; तथा पूंजीगत परिसंपत्तियाँ खरीदने के लिए directors की विदेश यात्रा।

मानक राजस्वगत निर्णय: मशीन के घिसे हुए भाग का प्रतिस्थापन (रख-रखाव लागत); विद्यमान व्यवसाय की नई इकाई के उद्घाटन-व्यय (कोई स्थायी लाभ नहीं); फर्म के कारखाना-स्थल पर दावा करने वाले वाद की प्रतिरक्षा में अधिवक्ता का शुल्क (परिसंपत्ति का रख-रखाव — न कोई अतिरिक्त लाभ, न क्षमता); ग्राहकों से किस्तें वसूलने के विधिक व्यय (सामान्य आवर्ती व्यय); माल-सूची को नए स्थल पर हटाना; नियमों के उल्लंघन पर जुर्माना; तथा स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति के

अन्तर्गत श्रमिकों को दी गई क्षतिपूर्ति।

उत्तर का आधार-बिंदु: प्रत्येक 'कारण सहित बताइए' वाले उत्तर में निर्णय को स्थायी लाभ/अर्जन-क्षमता में वृद्धि (पूंजीगत) बनाम चालू अवधि के लिए विद्यमान क्षमता बनाए रखना (राजस्वगत) से जोड़िए; अगले वर्ष के लिए चुकाया गया नवीकरण शुल्क = पूर्वदत्त (अगले वर्ष का राजस्वगत); और telephone के लिए MTNL के पास जमा = परिसंपत्ति, व्यय नहीं।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 12 प्रश्न

- मानक निर्णय कारण सहित कंठस्थ कीजिए — पूंजीगत: सिनेमा-गृह के निर्माण हेतु आवश्यक अस्थायी झोपड़ियाँ; पुरानी खरीदी मशीन का overhaul; पुराने भवन की पहली बार मरम्मत; सिनेमा/कारखाना चलाने का licence; मशीन की स्थापना पर मजदूरी (मशीन में जुड़ती है, P&L में नहीं); परिचालन-व्यय घटाने पर किया गया व्यय (दीर्घकालिक लाभ); उसी स्थल पर नया कारखाना बनाने के लिए पुराने भवन का ध्वंस; तथा cabins 15 से 18 करने वाला नवीकरण।
- मानक राजस्वगत मदें कंठस्थ कीजिए: मशीन के घिसे भाग का प्रतिस्थापन (रख-रखाव); विद्यमान व्यवसाय की नई इकाई के उद्घाटन-व्यय; स्वत्व-वाद की प्रतिरक्षा में अधिवक्ता का शुल्क; तथा ग्राहकों से किस्ते वसूलने के विधिक व्यय।
- प्रत्येक 'कारण सहित बताइए' वाले उत्तर में कारण को स्थायी लाभ/अर्जन-क्षमता में वृद्धि (पूंजीगत) बनाम चालू अवधि के लिए विद्यमान क्षमता बनाए रखना (राजस्वगत) पर टिकाइए।

TQ 3.8 · MTP 2024-Aug [1] (a) (i) {C} · सत्य/असत्य · 2M · Pg 30	3× पूछा गया	LEVEL I समझ (Understanding)	सरल
TQ 3.1 · PYQ 2019-Jun [1] (a) (i) · सत्य/असत्य · 2M · Pg 27	6× पूछा गया	LEVEL I समझ (Understanding)	मध्यम
TQ 3.2 · PYQ 2019-Nov [1] (a) (ii) {C} · सत्य/असत्य · 2M · Pg 28	4× पूछा गया	LEVEL I समझ (Understanding)	मध्यम
TQ 3.3 · PYQ 2021-Dec [1] (a) {C} · सत्य/असत्य · 4M · Pg 28		LEVEL I समझ (Understanding)	मध्यम
TQ 3.4 · PYQ 2022-May [1] (a) (iv) {C} · सत्य/असत्य · 2M · Pg 29		LEVEL I समझ (Understanding)	मध्यम
TQ 3.6 · PYQ 2023-Jun [1] (a) (ii) {C} · सत्य/असत्य · 2M · Pg 30	4× पूछा गया	LEVEL I समझ (Understanding)	मध्यम
TQ 3.7 · PYQ 2023-Dec [1] (a) (v) {C} · सत्य/असत्य · 2M · Pg 30		LEVEL I समझ (Understanding)	मध्यम
TQ 3.9 · PYQ 2024-Sep [1] (a) (ii) {C} · सत्य/असत्य · 2M · Pg 31	3× पूछा गया	LEVEL I समझ (Understanding)	मध्यम
TQ 3.12 · PYQ 2026-Jan [1] (a) (i) {C} · सत्य/असत्य · 2M · Pg 34		LEVEL I समझ (Understanding)	मध्यम
TQ 3.13 · PYQ 2026-May [1] (a) (iii) {C} · सत्य/असत्य · 2M · Pg 34		LEVEL I समझ (Understanding)	मध्यम
TQ 3.5 · MTP 2022-Nov S1 [6] (c) · वर्णनात्मक · 5M · Pg 29	2× पूछा गया	LEVEL I समझ (Understanding)	
TQ 3.10 · MTP 2025-Jan S2 [1] (a) (iii) {C} · सत्य/असत्य · 2M · Pg 31	2× पूछा गया	LEVEL I समझ (Understanding)	

अनुप्रयोग (Application) प्रक्रिया का अभ्यास कीजिए · 1 प्रश्न

- 5-6 मर्दों की classification सूचियों का अभ्यास कीजिए: engine के स्थान पर CNG kit, पूंजीगत परिसंपत्ति खरीदने हेतु directors की विदेश यात्रा, कारखाना क्षेत्र में railway tracks का विस्तार, ईंधन-दक्षता के लिए rings और pistons बदलना, माल-सूची को नए स्थल पर हटाना।
- प्रत्येक मद के सामने एक पंक्ति में कारण लिखिए; सीमावर्ती मदों पर Para 3.2 की कसौटियाँ लगाइए (उद्देश्य, स्थायी लाभ, क्षमता-वृद्धि बनाम रख-रखाव)।

TQ 3.11 · RTP 2026-Jan [3] (b) · वर्णनात्मक · Pg 31 17× पूछा गया

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

मध्यम

विषय 4: पूंजीगत प्राप्तियाँ और राजस्व प्राप्तियाँ

P1-C1-U1.3-T04 · Capital Receipts and Revenue Receipts

पहले पढ़ें Para 3.4 पढ़िए: राजस्वगत प्राप्तियाँ सामान्य व्यावसायिक गतिविधियों से उठती हैं और P&L में क्रेडिट होती हैं; पूंजीगत प्राप्तियाँ (स्थायी परिसंपत्तियों/निवेशों का विक्रय, ऋण, स्वामियों का अंशदान) सीधे P&L में क्रेडिट नहीं होतीं — केवल लाभ/हानि का अंश P&L में जाता है। Illustrations 4 और 7 में परीक्षा के उदाहरण दिए हैं।

नोट्स

नियम (Para 3.4): सामान्य व्यावसायिक गतिविधियों के क्रम में मिलने वाली प्राप्तियाँ राजस्वगत हैं (माल अथवा सेवाओं का विक्रय, ब्याज आय) — इनकी मान्यता उपार्जन आधार पर तभी हो जाती है जब प्राप्ति का अधिकार स्थापित हो जाए, अतः ये वास्तव में मिली नकद राशि के बराबर नहीं होतीं, और ये P&L में क्रेडिट होती हैं; जो प्राप्तियाँ राजस्वगत प्रकृति की नहीं हैं वे पूंजीगत हैं (स्थायी परिसंपत्तियों अथवा निवेशों का विक्रय, प्रतिभूत/अप्रतिभूत ऋण, स्वामियों का अंशदान) — ये तुलन-पत्र में जाती हैं, सीधे P&L में क्रेडिट नहीं होतीं।

केवल लाभ का अंश P&L में: ₹90,000 की लागत वाली स्थायी परिसंपत्ति ₹92,000 में बिकी — ₹92,000 पूंजीगत प्राप्ति है, किन्तु ₹2,000 का लाभ (प्राप्ति – पुस्तक-मूल्य) निकालकर P&L में क्रेडिट होता है; इसी प्रकार ₹10 लाख पुस्तक-मूल्य वाली मशीन ₹12 लाख में बिकने पर ₹2 लाख का लाभ।

वर्गीकरण के निर्णय (Illus. 4, 7 तथा MCQs): पूंजीगत — share premium, आग से क्षतिग्रस्त/नष्ट machinery का बीमा दावा, सावधि जमा की परिपक्वता राशि (जमा की वापसी), IDBI से मध्यम अवधि का ऋण चाहे वह कार्यशील पूंजी के लिए ही क्यों न हो, तथा प्रवेश/आजीवन सदस्यता शुल्क (अनावर्ती); राजस्वगत — नकद विक्रय, व्यापारिक प्राप्य से मिली राशि (विद्यमान परिसंपत्ति की वसूली), निवेशों/सावधि जमा पर ब्याज, तथा कार्यशील पूंजी के लिए सरकारी सहायता (subsidy)।

प्रस्तुति: पूंजीगत प्राप्तियाँ तुलन-पत्र में जाती हैं; राजस्वगत प्राप्तियाँ P&L के क्रेडिट में; और प्राप्ति एवं भुगतान खाता पूंजीगत तथा राजस्वगत — दोनों मर्दें दर्ज करता है।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 7 प्रश्न

- अधिकार पाने योग्य सत्य/असत्य निर्णय: आजीवन सदस्यता शुल्क पूंजीगत प्राप्ति है (अनावर्ती); आग से पूर्णतः नष्ट machinery का बीमा दावा पूंजीगत प्राप्ति है; कार्यशील पूंजी के लिए सरकार से मिली subsidy राजस्वगत प्राप्ति है; कार्यालय

के फर्नीचर का विक्रय पूंजीगत प्राप्ति है — P&L में केवल विक्रय पर लाभ (प्राप्ति में से पुस्तक-मूल्य घटाकर) क्रेडिट होता है, पूरी राशि नहीं।

- पूंजीगत परिसंपत्ति के विक्रय पर लाभ शुद्ध लाभ निकालते समय P&L में क्रेडिट होता ही है (जैसे ₹90,000 की लागत वाली परिसंपत्ति ₹92,000 में बिकने पर ₹2,000 का लाभ P&L में), भले ही ₹92,000 की प्राप्ति स्वयं पूंजीगत हो।
- परिभाषा वाला प्रश्न: राजस्वगत प्राप्तियाँ सामान्य व्यवसाय के क्रम में उठती हैं (माल/सेवाओं का विक्रय, ब्याज आय), उपार्जन आधार पर मान्यता पाती हैं — अर्थात् मिली नकद राशि के बराबर नहीं होतीं — और P&L में क्रेडिट होती हैं; तथा ध्यान रखिए कि प्राप्ति एवं भुगतान खाता पूंजीगत और राजस्वगत — दोनों मर्दे दर्ज करता है (सत्य)।

TQ 4.1 · PYQ 2018-Nov [1] (a) (iii) {C} · सत्य/असत्य · 2M · Pg 35	2× पूछा गया	LEVEL I समझ (Understanding)	सरल
TQ 4.2 · PYQ 2020-Nov [1] (a) (iii) {C} · सत्य/असत्य · 2M · Pg 35	2× पूछा गया	LEVEL I समझ (Understanding)	सरल
TQ 4.5 · PYQ 2022-Nov [1] (a) (v) {C} · सत्य/असत्य · 2M · Pg 36		LEVEL I समझ (Understanding)	सरल
TQ 4.3 · PYQ 2021-Jan [1] (a) (ii) {C} · सत्य/असत्य · 2M · Pg 35	4× पूछा गया	LEVEL I समझ (Understanding)	मध्यम
TQ 4.4 · RTP 2022-May [1] (i) · सत्य/असत्य · Pg 36		LEVEL I समझ (Understanding)	मध्यम
TQ 4.6 · RTP 2022-Nov [2] (b) · वर्णनात्मक · Pg 36	3× पूछा गया	LEVEL I समझ (Understanding)	मध्यम
TQ 4.7 · RTP 2025-Jan [1] (ii) · सत्य/असत्य · Pg 37	2× पूछा गया	LEVEL I समझ (Understanding)	मध्यम

अनुप्रयोग (Application) प्रक्रिया का अभ्यास कीजिए · 1 प्रश्न

- मिश्रित सूचियों के वर्गीकरण का अभ्यास कीजिए: share premium (पूंजीगत), देनदारों से प्राप्त राशि (राजस्वगत — विद्यमान परिसंपत्ति की वसूली), क्षतिग्रस्त machinery पर insurance claim (पूंजीगत), fixed deposit की परिपक्वता (पूंजीगत) बनाम उस पर ब्याज (राजस्वगत)।
- लेबल के साथ व्यवहार भी बताइए: पूंजीगत प्राप्तियाँ Balance Sheet में जाती हैं; राजस्वगत प्राप्तियाँ P&L के क्रेडिट में।

TQ 4.8 · RTP 2025-Jan [3] (b) · वर्णनात्मक · Pg 37

5× पूछा गया
LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

मध्यम

इकाई 1.4: आकस्मिक परिसंपत्तियाँ और आकस्मिक देयताएँ

Contingent Assets and Contingent Liabilities

P1-C1-U1.4 · महत्त्व D · अध्याय में Rank 4 · श्रेणी C · अध्याय के 8.3% प्रश्न · 6 प्रश्न

विषय 1: आकस्मिक परिसंपत्ति

P1-C1-U1.4-T01 · Contingent Asset

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §4.1 पढ़िए: आकस्मिक परिसंपत्ति की परिभाषा, विवेकशीलता के कारण उसकी अमान्यता, तथा उसका प्रकटीकरण।

नोट्स

परिभाषा: आकस्मिक परिसंपत्ति वह सम्भावित परिसंपत्ति है जो विगत घटनाओं से उत्पन्न होती है और जिसका अस्तित्व एक या अधिक अनिश्चित भावी घटनाओं के घटित होने अथवा न होने पर ही पुष्ट होगा, और वे घटनाएँ पूर्णतः संस्था के नियंत्रण में नहीं होतीं — यह प्रायः अनियोजित/अप्रत्याशित घटनाओं से उठती है, जिनसे आर्थिक लाभों के अन्तर्वाह की सम्भावना बनती है; जैसे वह दावा जिसे संस्था विधिक प्रक्रिया से आगे बढ़ा रही है और जिसका परिणाम अनिश्चित है।

व्यवहार: विवेकशीलता तथा वर्तमान लेखांकन मानकों के अनुसार संस्था को आकस्मिक परिसंपत्ति की मान्यता नहीं देनी चाहिए (मान्यता से ऐसी आय दर्ज हो सकती है जो कभी वसूल ही न हो) और उसे वित्तीय विवरणों में प्रकट करना भी आवश्यक नहीं — यदि आर्थिक लाभों का अन्तर्वाह सम्भाव्य हो तो उसे सामान्यतः अनुमोदन-प्राधिकारी (कंपनी में निदेशक मंडल) के प्रतिवेदन में प्रकट किया जाता है।

निरन्तर आकलन: आकस्मिक परिसंपत्तियों का आकलन निरन्तर होता रहता है — जब अन्तर्वाह लगभग निश्चित हो जाए तब वह आकस्मिक नहीं रहती, और उस परिसंपत्ति तथा सम्बन्धित आय की मान्यता उसी अवधि के वित्तीय विवरणों में दी जाती है जिसमें यह परिवर्तन होता है।

विषय 2: आकस्मिक देयताएँ

P1-C1-U1.4-T02 · Contingent Liabilities

पहले पढ़ें Paras 4.1 और 4.2 पढ़िए — आकस्मिक देयता की दो-भागीय परिभाषा, आकस्मिक परिसंपत्ति की परिभाषा, तथा दोनों का व्यवहार (मान्यता नहीं; आकस्मिक देयता notes to accounts में प्रकट, और आकस्मिक परिसंपत्ति अनुमोदन-प्राधिकारी के प्रतिवेदन में जब अन्तर्वाह सम्भाव्य हो)।

नोट्स

आकस्मिक देयता (SM, दो भाग): “(a) वह सम्भावित दायित्व जो विगत घटनाओं से उत्पन्न होता है और जिसका अस्तित्व केवल एक या अधिक अनिश्चित भावी घटनाओं के घटित होने अथवा न होने से पुष्ट होगा, और वे घटनाएँ पूर्णतः संस्था के नियंत्रण में नहीं हैं; अथवा (b) वह वर्तमान दायित्व जो विगत घटनाओं से उत्पन्न होता है किन्तु मान्यता नहीं पाता, क्योंकि (i) दायित्व के निपटान के लिए आर्थिक लाभ वाले साधनों का बहिर्वाह सम्भाव्य नहीं है, अथवा (ii) दायित्व की राशि का विश्वसनीय अनुमान नहीं लगाया जा सकता।”

आकस्मिक परिसंपत्ति (SM): “वह सम्भावित परिसंपत्ति जो विगत घटनाओं से उत्पन्न होती है और जिसका अस्तित्व एक या अधिक अनिश्चित भावी घटनाओं के घटित होने अथवा न होने पर ही पुष्ट होगा, और वे घटनाएँ पूर्णतः संस्था के नियंत्रण में नहीं हैं” — यह अनियोजित/अप्रत्याशित घटनाओं से उठती है, जिनसे आर्थिक लाभों के अन्तर्वाह की सम्भावना बनती है; जैसे जिस दावे को संस्था विधिक प्रक्रिया से आगे बढ़ा रही है और जिसका परिणाम अनिश्चित है, वह

आकस्मिक परिसंपत्ति है (आकस्मिक देयता नहीं — संस्था के विरुद्ध किया गया दावा देयता होगा)।

व्यवहार: आकस्मिक देयता तुलन-पत्र में कभी मान्यता नहीं पाती, किन्तु notes to accounts में प्रकट की जाती है — केवल तब नहीं जब बहिर्वाह की सम्भावना नगण्य हो; इसका आकलन निरन्तर होता है — यदि बहिर्वाह सम्भाव्य हो जाए तो जिस अवधि में सम्भाव्यता बदली उसी में प्रावधान की मान्यता दी जाती है (सिवाय उस दशा के जहाँ विश्वसनीय अनुमान सम्भव न हो); उदाहरण — ऐसे दावे जिन्हें ऋण के रूप में स्वीकार नहीं किया गया, तीसरे पक्षों के लिए दी गई गारंटियाँ, भुनाए गए बिल, तथा विवादित सांविधिक देयताएँ।

आकस्मिक परिसंपत्ति का व्यवहार (विवेकशीलता): इसे कभी मान्यता नहीं दी जाती — मान्यता से ऐसी आय आ सकती है जो कभी वसूल न हो; इसे वित्तीय विवरणों में प्रकट करना आवश्यक नहीं, किन्तु अन्तर्वाह सम्भाव्य हो तो सामान्यतः अनुमोदन-प्राधिकारी (कंपनी में निदेशक मंडल) के प्रतिवेदन में प्रकट किया जाता है; इसका आकलन निरन्तर होता है और वसूली लगभग निश्चित होने पर ही सम्बन्धित आय सहित उसे मान्यता मिलती है (तब वह आकस्मिक नहीं रह जाती)।

स्मरण (Remembering) कंठस्थ कीजिए · 1 प्रश्न

- परिभाषा: आकस्मिक देयता (a) विगत घटनाओं से उत्पन्न वह सम्भावित दायित्व है जिसकी पुष्टि केवल ऐसी अनिश्चित भावी घटनाओं से होगी जो पूर्णतः संस्था के नियंत्रण में नहीं हैं, अथवा (b) वह वर्तमान दायित्व है जिसे मान्यता नहीं मिलती, क्योंकि बहिर्वाह सम्भाव्य नहीं है या राशि का विश्वसनीय अनुमान सम्भव नहीं।
- आकस्मिक परिसंपत्ति: विगत घटनाओं से उत्पन्न वह सम्भावित परिसंपत्ति जिसका अस्तित्व अनिश्चित भावी घटनाओं से पुष्ट होता है — इसे कभी मान्यता नहीं दी जाती (विवेकशीलता); अन्तर्वाह सम्भाव्य हो तो अनुमोदन-प्राधिकारी (Board) के प्रतिवेदन में प्रकट; और मान्यता तभी, जब वसूली लगभग निश्चित हो जाए।
- व्यवहार: आकस्मिक देयता notes में प्रकट होती है, केवल तब नहीं जब बहिर्वाह की सम्भावना नगण्य हो; बाद में बहिर्वाह सम्भाव्य हो जाए तो उसी अवधि में प्रावधान की मान्यता दी जाती है; उदाहरण — ऋण के रूप में अस्वीकृत दावे, गारंटियाँ, भुनाए गए बिल, तथा विवादित सांविधिक देयताएँ।

TQ 2.2 · PYQ 2021-Dec [1] (c) · संक्षिप्त टिप्पणी · 2M · Pg 43 3× पूछा गया

LEVEL I
स्मरण (Remembering)

सरल

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 1 प्रश्न

- सत्य/असत्य का जाल: जिस दावे को संस्था स्वयं विधिक प्रक्रिया से आगे बढ़ा रही है और जिसका परिणाम अनिश्चित है, वह contingent ASSET है, contingent liability नहीं (संस्था के विरुद्ध किया गया दावा देयता होगा)।
- समझाइए कि prudence contingent assets की मान्यता से क्यों रोकता है — इससे ऐसी आय दर्ज हो सकती है जो कभी वसूल ही न हो।

TQ 2.1 · PYQ 2022-May [1] (a) (i) {C} · सत्य/असत्य · 2M · Pg 42 3× पूछा गया

LEVEL I
समझ (Understanding)

मध्यम

विषय 3: देयताओं और आकस्मिक देयताओं में अंतर

P1-C1-U1.4-T03 • Distinction Between Contingent Liabilities and Liabilities

पहले पढ़ें Para 4.3 पढ़िए — देयता विगत घटनाओं से उत्पन्न वर्तमान वित्तीय दायित्व है, जिसके निपटान से साधनों का बहिर्वाह होता है; इसकी तुलना आकस्मिक देयता की परिभाषा से कीजिए।

नोट्स

दो पंक्तियों का अन्तर (Para 4.3): देयता संस्था का वह वर्तमान वित्तीय दायित्व है जो विगत घटनाओं से उत्पन्न होता है और जिसके निपटान से आर्थिक लाभ वाले साधनों का बहिर्वाह होता है; आकस्मिक देयता में या तो निपटान के लिए साधनों का बहिर्वाह सम्भाव्य नहीं होता, या राशि का पर्याप्त विश्वसनीयता से मापन नहीं हो पाता — यह अन्तर प्रबन्ध के विवेक पर टिका है।

देयता	आकस्मिक देयता
विगत घटनाओं से उत्पन्न वर्तमान वित्तीय दायित्व	सम्भावित दायित्व, अथवा वह वर्तमान दायित्व जो मान्यता की कसौटियाँ पूरी न करे
निपटान से आर्थिक लाभों का बहिर्वाह होगा	बहिर्वाह सम्भाव्य नहीं, अथवा राशि विश्वसनीय रूप से मापन-योग्य नहीं
तुलन-पत्र में मान्यता पाती है	केवल तुलन-पत्र की notes में प्रकट की जाती है

आकस्मिक देयताओं के उदाहरण: संस्था के विरुद्ध ऐसे दावे जिन्हें ऋण के रूप में स्वीकार नहीं किया गया, तीसरे पक्षों के सम्बन्ध में दी गई गारंटियाँ, भुनाए गए बिलों की देयता, तथा विवादित सांविधिक देयताएँ।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए • 1 प्रश्न

- अन्तर दो पंक्तियों में बताइए: देयता = विगत घटनाओं से उत्पन्न वर्तमान दायित्व, जिसके निपटान से आर्थिक लाभों का बहिर्वाह होगा; आकस्मिक देयता = जहाँ या तो बहिर्वाह सम्भाव्य नहीं है, या राशि का पर्याप्त विश्वसनीयता से मापन सम्भव नहीं।
- प्रस्तुति भी जोड़िए: देयताएँ तुलन-पत्र में मान्यता पाती हैं; आकस्मिक देयताएँ केवल notes के माध्यम से प्रकट की जाती हैं।
- आकस्मिक देयताओं के उदाहरणों से पुष्टि कीजिए: ऋण के रूप में अस्वीकृत दावे, तीसरे पक्षों की गारंटियाँ, भुनाए गए बिल, तथा विवादित सांविधिक देयताएँ।

TQ 3.1 • PYQ 2025-May [1] (b) (ii) {C} • अंतर बताइए • 2M • Pg 43 **3x पूछा गया** **LEVEL I**
समझ (Understanding)

सरल

विषय 4: आकस्मिक देयताओं और प्रावधानों में अंतर

P1-C1-U1.4-T04 • Distinction Between Contingent Liabilities and Provisions

पहले पढ़ें Para 4.4 पढ़िए — प्रावधान की परिभाषा तथा प्रावधानों और आकस्मिक देयताओं में अन्तर की चार-बिंदु तालिका,

Central Excise के जुर्माने (Alpha Ltd.) के उदाहरण सहित।

नोट्स

प्रावधान (SM): “वह राशि जो मूल्यहास, नवीकरण अथवा परिसंपत्तियों के मूल्य में कमी के लिए अपलिखित या रखी जाए, अथवा किसी ऐसी ज्ञात देयता के लिए रखी जाए जिसकी राशि पर्याप्त शुद्धता से निर्धारित न की जा सके।”

प्रावधान	आकस्मिक देयता
अनिश्चित राशि की वर्तमान देयता, जिसका पर्याप्त अनुमान से विश्वसनीय मापन हो सकता है	सम्भावित दायित्व, जो अनिश्चित भावी घटनाओं पर मूर्त हो भी सकता है और नहीं भी
मान्यता की कसौटियाँ पूरी करता है	मान्यता की कसौटियाँ पूरी नहीं करती
मान्यता तब, जब वर्तमान दायित्व हो, बहिर्वाह सम्भाव्य हो और विश्वसनीय अनुमान सम्भव हो	इसमें वे वर्तमान दायित्व भी हैं जहाँ बहिर्वाह सम्भाव्य नहीं या राशि विश्वसनीय रूप से अनुमेय नहीं
बहिर्वाह सम्भाव्य — तुलन-पत्र में प्रावधान की मान्यता	बहिर्वाह की सम्भावना कम — आकस्मिक देयता के रूप में प्रकटीकरण

Alpha Ltd. का उदाहरण: Central Excise अधिकारी जुर्माना लगाता है और कंपनी अपील करती है — यदि प्रबन्ध का अनुमान हो कि भुगतान सम्भाव्य है तो वह प्रावधान की मान्यता देगी; और यदि उसे अपीलीय निर्णय अनुकूल आने की आशा हो (भुगतान की सम्भावना कम) तो वह उसके स्थान पर आकस्मिक देयता प्रकट करेगी।

सत्य/असत्य का जाल: ‘अनिश्चित राशि का वह वर्तमान वित्तीय दायित्व जिसका पर्याप्त अनुमान से मापन हो सके, देयता है’ — असत्य, यह तो प्रावधान की परिभाषा है; ‘जब दायित्व का भुगतान सम्भाव्य हो तब आकस्मिक देयता बनती है’ — असत्य, तब प्रावधान बनता है।

छाँटने का सामान्य नियम: ज्ञात देयता जिसकी राशि अनुमेय हो = प्रावधान (संदिग्ध ऋणों का प्रावधान, मूल्यहास, करधान) — ये लाभ पर प्रभार हैं; लाभ के विनियोजन (प्रस्तावित लाभांश, प्रतिधारित लाभ) संचितियाँ/विनियोजन हैं, प्रावधान नहीं; और निर्धारित दायित्व (जैसे निर्धारित आयकर की देयता) वास्तविक देयताएँ हैं।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 2 प्रश्न

- चार-बिंदु अन्तर: प्रावधान अनिश्चित राशि की वह वर्तमान देयता है जिसका पर्याप्त अनुमान से विश्वसनीय मापन हो सकता है और जो मान्यता की कसौटियाँ पूरी करती है; आकस्मिक देयता वह सम्भावित दायित्व है जो मूर्त हो भी सकता है और नहीं भी, और जो मान्यता की कसौटियाँ पूरी नहीं करता।
- मान्यता का तर्क: बहिर्वाह सम्भाव्य + विश्वसनीय अनुमान = तुलन-पत्र में प्रावधान की मान्यता; बहिर्वाह की सम्भावना कम अथवा राशि विश्वसनीय रूप से अनुमेय नहीं = आकस्मिक देयता के रूप में प्रकटीकरण।
- सत्य/असत्य का जाल: ‘अनिश्चित राशि का वह वर्तमान वित्तीय दायित्व जिसका पर्याप्त अनुमान से मापन हो सके, देयता है’ — असत्य; यह प्रावधान की परिभाषा है (वास्तविक देयता का दायित्व निर्धारित होता है)।

TQ 4.1 · PYQ 2022-Nov [1] (b) {C} · अंतर बताइए · 4M · Pg 44 5x पूछा गया	LEVEL I समझ (Understanding)	मध्यम
TQ 4.2 · PYQ 2026-Jan [1] (a) (iii) {C} · सत्य/असत्य · 2M · Pg 45	LEVEL I समझ (Understanding)	मध्यम

अनुप्रयोग (Application) प्रक्रिया का अभ्यास कीजिए · 1 प्रश्न

- दी गई P&L/appropriation मदों की सूची (आयकर की देयता, प्रतिधारित लाभ, प्रस्तावित लाभांश, संदिग्ध ऋणों का प्रावधान, मूल्यहास आदि) को कारण सहित provisions, liabilities और reserves/appropriations में छाँटने का अभ्यास कीजिए।
- ऐसे प्रश्नों का सामान्य नियम: ज्ञात देयता जिसकी राशि आकलित की जा सके = provision; लाभ पर प्रभार (मूल्यहास, संदिग्ध ऋण, कर) बनाम लाभ का विनियोजन (प्रस्तावित लाभांश, प्रतिधारित लाभ)।

PQ 4.1 · PYQ 2021-Jul [5] (b) (ii) · व्यावहारिक · 5M · Pg 46 2x पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	मध्यम
---	--	--------------

इकाई 1.5: लेखांकन नीतियाँ

Accounting Policies

P1-C1-U1.5 · महत्त्व D · अध्याय में Rank 5 · श्रेणी C · अध्याय के 6.9% प्रश्न · 5 प्रश्न

विषय 1: लेखांकन नीतियों का अर्थ

P1-C1-U1.5-T01 · Meaning of Accounting Policies

पहले पढ़ें Para 5.1 पढ़िए — लेखांकन नीतियों की परिभाषा तथा वे क्षेत्र जहाँ भिन्न-भिन्न नीतियाँ मिलती हैं (माल-सूची का मूल्यांकन, निवेशों का मूल्यांकन), और साथ में नीतियों के चयन पर Para 5.2।

नोट्स

परिभाषा (Para 5.1): “लेखांकन नीतियों से आशय उन विशिष्ट लेखांकन सिद्धांतों तथा उन सिद्धांतों को लागू करने की उन विधियों से है, जिन्हें संस्था वित्तीय विवरणों के निर्माण और प्रस्तुति में अपनाती है” — ये इकाई 2 की लेखांकन अवधारणाओं, सिद्धांतों और परम्पराओं पर ही टिकी हैं।

कोई सार्वभौमिक सूची नहीं: संस्थाएँ विविध और जटिल परिस्थितियों में कार्य करती हैं, अतः परिस्थिति के अनुरूप नीति चुनने में प्रबन्ध को सोच-समझकर विवेक लगाना पड़ता है; प्रायः मिलने वाले क्षेत्र — माल-सूची का मूल्यांकन, निवेशों का मूल्यांकन (ये उदाहरण हैं, पूरी सूची नहीं); जैसे अंशों/माल-सूची के मूल्यांकन के लिए FIFO अथवा भारित औसत चुनना लेखांकन नीति ही है; और ICAI मार्गदर्शन-नोट्स तथा लेखांकन मानकों के माध्यम से स्वीकार्य विकल्पों की संख्या घटाता है।

चयन (Para 5.2): चयन और प्रयोग को तीन प्रमुख विशेषताएँ दिशा देती हैं — विवेकशीलता, स्वरूप पर सार का प्राधान्य (substance over form), तथा तात्त्विकता; चुनी गई नीतियाँ तुलन-पत्र और P&L का सत्य और उचित चित्र दिखाने वाली होनी चाहिए; अनुपयुक्त चयन से निष्पादन और स्थिति कम भी दिख सकती है और अधिक भी; अपनाए गए व्यवहार का

प्रकटीकरण हर दशा में आवश्यक है, किन्तु प्रकटीकरण गलत या अनुपयुक्त व्यवहार को ठीक नहीं कर सकता।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 1 प्रश्न

- समझाने योग्य परिभाषा: लेखांकन नीतियाँ वे विशिष्ट लेखांकन सिद्धांत तथा उन सिद्धांतों को लागू करने की वे विधियाँ हैं, जिन्हें संस्था वित्तीय विवरणों के निर्माण और प्रस्तुति में अपनाती है।
- समझाइए कि नीतियों की कोई एक सार्वभौमिक सूची नहीं होती — संस्थाएँ विविध परिस्थितियों में कार्य करती हैं, अतः प्रबन्ध को विवेक लगाना पड़ता है (जैसे माल-सूची/निवेश के मूल्यांकन में FIFO बनाम भारित औसत का चयन नीति का ही प्रश्न है)।
- चयन को दिशा देने वाली तीन प्रमुख विशेषताएँ जानिए — विवेकशीलता, स्वरूप पर सार का प्राधान्य, तात्त्विकता — और यह भी कि चुनी गई नीतियाँ सत्य और उचित चित्र देने वाली हों; प्रकटीकरण गलत व्यवहार को ठीक नहीं कर सकता।

TQ 1.1 · PYQ 2005-Nov [3] (b) · वर्णनात्मक · 3M · Pg 50 **2× पूछा गया**

LEVEL I
समझ (Understanding)

सरल

विषय 2: लेखांकन नीतियों का चयन

P1-C1-U1.5-T02 · Selection of Accounting Policies

पहले पढ़ें §5.2 पढ़िए: लेखांकन नीतियों के चयन को शासित करने वाली तीन विशेषताएँ तथा Study Material के उदाहरण।

नोट्स

महत्त्व: लेखांकन नीति का चयन निष्पादन के मापन और वित्तीय स्थिति — दोनों को प्रभावित करता है; अनुपयुक्त नीति से दोनों कम अथवा अधिक दिख सकते हैं, इसलिए नीतियाँ खातों के विभिन्न उपयोगकर्ताओं की दृष्टि से प्रभाव देखकर पूरी सावधानी से चुननी चाहिए; और सार्वभौमिक प्रयोग वाली नीतियों की कोई एकीकृत तथा सर्वांगपूर्ण सूची सुझाई नहीं जा सकती।

तीन प्रमुख विशेषताएँ: विवेकशीलता, स्वरूप पर सार का प्राधान्य, तथा तात्त्विकता — वित्तीय विवरण उन्हीं लेखांकन नीतियों पर बनने चाहिए जो तुलन-पत्र तथा P&L A/c की स्थिति का सत्य और उचित चित्र प्रस्तुत करें।

उदाहरण और चेतावनी: माल-सूची लागत पर मूल्यांकित, किन्तु तैयार माल (लागत अथवा बाजार मूल्य, जो कम हो) और उप-उत्पाद (शुद्ध वसूली-योग्य मूल्य) पर; दीर्घकालिक निवेश अर्जन-लागत पर, स्थायी कमी के लिए प्रावधान सहित — अपनाए गए व्यवहार का प्रकटीकरण हर दशा में आवश्यक है, पर प्रकटीकरण किसी गलत या अनुपयुक्त व्यवहार को ठीक नहीं कर सकता।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 1 प्रश्न

- Selection logic कारण सहित समझें।
- (Changes in लेखांकन नीतियाँ (Accounting नीतियाँ))

TQ 2.1 · PYQ 2026-Sep [1] (a) (i) · सत्य/असत्य · 2M · Pg 51

LEVEL I
समझ (Understanding)

विषय 3: लेखांकन नीतियों में परिवर्तन

P1-C1-U1.5-T03 • Change in Accounting Policies

पहले पढ़ें Para 5.3 पढ़िए — लेखांकन नीति में परिवर्तन की अनुमति देने वाली दो शर्तें तथा परिवर्तन के तात्त्विक प्रभाव के परिमाणन की अपेक्षा, माल-सूची की लागत-सूत्र वाली दशा और Omega Enterprises के उदाहरण सहित।

नोट्स

परिवर्तन की दो शर्तें (Para 5.3): (a) यह किसी संविधि द्वारा अपेक्षित हो अथवा किसी लेखांकन मानक के अनुपालन के लिए आवश्यक हो; (b) परिवर्तन से वित्तीय विवरणों की अधिक उपयुक्त प्रस्तुति हो।

तात्त्विक प्रभाव का परिमाणन आवश्यक: परिवर्तन विवरणों की मदों को तात्त्विक रूप से प्रभावित कर सकता है — जैसे माल-सूची का लागत-सूत्र भारित औसत से FIFO करना, पहले पूंजीकृत न किए गए ब्याज को पूंजीकृत करना, अथवा माल-सूची पर समानुपातिक ब्याज प्रभारित करना — इनसे शुद्ध लाभ बढ़ या घट सकता है; जब तक प्रभाव का परिमाणन (परिसंपत्तियों, देयताओं, लाभ/हानि पर) न हो, विवरण उपयोगकर्ताओं के काम नहीं आएँगे; Omega Enterprises का उदाहरण — अधिक उपयुक्त प्रस्तुति के लिए माल-सूची मूल्यांकन की नीति में संशोधन करके लागू उत्पादन-उपरिव्ययों को सम्मिलित करना।

4 अंक के उत्तर का ढाँचा: लेखांकन नीतियों की परिभाषा + चयन की तीन विशेषताएँ (विवेकशीलता, स्वरूप पर सार का प्राधान्य, तात्त्विकता) + परिवर्तन की अनुमति देने वाली दो शर्तें।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए • 3 प्रश्न

- परीक्षा-मानक दो शर्तें: (a) संविधि द्वारा अपेक्षित हो अथवा किसी लेखांकन मानक के अनुपालन के लिए आवश्यक हो; (b) परिवर्तन से वित्तीय विवरणों की अधिक उपयुक्त प्रस्तुति हो।
- उदाहरण सहित समझाइए कि परिवर्तन वित्तीय विवरणों की मदों को तात्त्विक रूप से बदल सकता है: माल-सूची का मूल्यांकन भारित औसत से FIFO करना, अथवा ब्याज का पूंजीकरण आरम्भ करना, लाभ बढ़ा या घटा सकता है — इसीलिए प्रभाव का परिमाणन और प्रकटीकरण आवश्यक है, अन्यथा विवरण उपयोगकर्ताओं के काम नहीं आएँगे।
- संयुक्त 4 अंक वाले प्रश्न में उत्तर इस क्रम में लिखिए: लेखांकन नीतियों की परिभाषा + चयन की तीन विशेषताएँ (विवेकशीलता, स्वरूप पर सार का प्राधान्य, तात्त्विकता) + परिवर्तन की दो शर्तें।

TQ 3.1 • PYQ 2024-Jun [1] (b) (i) {C} • वर्णनात्मक • 2M • Pg 52

LEVEL I
समझ (Understanding)

सरल

TQ 3.2 • RTP 2025-Jan [2] (b) • वर्णनात्मक • Pg 52

LEVEL I
समझ (Understanding)

मध्यम

TQ 3.3 • PYQ 2026-May [1] (b) {C} • वर्णनात्मक • 4M • Pg 52

LEVEL I
समझ (Understanding)

मध्यम

इकाई 1.6: मापन-विषय के रूप में लेखांकन

Accounting as a Measurement Discipline

P1-C1-U1.6 • महत्त्व D • अध्याय में Rank 7 • श्रेणी C • अध्याय के 1.4% प्रश्न • 1 प्रश्न

विषय 1: मापन का अर्थ

P1-C1-U1.6-T01 · Meaning of Measurement

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §6.1 पढ़िए: मापन की Chambers तथा Kohler वाली परिभाषाएँ और उसके तीन मूल तत्त्व।

नोट्स

परिभाषा: Prof. R. J. Chambers ने मापन को “वस्तुओं और घटनाओं को उन नियमों के अनुसार संख्याएँ प्रदान करना, जो मापी जाने वाली विशेषता, प्रयुक्त पैमाने और इकाई के आयाम को निर्दिष्ट करते हैं” कहा; और Kohler ने इसे किसी अन्वेषण-योजना के परिणामों को तार्किक अथवा गणितीय नियमों के अनुसार क्रमसूचक (position — पहला, दूसरा) अथवा गणनासूचक (कितने — एक, दो) संख्याओं की प्रणाली प्रदान करना बताया।

तीन तत्त्व: (1) मापी जाने वाली वस्तुओं और घटनाओं की पहचान; (2) प्रयुक्त होने वाले मानक अथवा पैमाने का चयन; (3) उस मापन-मानक अथवा पैमाने के आयाम का मूल्यांकन — यह आकलन करने के लिए कि लेखांकन कहाँ तक मापन-विषय है, Chambers की परिभाषा ही व्यापक रूप से प्रयुक्त होती है।

विषय 2: मापे जाने वाले Objects/Events

P1-C1-U1.6-T02 · Objects or Events to be Measured

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §6.2 पढ़िए: लेखांकन किसका मापन करता है, और भावी घटनाओं का पूर्वानुमान मापन क्यों नहीं है।

नोट्स

मापन की वस्तु — सूचना: लेखांकन में मूलतः “सूचना” का मापन सम्मिलित है — निर्णयकर्ताओं को विगत, वर्तमान और भावी सूचना चाहिए (बाह्य उपयोगकर्ताओं को सामान्यतः विगत सूचना ही मिलती है), और निर्णय के लिए आवश्यक घटनाओं/लेन-देनों का कोई एक समान समूह नहीं होता (जैसे रोकड़-प्रबन्ध के लिए प्राप्तियों/व्ययों के आँकड़े चाहिए, और ऋण देने के लिए ऋण-सेवा की सामर्थ्य)।

सीमा: विगत और वर्तमान वस्तुओं तथा घटनाओं का किसी हद तक शुद्धता से मापन हो सकता है, किन्तु भावी घटनाओं का केवल पूर्वानुमान होता है, मापन नहीं — फिर भी पूर्वानुमान लेखांकन सूचना का आवश्यक अंग है।

विषय 3: मापन का Standard/Scale

P1-C1-U1.6-T03 · Standard or Scale of Measurement

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §6.3 पढ़िए: मापन के पैमाने के रूप में मुद्रा, और उसका कोई सार्वभौमिक मूल्यवर्ग न होना।

नोट्स

पैमाने के रूप में मुद्रा: लेखांकन में मापन का पैमाना मुद्रा है (मुद्रा-मापन अवधारणा), यद्यपि पूरक के रूप में मात्रात्मक सूचना भी दी जाती है; मुद्रा का कोई सार्वभौमिक मूल्यवर्ग नहीं होता — वह देश की प्रचलित मुद्रा का रूप ले लेती है (भारत में ₹, U.K. में Pound-Sterling, U.S.A. में Dollar), और मुद्राओं के बीच विनिमय का सम्बन्ध स्थिर नहीं रहता।

अस्थिरता: \$5,000 का ऋण ₹2,50,000 पर दर्ज हुआ (\$1 = ₹50), और दर ₹55 होते ही वह ₹2,75,000 हो जाता है — मुद्रा देशों की सीमाओं के पार सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं होती और विनिमय दरों के उतार-चढ़ाव के कारण मापन का अस्थिर पैमाना है।

विषय 4: मापन-विषय का Dimension

P1-C1-U1.6-T04 · Dimension of Measurement Discipline

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §6.4 को दो वर्षों के उत्पादन/विक्रय वाले उदाहरण सहित पढ़िए: आयाम की दृष्टि से मुद्रा की अस्थिरता।

नोट्स

अस्थिरता: आदर्श पैमाना समय के साथ स्थिर रहता है (1 किलोग्राम अथवा 1 मीटर कभी नहीं बदलते), किन्तु मुद्रा ऐसी नहीं है — मूल्यों में निरन्तर परिवर्तन के कारण एक ही राशि से भिन्न तिथियों पर उतनी ही वस्तुएँ नहीं मिलतीं, अतः एक वर्ष की मुद्रा-मापित सूचना दूसरे वर्ष से तुलनीय नहीं रह जाती।

उदाहरण: विक्रय ₹5,00,000 (5,000 नग) से बढ़कर ₹5,40,000 (4,500 नग) हुआ — ऊपर से 8% की वृद्धि दिखती है, पर वास्तव में उत्पादन/विक्रय में 10% की गिरावट है और सकल लाभ भी 10% घटकर ₹1,00,000 से ₹90,000 रह गया; मौद्रिक आँकड़ों की यह वृद्धि केवल मूल्य-परिवर्तन के कारण है — इसीलिए लेखांकन यथार्थ मापन-विषय नहीं है।

विषय 5: मापन-विषय के रूप में लेखांकन

P1-C1-U1.6-T05 · Accounting as a Measurement Discipline

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §6.5 पढ़िए: लेखांकन के अंग के रूप में मापन तथा उसे शासित करने वाली आधारभूत मान्यताएँ।

नोट्स

लेखांकन में मापन: जब तक मापन का आधार तय न हो, अभिलेख-रखने का कार्य आगे नहीं बढ़ सकता — अभिलेखन, वर्गीकरण और सारांशीकरण के माध्यम से लेखांकन निष्पादन (लाभ/हानि) और वित्तीय स्थिति का मापन करता है; इस मापन उप-प्रणाली को कुछ प्रमेय शासित करते हैं, जिनमें तीन — चालू संस्था, संगति और उपार्जन — आधारभूत लेखांकन मान्यताएँ हैं और मान ली जाती हैं।

केवल मापन नहीं: सूचना का अभिलेखन, वर्गीकरण, सारांशीकरण और संप्रेषण मापन-विषय के दायरे में नहीं आते, इसलिए लेखांकन को केवल मापन-विषय नहीं कहा जा सकता; सभी लेन-देन मुद्रा के रूप में दर्ज होते हैं, और मात्रात्मक सूचना केवल पूरक होती है।

विषय 6: मूल्यांकन के सिद्धांत

P1-C1-U1.6-T06 · Valuation Principles

पहले पढ़ें Para 6.6 पढ़िए — मापन के चार सामान्यतः स्वीकृत आधार (Historical Cost, Current Cost, Realisable Value, Present Value), Mr. X की मशीन/बैंक-ऋण वाले उदाहरण सहित; और मापन के अर्थ तथा तीन तत्त्वों के लिए Para 6.1।

नोट्स

मापन (Chambers, Para 6.1): “वस्तुओं और घटनाओं को उन नियमों के अनुसार संख्याएँ प्रदान करना, जो मापी जाने वाली विशेषता, प्रयुक्त पैमाने और इकाई के आयाम को निर्दिष्ट करते हैं”; **तीन तत्त्व:** (1) मापी जाने वाली वस्तुओं और घटनाओं की पहचान, (2) प्रयुक्त मानक अथवा पैमाने का चयन, (3) उस मापन-मानक अथवा पैमाने के आयाम का मूल्यांकन; लेखांकन में पैमाना मुद्रा है, किन्तु उसमें न सार्वभौमिक प्रयोज्यता है न आयाम की स्थिरता, इसीलिए लेखांकन यथार्थ मापन-विषय नहीं है।

मापन के चार आधार (Para 6.6): (i) Historical Cost — अर्जन मूल्य: परिसंपत्तियाँ अर्जन के समय चुकाई गई नकदी/नकद-तुल्य पर (मशीन ₹7,00,000 + स्थापना ₹1,00,000 = ₹8,00,000), और देयताएँ उस राशि पर जो दायित्व के बदले प्राप्त हुई (बैंक ऋण ₹5,00,000 प्राप्ति पर दर्ज) अथवा, जैसे आयकर में, उस राशि पर जो उसे चुकाने के लिए अपेक्षित है; (ii) Current Cost — परिसंपत्तियाँ उस नकदी पर जो वही अथवा समतुल्य परिसंपत्ति आज अर्जित करने पर चुकानी पड़ती, और देयताएँ उस बिना-बट्टे वाली राशि पर जो दायित्व आज निपटाने के लिए चाहिए (मशीन ₹25,00,000; 1% पूर्व-भुगतान शुल्क सहित ऋण ₹5,05,000); (iii) Realisable Value — परिसंपत्तियाँ उस नकदी पर जो व्यवस्थित निपटान में आज बेचकर मिल सकती है (मशीन ₹20,00,000), और देयताएँ निपटान-मूल्यों पर, अर्थात् सामान्य क्रम में चुकाई जाने वाली बिना-बट्टे नकदी पर (ऋण ₹5,00,000); (iv) Present Value — परिसंपत्तियाँ सामान्य क्रम में अपेक्षित भावी शुद्ध नकद अन्तर्वाहों के वर्तमान बट्टाकृत मूल्य पर (₹1,00,000 वार्षिक × 10 वर्ष @ 20% = ₹4,19,246), और देयताएँ निपटान के लिए भावी शुद्ध नकद बहिर्वाहों के वर्तमान बट्टाकृत मूल्य पर (ऋण ₹4,70,094)।

सूत्र: बट्टाकरण: $P = A \div (1 + i)^n$ (धन का समय-मूल्य — भावी धन को आज के रूपों में घटाया जाता है); annuity: $PV = (A \div i) \times [1 - 1 \div (1 + i)^n]$ ।

सत्य/असत्य तथा व्यवहार से सम्बन्ध: 'Current cost एक वैकल्पिक मापन आधार देता है' — सत्य; 'Future value' इन चार आधारों में नहीं है; historical cost दीर्घकालिक परिसंपत्तियों (machinery, फर्नीचर, licences) के लिए प्रयुक्त होती है और परम्परागत प्रणाली historical cost लेखांकन ही है; realisable value माल-सूची पर लागू होती है (लागत और शुद्ध वसूली-योग्य मूल्य में जो कम हो); present value निवेशों और ऋणों में सामान्य है; Mohan वाला MCQ समूह — मशीन 2001 में ₹10,00,000 (historical), वैसी ही मशीन आज ₹20,00,000 (current cost), विक्रय का अनुमान ₹15,00,000 (realisable), बट्टाकृत अन्तर्वाह ₹12,00,000 (present value)।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 1 प्रश्न

- सत्य/असत्य: 'Current cost एक वैकल्पिक मापन आधार देता है' — सत्य; इसमें परिसंपत्तियाँ उस नकदी पर रखी जाती हैं जो वही अथवा समतुल्य परिसंपत्ति आज अर्जित करने पर चुकानी पड़ती, और देयताएँ उस बिना-बट्टे राशि पर जो उन्हें आज निपटाने के लिए चाहिए।
- प्रत्येक आधार को परिसंपत्तियों और देयताओं — दोनों के लिए समझाइए: historical cost = अर्जन मूल्य (चुकाई गई लागत तथा स्थापना, जैसे ₹7,00,000 + ₹1,00,000 = ₹8,00,000); realisable value = व्यवस्थित निपटान में बेचकर मिलने वाली नकदी / देयताओं का निपटान-मूल्य; present value = भावी शुद्ध नकद अन्तर्वाहों/बहिर्वाहों का बट्टाकृत मूल्य।
- 'मापन को परिभाषित कीजिए' वाले भाग में Chambers को उद्धृत कीजिए — वस्तुओं और घटनाओं को उन नियमों के अनुसार संख्याएँ देना जो विशेषता, पैमाना और आयाम निर्दिष्ट करते हैं — और तीनों तत्त्व गिनाइए: वस्तुओं/घटनाओं की पहचान, पैमाने का चयन, तथा पैमाने के आयाम का मूल्यांकन।
- आधारों को व्यवहार से जोड़िए: historical cost दीर्घकालिक परिसंपत्तियों के लिए, realisable value माल-सूची के लिए (लागत और NRV में जो कम हो), present value निवेशों और ऋणों के लिए; और परम्परागत प्रणाली historical cost लेखांकन ही है।

TQ 6.1 · PYQ 2025-May [6] (b) · वर्णनात्मक · 5M · Pg 58

LEVEL I
समझ (Understanding)

मध्यम

विषय 7: मापन और मूल्यांकन

P1-C1-U1.6-T07 · Measurement and Valuation

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §6.7 पढ़िए: अर्थशास्त्री के लिए मूल्य अर्थात् उपयोगिता, और लेखांकन में प्रयुक्त मौद्रिक प्रतिस्थापी (surrogate)।

नोट्स

मूल्य बनाम मापन: मूल्य वस्तुओं, क्षमताओं अथवा विचारों से मिलने वाले लाभों से जुड़ा है — अर्थशास्त्री के लिए यह किसी आर्थिक साधन की उपयोगिता (सन्तुष्टि) है; लेखांकन में मौद्रिक प्रतिस्थापी का प्रयोग होता है, अर्थात् मूल्य मुद्रा के

रूप में मापा जाता है (₹2,50,000 में खरीदी गई कार अर्जन/historical लागत पर मूल्यांकित होती है)।

पैमाने: अर्थशास्त्री सन्तुष्टि के स्तर दिखाने के लिए प्रायः क्रमसूचक पैमाने प्रयोग करते हैं, किन्तु लेखाकार केवल गणनासूचक पैमाने — मूल्य मापन से ही व्यक्त होता है, और लेखांकन में मूल्य सदैव मुद्रा के रूप में मापा जाता है।

विषय 8: लेखांकन अनुमान

P1-C1-U1.6-T08 · Accounting Estimates

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें \$6.8 को उसके चार उदाहरणों सहित पढ़िए: अनुमान क्यों आवश्यक हैं और अनुमान में परिवर्तन का क्या अर्थ है।

नोट्स

आवश्यकता: जो मदें अभी घटित नहीं हुई उनका मूल्यांकन-सिद्धांतों से मापन नहीं हो सकता, फिर भी उन्हें दर्ज करना पड़ता है (जैसे संदिग्ध ऋणों का प्रावधान) — इसलिए विद्यमान स्थिति और विगत अनुभव के आधार पर उचित अनुमान लगाए जाते हैं; व्यवसाय में निहित अनिश्चितताओं के कारण वित्तीय विवरणों की अनेक मदों का केवल अनुमान ही सम्भव है, जिसमें उपलब्ध नवीनतम सूचना पर विवेक लगाना पड़ता है।

क्षेत्र: मूल्यहास, परिशोधन और क्षति-हानियाँ, उपचय, प्रावधान, कर्मचारी-लाभ के दायित्व, डूबत ऋण, plant एवं machinery की उपयोगी आयु तथा अवशिष्ट मूल्य, माल-सूची का अप्रचलन, patent की उपयोगी आयु, निर्माण-संविदाओं के प्रावधान, तथा कर के प्रावधान।

अनुमान में परिवर्तन: परिस्थितियाँ बदलने पर अथवा नई सूचना/अधिक अनुभव/पश्चातवर्ती घटनाक्रम से पुनरीक्षण आवश्यक हो जाता है — लेखांकन अनुमान में परिवर्तन का अर्थ है पहले अनुमानित मानकों तथा चालू अवधि में पुनः अनुमानित (अथवा वास्तविक) परिणामों का अन्तर; जैसे ₹10 लाख की मशीन की अपेक्षित आयु अप्रचलन के कारण 10 वर्ष से घटाकर 6 वर्ष करना — ऐसे परिवर्तन को भूतलक्षी प्रभाव नहीं दिया जाता।

इकाई 1.7: लेखांकन मानक

Accounting Standards

P1-C1-U1.7 · महत्त्व D · अध्याय में Rank 6 · श्रेणी C · अध्याय के 6.9% प्रश्न · 5 प्रश्न

विषय 1: लेखांकन मानकों का परिचय

P1-C1-U1.7-T01 · Introduction of Accounting Standards

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §7.1 पढ़िए: लेखांकन सिद्धांतों का मानकीकरण क्यों किया जाता है और लेखांकन मानक किन चार विषयों से निपटते हैं।

नोट्स

मानक क्यों: यदि वित्तीय लेखांकन की प्रक्रिया ठीक से विनियमित न हो तो वित्तीय विवरण भ्रामक, पक्षपाती और विकृत हो सकते हैं — वित्तीय reporting में पारदर्शिता, संगति, तुलनीयता, पर्याप्तता और विश्वसनीयता सुनिश्चित करने के लिए लेखांकन सिद्धांतों और नीतियों का मानकीकरण किया जाता है, जिससे भिन्न-भिन्न संस्थाओं के वित्तीय विवरण तुलनीय बन सकें।

परिभाषा: लेखांकन मानक वे लिखित नीति-दस्तावेज हैं जो विशेषज्ञ लेखांकन निकाय, सरकार अथवा किसी अन्य नियामक निकाय द्वारा जारी किए जाते हैं और वित्तीय विवरणों में लेखांकन लेन-देनों एवं घटनाओं की मान्यता, मापन, प्रस्तुति तथा प्रकटीकरण के पहलुओं को समेटते हैं।

चार विषय: (i) घटनाओं और लेन-देनों की मान्यता, (ii) इन लेन-देनों और घटनाओं का मापन, (iii) पाठक के लिए सार्थक और सुबोध रीति से प्रस्तुति, (iv) प्रकटीकरण की अपेक्षाएँ, जिनसे हितधारक और सम्भावित निवेशक विवेकपूर्ण एवं सूचित व्यावसायिक निर्णय ले सकें।

विषय 2: लेखांकन मानकों के उद्देश्य

P1-C1-U1.7-T02 · Objectives of Accounting Standards

पहले पढ़ें Para 7.2 पढ़िए — लेखांकन मानक विविध लेखांकन नीतियों का मानकीकरण करके व्यवहारों में सामंजस्य लाते हैं; साथ ही Para 7.1 पर दृष्टि डालिए कि मानक क्या हैं और वे किन चार विषयों से निपटते हैं (मान्यता, मापन, प्रस्तुति, प्रकटीकरण)।

नोट्स

अर्थ (Para 7.1): लेखांकन मानक वे लिखित नीति-दस्तावेज हैं जो विशेषज्ञ लेखांकन निकाय, सरकार अथवा किसी अन्य नियामक निकाय द्वारा जारी किए जाते हैं और वित्तीय विवरणों में लेखांकन लेन-देनों तथा घटनाओं की मान्यता, मापन, प्रस्तुति और प्रकटीकरण को समेटते हैं — यही चार विषय प्रत्येक मानक में आते हैं।

उद्देश्य (Para 7.2): पूरा विचार लेखांकन नीतियों और व्यवहारों के सामंजस्य पर केन्द्रित है — मानक विविध लेखांकन नीतियों का मानकीकरण इस दृष्टि से करते हैं कि (i) वित्तीय विवरणों की अतुलनीयता समाप्त हो और उनकी विश्वसनीयता बढ़े, तथा (ii) मानक लेखांकन नीतियों, मूल्यांकन के मानदंडों और प्रकटीकरण की अपेक्षाओं का एक समूह उपलब्ध हो।

प्रभाव: मानक वित्तीय विवरण बनाते समय उपलब्ध लेखांकन विकल्पों को युक्तिसंगत सीमा के भीतर घटा देते हैं, जिससे भिन्न-भिन्न संस्थाओं के वित्तीय विवरण तुलनीय बनते हैं; और मानकीकरण वित्तीय reporting में पारदर्शिता, संगति, तुलनीयता, पर्याप्तता तथा विश्वसनीयता सुनिश्चित करता है।

स्मरण (Remembering) कंठस्थ कीजिए · 1 प्रश्न

- बताने योग्य उद्देश्य: विविध लेखांकन नीतियों का मानकीकरण, ताकि (i) वित्तीय विवरणों की अतुलनीयता समाप्त हो और उनकी विश्वसनीयता बढ़े, तथा (ii) मानक लेखांकन नीतियों, मूल्यांकन-मानदंडों और प्रकटीकरण की अपेक्षाओं का एक समूह उपलब्ध हो।
- यह भी जोड़िए: मानक लेखांकन विकल्पों को युक्तिसंगत सीमा के भीतर घटाते हैं, जिससे भिन्न-भिन्न संस्थाओं के वित्तीय विवरण तुलनीय बनते हैं।
- एक पंक्ति का अर्थ: लेखांकन मानक वे लिखित नीति-दस्तावेज हैं जो विशेषज्ञ लेखांकन निकाय/सरकार/नियामक द्वारा जारी होते हैं और लेन-देनों तथा घटनाओं की मान्यता, मापन, प्रस्तुति एवं प्रकटीकरण को समेटते हैं।

TQ 2.1 · PYQ 2025-May [1] (b) (i) {C} · वर्णनात्मक · 2M · Pg 62 9x पूछा गया

LEVEL I

स्मरण (Remembering)

सरल

विषय 3: लेखांकन मानकों के लाभ और सीमाएँ

P1-C1-U1.7-T03 · Benefits and Limitations of Accounting Standards

पहले पढ़ें Para 7.3 पढ़िए — लेखांकन मानकों के तीन लाभ और दो सीमाएँ, तथा संयुक्त 4 अंक वाले प्रश्न के लिए Para 7.1 से मानकों की परिभाषा।

नोट्स

तीन लाभ (Para 7.3): (i) वैकल्पिक लेखांकन व्यवहारों का मानकीकरण — भ्रम उत्पन्न करने वाली विविधताओं को उचित सीमा तक घटाना अथवा पूर्णतः समाप्त करना; (ii) अतिरिक्त प्रकटीकरण की अपेक्षाएँ — मानक विधि द्वारा अपेक्षित प्रकटीकरण से आगे भी प्रकटीकरण माँग सकते हैं; (iii) वित्तीय विवरणों की तुलनीयता — एक ही देश की भिन्न कंपनियों के बीच, और सीमित सीमा तक विश्व के भिन्न भागों की कंपनियों के बीच भी (सीमित इसलिए कि देशों की संस्थाएँ, परम्पराएँ और विधिक प्रणालियाँ भिन्न होती हैं)।

दो सीमाएँ: (i) भिन्न व्यवहारों में से चयन की कठिनाई — कुछ लेखांकन समस्याओं के वैकल्पिक समाधानों में से प्रत्येक के पक्ष में तर्क हो सकते हैं; (ii) सीमित क्षेत्र — लेखांकन मानक संविधि का अतिक्रमण नहीं कर सकते और उन्हें प्रचलित संविधियों के दायरे में ही बनाया जाना चाहिए।

सत्य/असत्य: 'लेखांकन मानक संविधि का अतिक्रमण कर सकते हैं' — असत्य, वे संविधि का अतिक्रमण कभी नहीं कर सकते; 'व्यवहारों में से चयन की कठिनाई एक लाभ है' — असत्य, यह सीमा है; 'अतिरिक्त प्रकटीकरण की अपेक्षा सीमा है' — असत्य, यह लाभ है।

4 अंक का ढाँचा: उत्तर परिभाषा से आरम्भ कीजिए (मान्यता, मापन, प्रस्तुति और प्रकटीकरण पर लिखित नीति-दस्तावेज), फिर तीन लाभ और दो सीमाएँ गिनाइए।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 3 प्रश्न

- लाभ (प्रत्येक समझाइए): (i) वैकल्पिक लेखांकन व्यवहारों का मानकीकरण — भ्रामक विविधताओं को घटाना/समाप्त करना; (ii) अतिरिक्त प्रकटीकरण की अपेक्षाएँ — विधि की माँग से आगे भी; (iii) वित्तीय विवरणों की तुलनीयता — कंपनियों के बीच, और सीमित सीमा तक देशों के बीच भी।

- सीमाएँ: (i) वैकल्पिक व्यवहारों में से चयन की कठिनाई, जहाँ प्रत्येक के पक्ष में तर्क हों; (ii) सीमित क्षेत्र — मानक संविधि का अतिक्रमण नहीं कर सकते और प्रचलित विधियों के दायरे में ही बनते हैं।
- सत्य/असत्य: 'लेखांकन मानक संविधि का अतिक्रमण कर सकते हैं' — असत्य; उन्हें प्रचलित संविधियों के दायरे में ही बनाया जाना अपेक्षित है।
- पूरे 4 अंक वाले प्रश्न में लाभ और सीमाएँ गिनाने से पहले परिभाषा से आरम्भ कीजिए (मान्यता, मापन, प्रस्तुति और प्रकटीकरण पर लिखित नीति-दस्तावेज)।

TQ 3.2 · PYQ 2024-Jun [1] (a) (iii) {C} · सत्य/असत्य · 2M · Pg 64

LEVEL I
समझ (Understanding)

सरल

TQ 3.1 · PYQ 2006-Nov [6] (v) · वर्णनात्मक · 5M · Pg 63 5× पूछा गया

LEVEL I
समझ (Understanding)

मध्यम

TQ 3.3 · PYQ 2026-Jan [1] (b) {C} · वर्णनात्मक · 4M · Pg 65

LEVEL I
समझ (Understanding)

मध्यम

विषय 4: भारत में लेखांकन मानकों के निर्माण की प्रक्रिया

P1-C1-U1.7-T04 · Process of Formulation of Accounting Standards in India

पहले पढ़ें Para 7.4 पढ़िए — ICAI ने 1977 में Accounting Standards Board (ASB) गठित किया; मानक बनाने के चरण सीखिए (क्षेत्रों की पहचान, अध्ययन-समूह, प्रारूप का परिचालन, Exposure Draft, टिप्पणियाँ, Council द्वारा अन्तिम रूप) और यह भी कि कौन-सा समूह किसके लिए जारी होता है।

नोट्स

ASB (Para 7.4): ICAI ने 1977 में Accounting Standards Board गठित किया; ASB भारतीय मानक बनाते समय IFRSs पर विचार करता है और उन्हें लागू विधियों, रीति-रिवाजों, प्रचलनों तथा व्यावसायिक परिवेश के प्रकाश में समाहित करता है; इसकी संरचना में उद्योग के प्रतिनिधि (ASSOCHAM, CII, FICCI), नियामक, शिक्षाविद् और सरकारी विभाग सम्मिलित हैं; ASB स्वतंत्र है — ICAI का Council ASB द्वारा तैयार किसी प्रारूप मानक में ASB से परामर्श किए बिना परिवर्तन नहीं कर सकता।

मानक बनाने के चरण: (1) ASB द्वारा व्यापक क्षेत्रों की पहचान; (2) प्रारम्भिक प्रारूप तैयार करने के लिए अध्ययन-समूहों का गठन (उद्देश्य, क्षेत्र, परिभाषाएँ, मान्यता/मापन, प्रस्तुति एवं प्रकटीकरण); (3) ASB द्वारा प्रारूप पर विचार और संशोधन; (4) Council के सदस्यों तथा निर्दिष्ट बाह्य निकायों — DCA, SEBI, C&AG, CBDT, SCOPE आदि — को परिचालन; (5) उन निकायों के साथ बैठक कर उनके विचार जानना; (6) Exposure Draft को अन्तिम रूप देकर जारी करना और जन-टिप्पणियाँ आमंत्रित करना; (7) टिप्पणियों पर विचार कर ASB द्वारा अन्तिम रूप देकर Council को प्रस्तुत करना; (8) Council विचार करता है, आवश्यक हो तो ASB से परामर्श कर संशोधन करता है, और मानक जारी हो जाता है।

कौन-सा समूह किसके लिए: Ind AS — सभी सूचीबद्ध कंपनियों और NBFCs पर, तथा उन असूचीबद्ध कंपनियों/NBFCs पर जिनकी net worth ₹250 करोड़ या अधिक है; Companies (Accounting Standards) Rules, 2021 के अन्तर्गत केन्द्र सरकार द्वारा अधिसूचित AS — Ind AS वाली कंपनियों से भिन्न कंपनियों के लिए; और ICAI द्वारा विहित AS — कंपनियों से भिन्न संस्थाओं के लिए; सत्य/असत्य — 'भारत में गैर-निगमित संस्थाओं के लिए लेखांकन

मानक केन्द्र सरकार जारी करती है' असत्य है, वे ICAI जारी करता है।

Ind AS की पृष्ठभूमि: भारत ने IASB द्वारा जारी IFRS को अपनाने (adopt) के स्थान पर उससे अभिसरण (converge) करने का निर्णय लिया — Ind AS को तत्सम्बन्धी IFRS के अनुरूप रखा जाता है और विचलन केवल वहीं किया जाता है जहाँ देश के आर्थिक परिवेश को देखते हुए वह नितान्त आवश्यक हो; और ASB का अर्थ Accounting Standards Board है ('Accounting standardisation benchmarking' नहीं)।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 1 प्रश्न

- सत्य/असत्य: 'भारत में गैर-निगमित संस्थाओं के लिए लेखांकन मानक केन्द्र सरकार जारी करती है' — असत्य; गैर-निगमित संस्थाओं के मानक ICAI जारी करता है, जबकि कंपनियों के लिए AS केन्द्र सरकार Companies (Accounting Standards) Rules, 2021 के अन्तर्गत अधिसूचित करती है।
- तीनों समूह और उनकी प्रयोज्यता जानिए: सूचीबद्ध कंपनियों/NBFCs तथा ₹250 करोड़ या अधिक net worth वाली असूचीबद्ध कंपनियों के लिए Ind AS; शेष कंपनियों के लिए अधिसूचित AS; और कंपनी से भिन्न संस्थाओं के लिए ICAI द्वारा विहित AS।
- ASB की परामर्श-प्रक्रिया समझिए (DCA/SEBI/C&AG/CBDT आदि को प्रारूप, जन-टिप्पणी के लिए Exposure Draft) और यह भी कि ASB स्वतंत्र है — ICAI का Council ASB से परामर्श किए बिना प्रारूप मानक में परिवर्तन नहीं कर सकता।

TQ 4.1 · PYQ 2021-Jan [1] (a) (vi) {C} · सत्य/असत्य · 2M · Pg 66 **5x पूछा गया** **LEVEL I**
समझ (Understanding)

सरल

विषय 5: भारत में लेखांकन मानकों की सूची

P1-C1-U1.7-T05 · List of Accounting Standards in India

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें \$7.5 पढ़िए: Accounting Standards Board द्वारा जारी लागू AS की तालिका तथा Ind AS के अभिसरण (convergence) की टिप्पणी।

नोट्स

लागू AS: Accounting Standards Board द्वारा जारी AS का पालन आवश्यक है, ताकि वित्तीय विवरण GAAP के अनुरूप रहें — वर्तमान में AS 1 से AS 29 तक (बीच में कुछ क्रमांक रिक्त), जैसे AS 1 लेखांकन नीतियों का प्रकटीकरण, AS 2 माल-सूची का मूल्यांकन, AS 3 रोकड़ प्रवाह विवरण, AS 9 आय की मान्यता, AS 10 Property, Plant and Equipment, AS 16 उधार-लागत, AS 19 Leases, AS 22 आय पर कर, AS 26 अमूर्त परिसंपत्तियाँ, AS 29 प्रावधान, आकस्मिक देयताएँ एवं आकस्मिक परिसंपत्तियाँ (विस्तृत सूची केवल जानकारी के लिए है, पाठ्यक्रम का भाग नहीं)।

Ind AS: मानक बनाने वाली संस्था ICAI ने 2006 में IFRS की ओर कदम बढ़ाया; भारत सरकार ने ICAI से परामर्श कर IFRS को अपनाने के स्थान पर उससे अभिसरण का निर्णय लिया — Ind AS को यथासम्भव तत्सम्बन्धी IFRS के अनुरूप रखा जाता है, और विचलन केवल वहीं होता है जहाँ भारत के आर्थिक परिवेश को देखते हुए वह नितान्त आवश्यक हो।

अध्याय 2

लेखांकन प्रक्रिया

Accounting Process

38 विषय • 90 वर्गीकृत प्रश्न • महत्त्व: A

ICAI कौशल प्रोफाइल Level I 5–20% • Level II 80–95% — यह अध्याय है **सिद्धान्त-प्रधान**

Level I — स्मरण एवं समझ

29.8%

325.5 में से 97 अंक

Level II — अनुप्रयोग एवं विश्लेषण

70.2%

325.5 में से 228.5 अंक

इकाई 2.1: मूल लेखांकन प्रक्रियाएँ - जर्नल प्रविष्टियाँ (Basic Accounting Procedures: Journal Entries)

Basic Accounting Procedures: Journal Entries

P1-C2-U2.1 • महत्त्व B • अध्याय में Rank 2 • श्रेणी A • अध्याय के 21.1% प्रश्न • 19 प्रश्न

विषय 1: दोहरा लेखा प्रणाली (Double Entry System)

P1-C2-U2.1-T01 • Double Entry System

पहले पढ़ें Study Material का Para 1.1 पढ़िए: दोहरा लेखा प्रणाली का अर्थ, Luca Pacioli से उसका उद्भव, तथा प्रत्येक लेन-देन का दोहरा (डेबिट-क्रेडिट) पक्ष।

नोट्स

अर्थ (SM): वह प्रणाली “जो लेन-देन के दोनों पक्षों को पहचानती और दर्ज करती है” — प्रत्येक लेन-देन के दो पक्ष होते हैं, डेबिट और क्रेडिट, अतः कम-से-कम दो खाते प्रभावित होते हैं; यही लेखांकन की एकमात्र वैज्ञानिक प्रणाली है।

उद्भव: 500 वर्ष से भी अधिक पुरानी; इसका पहला वर्णन इतालवी धर्मगुरु एवं गणितज्ञ “Luca Pacioli” ने Summa de Arithmetica, Geometria, Proportioni et Proportionalita में किया — यही दोहरा लेखा प्रणाली का वर्णन करने वाली पहली पुस्तक है।

मानक उदाहरण: फर्नीचर खरीदने पर एक नई परिसंपत्ति (फर्नीचर) आती है और साथ ही या तो रोकड़ शेष घटता है या आपूर्तिकर्ता के प्रति देयता उत्पन्न होती है — दोनों पक्ष दर्ज होते हैं; यह प्रणाली उन सभी संस्थाओं के लिए उपयोगी है जिन्हें धन का प्रयोग करना पड़ता है।

स्मरण (Remembering) कंठस्थ कीजिए · 1 प्रश्न

- परिभाषा: दोहरा लेखा प्रणाली प्रत्येक लेन-देन के दोनों पक्ष (डेबिट और क्रेडिट) पहचानती और दर्ज करती है, अतः कम-से-कम दो खाते प्रभावित होते हैं।
- यह लेखांकन की एकमात्र वैज्ञानिक प्रणाली है, 500 वर्ष से अधिक पुरानी; इसका पहला वर्णन इतालवी धर्मगुरु एवं गणितज्ञ Luca Pacioli ने 'Summa de Arithmetica' में किया।
- संक्षिप्त टिप्पणी के लिए मानक उदाहरण: फर्नीचर का क्रय — नई परिसंपत्ति (फर्नीचर) आती है और साथ ही रोकड़ घटती है अथवा आपूर्तिकर्ता के प्रति देयता बनती है।
- इसे 2.5 अंक की संक्षिप्त टिप्पणी के रूप में 4-5 सुगठित बिंदुओं में लिखने का अभ्यास रखिए।

TQ 1.1 · MTP 2023-May [6](c)(i) · संक्षिप्त टिप्पणी · 2.5M · Pg 70 **5× पूछा गया** **LEVEL I**
स्मरण (Remembering)**सरल****विषय 2: दोहरा लेखा प्रणाली के लाभ**

P1-C2-U2.1-T02 · Advantages of Double Entry System

पहले पढ़ें Para 1.2 पढ़िए — दोहरा लेखा प्रणाली के पाँच लाभ; सत्य/असत्य प्रश्नों के लिए इसकी तुलना एकल प्रविष्टि (अपूर्ण अभिलेख) से भी कीजिए।

नोट्स

पाँच लाभ (Para 1.2): (i) तलपट के साधन से लेखांकन कार्य की शुद्धता स्थापित की जा सकती है; (ii) अवधि में अर्जित लाभ अथवा हुई हानि विवरण सहित ज्ञात हो जाती है; (iii) वित्तीय विवरण बनाकर प्रत्येक अवधि के अन्त में संस्था की वित्तीय स्थिति ज्ञात होती है; (iv) खाते जितने विस्तार से आवश्यक हो उतने विस्तार से रखे जा सकते हैं, जिससे नियंत्रण और reporting के लिए महत्वपूर्ण सूचना मिलती है; (v) एक वर्ष के परिणामों की तुलना पिछले वर्षों से करके परिवर्तन के कारण जाने जा सकते हैं।

प्रत्येक लाभ दोनों पक्षों के अभिलेखन से ही निकलता है: डेबिट सदैव क्रेडिट के बराबर होते हैं, इसलिए पुस्तकों की अंकगणितीय जाँच सम्भव है, और परिणाम, स्थिति, नियंत्रण तथा तुलना के लिए खातेवार पूरा विवरण उपलब्ध रहता है।

सत्य/असत्य का जाल: एकल प्रविष्टि में nominal खाते नहीं रखे जाते (अपूर्ण अभिलेखों में मुख्यतः रोकड़ और व्यक्तिगत खाते ही रहते हैं); वास्तविक और nominal खाते दोहरा लेखा प्रणाली में ही रखे जाते हैं।

स्मरण (Remembering) कंठस्थ कीजिए · 1 प्रश्न

- पाँच लाभ कंठस्थ कीजिए: (i) तलपट (trial balance) से अंकगणितीय शुद्धता की जाँच, (ii) विवरण सहित लाभ/हानि का निर्धारण, (iii) वित्तीय विवरणों से वित्तीय स्थिति का ज्ञान, (iv) विस्तृत खाते नियंत्रण एवं reporting में सहायक, (v) वर्ष-दर-वर्ष परिणामों की तुलना।
- 5 अंक के वर्णनात्मक उत्तर में पाँचों बिंदु एक-एक पंक्ति की व्याख्या के साथ आने चाहिए।

TQ 2.1 · PYQ 2025-Jan [6](b) · वर्णनात्मक · 5M · Pg 71

LEVEL I
स्मरण (Remembering)**मध्यम**

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए • 2 प्रश्न

- जाल (सत्य/असत्य): 'Nominal Accounts एकल प्रविष्टि पद्धति (Single Entry System) में रखे जाते हैं' — असत्य; एकल प्रविष्टि में मुख्यतः रोकड़ और व्यक्तिगत खाते ही रखे जाते हैं, nominal और real खाते दोहरा लेखा प्रणाली में रखे जाते हैं।
- यह कारण सहित बता सकें कि प्रत्येक लाभ लेन-देन के दोनों पक्षों को दर्ज करने से ही क्यों निकलता है।

TQ 2.2 • PYQ 2026-Jan [1](a)(iv) • सत्य/असत्य • 2M • Pg 72 **2× पूछा गया****LEVEL I**
समझ (Understanding)**सरल**

TQ 2.3 • PYQ 2026-Sep [6](b) • वर्णनात्मक • 5M • Pg 72

LEVEL I
समझ (Understanding)**विषय 3: खाता (Account)**

P1-C2-U2.1-T03 • Account

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं • पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक**पहले पढ़ें** §1.3 पढ़िए: रोकड़ की वृद्धि और कमी दो स्तम्भों में दर्ज करने से 'T' प्रारूप का खाता कैसे बनता है।**नोट्स**

खाता क्यों: हर लेन-देन पर रोकड़ शेष बदलते रहना कठिन है — इसके स्थान पर सभी वृद्धियाँ एक स्तम्भ में और सभी कमियाँ दूसरे स्तम्भ में दर्ज की जाती हैं; प्रारम्भिक शेष + कुल वृद्धि – कुल कमी = अन्तिम शेष, जिससे उस मद की महत्वपूर्ण सूचना मिल जाती है।

T प्रारूप: इन्हीं दो स्तम्भों को खाते के रूप में रखने पर "T" प्रारूप बनता है — रोकड़ (एक परिसंपत्ति) की वृद्धि बाई ओर, कमी दाई ओर; प्रत्येक प्रविष्टि के साथ क्रमांक अथवा तिथि दी जाती है, क्योंकि T-खाते केवल राशियाँ दिखाते हैं, विवरण नहीं।

उचित प्रारूप: दोनों ओर तिथि • विवरण • राशि (₹) के स्तम्भ बने होते हैं; जैसे प्रारम्भिक पूंजी ₹25,00,000 से रोकड़ बढ़ती है (बाई ओर) और पूंजी बढ़ती है (दाई ओर); लेनदारों को नकद भुगतान से रोकड़ घटती है (दाई ओर) और लेनदार घटते हैं (बाई ओर)।

विषय 4: डेबिट और क्रेडिट (Debit and Credit)

P1-C2-U2.1-T04 • Debit and Credit

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं • पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक**पहले पढ़ें** §1.4 पढ़िए: Dr./Cr. दोनों पक्षों के औपचारिक नाम, विस्तृत लेखांकन समीकरण, तथा वृद्धि/कमी के नियम।

नोट्स

अर्थ: लेखाकार किसी भी खाते के बाएँ पक्ष की प्रविष्टि के लिए Debit (Dr.) और दाएँ पक्ष की प्रविष्टि के लिए Credit (Cr.) शब्द प्रयोग करते हैं — डेबिट और क्रेडिट का अर्थ अनुकूल या प्रतिकूल नहीं होता; ये केवल खातों के दो पक्षों के नाम हैं।

समीकरण का आधार: $\text{Assets} = \text{Liabilities} + \text{Stockholders' Equity}$, जहाँ $\text{equity} = \text{योगदान की गई पूंजी} + \text{प्रारम्भिक प्रतिधारित आय} + \text{आय} - \text{व्यय} - \text{लाभांश}$; समीकरण के एक पक्ष में हुआ परिवर्तन या तो दूसरे पक्ष के समान परिवर्तन से, या उसी पक्ष के विपरीत परिवर्तन से संतुलित होता है।

नियम: परिसंपत्तियों में वृद्धि डेबिट, कमी क्रेडिट; देयताओं में वृद्धि क्रेडिट, कमी डेबिट; स्वामी की पूंजी में वृद्धि क्रेडिट, कमी डेबिट; व्यय/क्रय में वृद्धि डेबिट; तथा आय/आगम/विक्रय में वृद्धि क्रेडिट।

विषय 5: लेन-देन (Transactions)

P1-C2-U2.1-T05 · Transactions

पहले पढ़ें Para 1.5 पढ़िए — लेन-देन का अर्थ: दो-तरफा, मुद्रा में मापन-योग्य घटना जो स्रोत-प्रपत्रों से समर्थित हो; तथा उसके दोहरे पक्ष के विश्लेषण के दो दृष्टिकोण (लेखांकन समीकरण और परम्परागत)।

नोट्स

अर्थ: लेन-देन ऐसी घटना है जो सामान्यतः बाह्य होती है, मुद्रा में निर्धारित की जा सकती है, और दो-तरफा प्रक्रिया है — मूल्य दो पक्षों के बीच हस्तान्तरित होता है (प्रत्येक पक्ष मूल्य पाता भी है और देता भी है); यह पर्याप्त प्रपत्रों से समर्थित होनी चाहिए: क्रय-invoice, बिल, वेतन-पर्ची, cash memo, passbook आदि।

दोहरे पक्ष के विश्लेषण के दो दृष्टिकोण: (1) लेखांकन समीकरण दृष्टिकोण और (2) परम्परागत दृष्टिकोण — दोनों में प्रभावित खाते और की जाने वाली entries एक जैसी ही रहती हैं; अभिलेखन विश्लेषण की विधि पर निर्भर नहीं करता।

विशेष entries (Gamma Bros प्रकार): कर्मचारियों द्वारा वेतन के बदले माल-सूची लेना — Salaries डेबिट ₹75,000 / Purchases क्रेडिट लागत पर (विक्रय मूल्य ₹1,00,000 पर नहीं); machinery की स्थापना पर ₹18,000 की मजदूरी पूंजीकृत — Machinery डेबिट / Bank क्रेडिट (Wages नहीं); स्वामी का आयकर चुकाना — Drawings डेबिट / Petty Cash क्रेडिट।

छूट की श्रृंखला: ₹2,00,000 की सूची-कीमत पर 10% व्यापारिक छूट घटाकर क्रय ₹1,80,000 पर दर्ज (व्यापारिक छूट कभी पुस्तकों में नहीं आती); शीघ्र भुगतान पर: Naveen डेबिट ₹1,80,000 / Bank क्रेडिट ₹1,75,000, Discount Received क्रेडिट ₹5,000।

अनुप्रयोग (Application) प्रक्रिया का अभ्यास कीजिए · 1 प्रश्न

- असामान्य घटनाओं की journal entries का अभ्यास कीजिए: कर्मचारियों द्वारा वेतन के बदले माल लेना (लागत अथवा सहमत मूल्य पर Purchases/Sales क्रेडिट, Salaries/Employees डेबिट), परिसंपत्ति की स्थापना पर दी गई मजदूरी (पूंजीकृत — Asset डेबिट, Wages नहीं)।

- माल के आहरण (drawings), असामान्य हानि, तथा पूंजीकृत किए जाने वाले व्ययों बनाम राजस्वगत व्ययों की entries का अभ्यास कीजिए।
- पहले दो प्रभावित खाते और उनकी प्रकृति पहचानिए, फिर डेबिट/क्रेडिट के नियम लगाइए, और उसके बाद narration सहित entry लिखिए।

PQ 5.1 · RTP 2025-Sep [3](a) · व्यावहारिक · Pg 73 6× पूछा गया

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

विषय 6: लेखांकन समीकरण पद्धति

P1-C2-U2.1-T06 · Accounting Equation Approach

पहले पढ़ें Para 1.6 पढ़िए — लेखांकन समीकरण ($\text{Assets} = \text{Liabilities} + \text{Capital}$), उसका विस्तृत रूप $\text{Equity} + \text{Long-term Liabilities} = \text{Fixed Assets} + \text{Current Assets} - \text{Current Liabilities}$, तथा लाभ को equity में परिवर्तन ($E1 - E0$) के रूप में निकालना।

नोट्स

समीकरण: $\text{Assets} = \text{Liabilities} + \text{Capital}$; विस्तृत रूप: $\text{Equity} + \text{Long-term Liabilities} = \text{Fixed Assets} + \text{Current Assets} - \text{Current Liabilities}$; यह हर समय और कितने भी लेन-देनों के बाद बना रहता है, केवल तब नहीं जब लेखांकन प्रक्रिया में त्रुटियाँ हों।

लाभ = equity में परिवर्तन: किसी भी तिथि पर $E = A - L$; लाभ = $E1 - E0$ ($E_n > E_{n-1}$ अर्थात् लाभ, $E_n < E_{n-1}$ अर्थात् हानि); प्रारम्भिक पूंजी = अन्तिम पूंजी - लाभ + आहरण के समायोजन; जैसे अन्तिम पूंजी ₹35,000 - लाभ ₹5,000 = प्रारम्भिक पूंजी ₹30,000, अतः प्रारम्भिक परिसंपत्तियाँ = $12,000 + 30,000 = ₹42,000$ ।

अज्ञात राशि का नियम: $\text{Capital} = \text{Assets} - \text{Liabilities}$; कोष्ठक में दी गई देयताओं को ऋणात्मक मानिए, जैसे $\text{Assets} ₹57,00,000$ और $\text{Liabilities} (₹2,80,000)$ होने पर $\text{Capital} ₹59,80,000$ ।

पुनर्विन्यास की जाँच: किसी भी रूप की जाँच $\text{Assets} = \text{Liabilities} + \text{Capital}$ से बीजगणितीय रूप में कीजिए; रोकड़ को current assets के अतिरिक्त अलग से जोड़ देने पर वह दो बार गिनी जाती है और समीकरण असत्य हो जाता है।

प्रभाव का विश्लेषण: फर्नीचर का उधार क्रय (+परिसंपत्ति, +देयता), सेवाओं के बदले नकद प्राप्ति (+परिसंपत्ति), किसी कर्मचारी की नियुक्ति अथवा केवल क्रय का करार (कोई परिवर्तन नहीं) — समीकरण केवल मुद्रा में मापन-योग्य लेन-देनों से ही बदलता है।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 1 प्रश्न

- सत्य/असत्य का जाल: 'Equity + LTL - CL = FA + CA' सत्य है (यह $\text{Equity} + \text{LTL} = \text{FA} + \text{CA} - \text{CL}$ का ही पुनर्विन्यास है); किसी भी दिए गए रूप की जाँच $\text{Assets} = \text{Liabilities} + \text{Capital}$ के बीजगणितीय पुनर्विन्यास से कीजिए।
- जाल: 'Capital + Long Term Liabilities = Fixed Assets + Current Assets + Cash - Current Liabilities' असत्य है, क्योंकि रोकड़ पहले ही current assets में सम्मिलित है — वह दो बार गिन ली जाती है।

- कारण देने के लिए तैयार रहिए: यह समीकरण किसी भी संख्या में लेन-देन के बाद, हर समय बना रहता है — केवल लेखांकन त्रुटि होने पर ही टूटता है।

TQ 6.1 · MTP 2022-Nov S2 · सत्य/असत्य · 2M · Pg 74 3× पूछा गया

LEVEL I

समझ (Understanding)

अनुप्रयोग (Application) प्रक्रिया का अभ्यास कीजिए · 1 प्रश्न

- Capital = Assets – Liabilities से अज्ञात राशि निकालने वाले प्रश्नों का अभ्यास कीजिए; ऋणात्मक देयताएँ कोष्ठक में दी जाती हैं, जैसे Assets ₹1,71,00,000 और Liabilities (₹8,40,000) होने पर Capital ₹1,79,40,000।
- अभ्यास कीजिए: प्रारम्भिक पूंजी = अन्तिम पूंजी – लाभ; लाभ = E1 – E0; फिर अन्तिम Balance Sheet पुनः बनाइए।

PQ 6.1 · MTP 2024-Aug · व्यावहारिक · 4M · Pg 75 2× पूछा गया

LEVEL II

अनुप्रयोग (Application)

सरल

विषय 7: परंपरागत पद्धति (Traditional Approach)

P1-C2-U2.1-T07 · Traditional Approach

पहले पढ़ें Para 1.7 पढ़िए — खातों का वर्गीकरण: व्यक्तिगत (प्राकृतिक, कृत्रिम, प्रतिनिधि) और अवैयक्तिक (वास्तविक, nominal), तथा प्रत्येक प्रकार के लिए डेबिट-क्रेडिट के स्वर्णिम नियम।

नोट्स

वर्गीकरण: व्यक्तिगत खाते — (a) प्राकृतिक (राम, रीता), (b) कृत्रिम/वैधानिक (सरकार, कंपनियाँ, क्लब, सहकारी समितियाँ), (c) प्रतिनिधि (बकाया देयता, पूर्वदत्त, पूंजी, आहरण); अवैयक्तिक खाते — वास्तविक (फर्म की परिसंपत्तियाँ, जो ऋण नहीं हैं: भूमि, भवन, निवेश, सावधि जमा, रोकड़) और nominal (व्यय, हानि, लाभ, आय: वेतन, दिया गया ब्याज, प्राप्त commission)।

स्वर्णिम नियम: व्यक्तिगत — पाने वाले को डेबिट, देने वाले को क्रेडिट; वास्तविक — जो आए उसे डेबिट, जो जाए उसे क्रेडिट; nominal — व्यय और हानियाँ डेबिट, आय और लाभ क्रेडिट।

सावधानी के बिंदु: Bank A/c तथा Bank Fixed Deposit व्यक्तिगत खाते हैं (बैंक कृत्रिम व्यक्ति है), केवल Cash in Hand वास्तविक है; Rent Outstanding प्रतिनिधि व्यक्तिगत खाता है; दिया गया और प्राप्त किराया — दोनों nominal हैं (व्यय/आय); और राम को दिया गया वेतन Salary A/c में डेबिट होगा (सेवाओं का भुगतान, अर्थात् व्यय), राम के खाते में नहीं।

शेष: nominal खाते का डेबिट शेष व्यय/हानि दर्शाता है, क्रेडिट शेष आय/लाभ; सभी nominal खातों का शुद्ध परिणाम (लाभ अथवा हानि) पूंजी खाते में हस्तान्तरित होता है — इसीलिए nominal खाते अस्थायी होते हैं।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए — इस संस्करण में कोई प्रश्न नहीं

- दिया गया किराया और प्राप्त किराया — दोनों Nominal खाते हैं (व्यय/आय) — अतः 'rent received एक Real account है' असत्य है।

- राम को दिया गया वेतन Salary A/c (Nominal) में डेबिट होगा, राम के व्यक्तिगत खाते में नहीं — भुगतान सेवाओं के लिए है, अर्थात् व्यय है।
- Cash at Bank एक व्यक्तिगत (PERSONAL) खाता है (बैंक एक कृत्रिम व्यक्ति है); केवल Cash in Hand वास्तविक (Real) है। 'Rent Outstanding' प्रतिनिधि व्यक्तिगत (representative personal) खाता है, Nominal नहीं।
- Nominal खाते का डेबिट शेष व्यय/हानि दर्शाता है, लाभ नहीं (क्रेडिट शेष आय/लाभ दर्शाता है)।

विषय 8: खातों का आधुनिक वर्गीकरण

P1-C2-U2.1-T08 · Modern Classification of Accounts

पहले पढ़ें Para 1.8 पढ़िए — खातों के छह आधुनिक प्रकार (परिसंपत्ति, देयता, पूंजी, आय, व्यय, आहरण), उनके सामान्य शेष, और प्रत्येक कब डेबिट या क्रेडिट होता है; साथ में Illustration 6 की दोहरे वर्गीकरण वाली तालिका देखिए।

नोट्स

छह प्रकार और उनके सामान्य शेष: परिसंपत्ति (डेबिट), व्यय (डेबिट), आहरण (डेबिट); देयता (क्रेडिट), पूंजी (क्रेडिट), आय (क्रेडिट) — वृद्धि पर खाता अपने सामान्य शेष वाली ओर डेबिट/क्रेडिट होता है और कमी पर उसकी विपरीत entry होती है।

दोहरा वर्गीकरण (Illustration 6): prepaid salary — व्यक्तिगत / परिसंपत्ति; rent outstanding तथा अग्रिम प्राप्त किराया — व्यक्तिगत / देयता; डूबत ऋणों की वसूली — nominal / लाभ; आहरण तथा व्यक्तिगत आयकर — व्यक्तिगत / पूंजी में कमी (Capital - Drawings); अन्तिम माल-सूची — वास्तविक / परिसंपत्ति; देय GST — व्यक्तिगत / देयता।

जाल: Outstanding Expenditure nominal नहीं है — परम्परागत दृष्टिकोण में यह प्रतिनिधि व्यक्तिगत खाता है और आधुनिक दृष्टिकोण में देयता (LIABILITY)।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 1 प्रश्न

- जाल: 'Outstanding Expenditure एक nominal खाता है' — असत्य; परम्परागत दृष्टिकोण में यह प्रतिनिधि व्यक्तिगत खाता है, और आधुनिक दृष्टिकोण में LIABILITY है।
- सामान्य शेष कंठस्थ कीजिए: Assets/Expenses/Drawings = डेबिट; Liabilities/Capital/Revenue = क्रेडिट; वृद्धि सदैव सामान्य शेष वाली ओर दर्ज होती है।
- मदों के दोहरे वर्गीकरण का अभ्यास कीजिए, जैसे prepaid salary (व्यक्तिगत/परिसंपत्ति), डूबत ऋणों की वसूली (nominal/लाभ), आहरण (व्यक्तिगत/पूंजी में कमी)।

विषय 9: जर्नल (Journal)

P1-C2-U2.1-T09 • Journal

पहले पढ़ें Para 1.9 पढ़िए — journal मूल प्रविष्टि की वह पुस्तक है जिसमें लेन-देन तिथि-क्रम में दर्ज होते हैं, उसका पाँच-स्तम्भीय प्रारूप, journalising की प्रक्रिया, तथा संयुक्त/मिश्रित entries; Illustrations 5 और 7 का पूरा अभ्यास कीजिए।

नोट्स

परिभाषा: मूल (प्रथम) प्रविष्टि की वह पुस्तक जिसमें लेन-देन प्रतिदिन तिथि-क्रम में दर्ज होते हैं और narration सहित डेबिट तथा क्रेडिट किए जाने वाले खाते दिखाए जाते हैं; journal में दर्ज करना ही journalising है; इसके दो प्रकार — general journal तथा specialised journal (जो एक ही प्रकार के अनेक बार-बार होने वाले लेन-देनों के लिए प्रयोग होता है)।

पाँच स्तम्भ: (1) तिथि (ऊपर वर्ष, फिर माह और दिनांक), (2) विवरण — डेबिट होने वाले खाते के आगे “Dr.”, क्रेडिट होने वाले खाते से पहले “To”, और फिर narration, (3) Ledger Folio, (4) डेबिट राशि, (5) क्रेडिट राशि; पृष्ठ के योग “Carried forward”/“Brought forward” लिखकर आगे ले जाए जाते हैं; संयुक्त/मिश्रित entry में दो या अधिक लेन-देन एक साथ आते हैं — कुल डेबिट कुल क्रेडिट के बराबर होने ही चाहिए।

पूर्ण निपटान की entries (Illus. 5): ₹2,400 के निपटान में Arvind से ₹2,300 प्राप्त — Bank डेबिट 2,300, Discount (Allowed) डेबिट 100 / Arvind क्रेडिट 2,400; ₹9,500 के निपटान में Amrit को ₹9,450 चुकाए — Amrit डेबिट 9,500 / Bank क्रेडिट 9,450, Discount (Received) क्रेडिट 50।

आदर्श entries कंठस्थ कीजिए: माल का आहरण — Drawings डेबिट / Purchases क्रेडिट लागत पर; निःशुल्क नमूने — Advertisement Expenses डेबिट / Purchases क्रेडिट; आपूर्तिकर्ता को माल लौटाना — आपूर्तिकर्ता डेबिट / Purchases Returns क्रेडिट; पूंजी लाना — Bank डेबिट / Capital क्रेडिट; बैंक से रोकड़ निकालना — Cash डेबिट / Bank क्रेडिट।

डूबत ऋण: ₹600 पर दिवालिया देनदार से रुपये में 50 पैसे मिलने पर — Cash डेबिट 300, Bad Debts डेबिट 300 / देनदार क्रेडिट 600; और पहले अपलिखित ऋण बाद में वसूल होने पर वह Bad Debts Recovered A/c में क्रेडिट होता है।

स्मरण (Remembering) कंठस्थ कीजिए • 1 प्रश्न

- संक्षिप्त टिप्पणी हेतु परिभाषा: Journal मूल प्रविष्टि की पुस्तक है जिसमें लेन-देन प्रतिदिन तिथि-क्रम में दर्ज किए जाते हैं, और डेबिट तथा क्रेडिट किए जाने वाले खाते narration सहित दिखाए जाते हैं।
- पाँच स्तम्भ जानिए: Date, Particulars, Ledger Folio, Dr. Amount, Cr. Amount; journal में दर्ज करना ही journalising कहलाता है; इसके दो प्रकार हैं — general और specialised journal।

TQ 9.1 • RTP 2023-Jun • संक्षिप्त टिप्पणी • Pg 76 4x पूछा गया

LEVEL I
स्मरण (Remembering)

सरल

अनुप्रयोग (Application) प्रक्रिया का अभ्यास कीजिए · 5 प्रश्न

- छूट सहित पूर्ण निपटान की entries का अभ्यास कीजिए: ₹10,000 के निपटान में ₹9,000 का cheque अर्थात् Discount Allowed ₹1,000 डेबिट; cheque अनादृत होने पर पहले दी गई छूट भी वापस लिखी जाती है।
- माल का आहरण: Purchases को लागत (COST) पर क्रेडिट कीजिए, विक्रय मूल्य पर नहीं; निःशुल्क नमूने: Advertisement डेबिट, Purchases क्रेडिट।
- समापन/हस्तान्तरण entries का अभ्यास कीजिए: प्रारम्भिक माल-सूची, Purchases, Carriage Inwards, Wages और Returns को Trading A/c में हस्तान्तरित कीजिए; सकल लाभ निकालकर P&L में ले जाइए।
- व्यवसाय-क्रय की entries (परिसंपत्तियाँ डेबिट, ली गई देयताएँ क्रेडिट, शेष Capital में) तथा outstanding/prepaid समायोजनों का अभ्यास कीजिए।

PQ 9.1 · RTP 2022-May · Pg 76

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)**मध्यम**PQ 9.3 · MTP 2024-Apr · 5M · Pg 79 **2x पूछा गया****LEVEL II**
अनुप्रयोग (Application)**मध्यम**PQ 9.4 · RTP 2025-Jan · Pg 81 **6x पूछा गया****LEVEL II**
अनुप्रयोग (Application)**मध्यम**

PQ 9.5 · RTP 2025-May · Pg 82

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)**मध्यम**PQ 9.2 · MTP 2022-Nov S1 · 5M · Pg 78 **3x पूछा गया****LEVEL II**
अनुप्रयोग (Application)**विषय 10: जर्नल के लाभ**

P1-C2-U2.1-T10 · Advantages of Journal

पहले पढ़ें Para 1.10 पढ़िए — दोहरा लेखा प्रणाली में journal रखने के तीन लाभ (महत्त्व)।**नोट्स**

पहले ढाँचा बनाइए: journal दोहरा लेखा प्रणाली में मूल प्रविष्टि की वह पुस्तक है जिसमें लेन-देन तिथि-क्रम में दर्ज होते हैं; और 'journal का महत्त्व' का अर्थ 'journal के लाभ' ही है।

तीन लाभ (Para 1.10): (i) तिथि-क्रम में दर्ज लेन-देन व्यावसायिक लेन-देनों की पूर्ण सूचना समय पर देते हैं; (ii) प्रत्येक entry के साथ narration रहता है — लेन-देन का सटीक स्पष्टीकरण, जिससे entry ठीक-ठीक समझ में आती है; (iii) journal ledger में posting का आधार बनता है और त्रुटि की सम्भावना घटाता है।

5 अंक के लिए: प्रत्येक बिंदु को विस्तार दीजिए और यह भी जोड़िए कि डेबिट तथा क्रेडिट दोनों पक्ष एक साथ दर्ज होने से डेबिट और क्रेडिट बराबर रहते हैं, जिससे खातों की शुद्धता बनी रहती है।

स्मरण (Remembering) कंठस्थ कीजिए · 1 प्रश्न

- तीन लाभ कंठस्थ कीजिए: (i) तिथि-क्रम में अभिलेख व्यावसायिक लेन-देन की पूर्ण और समयबद्ध सूचना देता है; (ii) प्रत्येक entry के साथ narration रहता है — entry को ठीक-ठीक समझने के लिए सटीक स्पष्टीकरण; (iii) journal खाता-बही में posting का आधार बनता है और त्रुटि की सम्भावना घटाता है।
- परीक्षा की शब्दावली पर ध्यान दीजिए — 'importance of Journal' का अर्थ वही है जो 'advantages of Journal' का है; उत्तर आरम्भ कीजिए एक पंक्ति की परिभाषा से (मूल प्रविष्टि की पुस्तक, दोहरा लेखा प्रणाली में तिथि-क्रम अभिलेख), फिर बिंदु गिनाइए।
- 5 अंक के उत्तर में प्रत्येक बिंदु को 2-3 पंक्तियों में खोलिए और यह भी जोड़िए कि डेबिट और क्रेडिट दोनों पक्ष एक साथ दर्ज होने से डेबिट कुल और क्रेडिट कुल बराबर रहते हैं, जिससे खातों की शुद्धता बनी रहती है।

TQ 10.1 · PYQ 2023-Jun [6](b) · वर्णनात्मक · 5M · Pg 83

LEVEL I
स्मरण (Remembering)**मध्यम****विषय 11: GST का लेखांकन**

P1-C2-U2.1-T11 · Accounting for GST

पहले पढ़ें Para 1.11 पढ़िए — अन्तर्राज्यीय आपूर्ति पर CGST/SGST तथा अन्तरराज्यीय पर IGST, Input GST (परिसंपत्ति) बनाम Output GST (देयता), उलटाव की दशाएँ, ITC समायोजन का क्रम, और GST की journal entries पर Illustrations 8-10।

नोट्स

ढाँचा: GST वस्तुओं और सेवाओं की आपूर्ति पर लगने वाला एकल, गन्तव्य-आधारित उपभोग कर है, जिसमें कर पर कर (cascading) नहीं लगता; राज्य के भीतर आपूर्ति — CGST (केन्द्र) + SGST/UTGST (राज्य/संघ राज्यक्षेत्र); अन्तरराज्यीय आपूर्ति — IGST (केन्द्र), जहाँ IGST = CGST + SGST; Input GST (क्रय पर चुकाया गया कर, जिसका credit लिया जाता है) परिसंपत्ति है; Output GST (आपूर्ति पर वसूला गया कर) देयता है; और क्रय, व्यय तथा विक्रय GST रहित शुद्ध राशि पर दर्ज होते हैं।

आदर्श entries: क्रय — Purchases (शुद्ध) डेबिट + Input CGST/SGST अथवा IGST डेबिट / लेनदार-Bank क्रेडिट (सकल); विक्रय — देनदार/Bank डेबिट (सकल) / Sales (शुद्ध) क्रेडिट + Output CGST/SGST अथवा IGST क्रेडिट; ITC का उपयोग — Output GST A/c डेबिट / Input GST A/c क्रेडिट।

छूट का नियम: GST व्यापारिक छूट घटाने के बाद, किन्तु नकद छूट से पहले निकाला जाता है; जैसे सूची-कीमत ₹1,00,000 – 20% व्यापारिक छूट = ₹80,000, और ₹80,000 पर CGST तथा SGST 6%-6%; 5% नकद छूट ₹4,000 अलग Discount Allowed की entry है, जिस पर GST का कोई उलटाव नहीं होता; GST सहित कीमत में मूल्य = सकल × 100/112 (जैसे ₹44,800 का फर्नीचर = ₹40,000 + IGST ₹4,800 @ 12%)।

उलटाव: क्रय-वापसी, आहरण, निःशुल्क नमूने, ऐसे उपहार जो आपूर्ति नहीं माने जाते, तथा आग/चोरी में नष्ट माल पर INPUT GST उलटिए (Drawings डेबिट सकल / Purchases क्रेडिट + Input CGST/SGST क्रेडिट); विक्रय-वापसी तथा दोषपूर्ण माल पर दी गई छूट पर OUTPUT GST उलटिए (Sales Return डेबिट + Output GST डेबिट / ग्राहक क्रेडिट),

किन्तु शीघ्र भुगतान पर दी गई छूट पर नहीं।

ITC समायोजन का क्रम: IGST का credit — पहले IGST के विरुद्ध, शेष CGST और/अथवा SGST के विरुद्ध किसी भी क्रम/अनुपात में; CGST का credit — पहले CGST फिर IGST, SGST के विरुद्ध कभी नहीं; SGST का credit — पहले SGST फिर IGST, CGST के विरुद्ध कभी नहीं।

अनुप्रयोग (Application) प्रक्रिया का अभ्यास कीजिए • 4 प्रश्न

- स्वर्णिम प्रारूप: क्रय — Purchases (व्यापारिक छूट घटाकर) डेबिट + Input CGST/SGST/IGST डेबिट, आपूर्तिकर्ता क्रेडिट (सकल)। विक्रय — ग्राहक डेबिट (सकल), Sales (शुद्ध) क्रेडिट + Output CGST/SGST/IGST क्रेडिट।
- GST सदैव व्यापारिक छूट के बाद और नकद छूट से पहले निकाला जाता है; नकद छूट अलग Discount Allowed/Received की entry है, जिसका GST पर कोई प्रभाव नहीं।
- मूल्य-श्रृंखलाओं का अभ्यास कीजिए: लागत ₹20,000 + 25% markup = ₹25,000, उसमें से 10% व्यापारिक छूट = ₹22,500, और फिर ₹22,500 पर CGST तथा SGST 6%-6%।
- क्रय-वापसी, आहरण, निःशुल्क नमूनों तथा नष्ट माल पर Input GST उलटिए; विक्रय-वापसी पर Output GST उलटिए; और ITC के उपयोग की entry का अभ्यास कीजिए (Output A/c डेबिट To Input A/c)।

PQ 11.3 • RTP 2026-May • Pg 87

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

सरल

PQ 11.1 • PYQ 2024-Jun • 4M • Pg 84 **2x पूछा गया**

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

मध्यम

PQ 11.2 • PYQ 2026-Jan • 4M • Pg 85

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

मध्यम

PQ 11.4 • PYQ 2026-Sep • 4M • Pg 87

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

इकाई 2.2: खाता-बही (Ledgers)

Ledgers

P1-C2-U2.2 • महत्त्व D • अध्याय में Rank 6 • श्रेणी C • अध्याय के 4.4% प्रश्न • 4 प्रश्न

विषय 1: परिचय

P1-C2-U2.2-T01 • Introduction

पहले पढ़ें Para 2.1 और 2.2 पढ़िए — ledger का अर्थ: वह पुस्तक जिसमें सभी व्यक्तिगत, वास्तविक और nominal खाते होते हैं ('principal books of account'), तथा उसका T-प्रारूप जिसमें दोनों ओर चार-चार स्तम्भ होते हैं।

नोट्स

Ledger (SM): "वह पुस्तक जिसमें खातों का सम्पूर्ण समूह (अर्थात् व्यक्तिगत, वास्तविक और nominal खाते) रहता है,

ledger कहलाती है” — यही principal books of account हैं, जिनमें प्रत्येक खाते का खातेवार शेष निर्धारित होता है; यह प्रत्येक खाते के सभी लेन-देनों की पूरी सूचना देती है और तलपट तथा वित्तीय विवरण बनाने का आधार है (अतः 'ledger principal book of accounts है' वाला कथन सत्य है)।

प्रारूप: T-प्रारूप, जिसमें डेबिट (बाई) और क्रेडिट (दाई) पक्ष होते हैं; प्रत्येक पक्ष में चार स्तम्भ — (i) तिथि, (ii) विवरण, (iii) Journal Folio (वह पृष्ठ जहाँ से entries posted होती हैं) और (iv) राशि (₹)।

Journal बनाम Ledger: इन आधारों पर अन्तर कीजिए —

Journal: मूल प्रविष्टि की पुस्तक	Ledger: खातों की प्रधान पुस्तक
लेन-देन तिथि-क्रम में दर्ज होते हैं	अभिलेखन विश्लेषणात्मक, खातेवार क्रम में
डेबिट और क्रेडिट का लेन-देनवार अभिलेख	प्रत्येक खाते का खातेवार समेकित शेष
प्रत्येक entry narration से समर्थित	narration नहीं; केवल 'To'/'By' के सन्दर्भ
ledger में posting का आधार बनती है	तलपट और वित्तीय विवरणों का आधार बनता है

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए • 1 प्रश्न

- Journal और Ledger में 4-5 आधारों पर अन्तर बताइए: मूल प्रविष्टि की पुस्तक बनाम प्रधान पुस्तक; तिथि-क्रम बनाम विश्लेषणात्मक क्रम; लेन-देनवार अभिलेख बनाम खातेवार शेष; journal में narration होता है, ledger में नहीं; तलपट ledger से ही बनाया जाता है।
- सत्य/असत्य: 'Ledger को principal books of accounts भी कहा जाता है' — सत्य; कारण: यह सभी राशियों को खातेवार वर्गीकृत करता है और तलपट तथा वित्तीय विवरण बनाने का आधार है।
- प्रारूप जानिए: दोनों ओर (Dr. बाई, Cr. दाई) Date, Particulars, Journal Folio और Amount स्तम्भ होते हैं।

TQ 1.1 • PYQ 2025-Jan • सत्य/असत्य • 2M • Pg 90 **2x पूछा गया**

LEVEL I
समझ (Understanding)

सरल

विषय 2: खाता-बही खातों का प्रारूप

P1-C2-U2.2-T02 • Specimen of Ledger Accounts

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं • पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §2.2 पढ़िए: ledger खाते का प्रारूप — उसके दो पक्ष और प्रत्येक पक्ष में चार स्तम्भ।

नोट्स

प्रारूप: ledger खाते के दो पक्ष होते हैं — डेबिट (बाई ओर) और क्रेडिट (दाई ओर); प्रत्येक पक्ष में चार स्तम्भ होते हैं: (i)

तिथि, (ii) विवरण, (iii) Journal Folio (J.F. — वह पृष्ठ जहाँ से entries posting के लिए ली जाती हैं) और (iv) राशि (₹) — बाई ओर शीर्ष पर “Dr.” और दाई ओर “Cr.” लिखा जाता है।

प्रयोग: विवरण स्तम्भ में डेबिट पक्ष की मदों से पहले “To” और क्रेडिट पक्ष की मदों से पहले “By” लगाया जाता है — इन शब्दों का अपना कोई अर्थ नहीं, ये परम्परा से डेबिट/क्रेडिट किए गए खाते की ओर संकेत भर करते हैं।

विषय 3: पोस्टिंग (Posting)

P1-C2-U2.2-T03 · Posting

पहले पढ़ें Para 2.3 पढ़िए — posting की परिभाषा तथा ledger में entries की posting के तीन नियम, जिनमें ‘To’ और ‘By’ का प्रयोग भी सम्मिलित है।

नोट्स

परिभाषा (SM): “journal से डेबिट और क्रेडिट मदों को ledger के वर्गीकृत खातों में हस्तान्तरित करने की प्रक्रिया posting कहलाती है” — अर्थात् journal → ledger, कभी ledger → journal नहीं (यही सामान्य सत्य/असत्य जाल है)।

posting के तीन नियम: (i) ledger में प्रत्येक भिन्न खाते के लिए अलग खाता खोला जाता है और journal entries तदनुसार सम्बन्धित खाते में posted की जाती हैं; (ii) डेबिट पक्ष पर लिखे खातों के साथ ‘To’ और क्रेडिट पक्ष के खातों के साथ ‘By’ प्रयुक्त होता है — इन शब्दों का कोई वास्तविक अर्थ नहीं, ये केवल डेबिट और क्रेडिट किए गए खाते को चिह्नित करते हैं; (iii) journal में जो खाता डेबिट होता है वही ledger में भी डेबिट होता है, किन्तु तत्सम्बन्धी क्रेडिट खाते के सन्दर्भ के साथ (और इसी प्रकार इसके विपरीत भी)।

5 अंक का ढाँचा: पहले ledger को principal books of account के रूप में परिभाषित कीजिए, जिसमें सभी व्यक्तिगत, वास्तविक और nominal खाते होते हैं और प्रत्येक खाते की पूरी सूचना मिलती है; फिर posting के तीनों नियम गिनाइए।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 2 प्रश्न

- Posting अर्थात् journal से डेबिट और क्रेडिट मदों को ledger के वर्गीकृत खातों में हस्तान्तरित करने की प्रक्रिया (ledger से journal में नहीं — यही सामान्य सत्य/असत्य जाल है)।
- तीन नियम समझाइए: (i) प्रत्येक भिन्न खाते के लिए अलग खाता खोला जाता है और उसी में entries posted होती हैं; (ii) डेबिट पक्ष के खातों के आगे ‘To’ तथा क्रेडिट पक्ष के आगे ‘By’ लगता है (इन शब्दों का कोई वास्तविक अर्थ नहीं); (iii) journal में जो खाता डेबिट है वही ledger में डेबिट होता है, पर तत्सम्बन्धी क्रेडिट खाते के सन्दर्भ के साथ।
- 5 अंक वाले रूप में पहले principal books of account परिभाषित कीजिए (वह ledger जिसमें सभी व्यक्तिगत, वास्तविक और nominal खाते हों और प्रत्येक खाते की पूरी सूचना मिले), फिर posting के नियम गिनाइए।

TQ 3.2 • PYQ 2026-Jan • 5M • Pg 91

LEVEL I

समझ (Understanding)

विषय 4: खाते का संतुलन

P1-C2-U2.2-T04 • Balancing an Account

पहले पढ़ें Para 2.4 पढ़िए — दोनों पक्षों का योग लगाकर अन्तर को 'Balance c/d' के रूप में नीचे ले जाने और 'Balance b/d' के रूप में आगे लाने की तकनीक, तथा यह कि कौन-से खाते संतुलित किए जाते हैं।

नोट्स

तकनीक: दोनों पक्षों का योग लगाइए और छोटे योग को बड़े में से घटाकर अन्तर निकालिए; यदि क्रेडिट पक्ष बड़ा है तो यह क्रेडिट शेष है — इसे डेबिट पक्ष पर "To Balance c/d" (नीचे ले जाया गया) लिखकर दोनों पक्ष बराबर किए जाते हैं, फिर क्रेडिट पक्ष पर "By Balance b/d" (आगे लाया गया) लिखा जाता है, जो नई अवधि का प्रारम्भिक शेष होता है; डेबिट शेष में इसका उल्टा किया जाता है (क्रेडिट पक्ष पर By Balance c/d, डेबिट पक्ष पर To Balance b/d); जैसे ₹1,000 का माल खरीदा, ₹850 चुकाए — शेष देय ₹150।

nominal खाते संतुलित नहीं किए जाते (सत्य/असत्य: "nominal खाते वर्षान्त पर संतुलित किए जाते हैं" असत्य है) — अवधि के अन्त में उनके योग लाभ-हानि खाते में हस्तान्तरित कर दिए जाते हैं, क्योंकि वे आय/लाभ अथवा व्यय/हानि हैं।

आगे ले जाना: लेखांकन अवधि के अन्त में केवल व्यक्तिगत और वास्तविक खातों के शेष ही तुलन-पत्र में दिखाए जाते हैं; और पूंजी खाते में लाभ अथवा हानि (nominal खातों का शुद्ध परिणाम) का समायोजन किया जाता है।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए • 1 प्रश्न

- सत्य/असत्य का जाल: 'nominal खाते वर्ष के अन्त में संतुलित किए जाते हैं' — असत्य; nominal खाते संतुलित नहीं किए जाते, उनके योग लाभ-हानि खाते में हस्तान्तरित होते हैं।
- केवल व्यक्तिगत और वास्तविक खातों के शेष आगे ले जाकर तुलन-पत्र में दिखाए जाते हैं; nominal खातों का शुद्ध परिणाम (लाभ/हानि) पूंजी खाते में समायोजित होता है।
- प्रक्रिया समझिए: क्रेडिट पक्ष बड़ा हो तो वह क्रेडिट शेष है, जिसे डेबिट पक्ष पर 'To Balance c/d' लिखा जाता है और फिर 'By Balance b/d' के रूप में आगे लाया जाता है — यही नई अवधि का प्रारम्भिक शेष है (डेबिट शेष में इसका उल्टा)।

TQ 4.1 • PYQ 2024-Sep • सत्य/असत्य • 2M • Pg 92 3x पूछा गया

LEVEL I

समझ (Understanding)

सरल

इकाई 2.3: तलपट (Trial Balance)

Trial Balance

P1-C2-U2.3 • महत्त्व D • अध्याय में Rank 5 • श्रेणी C • अध्याय के 6.7% प्रश्न • 6 प्रश्न

विषय 1: परिचय

P1-C2-U2.3-T01 · Introduction

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §3.1 पढ़िए: लेखांकन प्रक्रिया के तीसरे चरण के रूप में तलपट, और उसका मिलना क्या सिद्ध करता है।

नोट्स

अर्थ: ledger में posting के बाद एक विवरण बनाया जाता है जिसमें डेबिट और क्रेडिट शेष (अथवा प्रत्येक खाते के डेबिट और क्रेडिट पक्षों के योग) अलग-अलग दिखाए जाते हैं — यही तलपट है; दोनों स्तम्भों के योग मिलने चाहिए, क्योंकि दोहरा लेखा प्रणाली में डेबिट पक्षों पर लिखी राशि सदैव क्रेडिट पक्षों पर दर्ज राशि के बराबर होती है।

मिलना क्या सिद्ध करता है: मिलान अंकगणितीय शुद्धता का संकेत है — उचित विश्वास कि कार्य लिपिकीय त्रुटियों से मुक्त है, किन्तु शत-प्रतिशत शुद्धता का प्रमाण नहीं, क्योंकि सैद्धान्तिक त्रुटियाँ और प्रतिपूरक त्रुटियाँ फिर भी रह सकती हैं; न मिलने का अर्थ है कि अंकगणितीय त्रुटि है।

स्वरूप और समय: तलपट एक विवरण है, खाता नहीं; सामान्यतः यह मासिक अन्तराल पर बनाया जाता है, और दोहरा लेखा प्रणाली में इसे किसी भी समय बनाया जा सकता है, पर उचित यही है कि वित्तीय विवरण बनाने से पहले reporting अवधि के अन्त (माह/तिमाही/वर्ष के अन्त) पर बनाया जाए।

विषय 2: तलपट तैयार करने के उद्देश्य

P1-C2-U2.3-T02 · Objectives of Preparing the Trial Balance

पहले पढ़ें Para 3.1 और 3.2 पढ़िए — लेखांकन प्रक्रिया के तीसरे चरण के रूप में तलपट (जो विवरण है, खाता नहीं) और उसके तीन उद्देश्य।

नोट्स

परिभाषा: तलपट बनाना लेखांकन प्रक्रिया का तीसरा चरण है — ledger में posting के बाद एक विवरण बनाया जाता है जिसमें किसी निश्चित तिथि पर सभी ledger खातों के डेबिट और क्रेडिट शेष (अथवा योग) अलग-अलग दिखाए जाते हैं; यह विवरण है, खाता नहीं; इसे किसी भी समय बनाया जा सकता है, पर उचित यही है कि वित्तीय विवरण बनाने से पहले reporting अवधि (माह/तिमाही/वर्ष) के अन्त पर बनाया जाए।

तीन उद्देश्य (Para 3.2): (i) यह स्थापित करना कि posting तथा अन्य लेखांकन प्रक्रियाएँ अंकगणितीय त्रुटियों से मुक्त हैं — अर्थात् पुस्तकों की अंकगणितीय शुद्धता स्थापित करना; (ii) वित्तीय विवरण सामान्यतः मिले हुए तलपट के आधार पर ही बनाए जाते हैं, अन्यथा वे सत्य और उचित चित्र नहीं देंगे; (iii) यह ledger में निहित सामग्री का सारांश प्रस्तुत करता है — ledger देखने की आवश्यकता तभी पड़ती है जब किसी खाते का विवरण चाहिए हो।

मिलने का कारण: दोहरा लेखा प्रणाली में खातों के डेबिट पक्षों पर लिखी राशि सदैव क्रेडिट पक्षों पर दर्ज राशि के बराबर

होती है, अतः कुल डेबिट कुल क्रेडिट के बराबर होने ही चाहिए; और मिलान यह उचित विश्वास देता है कि पुस्तकें लिपिकीय त्रुटियों से मुक्त हैं।

सत्य/असत्य के जाल: मिला हुआ तलपट केवल अंकगणितीय शुद्धता सिद्ध करता है, शत-प्रतिशत शुद्धता नहीं — सैद्धान्तिक और प्रतिपूरक त्रुटियाँ फिर भी रह सकती हैं (अतः 'मिलान शुद्धता का निर्णायक/पूर्ण प्रमाण है' असत्य है); किन्तु 'तलपट अंकगणितीय शुद्धता सुनिश्चित नहीं करता' भी असत्य है — यही तो उसका उद्देश्य है।

स्मरण (Remembering) कंठस्थ कीजिए · 1 प्रश्न

- तीन उद्देश्य कंठस्थ कीजिए: (i) पुस्तकों की अंकगणितीय शुद्धता स्थापित करना; (ii) वित्तीय विवरण सामान्यतः मिले हुए (agreed) तलपट से ही बनाए जाते हैं; (iii) यह ledger में जो कुछ है उसका सारांश प्रस्तुत करता है।
- परिभाषा: किसी निश्चित तिथि पर सभी ledger खातों के डेबिट और क्रेडिट शेष (अथवा कुल) दर्शाने वाला विवरण; तलपट एक विवरण है, खाता नहीं।

TQ 2.2 · PYQ 2006-May · 5M · Pg 95 9x पूछा गया

LEVEL I
स्मरण (Remembering)

सरल

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 1 प्रश्न

- सत्य/असत्य का जाल: मिला हुआ तलपट केवल अंकगणितीय शुद्धता सिद्ध करता है, यह नहीं कि पुस्तकें मान्य लेखांकन सिद्धांतों के अनुसार हैं — सैद्धान्तिक त्रुटियाँ और प्रतिपूरक त्रुटियाँ फिर भी रह सकती हैं (कथन असत्य)।
- 'Trial Balance अंकगणितीय शुद्धता सुनिश्चित नहीं करता' — असत्य; अंकगणितीय शुद्धता की जाँच ही उसका उद्देश्य है; परन्तु 'Trial Balance शुद्धता का पूर्ण/निर्णायक प्रमाण है' — यह भी असत्य है।
- उद्धृत करने योग्य कारण: दोहरा लेखा प्रणाली में कुल डेबिट सदैव कुल क्रेडिट के बराबर होते हैं, अतः तलपट का मिलना यह उचित (पूर्ण नहीं) विश्वास देता है कि पुस्तकें लिपिकीय त्रुटियों से मुक्त हैं।

TQ 2.1 · PYQ 2003-May · सत्य/असत्य · 2M · Pg 94 4x पूछा गया

LEVEL I
समझ (Understanding)

मध्यम

विषय 3: तलपट की सीमाएँ

P1-C2-U2.3-T03 · Limitations of Trial Balance

पहले पढ़ें Para 3.3 पढ़िए — वे पाँच प्रकार की त्रुटियाँ जो तलपट मिल जाने पर भी पकड़ में नहीं आतीं।

नोट्स

मिलान शुद्धता का निर्णायक प्रमाण नहीं — पाँच त्रुटियाँ मिलान के बाद भी छिपी रह जाती हैं (Para 3.3): (i) कोई लेन-देन journal में दर्ज ही न हुआ हो; (ii) journal के दोनों स्तम्भों में गलत राशि लिखी गई हो; (iii) journal में गलत खाते का उल्लेख हुआ हो; (iv) कोई entry ledger में posted ही न हुई हो; (v) कोई entry ledger में दो बार posted हो गई हो।

यह भी स्मरण रखिए: प्रतिपूरक त्रुटियाँ (जो परस्पर कट जाती हैं) और सैद्धान्तिक त्रुटियाँ तलपट के मिलान को नहीं बिगाड़ती; और तलपट journal से छूटी हुई entry नहीं पकड़ सकता।

5 अंक का ढाँचा: पहले तलपट को परिभाषित कीजिए (किसी तिथि पर ledger शेषों का विवरण, अन्तिम खातों का आधार), फिर कहिए कि उसका मिलना शुद्धता का निर्णायक प्रमाण नहीं है, और पाँचों प्रकार की त्रुटियाँ समझाइए; निष्कर्ष में यह भी लिखिए कि फिर भी वह अत्यन्त उपयोगी है — उसके बिना वित्तीय विवरण बनाना कठिन होता।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 1 प्रश्न

- कथन से सहमत होते हुए पाँच अपकड़ी त्रुटियाँ गिनाइए: (i) लेन-देन journal में दर्ज ही न होना; (ii) journal के दोनों स्तम्भों में गलत राशि लिखना; (iii) journal में गलत खाते का उल्लेख; (iv) entry का ledger में posted ही न होना; (v) entry का ledger में दो बार posted होना।
- 5 अंक के उत्तर में पहले तलपट परिभाषित कीजिए (किसी तिथि पर ledger शेषों का विवरण, अन्तिम खातों का आधार), फिर कहिए कि उसका मिलना शुद्धता का निर्णायक प्रमाण नहीं है, और त्रुटियों के प्रकार समझाइए।
- यह भी स्मरण रखिए: प्रतिपूरक त्रुटियाँ और सैद्धान्तिक त्रुटियाँ तलपट के मिलान को नहीं बिगाड़ती।

TQ 3.1 · PYQ 2026-May · 5M · Pg 95

LEVEL I
समझ (Understanding)

मध्यम

विषय 4: तलपट तैयार करने की विधियाँ

P1-C2-U2.3-T04 · Methods of Preparation of Trial Balance

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §3.4 को Illustrations 1-2 सहित पढ़िए: Total पद्धति, Balance पद्धति, तथा Total-and-Balance पद्धति।

नोट्स

Total पद्धति: प्रत्येक ledger खाते का योग लगाकर उसके डेबिट और क्रेडिट दोनों पक्षों के योग तलपट में ले जाए जाते हैं — यह खातों का योग होते ही बनाया जा सकता है, जिससे संतुलन करने का समय बचता है; किन्तु यह सामान्यतः प्रयोग नहीं होती, क्योंकि वित्तीय विवरणों के लिए केवल शुद्ध शेष चाहिए, अतः ऐसा तलपट सीधे उनके निर्माण में काम नहीं आता।

Balance पद्धति: प्रत्येक ledger खाते का शेष निकालकर केवल वही शेष तलपट में ले जाए जाते हैं — लेखाकार सामान्यतः यही पद्धति प्रयोग करते हैं; वित्तीय विवरण ledger शेषों के आधार पर ही बनते हैं।

Total and balance पद्धति: दोनों का सम्मिलित रूप — इसमें तलपट प्रत्येक खाता-शीर्ष के लिए चार राशि-स्तम्भ दिखाता है (डेबिट योग, क्रेडिट योग, डेबिट शेष, क्रेडिट शेष)।

विषय 5: उचंत खाते द्वारा समायोजित तलपट

P1-C2-U2.3-T05 · Adjusted Trial Balance (Through Suspense Account)

पहले पढ़ें Para 3.5 पढ़िए — जब त्रुटियाँ समय पर न मिलें तब न मिलने वाले तलपट को मिलाने के लिए Suspense Account का प्रयोग।

नोट्स

नियम (Para 3.5): यदि सभी ledger शेष (रोकड़ और बैंक सहित) ले जाने के बाद भी तलपट न मिले और त्रुटियाँ समय पर न मिलें, तो डेबिट और क्रेडिट पक्षों का अन्तर Suspense Account में डालकर उसे मिला लिया जाता है — अतः 'suspense account खोलने का उद्देश्य तलपट मिलाना है' सत्य है, जिससे वित्तीय विवरण समय पर बनाए जा सकें।

स्वरूप: Suspense A/c अस्थायी खाता है (स्थायी नहीं — सत्य/असत्य में यह असत्य है), जो केवल आगे बढ़ने के लिए खोला जाता है; त्रुटियाँ मिलते और सुधरते ही यह बन्द कर दिया जाता है।

पक्ष का नियम: यदि डेबिट स्तम्भ कम पड़ रहा हो तो अन्तर Suspense A/c में डेबिट होगा (और इसके विपरीत भी); जैसे संशोधित तलपट में डेबिट ₹24,405 बनाम क्रेडिट ₹25,580 होने पर Suspense A/c ₹1,175 डेबिट पक्ष में संतुलनकारी राशि के रूप में आएगा।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए — इस संस्करण में कोई प्रश्न नहीं

- सत्य/असत्य: 'Suspense account खोलने का उद्देश्य तलपट मिलाना है' — सत्य; डेबिट और क्रेडिट कुल का अन्तर Suspense A/c में डाल दिया जाता है ताकि वित्तीय विवरण समय पर बनाए जा सकें।
- Suspense account अस्थायी खाता है, जो तभी खोला जाता है जब त्रुटियाँ समय पर पकड़ में न आएँ; त्रुटियाँ मिलने और सुधरने पर यह बन्द कर दिया जाता है।
- यदि डेबिट स्तम्भ कम पड़ रहा हो तो अन्तर Suspense A/c में डेबिट किया जाता है (और इसके विपरीत भी)।

विषय 6: तलपट तैयार करने के नियम

P1-C2-U2.3-T06 · Rules of Preparing the Trial Balance

पहले पढ़ें Para 3.4 और 3.6 पढ़िए — निर्माण की पद्धतियाँ (Total, Balance, Total-and-Balance) तथा शेष रखने के नियम: परिसंपत्तियाँ, व्यय, हानियाँ और आहरण डेबिट स्तम्भ में; देयताएँ, आय, लाभ और पूंजी क्रेडिट स्तम्भ में। संशोधित तलपट पर Illustrations 3-5 हल कीजिए।

नोट्स

तीन पद्धतियाँ (Para 3.4): (1) Total पद्धति — प्रत्येक ledger खाते के दोनों पक्षों के योग तलपट में ले जाए जाते हैं; यह शीघ्र बनती है (संतुलन की आवश्यकता नहीं) पर सामान्यतः प्रयोग नहीं होती, क्योंकि वित्तीय विवरणों के लिए शुद्ध शेष चाहिए; (2) Balance पद्धति — केवल प्रत्येक ledger खाते का शेष ले जाया जाता है; लेखाकार प्रायः यही प्रयोग करते हैं और वित्तीय विवरणों का आधार यही है; (3) Total-and-Balance पद्धति — दोनों का सम्मिलित रूप, जिसमें

चार राशि-स्तम्भ होते हैं।

रखने के नियम (Para 3.6): डेबिट स्तम्भ — सभी परिसंपत्तियों, व्ययों, हानियों और आहरण के शेष (अतः प्रारम्भिक माल-सूची, विक्रय-वापसी, दी गई छूट, डूबत ऋण, carriage inward, ग्राहकों से प्राप्य, रोकड़, Input CGST/SGST/IGST); क्रेडिट स्तम्भ — सभी देयताओं, आयों, लाभों और पूंजी के शेष (अतः क्रय-वापसी, प्राप्त छूट, प्राप्त ब्याज, bank overdraft, व्यापारिक देय, bills payable, Output CGST/SGST)।

संशोधित तलपट का अभ्यास (Singhanian/Fintech प्रकार): मिला हुआ तलपट भी गलत हो सकता है — प्रत्येक मद जाँची और खाते की प्रकृति के अनुसार पुनः वर्गीकृत कीजिए: ग्राहकों से प्राप्य = परिसंपत्ति = डेबिट; क्रय-वापसी = क्रेडिट (परिसंपत्ति बाहर जाती है); व्यापारिक देय तथा bills payable = देयता = क्रेडिट; प्रारम्भिक माल-सूची = डेबिट; विक्रय-वापसी = डेबिट (परिसंपत्ति भीतर आती है); फिर स्तम्भ पुनः मिलाइए और बचे हुए अन्तर को Suspense A/c में डालिए।

अन्तिम माल-सूची: सामान्यतः इसका मूल्यांकन तलपट के बाहर होता है और यह केवल समायोजन-मद रहती है (Illustration 4 में ₹574 की अन्तिम माल-सूची तलपट की मद नहीं है) — किन्तु जब क्रय पहले ही समायोजित कर दिए गए हों (Adjusted Purchases पद्धति) तब वह तलपट में आती है, अतः “अन्तिम स्कन्ध कभी तलपट में नहीं आएगा” असत्य है।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 1 प्रश्न

- जाल: ‘अन्तिम स्कन्ध कभी तलपट में नहीं आएगा’ — असत्य; जब क्रय पहले ही समायोजित कर दिए गए हों (Adjusted Purchases पद्धति) तब वह तलपट में आता है; सामान्यतः वह तलपट के बाहर समायोजन-मद के रूप में रहता है।
- रखने के नियम कंठस्थ रखिए: डेबिट स्तम्भ — परिसंपत्तियाँ, व्यय, हानियाँ, आहरण, विक्रय-वापसी; क्रेडिट स्तम्भ — देयताएँ, आय, लाभ, पूंजी, क्रय-वापसी।

TQ 6.1 · PYQ 2006-May · सत्य/असत्य · 2M · Pg 96

LEVEL I
समझ (Understanding)

मध्यम

अनुप्रयोग (Application) प्रक्रिया का अभ्यास कीजिए · 1 प्रश्न

- ledger शेषों की सूची से तलपट बनाने (Balance method) और दोनों स्तम्भों का योग मिलाने का अभ्यास कीजिए।
- सामान्य मदों पर ध्यान दीजिए: Discount Allowed/Carriage Inward डेबिट; Bank Overdraft, Discount Received क्रेडिट; Input GST खाते डेबिट, Output GST खाते क्रेडिट।

PQ 6.2 · RTP 2025-May · व्यावहारिक · Pg 98

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

मध्यम

विश्लेषण (Analysis) मिश्रित आँकड़ों पर कार्य कीजिए · 1 प्रश्न

- ‘corrected trial balance’ वाले प्रश्नों (Mr. X / Singhanian प्रकार) का अभ्यास कीजिए: प्रत्येक मद जाँची, गलत पक्ष में रखे शेष पुनः वर्गीकृत कीजिए (जैसे purchase returns गलती से डेबिट में, देनदार गलती से क्रेडिट में), और पुनः मिलाइए।
- प्रत्येक खाते की प्रकृति से कारण निकालिए: ग्राहकों से प्राप्य = परिसंपत्ति = डेबिट; bills payable = देयता = क्रेडिट; प्रारम्भिक माल-सूची = डेबिट; बचे हुए अन्तर के लिए Suspense A/c का प्रयोग कीजिए।

- अन्तर्सम्बन्ध पर ध्यान दीजिए: तलपट के बाहर दी गई अन्तिम माल-सूची केवल एक समायोजन है, तलपट की मद नहीं।

PQ 6.1 · PYQ 2022-May · व्यावहारिक · 4M · Pg 97 8× पूछा गया

LEVEL II
विश्लेषण (Analysis)

मध्यम

इकाई 2.4: सहायक पुस्तकें (Subsidiary Books)

Subsidiary Books

P1-C2-U2.4 · महत्त्व A · अध्याय में Rank 3 · श्रेणी A · अध्याय के 20.0% प्रश्न · 18 प्रश्न

विषय 1: परिचय

P1-C2-U2.4-T01 · Introduction

पहले पढ़ें इकाई 4 (सहायक बहियाँ) का Para 4.1 पढ़िए: मूल/प्रथम प्रविष्टि की पुस्तकों का अर्थ, आठ सहायक बहियों की सूची, उनके लाभ, तथा सहायक और प्रधान पुस्तकों का अन्तर (Para 4.2)।

नोट्स

मूल/प्रथम प्रविष्टि की पुस्तकें (Para 4.1): प्रत्येक वर्ग के लेन-देनों के लिए अलग-अलग रजिस्टर रखे जाते हैं, जिनमें लेन-देन पहले दर्ज होते हैं और जिनके आधार पर ledger खाते बिना अलग journal entry किए बनाए जाते हैं — यही Practical System of Book-keeping (English System) है; इसमें दोहरा लेखा के नियमों से कोई विचलन नहीं होता।

आठ सहायक बहियाँ: (i) Cash Book — रोकड़ और बैंक की प्राप्ति/भुगतान; (ii) Purchases Book — व्यापार की वस्तुओं अथवा सामग्री/भण्डार का उधार क्रय; (iii) Purchase Returns Book; (iv) Sales Book — व्यापार की वस्तुओं का विक्रय; (v) Sales Returns Book; (vi) Bills Receivable Book — प्राप्त प्रतिज्ञा-पत्र/हुण्डियाँ; (vii) Bills Payable Book — निर्गमित प्रतिज्ञा-पत्र/हुण्डियाँ; (viii) Journal Proper — वह सब जो शेष सात में दर्ज न हो सके; 'बही' के स्थान पर 'Journal' शब्द भी प्रयोग होता है, और B/R तथा B/P बहियाँ सहायक बहियाँ ही हैं (journal के विकल्प)।

पाँच लाभ: (a) अनेक लिपिकों में कार्य का विभाजन; (b) विशेषज्ञता और कार्यकुशलता — एक ही व्यक्ति को लम्बे समय तक वही कार्य मिलने से; (c) समय की बचत — प्रक्रियाएँ एक साथ चलती हैं; (d) सूचना की उपलब्धता — प्रत्येक वर्ग के लेन-देन एक ही स्थान पर; (e) जाँच में सुविधा — तलपट न मिलने पर त्रुटि खोजना आसान होता है, और त्रुटियाँ तथा छल पकड़ में आते हैं।

सहायक बनाम प्रधान पुस्तकें (Para 4.2): लेन-देन सबसे पहले सहायक बहियों में दर्ज होते हैं ताकि आगे की प्रक्रिया चल सके; ledger और cash book प्रधान पुस्तकें हैं, क्योंकि वे तलपट तथा वित्तीय विवरण बनाने की सूचना देती हैं।

सहायक बहियाँ	प्रधान पुस्तकें
मूल/प्रथम प्रविष्टि की पुस्तकें — लेन-देन पहले यहीं दर्ज होते हैं	Ledger तथा Cash Books
Purchases, Sales, दोनों Returns बहियाँ, B/R, B/P	Ledger; सरल, छूट-स्तम्भ वाली तथा बैंक एवं छूट-स्तम्भ

बहियाँ, Journal Proper	वाली cash books
इन्हीं के आधार पर ledger खातों में posting होती है	तलपट और वित्तीय विवरणों के लिए आँकड़े देती हैं

स्मरण (Remembering) कंठस्थ कीजिए • 1 प्रश्न

- सहायक बहियों (subsidiary books) की मानक सूची कंठस्थ कीजिए: Cash Book, Purchases Book, Purchase Returns Book, Sales Book, Sales Returns Book, Bills Receivable Book, Bills Payable Book और Journal Proper — यही 5 अंक वाली सूची बार-बार पूछी जाती है।
- सहायक बहियों के पाँच लाभ याद कीजिए: कार्य का विभाजन, विशेषज्ञता एवं कार्यकुशलता, समय की बचत, सूचना की उपलब्धता, तथा त्रुटि/छल पकड़ने में सुविधा।
- वैकल्पिक नाम स्मरण रखिए: books of original entry / prime entry; और ledger तथा cash book = principal books।

TQ 1.3 • MTP 2024-Jul • 5M • Pg 103 3× पूछा गया

LEVEL I
स्मरण (Remembering)

सरल

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए • 2 प्रश्न

- यह कारण सहित सिद्ध कर सकें (सत्य) कि Bills Receivable और Bills Payable books सहायक बहियाँ ही हैं — ये journal के विकल्प हैं।
- 5 अंक के वर्णनात्मक उत्तर के लिए सहायक बहियों के प्रत्येक लाभ को एक पंक्ति के तर्क के साथ समझाइए।
- यह समझिए कि सहायक बहियाँ भी दोहरा लेखा प्रणाली का ही पालन करती हैं — ledger खाते इन्हीं से posted होते हैं, अलग journal entry की आवश्यकता नहीं होती।

TQ 1.2 • MTP 2024-Jul • सत्य/असत्य • 2M • Pg 103 2× पूछा गया

LEVEL I
समझ (Understanding)

सरल

TQ 1.1 • PYQ 2024-Jun • 5M • Pg 102 5× पूछा गया

LEVEL I
समझ (Understanding)

मध्यम

विषय 2: सहायक और प्रधान पुस्तकों में अंतर

P1-C2-U2.4-T02 • Distinction between Subsidiary Books and Principal Books

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं • पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §4.2 तथा वित्तीय लेखा-पुस्तकों को वर्गीकृत करने वाला उसका चार्ट पढ़िए।

नोट्स

अन्तर: सहायक बहियाँ वे पुस्तकें हैं जिनमें लेन-देन सबसे पहले दर्ज होते हैं ताकि आगे की प्रक्रिया चल सके; ledger और

cash book प्रधान पुस्तकें हैं, क्योंकि वे तलपट तथा वित्तीय विवरण बनाने की सूचना देती हैं।

प्रधान पुस्तकें	सहायक बहियाँ
Ledger	Purchase Book • Sales Book
Cash Books — सरल cash book, छूट-स्तम्भ वाली cash book, बैंक एवं छूट-स्तम्भ वाली cash book, petty cash book	Purchase Return Book • Sales Return Book • Bills Receivable Book • Bills Payable Book • Journal Proper

विषय 3: क्रय बही (Purchases Book)

P1-C2-U2.4-T03 • Purchases Book

पहले पढ़ें Para 4.3 पढ़िए: Purchases Book में केवल व्यापार की वस्तुओं का उधार क्रय दर्ज होता है; उसका प्रारूप (Particulars, Details, Amount स्तम्भ), व्यापारिक छूट तथा packing/freight का व्यवहार, और posting — कुल Purchases A/c में डेबिट तथा आपूर्तिकर्ताओं के खातों में क्रेडिट — सीखिए।

नोट्स

क्षेत्र (Para 4.3): इसमें केवल व्यापार की वस्तुओं अथवा व्यवसाय में प्रयुक्त सामग्री का उधार क्रय दर्ज होता है; नकद क्रय Cash Book में जाता है, और वस्तुओं/सामग्री से भिन्न मदों (कार्यालय का फर्नीचर, typewriter, computer) का उधार क्रय Journal Proper में journalised होता है — यहाँ कभी दर्ज नहीं होता।

प्रारूप और गणना: Particulars स्तम्भ में आपूर्तिकर्ता, वस्तुएँ और मात्राएँ लिखी जाती हैं; प्रति-वस्तु राशि Details स्तम्भ में; एक क्रय की राशियों का योग लगाइए, packing/अन्य व्यय (freight) जोड़िए, व्यापारिक छूट घटाइए, और शुद्ध राशि Amount स्तम्भ में ले जाइए — जैसे सकल ₹72,000 में से 10% व्यापारिक छूट ₹7,200 घटाकर ₹64,800, और freight ₹150 जोड़कर ₹64,950 (Illustration 2); Amount स्तम्भ का योग = अवधि का कुल उधार क्रय।

Posting: Amount स्तम्भ का कुल Purchases A/c में डेबिट; प्रत्येक आपूर्तिकर्ता (जो अब व्यापारिक देय है) अलग-अलग क्रेडिट — Illustration 1: Purchases A/c डेबिट ₹5,022 के विरुद्ध Brown & Co. ₹3,042, Paper Co. ₹1,800, Verma Bros. ₹180, अतः कुल क्रेडिट डेबिट के बराबर और दोहरा लेखा पूर्ण; freight अलग से posted होता है (आपूर्तिकर्ता Purchases A/c तथा Freight A/c के माध्यम से क्रेडिट होता है)।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए • 1 प्रश्न

- सत्य/असत्य का जाल: स्थायी परिसंपत्तियों (फर्नीचर, computer, machinery) का उधार क्रय Purchases Book में दर्ज नहीं होता — वह Journal Proper में जाता है।
- नकद क्रय Cash Book में जाता है, Purchases Book में कभी नहीं; इसमें केवल व्यापार की वस्तुओं का उधार क्रय ही दर्ज होता है।

TQ 3.1 · PYQ 2026-Jan · सत्य/असत्य · 2M · Pg 104

LEVEL I
समझ (Understanding)

सरल

अनुप्रयोग (Application) प्रक्रिया का अभ्यास कीजिए · 2 प्रश्न

- गणना का अभ्यास कीजिए: सकल राशि में से व्यापारिक छूट घटाइए, फिर packing/freight जोड़िए; जैसे ₹75,800 का क्रय, 5% व्यापारिक छूट घटाने पर ₹72,010 — पूरा ₹72,010 ही Purchases Book में जाएगा, भले आधी राशि तुरन्त नकद चुका दी गई हो (उधार क्रय होने पर नकद भुगतान से बही की entry विभाजित नहीं होती)।
- Purchases Book बनाने का अभ्यास कीजिए: प्रत्येक आपूर्तिकर्ता के लिए मात्रा × दर की गणना, व्यापारिक छूट घटाना, तथा नकद क्रय और परिसंपत्ति-क्रय को छोड़ना।
- Posting जानिए: राशि स्तम्भ का कुल Purchases A/c में डेबिट, और प्रत्येक आपूर्तिकर्ता का खाता अलग-अलग क्रेडिट।

PQ 3.1 · PYQ 2021-Jul · 5M · Pg 104 3× पूछा गया

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

मध्यम

PQ 3.2 · PYQ 2025-Sep · 4M · Pg 105

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

मध्यम

विषय 4: विक्रय बही (Sales Book)

P1-C2-U2.4-T04 · Sales Book

पहले पढ़ें Para 4.4 पढ़िए: Sales Book में केवल फर्म द्वारा व्यापार की जाने वाली वस्तुओं का उधार विक्रय दर्ज होता है; उसका प्रारूप, व्यापारिक छूट का व्यवहार, तथा posting (प्रत्येक ग्राहक अलग-अलग डेबिट, कुल Sales A/c में क्रेडिट) सीखिए।

नोट्स

क्षेत्र (Para 4.4): “वह विशेष रजिस्टर जो फर्म द्वारा व्यापार की जाने वाली वस्तुओं के उधार विक्रय दर्ज करने के लिए रखा जाता है”; नकद विक्रय Cash Book में आते हैं, और व्यापार की वस्तुओं से भिन्न मदों (जैसे फर्नीचर) का उधार विक्रय journalised होता है — नियम Purchases Book जैसे ही हैं।

प्रविष्टि की रीति: Particulars स्तम्भ में ग्राहक, माल और मात्राएँ; मदवार राशियाँ Details स्तम्भ में; एक विक्रय का योग लगाकर packing charges जोड़िए और व्यापारिक छूट घटाइए; शुद्ध राशि बाहरी स्तम्भ में — Illustration 3: ₹39,600 + ₹40,000 + ₹1,12,500 = ₹1,92,100 मासिक कुल (13 कमीजों का नकद विक्रय तथा फर्नीचर का उधार विक्रय टिप्पणी सहित छोड़ दिए गए)।

Posting: प्रत्येक ग्राहक का खाता उसके शुद्ध invoice मूल्य से डेबिट; और Sales Book का कुल Sales A/c में क्रेडिट — कुल डेबिट उस एक क्रेडिट के बराबर होते हैं, अतः दोहरा लेखा बना रहता है (Illustration 3: Sales A/c क्रेडिट ₹1,92,100)।

sale or return: अनुमोदन पर भेजा गया माल, यदि Sales Book से गुजार दिया गया हो, तब तक विक्रय नहीं है जब तक ग्राहक की वापसी-अवधि खुली है — वर्षान्त पर विक्रय उलटिए (ग्राहक क्रेडिट), लाभ का भार हटाइए और अनुमोदन-रहित माल को लागत पर माल-सूची में लीजिए (सुधार entry: लाभ से Sales/P&L Adj. डेबिट, लागत से Inventory डेबिट, invoice मूल्य से ग्राहक क्रेडिट)।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 1 प्रश्न

- सत्य/असत्य का जाल: Sales Book नकद और उधार दोनों विक्रयों के लिए नहीं रखी जाती — नकद विक्रय Cash Book में जाता है; परिसंपत्ति का उधार विक्रय (जैसे फर्नीचर) Journal Proper में।
- समझाइए कि Sales Book का कुल Sales A/c में क्रेडिट होता है जबकि प्रत्येक ग्राहक का खाता डेबिट — इस प्रकार दोहरा लेखा बना रहता है।

TQ 4.1 · PYQ 2021-Jan · सत्य/असत्य · 2M · Pg 107 **6× पूछा गया****LEVEL I**
समझ (Understanding)**सरल****अनुप्रयोग (Application)** प्रक्रिया का अभ्यास कीजिए · 5 प्रश्न

- Sales Book बनाने का अभ्यास कीजिए: प्रत्येक मद पर मात्रा × दर, प्रत्येक invoice पर व्यापारिक छूट घटाकर शुद्ध राशि बाहरी स्तम्भ में; नकद विक्रय और परिसंपत्तियों के विक्रय को टिप्पणी सहित छोड़ दीजिए।
- 4-5 अंक वाले प्रारूपों (जैसे Kamal & Sons, Gurgaon Engineers पद्धति) का अभ्यास कीजिए: कई invoices, भिन्न-भिन्न व्यापारिक छूट दरें, और मासिक कुल।

PQ 4.5 · PYQ 2025-May · 2.5M · Pg 110

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)**सरल**

PQ 4.1 · PYQ 2020-Nov · 4M · Pg 107

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)**मध्यम**

PQ 4.3 · PYQ 2023-Jun · 4M · Pg 109

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)**मध्यम**PQ 4.4 · RTP 2025-Jan · Pg 110 **2× पूछा गया****LEVEL II**
अनुप्रयोग (Application)**मध्यम**

PQ 4.2 · RTP 2023-Jun · Pg 108

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)**विश्लेषण (Analysis)** मिश्रित आँकड़ों पर कार्य कीजिए — इस संस्करण में कोई प्रश्न नहीं

- 'sale or return' की स्थितियों पर कार्य कीजिए: अनुमोदन पर भेजा गया माल विक्रय तभी माना जाता है जब अनुमोदन मिल जाए अथवा वापसी की अवधि समाप्त हो जाए; वर्षान्त पर अस्वीकृत/अनुमोदन-रहित माल विक्रय से हटाकर लागत पर माल-सूची में जोड़ना आवश्यक है।
- जहाँ तुलन-पत्र की तिथि पर वापसी का विकल्प खुला है, वहाँ Sales Book, ग्राहक खातों और अन्तिम माल-सूची के पारस्परिक सम्बन्ध पर ध्यान दीजिए।

विषय 5: विक्रय वापसी अथवा आवक वापसी बही

P1-C2-U2.4-T05 · Sales Return Books or Returns Inward Book

पहले पढ़ें Para 4.5 पढ़िए: ग्राहकों द्वारा लौटाए गए माल का अभिलेखन, ग्राहक को जारी किया जाने वाला credit note, तथा posting (कुल से Returns Inward A/c डेबिट, ग्राहक अलग-अलग क्रेडिट)।

नोट्स

क्षेत्र (Para 4.5): जहाँ ग्राहक बेचा गया माल प्रायः लौटाते हों, वहाँ वापसी Sales Returns Book अथवा Returns Inward Book में दर्ज होती है; नियम और entries Sales Book जैसी ही हैं — मात्रा × दर में से मूल विक्रय दर पर व्यापारिक छूट (SM का उदाहरण: 6 प्रतिशत @ ₹7 = ₹42 में से 10% घटाकर ₹37.80); इसमें केवल उधार बेचे गए माल की वापसी आती है — जिस वापसी पर नकद लौटा दिया जाए वह Cash Book का लेन-देन है।

Credit note: ग्राहकों से माल वापस मिलने और स्वीकार किए जाने पर सम्बन्धित ग्राहक को CREDIT note जारी किया जाता है, जिसमें वह राशि दर्शाई जाती है जो उसके खाते में क्रेडिट की जानी है (debit notes क्रय-वापसी से सम्बन्धित हैं, इस बही से नहीं)।

Posting: विक्रय-वापसी से विक्रय घटता है, अतः कुल राशि Sales A/c में डेबिट की जा सकती है, पर सामान्यतः अलग Returns Inward A/c खोलकर उसे कुल से डेबिट किया जाता है; और जिन ग्राहकों ने माल लौटाया उन्हें उनकी-उनकी राशि से अलग-अलग क्रेडिट किया जाता है।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 2 प्रश्न

- सत्य/असत्य का जाल: यदि वापसी पर धन तुरन्त लौटा दिया जाए तो लेन-देन Cash Book में दर्ज होगा, Sales Return Book में नहीं (अतः यह कथन सत्य है कि वह वहाँ दर्ज नहीं होगा)।
- प्रपत्रों का जाल: Sales Return Book का आधार CREDIT note होता है (जो ग्राहक को जारी किया जाता है) — debit notes क्रय-वापसी से सम्बन्धित हैं, अतः 'Sales Return Book debit notes से बनती है' असत्य है।

TQ 5.1 · PYQ 2006-Nov · सत्य/असत्य · 2M · Pg 111

LEVEL I
समझ (Understanding)

सरल

TQ 5.2 · MTP 2025-Jan S2 · सत्य/असत्य · 2M · Pg 112 **9x पूछा गया**

LEVEL I
समझ (Understanding)

अनुप्रयोग (Application) प्रक्रिया का अभ्यास कीजिए · 1 प्रश्न

- Sales Return Book बनाने का अभ्यास कीजिए: मात्रा × दर में से व्यापारिक छूट (मूल विक्रय वाली ही दर) घटाकर; और posting — कुल Returns Inward A/c में डेबिट, प्रत्येक ग्राहक क्रेडिट।
- स्मरण रखिए कि इसमें केवल सामान्य व्यापार में उधार बेचे गए माल की वापसी ही दर्ज होती है।

PQ 5.1 · PYQ 2025-Jan · 4M · Pg 112

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

मध्यम

विश्लेषण (Analysis) मिश्रित आँकड़ों पर कार्य कीजिए — इस संस्करण में कोई प्रश्न नहीं

- sale-or-return वाले प्रश्नों का अभ्यास कीजिए: प्रत्येक ग्राहक का पृथक विश्लेषण कीजिए — विकल्प अवधि में लौटाया गया माल, रखा/अनुमोदित माल, तथा वह माल जिसकी अवधि अवधि-अन्त तक समाप्त नहीं हुई; तदनुसार Sales समायोजित कीजिए और अनुमोदन-रहित माल को लागत पर माल-सूची में मूल्यांकित कीजिए।

विषय 6: क्रय वापसी अथवा जावक वापसी बही

P1-C2-U2.4-T06 · Purchase Returns or Returns Outward Book

पहले पढ़ें Para 4.6 पढ़िए: आपूर्तिकर्ताओं को लौटाए गए माल का अभिलेखन, आपूर्तिकर्ता को जारी debit note, तथा posting (आपूर्तिकर्ता अलग-अलग डेबिट, कुल Returns Outward/Purchase Returns A/c में क्रेडिट) — Illustrations 4 और 5 देखिए।

नोट्स

क्षेत्र (Para 4.6): यह बही आपूर्तिकर्ताओं को लौटाए गए क्रीत माल अथवा सामग्री का अभिलेख सुविधाजनक रूप से रखती है (वापसी कम होती हो तो journal ही पर्याप्त है); नियम और entries Purchases Book के दर्पण-प्रतिबिम्ब हैं — मात्रा × दर में से मूल क्रय दर पर व्यापारिक छूट (SM का उदाहरण: पंखा ₹200 में से 10% घटाकर ₹180)।

Debit note: माल लौटाने वाली फर्म आपूर्तिकर्ता को DEBIT note जारी करती है, जिसमें वह राशि बताई जाती है जिससे आपूर्तिकर्ता का खाता डेबिट किया जा रहा है; और आपूर्तिकर्ता बदले में आवश्यक credit note जारी करता है।

Posting: बही में जिस-जिस आपूर्तिकर्ता का नाम है वह डेबिट होता है (उसे माल वापस मिला है); और कुल क्रेडिट होता है — यह Purchases A/c में जा सकता है, पर व्यवहार में अलग Purchase Returns अथवा Returns Outward A/c क्रेडिट किया जाता है: “By Sundries as per Returns Outward Book” (Illustration 4: आपूर्तिकर्ता डेबिट ₹180 तथा ₹100; Returns Outward A/c क्रेडिट ₹280)।

अपवाद (Illustration 5): नकद खरीदे गए माल की वापसी तथा व्यापार से असम्बद्ध परिसंपत्तियों की वापसी (जैसे B & Co. को लौटाया गया ₹35,000 का खराब computer) Purchase Returns Book में दर्ज नहीं होती — उसमें केवल साड़ियों की उधार-क्रय वापसी ₹5,000 + ₹13,000 = ₹18,000 ही आती है।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए — इस संस्करण में कोई प्रश्न नहीं

- सत्य/असत्य का जाल: Purchase Returns Book का कुल Purchase Returns A/c के क्रेडिट पक्ष में posted होता है (आपूर्तिकर्ताओं के खाते डेबिट होते हैं), अतः ‘डेबिट पक्ष में posted होता है’ असत्य है।
- प्रपत्रों का क्रम जानिए: माल लौटाने वाली फर्म आपूर्तिकर्ता को debit note भेजती है; आपूर्तिकर्ता credit note जारी करता है।

अनुप्रयोग (Application) प्रक्रिया का अभ्यास कीजिए · 3 प्रश्न

- मानक RTP/MTP प्रारूप (Alpha & Co./Sampat & Co. पद्धति) का अभ्यास कीजिए: तिथि, debit note संख्या, आपूर्तिकर्ता का नाम, राशि; फिर ledger में posting — प्रत्येक आपूर्तिकर्ता का A/c डेबिट, और कुल राशि से Purchase Returns A/c क्रेडिट।
- अपवाद भी अभ्यास कीजिए: नकद खरीदे गए माल की वापसी तथा परिसंपत्तियों की वापसी (जैसे व्यापार से असम्बद्ध खराब computer/फर्नीचर) Purchase Returns Book में दर्ज नहीं होती।
- राशि की गणना मात्रा × दर में से मूल क्रय दर पर लागू व्यापारिक छूट घटाकर कीजिए।

PQ 6.2 • MTP 2023-Apr • 4M • Pg 114 **3x पूछा गया****LEVEL II**
अनुप्रयोग (Application)**मध्यम**

PQ 6.3 • PYQ 2026-May • 4M • Pg 114

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)**मध्यम**

विषय 7: मुख्य जर्नल का महत्त्व (Journal Proper)

P1-C2-U2.4-T07 • Importance of Journal

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं • पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक**पहले पढ़ें** §4.7 पढ़िए: Journal Proper की अवशिष्ट भूमिका और उसमें आने वाली सात प्रकार की entries।

नोट्स

अवशिष्ट भूमिका: नकद लेन-देन cash book में, माल के उधार क्रय/विक्रय purchases/sales बहियों में, वापसी returns बहियों में, और बिल bill बहियों में जाते हैं — यदि किसी लेन-देन के लिए कोई विशेष बही न हो, तो वह journal (proper) में दर्ज होता है।

सात प्रकार की entries: (i) प्रारम्भिक entries — नए वर्ष में पुस्तकें आरम्भ करते समय परिसंपत्तियों/देयताओं के प्रारम्भिक शेष; (ii) समापन entries — वर्षान्त पर nominal खातों का P&L में हस्तान्तरण; (iii) सुधार entries; (iv) हस्तान्तरण entries — राशि का एक खाते से दूसरे खाते में जाना; (v) समायोजन entries — बकाया व्यय, पूर्वदत्त व्यय, पूंजी पर ब्याज, मूल्यहास; (vi) बिलों के अनादर की entries; (vii) विविध — व्यापार की वस्तुओं से भिन्न मदों का उधार क्रय (जैसे फर्नीचर/machinery), invoice जारी होने के बाद ग्राहकों को दी गई छूट/लगाए गए प्रभार, तथा अलग bill बहियाँ न रखे जाने पर प्रतिज्ञा-पत्रों की प्राप्ति या निर्गमन।

इकाई 2.5: रोकड़ बही (Cash Book)

Cash Book

P1-C2-U2.5 • महत्त्व D • अध्याय में Rank 4 • श्रेणी C • अध्याय के 10.0% प्रश्न • 9 प्रश्न

विषय 1: रोकड़ बही - सहायक और प्रधान दोनों पुस्तक

P1-C2-U2.5-T01 • Cash Book -- A Subsidiary Book and a Principal Book

पहले पढ़ें Para 5.1 पढ़िए: Cash Book मूल प्रविष्टि की पुस्तक (सहायक बही) क्यों है, और साथ ही वह Cash A/c तथा Bank A/c का कार्य कैसे करती है, जिनके शेष सीधे तलपट में जाते हैं (प्रधान पुस्तक)।

नोट्स

दोहरा स्वरूप (SM, Para 5.1): “नकद लेन-देन सीधे Cash Book में दर्ज होते हैं और उसी अभिलेख के आधार पर

ledger खाते बनाए जाते हैं। अतः Cash Book सहायक बही है। किन्तु Cash Book स्वयं ही रोकड़ खाते और बैंक खाते का कार्य करती है; इसके शेष सीधे तलपट में जाते हैं। इसलिए Cash Book ledger का भी भाग है।”

मानक दो-पंक्ति उत्तर (सत्य, कारण सहित): (1) सहायक — यह मूल प्रविष्टि की पुस्तक है जिसमें नकद लेन-देन सबसे पहले दर्ज होते हैं; (2) प्रधान — यह स्वयं Cash A/c तथा Bank A/c का कार्य करती है, जिनके शेष सीधे तलपट में जाते हैं, अतः यह ledger का भाग है; इसीलिए Cash Book सहायक बही भी है और प्रधान पुस्तक भी।

तुलना: मुख्य Cash Book के अतिरिक्त सामान्यतः रखी जाने वाली Petty Cash Book विशुद्ध रूप से सहायक बही ही है।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 2 प्रश्न

- कारण सहित ‘सत्य’ उत्तर देने के लिए तैयार रहिए: नकद लेन-देन सबसे पहले Cash Book में ही दर्ज होते हैं (अतः यह सहायक बही है), किन्तु यही स्वयं रोकड़ और बैंक खाते का कार्य करती है और इसके शेष सीधे तलपट में जाते हैं (अतः यह प्रधान पुस्तक/ledger का भाग भी है)।
- 2 अंक वाला मानक तर्क दो वाक्यों में गढ़िए: ‘मूल प्रविष्टि की पुस्तक’ + ‘रोकड़ तथा बैंक के ledger खाते का कार्य’ — यही कथन कई sittings में दोहराया गया है (2021-Jul, 2026-May)।
- Petty Cash Book से तुलना कीजिए, जो विशुद्ध रूप से सहायक बही ही है।

TQ 1.1 · PYQ 2021-Jul · सत्य/असत्य · 2M · Pg 118 **3x पूछा गया**

LEVEL I
समझ (Understanding)

सरल

TQ 1.2 · PYQ 2026-May · सत्य/असत्य · 2M · Pg 119

LEVEL I
समझ (Understanding)

सरल

विषय 2: रोकड़ बही के प्रकार

P1-C2-U2.5-T02 · Kinds of Cash Book

पहले पढ़ें Para 5.2 पढ़िए: सरल, द्वि-स्तम्भीय और त्रि-स्तम्भीय Cash Book; रोकड़, बैंक तथा छूट स्तम्भों के संतुलन के नियम; contra entries (‘C’ से चिह्नित); प्राप्त, पृष्ठांकित और अनादृत cheques का व्यवहार; तथा imprest पद्धति वाली petty cash का प्रारूप (Illustration 4)।

नोट्स

तीन प्रकार (Para 5.2): (i) सरल Cash Book — दोनों ओर एक-एक राशि-स्तम्भ, बाईं ओर प्राप्तियाँ, दाईं ओर भुगतान, जिसे सामान्य खाते की भाँति संतुलित किया जाता है; (ii) द्वि-स्तम्भीय — रोकड़ के साथ छूट स्तम्भ अथवा रोकड़ के साथ बैंक स्तम्भ; (iii) त्रि-स्तम्भीय — रोकड़, बैंक और छूट स्तम्भ; Petty Cash Book इनके अतिरिक्त होती है और विशुद्ध सहायक है; छूट स्तम्भों में केवल नकद छूट आती है — व्यापारिक छूट पुस्तकों में दिखाई ही नहीं जाती।

संतुलन के नियम: रोकड़ स्तम्भ सदैव डेबिट शेष दिखाता है (भुगतान उपलब्ध रोकड़ से अधिक नहीं हो सकते); बैंक स्तम्भ क्रेडिट शेष दिखा सकता है — overdraft, जब क्रेडिट पक्ष का योग बढ़ा हो और अन्तर डेबिट पक्ष पर “To Balance c/d” लिखा जाए; छूट स्तम्भ कभी संतुलित नहीं किए जाते, केवल जोड़े जाते हैं — डेबिट पक्ष का योग = दी गई

छूट, जो Discount A/c में डेबिट होती है; क्रेडिट पक्ष का योग = प्राप्त छूट, जो Discount A/c में क्रेडिट होती है (ये केवल memorandum स्तम्भ हैं)।

Contra entries — L.F. में “C” लिखिए: बैंक में रोकड़ जमा करना: बैंक स्तम्भ डेबिट पक्ष + रोकड़ स्तम्भ क्रेडिट पक्ष; कार्यालय के लिए बैंक से रोकड़ निकालना: बैंक स्तम्भ क्रेडिट पक्ष + रोकड़ स्तम्भ डेबिट पक्ष (नियम: पाने वाला डेबिट, देने वाला क्रेडिट); इनकी आगे कोई posting नहीं करनी होती; और जो cheque पहले रोकड़ स्तम्भ में दर्ज हो और बाद में बैंक में जमा किया जाए, उसे बैंक भेजी गई रोकड़ की भाँति माना जाता है।

Cheque का व्यवहार: ग्राहक का cheque अनादृत — बैंक स्तम्भ में क्रेडिट पक्ष पर पक्ष का नाम लिखकर दर्ज कीजिए; फर्म का अपना cheque प्रस्तुति पर न चुकाया जाए — बैंक स्तम्भ में डेबिट पक्ष पर; पृष्ठांकित cheque — प्राप्ति पर डेबिट पक्ष और पृष्ठांकन पर क्रेडिट पक्ष (Cash Book के दोनों पक्षों पर; उसी दिन पृष्ठांकित हो तो entry आवश्यक नहीं); Illustration 5 में प्रारम्भिक bank overdraft ₹500 क्रेडिट पक्ष पर रहता है।

Credit/debit card से विक्रय (Para 5.5): विक्रेता के लिए ये नकद विक्रय के समान हैं — entry 1: Bank A/c डेबिट / Sales A/c क्रेडिट; entry 2 बैंक commission के लिए (1% से 4%, जो विक्रय-व्यय है): Commission A/c डेबिट / Bank A/c क्रेडिट — Illustration 5: card विक्रय ₹2,800 + ₹3,200 पर 1% = ₹60 commission।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 3 प्रश्न

- सत्य/असत्य के जाल: रोकड़ स्तम्भ में क्रेडिट शेष कभी नहीं आ सकता (भुगतान उपलब्ध रोकड़ से अधिक नहीं हो सकते), किन्तु बैंक स्तम्भ में आ सकता है (overdraft); छूट के स्तम्भ कभी संतुलित नहीं किए जाते — केवल जोड़कर Discount Allowed/Received A/c में हस्तान्तरित होते हैं।
- व्यापारिक छूट छूट-स्तम्भ में (और न ही पुस्तकों में कहीं) दर्ज होती है — त्रि-स्तम्भीय cash book में केवल नकद छूट (cash discount) आती है।
- पृष्ठांकित cheques: यदि cash book में दर्ज कोई cheque बाद में किसी अन्य पक्ष को endorse कर दिया जाए, तो उसे Cash Book के दोनों पक्षों में लिखना होगा (प्राप्ति पर प्राप्ति-पक्ष में, पृष्ठांकन पर भुगतान-पक्ष में)।

TQ 2.1 · PYQ 2021-Dec · Pg 119 · सत्य/असत्य · 2M

LEVEL I
समझ (Understanding)

सरल

TQ 2.2 · PYQ 2025-May · Pg 119 · सत्य/असत्य · 2M **4× पूछा गया**

LEVEL I
समझ (Understanding)

सरल

TQ 2.3 · PYQ 2026-Sep · Pg 120 · सत्य/असत्य · 2M

LEVEL I
समझ (Understanding)

अनुप्रयोग (Application) प्रक्रिया का अभ्यास कीजिए · 2 प्रश्न

- Triple Column Cash Book आद्योपान्त बनाने का अभ्यास कीजिए: प्रारम्भिक शेष (bank overdraft क्रेडिट पक्ष में), जमा/आहरण की contra entries पर ‘C’ का चिह्न, दी गई/प्राप्त नकद छूट memorandum स्तम्भों में, cheque के अनादरण की entry बैंक स्तम्भ (क्रेडिट पक्ष) में, तथा बैंक के माध्यम से debit/credit card विक्रय पर लगने वाला commission।
- imprest पद्धति पर Petty Cash Book का अभ्यास कीजिए, विश्लेषण स्तम्भों (conveyance, cartage, stationery, postage, wages, sundries) सहित, तथा शेष निकालकर imprest पुनःस्थापित करने वाली प्रतिपूर्ति भी।

- संतुलन का अभ्यास: रोकड़ और बैंक स्तम्भ संतुलित किए जाते हैं; छूट-स्तम्भ केवल जोड़े जाते हैं — कुल Discount A/c में posted होते हैं (डेबिट पक्ष का कुल = दी गई छूट, क्रेडिट पक्ष का कुल = प्राप्त छूट)।

PQ 2.1 · RTP 2022-May · Pg 120 3× पूछा गया

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

मध्यम

PQ 2.2 · PYQ 2023-Dec · 5M · Pg 122 10× पूछा गया

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

मध्यम

विषय 3: रोकड़ बही प्रविष्टियों की पोस्टिंग

P1-C2-U2.5-T03 · Posting the Cash Book Entries

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §5.3 पढ़िए: cash book के डेबिट-पक्ष और क्रेडिट-पक्ष के स्तम्भ ledger में कैसे posted होते हैं, और छूट स्तम्भों का क्या किया जाता है।

नोट्स

स्तम्भों का स्वरूप: cash book के रोकड़ स्तम्भ वास्तव में रोकड़ खाता हैं और बैंक स्तम्भ बैंक खाता, अतः इनकी ledger में अलग posting की आवश्यकता नहीं; छूट स्तम्भ केवल memorandum स्तम्भ हैं, जो कुल दी गई और कुल प्राप्त छूट बताते हैं।

posting का नियम: cash book के डेबिट पक्ष (प्राप्तियों) से सम्बन्धित खातों को उनकी राशि से क्रेडिट कीजिए, जिसमें दी गई छूट भी सम्मिलित है (जैसे Warsi से रोकड़ ₹450 + छूट ₹35 उसके खाते में "By Cash ₹450 / By Discount ₹35" अथवा "By Sundries ₹485" के रूप में posted); और क्रेडिट पक्ष (भुगतानों) से विवरण स्तम्भ में नामित खातों को डेबिट कीजिए, जिसमें प्राप्त छूट भी सम्मिलित है ("To Bank ₹330 / To Discount ₹20" अथवा "To Sundries ₹350")।

छूट के योग: डेबिट पक्ष के छूट स्तम्भ का योग Discount Account में डेबिट होता है (दी गई छूट); और क्रेडिट पक्ष के छूट स्तम्भ का योग Discount Account में क्रेडिट होता है (प्राप्त छूट)।

विषय 4: फुटकर रोकड़ बही (Petty Cash Book)

P1-C2-U2.5-T04 · Petty Cash Book

पहले पढ़ें Para 5.4 पढ़िए: Petty Cash Book का उद्देश्य, imprest पद्धति (निश्चित float, वास्तविक भुगतानों के बराबर आवधिक प्रतिपूर्ति), उसके लाभ, तथा व्यय-शीर्षों को डेबिट और Petty Cash A/c को क्रेडिट करने वाली journal entry से posting।

नोट्स

उद्देश्य (Para 5.4): फर्म एक "Petty Cashier" नियुक्त करती है जिसे छोटे भुगतान (तार, taxi किराया, cartage, postage — मान लीजिए ₹200 से कम) सौंपे जाते हैं, ताकि मुख्य cash book अनावश्यक रूप से भारी न हो और मुख्य कैशियर पर अधिक बोझ न पड़े; विश्लेषणात्मक बही में एक प्राप्ति-स्तम्भ होता है (रोकड़ केवल मुख्य कैशियर से आती है) और प्रत्येक प्रकार के भुगतान के लिए विश्लेषण-स्तम्भ (conveyance, cartage, stationery, postage, wages, sundries)।

imprest पद्धति: अवधि (सप्ताह/पखवाड़े) के आरम्भ में petty cashier को एक निश्चित राशि सौंपी जाती है और अवधि के अन्त में किए गए भुगतानों की प्रतिपूर्ति कर दी जाती है, जिससे नई अवधि के आरम्भ में उसके पास पुनः वही निश्चित राशि रहती है; प्रतिपूर्ति केवल कुल भुगतानों के विवरण पर होती है, जो vouchers से समर्थित हो और वास्तविक भुगतानों तक सीमित हो।

सुरक्षा-उपाय: निश्चित राशि इतनी हो कि थोड़े समय के सम्भावित छोटे भुगतान पूरे हो जाएँ; vouchers क्रम से संचित रहें; बिना उचित स्वीकृति कोई भुगतान न हो; निर्धारित सीमा से अधिक भुगतान केवल मुख्य कैशियर करे; और petty cashier को प्रतिपूर्ति के अतिरिक्त कोई रोकड़ न मिले।

तीन लाभ: (i) मुख्य कैशियर के समय की बचत; (ii) cash book लिखने और ledger में posting के श्रम की बचत; (iii) छोटे भुगतानों पर नियंत्रण।

posting और शेष का स्वरूप: रोकड़ सौंपते समय Petty Cash A/c डेबिट होता है (Petty Cash डेबिट / Cash क्रेडिट) और समय-समय पर कुल भुगतानों से क्रेडिट; व्यय-शीर्ष या तो स्तम्भों के योग से सीधे डेबिट होते हैं या एक ही journal entry से (Illustration 4: Conveyance डेबिट ₹6.50, Cartage ₹9.50, Stationery ₹6, Postage ₹12, Wages ₹6, Repairs ₹15, General Expenses ₹5 / Petty Cash क्रेडिट ₹60); और petty cashier के पास पड़ा शेष परिसंपत्ति है, जो तुलन-पत्र में रोकड़ शेष के भाग के रूप में दिखाया जाता है।

स्मरण (Remembering) कंठस्थ कीजिए · 1 प्रश्न

- परिभाषा: Petty Cash Book वह पुस्तक है जिसे petty cashier निश्चित imprest में से छोटे-छोटे भुगतानों (postage, cartage, conveyance आदि) के अभिलेख के लिए रखता है।
- तीन लाभ कंठस्थ कीजिए: (i) मुख्य कैशियर के समय की बचत, (ii) cash book लिखने और ledger posting के श्रम की बचत, (iii) छोटे भुगतानों पर नियंत्रण — यह 3-5 अंक के लिए पूछा जाता है।
- सुरक्षा-उपाय स्मरण रखिए: भुगतान केवल vouchers के आधार पर, अधिकृत स्वीकृति आवश्यक, और petty cashier को प्रतिपूर्ति के अतिरिक्त कोई रोकड़ नहीं मिलती।

TQ 4.1 · PYQ 2022-May · 5M · Pg 124

LEVEL I

स्मरण (Remembering)

सरल

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 1 प्रश्न

- सत्य/असत्य के जाल: petty cash कोई व्यय नहीं है — petty cash book का शेष एक परिसंपत्ति है (petty cashier के पास पड़ी रोकड़), जो तुलन-पत्र में रोकड़ के भाग के रूप में दिखाई जाती है।
- imprest पद्धति समझाइए: अवधि के आरम्भ में एक निश्चित राशि अग्रिम दी जाती है और केवल voucher-समर्थित वास्तविक भुगतानों की प्रतिपूर्ति की जाती है, जिससे float पुनः पूर्ण हो जाता है।

TQ 4.2 • MTP 2024-Jul • सत्य/असत्य • 2M • Pg 125 3× पूछा गया

LEVEL I
समझ (Understanding)

सरल

विषय 5: Credit/Debit Card से बिक्री

P1-C2-U2.5-T05 • Entries for Sale Through Credit/Debit Cards

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं • पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §5.5 पढ़िए: card से विक्रय की प्रक्रिया तथा विक्रेता की पुस्तकों में की जाने वाली दो journal entries।

नोट्स

प्रक्रिया: credit card ग्राहक की साख (आय के स्रोत) जाँचने के बाद जारी किया जाता है, जबकि debit card उस ग्राहक को जारी होता है जिसका बैंक में खाता हो (ATM card भी debit card की तरह काम करते हैं); विक्रेता दिन भर की card slips अपने बैंक को देता है, जो विक्रेता के खाते में क्रेडिट करता है और card जारी करने वाले बैंक/कंपनी को डेबिट; जारीकर्ता बैंक प्रति लेन-देन 1% से 4% commission लेता है, जो तुरन्त विक्रेता के बैंक खाते में डेबिट हो जाता है; debit card धारक का खाता तुरन्त डेबिट होता है, जबकि credit card धारक मासिक रूप से पूरा या आंशिक भुगतान करता है (पूरा न करने पर ब्याज)।

लेखांकन: विक्रेता की दृष्टि से card से विक्रय नकद विक्रय के समान है और बैंक commission विक्रय-व्यय है — entries: (1) Bank A/c डेबिट / Sales A/c क्रेडिट (credit/debit card से किया गया विक्रय); (2) Commission A/c डेबिट / Bank A/c क्रेडिट (बैंक द्वारा लिया गया commission)।

इकाई 2.6: त्रुटियों का सुधार (Rectification of Errors)

Rectification of Errors

P1-C2-U2.6 • महत्त्व B • अध्याय में Rank 1 • श्रेणी A • अध्याय के 37.8% प्रश्न • 34 प्रश्न

विषय 1: परिचय

P1-C2-U2.6-T01 • Introduction

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं • पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §6.1 पढ़िए: त्रुटियों का अर्थ और उनके उदाहरण — गलत entry, सहायक बहियों का गलत योग, तथा cash book का गलत योग।

नोट्स

त्रुटियाँ: लेन-देन दर्ज करने की प्रक्रिया में राशियों और खातों का अनजाने में छूट जाना अथवा गलत हो जाना — ये वित्तीय आँकड़े एकत्र करते समय अथवा उन्हें दर्ज करते समय होती हैं, और गणितीय भूल, लेखांकन नीतियों के प्रयोग में भूल, तथ्यों की गलत व्याख्या अथवा असावधानी से उत्पन्न होती हैं (जानबूझकर की गई भूल छल है, त्रुटि नहीं)।

तलपट से सम्बन्ध: यदि तलपट न मिले तो निश्चित रूप से ऐसी त्रुटियाँ हैं जिनका सुधार आवश्यक है; किन्तु कुछ त्रुटियाँ तलपट को बिल्कुल प्रभावित नहीं करतीं, फिर भी लाभ-हानि तथा परिसंपत्तियों और देयताओं के निर्धारण को प्रभावित कर सकती हैं।

उदाहरण: गलत entry (₹17,270 का उधार क्रय Purchases Day Book में ₹17,720 लिखा जाना), सहायक बहियों का गलत योग (₹1,75,700 का उधार विक्रय जोड़कर ₹1,76,700 posted होना), तथा cash book में गलत योग लगने से गलत शेष c/d निकलना।

विषय 2: त्रुटियों के चरण

P1-C2-U2.6-T02 · Stages of Errors

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §6.2 पढ़िए: लेखांकन प्रक्रिया के चारों चरणों में सम्भव त्रुटियाँ और उनसे बनने वाली चार व्यापक श्रेणियाँ।

नोट्स

चार चरण: (i) journal में अभिलेखन — सैद्धान्तिक त्रुटियाँ, omission तथा commission की त्रुटियाँ; (ii) ledger में posting — omission (आंशिक/पूर्ण) तथा commission (गलत खाता, गलत पक्ष, गलत राशि); (iii) ledger खातों का संतुलन — गलत योग, गलत संतुलन; (iv) तलपट बनाना — omission, तथा commission (गलत खाता लेना, गलत राशि, गलत पक्ष)।

चार व्यापक श्रेणियाँ: इसी आधार पर त्रुटियाँ सैद्धान्तिक त्रुटियाँ (Errors of Principle), लोप की त्रुटियाँ (Errors of Omission), लेखन की त्रुटियाँ (Errors of Commission) तथा प्रतिपूरक त्रुटियाँ (Compensating Errors) में वर्गीकृत की जाती हैं।

विषय 3: त्रुटियों के प्रकार

P1-C2-U2.6-T03 · Types of Errors

पहले पढ़ें Paras 6.1-6.3 पढ़िए: त्रुटियों की चार श्रेणियाँ — सैद्धान्तिक त्रुटियाँ, लोप की त्रुटियाँ (पूर्ण/आंशिक), लेखन की त्रुटियाँ तथा प्रतिपूरक त्रुटियाँ — और साथ ही यह दोहरा वर्गीकरण कि कौन-सी त्रुटियाँ तलपट को प्रभावित करती हैं और कौन-सी नहीं।

नोट्स

सैद्धान्तिक त्रुटियाँ (SM): “जब कोई लेन-देन लेखांकन सिद्धांतों के विरुद्ध दर्ज किया जाए, जैसे परिसंपत्ति के क्रय को व्यय मान लेना, तो वह सैद्धान्तिक त्रुटि है” — जैसे computer खरीदने पर office expenses खाता डेबिट कर देना, अथवा राजस्वगत व्यय को पूंजीगत मान लेना (या इसके विपरीत), अथवा स्थायी परिसंपत्ति के विक्रय को सामान्य विक्रय मान लेना; तलपट फिर भी मिल जाता है, क्योंकि राशियाँ सही पक्ष पर ही रहती हैं, बस खाता गलत होता है।

लिपिकीय त्रुटियाँ — तीन प्रकार: (i) **लोप** — लेन-देन पूर्णतः अथवा आंशिक रूप से छूट जाना (पूर्ण: entry सहायक बही में लिखी ही न जाना; आंशिक: ledger में posting छूट जाना); (ii) **लेखन** — राशि गलत खाते में posted होना, गलत पक्ष पर लिखी जाना, गलत योग (सहायक बही का कम/अधिक योग) अथवा गलत शेष निकालना; (iii) **प्रतिपूरक** — त्रुटियों के प्रभाव परस्पर कट जाते हैं, अतः तलपट मिल जाता है (जैसे A से मिले ₹10 उसके खाते में क्रेडिट न होना और sales book का योग ₹10 अधिक हो जाना)।

वे त्रुटियाँ जो तलपट को प्रभावित करती हैं: सहायक बहियों का गलत योग; किसी खाते का गलत संतुलन; राशि का गलत पक्ष पर posting; गलत राशि की posting; किसी राशि अथवा सहायक बही के योग की posting छूट जाना; तलपट में cash book के शेष अथवा किसी खाते का शेष छूट जाना; शेष को गलत स्तम्भ में लिखना; तथा तलपट का योग गलत लगाना।

वे त्रुटियाँ जो तलपट को प्रभावित नहीं करतीं: सहायक बही से entry का बिल्कुल छूट जाना (पूर्ण लोप); सहायक बही में गलत राशि से entry करना; सही पक्ष पर, किन्तु गलत खाते में posting (जो राशि A के डेबिट में जानी थी वह B में डेबिट हो गई) — इनके अतिरिक्त सैद्धान्तिक और प्रतिपूरक त्रुटियाँ भी तलपट को मिला हुआ ही छोड़ती हैं।

वर्गीकरण का अभ्यास: सहायक बही में गलत राशि → लेखन, तलपट मिलेगा; day-book का कम/अधिक योग → लेखन, तलपट नहीं मिलेगा; लेन-देन का बिल्कुल दर्ज न होना → पूर्ण लोप, तलपट मिलेगा; परिसंपत्ति का क्रय व्यय में डेबिट (फर्नीचर General Expenses में) → सैद्धान्तिक, तलपट मिलेगा; गलत पक्ष पर posting अथवा गलत संतुलन → लेखन, तलपट नहीं मिलेगा।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 7 प्रश्न

- परिभाषाएँ और सत्य/असत्य के जाल: प्रतिपूरक त्रुटियाँ वे हैं जिनके प्रभाव परस्पर कट जाते हैं, अतः तलपट मिल ही जाएगा ('तलपट नहीं मिलेगा' कहने वाला कथन असत्य है)।
- गलत खाते में posting, गलत पक्ष में posting, गलत योग अथवा गलत संतुलन = लेखन-त्रुटियाँ (errors of COMMISSION) हैं, सैद्धान्तिक त्रुटियाँ नहीं (यह असत्य कथन बार-बार आता है)।
- सैद्धान्तिक त्रुटि = लेखांकन सिद्धांतों के विरुद्ध अभिलेखन, जैसे फर्नीचर का क्रय General Expenses A/c में डेबिट करना — यह PRINCIPLE की त्रुटि है, omission की नहीं; और तलपट फिर भी मिल जाता है।
- किसी सहायक बही का कम/अधिक योग लगाना लेखन-त्रुटि है (सत्य) और इससे तलपट प्रभावित होता ही है।

TQ 3.2 · PYQ 2019-Jun · सत्य/असत्य

LEVEL I
समझ (Understanding)**सरल**TQ 3.7 · PYQ 2024-Jun · सत्य/असत्य **2x पूछा गया****LEVEL I**
समझ (Understanding)**सरल**

TQ 3.1 · PYQ 2018-May · सत्य/असत्य 10× पूछा गया	LEVEL I समझ (Understanding)	मध्यम
TQ 3.3 · RTP 2020-May · सत्य/असत्य 2× पूछा गया	LEVEL I समझ (Understanding)	मध्यम
TQ 3.4 · PYQ 2020-Nov · सत्य/असत्य	LEVEL I समझ (Understanding)	मध्यम
TQ 3.5 · PYQ 2023-Jun · सत्य/असत्य	LEVEL I समझ (Understanding)	
TQ 3.8 · PYQ 2026-Sep · सत्य/असत्य	LEVEL I समझ (Understanding)	

विश्लेषण (Analysis) मिश्रित ऑकड़ों पर कार्य कीजिए · 1 प्रश्न

- 5-6 त्रुटियों की मिश्रित सूची को omission / commission / principle में बाँटने का अभ्यास कीजिए (MTP पद्धति): सहायक बही में गलत राशि → commission; लेन-देन का बिल्कुल दर्ज न होना → पूर्ण omission; परिसंपत्ति के क्रय को व्यय मानना (अथवा पूंजीगत बनाम राजस्वगत का घालमेल) → principle।
- प्रत्येक त्रुटि पर दूसरा प्रश्न भी हल कीजिए: क्या इससे तलपट का मिलान प्रभावित होता है? Study Material की सूचियाँ कंठस्थ कीजिए — योग/posting/संतुलन की त्रुटियाँ प्रभावित करती हैं; पूर्ण omission, सहायक बही में गलत राशि, और सही पक्ष पर गलत खाते में posting प्रभावित नहीं करती।

TQ 3.6 · MTP 2023-Nov · वर्णनात्मक · 5M · Pg 132 6× पूछा गया

LEVEL II
विश्लेषण (Analysis)

मध्यम

विषय 4: त्रुटियाँ खोजने के चरण

P1-C2-U2.6-T04 · Steps to Locate Errors

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §6.4: तलपट (Trial Balance) न मिलने पर आठ-चरणीय खोज क्रम पढ़ें।

नोट्स

चरण (i)-(iv): तलपट के दोनों स्तम्भों का योग फिर से लगाइए (और उससे बनी सूचियाँ, जैसे व्यापारिक प्राप्य की सूची, भी जाँचिए); देखिए कि रोकड़ और बैंक शेष सम्मिलित हैं या नहीं; ठीक-ठीक अन्तर निकालिए — अन्तर के बराबर का कोई शेष छूटा हो सकता है, और अन्तर को आधा कीजिए — आधे के बराबर का शेष गलत स्तम्भ में हो सकता है; फिर ledger खातों के शेष दोबारा निकालिए।

चरण (v)-(viii): सहायक बहियों के योग दोबारा जाँचिए (विशेषकर तब जब अन्तर ₹1, ₹100 आदि हो); अन्तर बहुत बड़ा हो तो खातों के शेषों की पिछली अवधि से तुलना कीजिए और तात्त्विक विचलनों की जाँच कीजिए (जैसे Sales ₹32,53,000 बनाम पिछले वर्ष ₹36,45,000); अन्तर अथवा उसके आधे के बराबर की postings देखिए (वे छूटी हो सकती हैं या गलत पक्ष में गई हो सकती हैं); और यदि तब भी बात न बने तो प्रारम्भिक entry सहित सभी entries की पूरी

जाँच कीजिए, अच्छा यह होगा कि आरम्भ nominal खातों से किया जाए।

विषय 5: त्रुटियों का सुधार

P1-C2-U2.6-T05 · Rectification of Errors

पहले पढ़ें Paras 6.5.1–6.5.3 पढ़िए: सुधार के तीन चरण — तलपट से पहले (एकपक्षीय त्रुटियाँ खाते में विवरण लिखकर, द्विपक्षीय journal entries से), तलपट के बाद Suspense Account से, तथा अगली अवधि में P&L Adjustment A/c के माध्यम से।

नोट्स

तीन चरण (Para 6.5): सुधार कभी ऊपर से लिखकर (overwriting) न कीजिए — (a) तलपट से पहले: एकपक्षीय त्रुटियाँ (तथा वे बहु-खाता त्रुटियाँ जहाँ पूरी entry सम्भव नहीं) सम्बन्धित खाते में सुधार-विवरण लिखकर ठीक की जाती हैं (जैसे Purchases A/c के डेबिट पर “To Undercasting of Purchases Book ₹100”), जबकि द्विपक्षीय त्रुटियों की सामान्य journal entries होती हैं; (b) तलपट के बाद, किन्तु अन्तिम खातों से पहले: प्रत्येक त्रुटि पूरी journal entry से सुधरती है, जिसका अज्ञात पक्ष Suspense A/c में जाता है; (c) अगली अवधि में: P&L Adjustment A/c के माध्यम से — अतः न ‘सभी त्रुटियों के लिए journal entry चाहिए’ सत्य है, न ‘सभी त्रुटियाँ Suspense से सुधरती हैं’।

Suspense Account: अन्तर को Suspense A/c में डालकर तलपट कृत्रिम रूप से मिला लिया जाता है — क्रेडिट स्तम्भ बड़ा हो तो वह डेबिट होता है और इसके विपरीत भी; इसीलिए उसका प्रारम्भिक शेष तलपट के अन्तर के बराबर होता है; सभी सुधारों के बाद Suspense बन्द हो जाना चाहिए — शेष बचना यह सिद्ध करता है कि कुछ त्रुटियाँ अभी भी पकड़ में नहीं आई हैं (Mr. W & H / Mr. A प्रकार के प्रश्न)।

यांत्रिक नियम: गलत पक्ष पर posting → सुधार दुगुनी राशि से (₹200 राम के खाते में क्रेडिट होने के स्थान पर डेबिट हो गए → “By posting on the wrong side ₹400”; ₹200 का विक्रय Singh & Co. में क्रेडिट → Singh & Co. डेबिट ₹400 / Suspense क्रेडिट); गलत राशि → सुधार अन्तर की राशि से (₹51 को ₹15 posted किया गया → ₹36 डेबिट); day-book के योग की त्रुटि → एकपक्षीय, खाते में विवरण लिखकर अथवा Suspense से (sales book ₹100 कम: Suspense डेबिट / Sales क्रेडिट ₹100); छूट स्तम्भ का योग posted न होना → Discount A/c डेबिट / Suspense क्रेडिट।

क्लासिक आदर्श entries: परिसंपत्ति का क्रय Purchases Book से गुजरना: Furniture (परिसंपत्ति) डेबिट / Purchases क्रेडिट; पुरानी machinery का विक्रय Sales Book से: Sales डेबिट / Machinery क्रेडिट; राम से किया गया क्रय Sales Book में चला जाना: Purchases डेबिट तथा Sales डेबिट / Ram क्रेडिट (दोहरा प्रभाव); उधार विक्रय Purchases Book में (Ramesh ₹120): Ramesh डेबिट ₹240 / Purchases क्रेडिट ₹120, Sales क्रेडिट ₹120; Kamal से प्राप्त राशि Krishan में क्रेडिट: Krishan डेबिट / Kamal क्रेडिट; आहरण व्ययों में डेबिट: Drawings डेबिट / Trade Expenses क्रेडिट; ग्राहक की वापसी Sales Day Book में: Sales डेबिट तथा Sales Returns डेबिट / Suspense क्रेडिट।

अगली अवधि में सुधार (Para 6.5.3): अगले वर्ष nominal खातों को सामान्य खातों से सुधारने पर उस वर्ष का P&L विकृत हो जाएगा, इसलिए व्यय/आय से सम्बन्धित सभी राशियाँ “Profit and Loss Adjustment Account” (Prior

Period Items) से गुजारी जाती हैं — अर्थात् पिछली अवधियों की त्रुटियों/लोप से चालू अवधि में उत्पन्न तात्त्विक आय अथवा व्यय, जो अलग से प्रकट किए जाते हैं और चालू वर्ष का लाभ निकालने के बाद प्रभारित होते हैं; पूंजीकृत मदों पर मूल्यहास भी लगेगा (₹3,000 का scooter conveyance में डेबिट → Motor Vehicles डेबिट ₹2,700, अर्थात् ₹3,000 में से 10% मूल्यहास घटाकर / P&L Adjustment क्रेडिट); और P&L Adjustment A/c तथा Suspense A/c के अन्तिम शेष Capital A/c में हस्तान्तरित कर दिए जाते हैं (Mr. Roy प्रकार)।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 2 प्रश्न

- सत्य/असत्य के जाल: तलपट के बाद सभी त्रुटियाँ Suspense A/c से नहीं सुधारी जातीं — द्विपक्षीय त्रुटियाँ सामान्य journal entries से सुधरती हैं; और 'सभी त्रुटियाँ journal entries से सुधारी जाती हैं' भी असत्य है, क्योंकि तलपट बनने से पहले पकड़ी गई एकपक्षीय त्रुटियाँ उसी खाते में विवरण लिखकर सुधारी जाती हैं।
- यह भी जानिए कि Suspense A/c का प्रारम्भिक शेष तलपट के अन्तर के बराबर क्यों होता है, और अगली अवधि में nominal खातों का सुधार P&L Adjustment A/c (Prior Period Items) से क्यों किया जाता है — ताकि चालू वर्ष का लाभ विकृत न हो।

TQ 5.1 · PYQ 2022-Nov · सत्य/असत्य · 2M · Pg 134 **2× पूछा गया**

LEVEL I
समझ (Understanding)

मध्यम

TQ 5.2 · PYQ 2024-Jun · सत्य/असत्य · 2M · Pg 134 **2× पूछा गया**

LEVEL I
समझ (Understanding)

मध्यम

अनुप्रयोग (Application) प्रश्न हल कीजिए · 5 प्रश्न

PQ 5.4 · RTP 2023-Dec · Pg 139 **3× पूछा गया**

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

PQ 5.9 · PYQ 2021-Jul · 10M · Pg 147 **6× पूछा गया**

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

PQ 5.17 · MTP 2025-Apr S1 · 5M · Pg 159

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

PQ 5.19 · MTP 2025-Aug S1 · 5M · Pg 163

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

PQ 5.24 · PYQ 2026-Sep · 10M · Pg 173

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

विश्लेषण (Analysis) मिश्रित आँकड़ों पर कार्य कीजिए · 19 प्रश्न

- क्लासिक प्रारूपों पर अधिकार कीजिए: क्रय/विक्रय का गलत day book से गुजरना (Purchases और Sales दोनों पर दोहरा प्रभाव); वापसी का Sales Day Book में दर्ज होना; गलत पक्ष पर posting (सुधार दुगुनी राशि से); गलत राशि (सुधार अन्तर की राशि से); day-book के योग की त्रुटियाँ (एकपक्षीय, Suspense से)।
- पूरे 10-12 अंक वाले प्रश्नों का अभ्यास कीजिए: Suspense A/c सहित सुधार entries, मूल अन्तर ज्ञात करने के लिए Suspense A/c बनाना, तथा पूंजीकृत मदों पर मूल्यहास सहित अगले वर्ष के सुधार P&L Adjustment A/c से (Mr. Roy/Miss Daisy प्रकार)।

- entry लिखने से पहले प्रत्येक मद का वर्गीकरण कीजिए: सैद्धान्तिक त्रुटियाँ लाभ बदलती हैं, तलपट नहीं; और योग की त्रुटियाँ केवल तलपट को प्रभावित करती हैं।
- गलत बने हुए तलपट को पुनः बनाने का अभ्यास भी कीजिए, जिसमें मर्दे गलत पक्षों पर दी गई हों (2025-Aug MTP प्रकार)।

PQ 5.1 · PYQ 2018-May · 4M · Pg 135 3× पूछा गया	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	मध्यम
PQ 5.3 · PYQ 2018-Nov · 5M · Pg 137 5× पूछा गया	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	मध्यम
PQ 5.5 · PYQ 2019-Jun · 4M · Pg 140	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	मध्यम
PQ 5.7 · PYQ 2020-Nov · 5M · Pg 144 4× पूछा गया	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	मध्यम
PQ 5.10 · PYQ 2021-Dec · 5M · Pg 149 2× पूछा गया	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	मध्यम
PQ 5.13 · RTP 2023-Dec · Pg 153 2× पूछा गया	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	मध्यम
PQ 5.14 · MTP 2024-Jun · 4M · Pg 155 2× पूछा गया	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	मध्यम
PQ 5.16 · PYQ 2024-Sep · 4M · Pg 158	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	मध्यम
PQ 5.21 · RTP 2025-Sep · Pg 167	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	मध्यम
PQ 5.2 · PYQ 2018-May · 10M · Pg 136	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	कठिन
PQ 5.6 · PYQ 2019-Nov · 10M · Pg 141	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	कठिन
PQ 5.8 · PYQ 2021-Jan · 10M · Pg 145 4× पूछा गया	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	कठिन
PQ 5.11 · RTP 2022-May · Pg 150	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	कठिन
PQ 5.12 · MTP 2023-May · 10M · Pg 151 2× पूछा गया	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	कठिन
PQ 5.15 · PYQ 2024-Jun · 12M · Pg 156	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	कठिन
PQ 5.18 · PYQ 2025-May · 10M · Pg 160 5× पूछा गया	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	कठिन
PQ 5.20 · PYQ 2025-Sep · 12M · Pg 164 2× पूछा गया	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	कठिन
PQ 5.22 · PYQ 2026-Jan · 12M · Pg 168	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	कठिन
PQ 5.23 · PYQ 2026-May · 10M · Pg 171	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	कठिन

अध्याय 3

बैंक समाधान विवरण (Bank Reconciliation Statement)

Bank Reconciliation Statement

7 विषय · 29 वर्गीकृत प्रश्न · महत्त्व: B

ICAI कौशल प्रोफाइल Level I 5–20% · Level II 80–95% — यह अध्याय है **लगभग पूर्णतः समस्या-समाधान**

Level I — स्मरण एवं समझ

3.9%

178 में से 7 अंक

Level II — अनुप्रयोग एवं विश्लेषण

96.1%

178 में से 171 अंक

विषय 1: परिचय

P1-C3-U3-T01 · Introduction

पहले पढ़ें ICAI Study Material के Introduction तथा Bank Pass Book खंड पढ़िए: बैंक द्वारा प्रदत्त सेवाएँ, pass book/bank statement क्या है, तथा ग्राहक की cash book एवं बैंक की पुस्तकों में शेषों की प्रकृति किस प्रकार भिन्न होती है।

नोट्स

बैंक द्वारा प्रदत्त सेवाएँ: (i) promissory notes/hundies को एक छोटे शुल्क, जिसे discount कहते हैं, पर भुनाना, (ii) अच्छे ग्राहकों को overdraft की सुविधा, (iii) ऋण देना (working capital, term loan), (iv) dividend warrants तथा प्रतिभूतियों पर ब्याज वसूलना, (v) standing instructions पर बीमा प्रीमियम, किराया आदि चुकाना, (vi) shares, debentures एवं सरकारी प्रतिभूतियाँ क्रय-विक्रय करना, (vii) कम लागत पर धन-प्रेषण, (viii) प्रतिभूति या गारंटी देना, (ix) letters of credit एवं travellers' cheques जारी करना, (x) international banking — मुद्रा-विनिमय, सीमा-पार भुगतान, export-import credit।

Bank pass book (SM): "Bank pass book is merely a copy of the customer's account in the books of a bank" — यह बैंक का वह साधन है जिससे वह ग्राहक को उसके खाते की प्रविष्टियों से अवगत रखता है; ग्राहक को प्रविष्टियाँ जाँचकर त्रुटियों की सूचना देनी चाहिए; वर्षान्त पर बैंक से शेष का मुद्रांकित एवं हस्ताक्षरित प्रमाण-पत्र अवश्य लेना चाहिए।

Pass book शेष की प्रकृति: pass book के अनुसार Cr. शेष = ग्राहक द्वारा किया गया जमा; pass book के अनुसार Dr. शेष = overdraft (ग्राहक बैंक का देनदार)।

दर्पण-सम्बन्ध: pass book का debit शेष cash book के credit शेष को दर्शाता है और इसके विपरीत भी — क्योंकि व्यवसाय बैंक को debtor/trade receivable मानता है जबकि बैंक व्यवसाय को creditor/trade payable मानता है — अतः cash book का Dr. शेष = बैंक में धन (favourable), जबकि overdraft cash book में Cr. शेष तथा pass

book में Dr. शेष होता है।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 1 प्रश्न

- यह समझाने योग्य बने कि cash book का debit शेष बैंक में धन (favourable) दर्शाता है, जबकि overdraft cash book में credit शेष तथा pass book में DEBIT शेष के रूप में आता है — यही उत्कृष्ट True/False जाल है।
- दर्पण-सम्बन्ध समझिए: व्यवसाय बैंक को debtor मानता है, बैंक ग्राहक को creditor मानता है, अतः cash book एवं pass book के शेष परिमाण में समान किन्तु प्रकृति में विपरीत होते हैं।
- स्मरण रखिए कि pass book बैंक की पुस्तकों में ग्राहक के खाते की मात्र प्रतिलिपि है; pass book के अनुसार Cr. शेष = जमा, Dr. शेष = overdraft।

TQ 1.1 · RTP 2025-May [1] (c) · True/False · 2M · Pg 178

LEVEL I
समझ (Understanding)

विषय 2: पृष्ठभूमि

P1-C3-U3-T02 · Background

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §2 पढ़िए: बैंक/रोकड़ प्रविष्टियों में हेर-फेर द्वारा हुई पूर्ववर्ती धोखाधड़ियों ने किस प्रकार reconciliation को internal control का अंग बना दिया।

नोट्स

Reconciliation क्यों: अनेक कॉर्पोरेट धोखाधड़ियाँ bank statement या cash book की प्रविष्टियों में हेर-फेर से हुई हैं (जैसे हितधारकों को भ्रमित करने हेतु गलत बैंक-शेष प्रस्तुत करना) — इसीलिए बैंक एवं रोकड़ शेषों का reconciliation प्रबन्धन द्वारा रखे जाने वाले internal control का अभिन्न अंग बन गया; यह कपटपूर्ण गतिविधि की जाँच करता है तथा वित्तीय विवरणों की त्रुटियाँ रोकने में सहायक है।

आवृत्ति: reconciliation सामान्य लेखांकन प्रक्रिया के अंग के रूप में नियमित अन्तरालों पर — प्रायः मासिक या त्रैमासिक — किया जाता है; आवृत्ति मुख्यतः संगठन के आकार तथा लेन-देनों की संख्या पर निर्भर करती है।

विषय 3: बैंक पास बुक (Bank Pass Book)

P1-C3-U3-T03 · Bank Pass Book

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §3 पढ़िए: pass book का स्वरूप एवं प्रारूप, तथा cash book की तुलना में उसके शेष की विपरीत प्रकृति।

नोट्स

अर्थ: bank pass book बैंक की पुस्तकों में ग्राहक के खाते की मात्र एक प्रतिलिपि है — बैंक आवधिक विवरण भेजता है अथवा pass book देता है जिसमें सभी जमा एवं आहरण अंकित रहते हैं, जिससे ग्राहक अपने खाते की प्रविष्टियों से अवगत रहता है; ग्राहक को प्रविष्टियाँ जाँचकर किसी भी त्रुटि की सूचना बैंक को तुरन्त देनी चाहिए (अब विवरण Net Banking/ATM passbook printers से भी उपलब्ध हैं)।

प्रारूप: स्तम्भ — Transaction Period/Date · Particulars · Cheque No. · Withdrawals Dr.(₹) · Deposits Cr. (₹) · Balance Dr. या Cr.; व्यावसायिक संस्थानों को वर्षान्त पर बैंक से शेष दर्शाता हुआ मुद्रांकित एवं हस्ताक्षरित प्रमाण-पत्र भी लेना चाहिए।

विपरीत प्रकृति: pass book के अनुसार credit शेष = ग्राहक का जमा, debit शेष = overdraft; pass book का debit शेष cash book के credit शेष को दर्शाता है और इसके विपरीत भी, क्योंकि उद्यम बैंक को debtor मानता है जबकि बैंक उद्यम को creditor मानता है।

विषय 4: बैंक समाधान विवरण (Bank Reconciliation Statement - BRS)

P1-C3-U3-T04 · Bank Reconciliation Statement

पहले पढ़ें अध्याय का Section 4 पढ़िए: reconciliation का अर्थ, दो अभिलेख (cash book का bank column बनाम pass book/bank statement) तथा BRS का प्रयोजन — यह अन्तर के कारणों में सामंजस्य बैठाता है, पुस्तकों हेतु बैंक-शेष की गणना स्वयं नहीं करता।

नोट्स

दो अभिलेख: प्रत्येक बैंकिंग लेन-देन दो स्थानों पर अंकित होता है — cash book का bank column (ग्राहक की पुस्तकें) तथा bank statement/pass book (बैंक की पुस्तकें); अतः दोनों शेष समान परिमाण के किन्तु विपरीत प्रकृति के होने चाहिए (₹1,00,000 का जमा → cash book के Dr. पक्ष में, pass book में Cr. प्रविष्टि) — किन्तु व्यवहार में timing, बैंक द्वारा स्वयं किए गए लेन-देन तथा त्रुटियों के कारण अन्तर आ जाता है।

BRS (SM): वह विवरण जो “the bank balance as per cash book with the balance as per the pass book by showing all the causes of difference” में सामंजस्य बैठाता है — इसका प्रयोजन अन्तर के कारणों को स्पष्ट/समाधित करना है, केवल बैंक-शेष निकालना नहीं।

स्वरूप: BRS मात्र एक statement है, न कोई खाता और न double-entry प्रणाली का अंग; reconciliation दोनों दिशाओं में हो सकता है — cash book से pass book शेष तक, अथवा pass book से cash book शेष तक।

कार्य-विधि: प्रत्येक मद को वर्गीकृत कीजिए — timing difference (निर्गत चेक प्रस्तुत नहीं, जमा चेक clear नहीं), बैंक द्वारा स्वयं किया गया लेन-देन, अथवा त्रुटि; फिर दूसरी पुस्तक के शेष पर उसका दिशात्मक प्रभाव निकालकर प्रारम्भिक शेष में जोड़िए/घटाइए; यदि प्रारम्भिक शेष भी भिन्न हों तो अचिह्नित मदों को प्रारम्भिक-शेष एवं अन्तिम-शेष reconciliation में बाँटिए।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 1 प्रश्न

- True/False कथनों को सिद्ध करने को तैयार रहिए: BRS cash book एवं pass book के शेषों के अन्तर के कारणों को स्पष्ट/समाधित करने हेतु बनाया जाता है, केवल 'बैंक-शेष निकालने' हेतु नहीं।
- समझाइए कि दोनों शेष समान किन्तु विपरीत क्यों होने चाहिए (एक ही लेन-देन दो स्थानों पर अंकित) तथा व्यवहार में वे भिन्न क्यों हो जाते हैं।
- जानिए कि BRS एक statement है — न खाता, न double-entry प्रणाली का अंग।

TQ 4.1 · RTP 2024-Sep [1] (c) · True/False · Pg 179 6x पूछा गया

LEVEL I
समझ (Understanding)**सरल****विश्लेषण (Analysis)** मिश्रित आँकड़ों पर कार्य कीजिए · 1 प्रश्न

- cash book के Dr. शेष से आरम्भ होने वाले पूर्ण BRS प्रश्नों का अभ्यास कीजिए (जैसे ₹37,25,000 वाले प्रकार के प्रश्न), और जोड़ना/घटाना तय करने से पहले प्रत्येक मद को timing difference, बैंक-जनित प्रविष्टि अथवा त्रुटि में वर्गीकृत कीजिए।
- निर्गत किन्तु अप्रस्तुत चेकों, जमा किन्तु अ-clear चेकों, तथा केवल एक ही पुस्तक में अंकित मदों पर दृष्टि रखिए; प्रत्येक मद का दूसरी पुस्तक के शेष पर दिशात्मक प्रभाव निकालिए।

PQ 4.1 · PYQ 2026-May [5] (a) (Or) (ii) · Practical · 5M · Pg 179

LEVEL II
विश्लेषण (Analysis)**मध्यम****विषय 5: बैंक समाधान विवरण का महत्त्व**

P1-C3-U3-T05 · Importance of Bank Reconciliation Statement

पहले पढ़ें Section 5 पढ़िए: internal-control साधन के रूप में BRS की मुख्य विशेषताएँ/महत्त्व तथा अन्तर के तीन कारण — timing, बैंक द्वारा स्वयं किए गए लेन-देन, एवं त्रुटियाँ — मानक मद-सूची सहित।

नोट्स

Internal control: BRS नकद-प्रवाहों के internal control का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण साधन है — यह cash book या pass book में हुई त्रुटियों, धोखाधड़ियों तथा अनियमितताओं को, चाहे वे जान-बूझकर हों या अनजाने, पकड़ने में सहायक है, जिससे लेखाकार अभिलेखन में सतर्क रहते हैं।

पाँच मुख्य विशेषताएँ: (i) cash book या pass book की किसी भी त्रुटि को उजागर करता है; (ii) चेकों के clearance में अनुचित विलम्ब को सामने लाता है; (iii) नियमित reconciliation गबन को हतोत्साहित करता है (जिन रोकड़ियों ने रोकड़ cash book में तो चढ़ाई पर बैंक में जमा कभी नहीं की, वे केवल reconciliation के अभाव में ही बच सके); (iv) uncleared funds को सम्मिलित करके बैंक की वास्तविक/सही स्थिति ज्ञात करने में सहायक; (v) वर्ष के सभी वित्तीय लेन-देनों का लेखांकन सुनिश्चित करता है।

अन्तर के तीन कारण: (1) Timing — एक ही लेन-देन दो भिन्न समयों पर अंकित (cash book चेक को निर्गमन/जमा पर अंकित करती है, pass book केवल प्रस्तुति/वसूली पर); (2) बैंक द्वारा बिना सूचना स्वयं किए गए लेन-देन — दिया/लिया गया ब्याज, bank charges, standing instructions पर सीधे भुगतान, ग्राहकों द्वारा सीधे जमा, बैंक द्वारा

वसूले गए ब्याज/लाभांश एवं बिल, भुनाए गए बिल का अनादर; (3) बैंक या ग्राहक की त्रुटियाँ — छूट जाना, गलत राशि, गलत पक्ष, गलत जोड़/शेष, अन्य पक्ष का लेन-देन अंकित हो जाना।

मदों की दिशा: cash book > pass book — जमा किन्तु अ-clear चेक, बैंक द्वारा लगाया गया ब्याज एवं व्यय, बैंक द्वारा सीधे भुगतान, भुनाए गए बिल का अनादर; cash book < pass book — निर्गत किन्तु अप्रस्तुत चेक, बैंक द्वारा दिया गया ब्याज, वसूले गए ब्याज/लाभांश, ग्राहक द्वारा सीधे बैंक में भुगतान, बैंक द्वारा वसूले गए बिल।

Timing-तालिका का तर्क: निर्गत/जमा चेक पहले cash book में आते हैं (pass book में केवल प्रस्तुति या वसूली पर); जबकि bank charges, ब्याज, सीधे भुगतान/वसूली तथा अनादर पहले pass book में आते हैं — ग्राहक इन्हें तभी अंकित करता है जब pass book की प्रविष्टि उसके संज्ञान में आती है।

स्मरण (Remembering) कंठस्थ कीजिए • 1 प्रश्न

- संक्षिप्त टिप्पणी हेतु मुख्य विशेषताएँ कंठस्थ कीजिए: (i) cash book/pass book की त्रुटियाँ उजागर करता है, (ii) चेकों के clearance में अनुचित विलम्ब दिखाता है, (iii) नियमित reconciliation कर्मचारियों द्वारा ग़बन को हतोत्साहित करता है, (iv) बैंक की वास्तविक स्थिति प्रकट करता है, (v) सभी लेन-देनों का लेखांकन सुनिश्चित करता है — 'किसी औद्योगिक इकाई हेतु BRS का महत्त्व' के मुख्य बिन्दु यही हैं।
- अन्तर के तीन व्यापक कारण याद कीजिए: timing differences, बैंक द्वारा बिना सूचना किए गए लेन-देन (ब्याज, charges, सीधे भुगतान/प्राप्तियाँ), तथा त्रुटियाँ।

TQ 5.2 • RTP 2025-Jan [18] (iv) • Short Note • Pg 181 5× पूछा गया

LEVEL I

स्मरण (Remembering)

सरल

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए • 1 प्रश्न

- 5 अंक वाले 'causes of difference' उत्तर हेतु इन्हें गिनाकर संक्षेप में समझा सकिए: निर्गत किन्तु अप्रस्तुत चेक, जमा किन्तु अ-clear चेक, बैंक द्वारा दिया/लिया गया ब्याज, bank charges, standing instructions पर बैंक द्वारा सीधे भुगतान, ग्राहकों द्वारा सीधे जमा, बैंक द्वारा वसूले गए लाभांश/बिल, भुनाए गए बिलों का अनादर, तथा त्रुटियाँ।
- प्रत्येक कारण हेतु बताइए कि कौन-सी पुस्तक पहले अंकित करती है और अन्तराल क्यों उत्पन्न होता है (SM की timing तालिका का प्रयोग कीजिए)।

TQ 5.1 • MTP 2024-Jul [6] (c) • Distinguish Between • 5M • Pg 181 4× पूछा गया

LEVEL I

समझ (Understanding)

मध्यम

विषय 6: Cash Book Balance और Pass Book Balance के समाधान की प्रक्रिया

P1-C3-U3-T06 • Procedure for Reconciling the Cash Book Balance with the Pass Book Balance

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं • पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §6 पढ़िए: चार सम्भव प्रारम्भिक शेष तथा कारण दिए होने एवं न दिए होने की स्थिति में जोड़ने/घटाने का तर्क।

नोट्स

चार प्रारम्भ-बिन्दु: cash book के अनुसार Dr. शेष (= जमा/बैंक में रोकड़ = pass book के अनुसार Cr. शेष) अथवा cash book के अनुसार Cr. शेष (= overdraft = pass book के अनुसार Dr. शेष) — reconciliation इन चारों में से किसी भी शेष से आरम्भ हो सकता है; प्रश्न cash book समायोजित करके अथवा बिना किए, तथा कारण दिए हुए या बिना दिए — दोनों रूपों में आते हैं।

जब कारण दिए हों: यदि किसी कारण से दूसरी पुस्तक का शेष अधिक हो तो राशि जोड़िए; कम हो तो घटाइए — जैसे cash book के Dr. शेष से आरम्भ करने पर, जमा किन्तु अभी तक अ-clear चेक pass book का शेष कम कर देता है, अतः घटाइए; cash book के Dr. शेष से आरम्भ करने पर अन्तिम अंक धनात्मक हो तो वह pass book के अनुसार Cr. शेष है, और ऋणात्मक हो तो pass book के अनुसार Dr. शेष।

जब कारण न दिए हों: cash book की debit प्रविष्टियों की तुलना pass book की credit प्रविष्टियों से कीजिए और इसके विपरीत भी — जो प्रविष्टियाँ अचिह्नित (अ-मिलान) रह जाएँ, वही अन्तर के कारण हैं; साथ ही जाँचिए कि प्रारम्भिक शेष मिलते हैं या नहीं, अन्यथा अचिह्नित मदों को प्रारम्भिक शेष एवं अन्तिम शेष के reconciliation में बाँटिए।

विषय 7: बैंक समाधान की विधियाँ (Methods of Bank Reconciliation)

P1-C3-U3-T07 · Methods of Bank Reconciliation

पहले पढ़ें Section 7 पर अधिकार पाइए: cash book समायोजित किए बिना BRS (चारों में से किसी भी शेष से आरम्भ, add/subtract तालिका के प्रयोग से) तथा adjusted/amended cash book बनाकर BRS — 'Balance' एवं 'Plus & Minus' दोनों प्रस्तुतियों सहित।

नोट्स

दो विधियाँ: (1) adjusted cash book बनाए बिना BRS — चारों में से किसी भी शेष (cash book के अनुसार Dr./Cr., pass book के अनुसार Dr./Cr.) से आरम्भ कर add/subtract तालिका लागू कीजिए; (2) adjusted/amended cash book बनाकर BRS; दोनों को 'Balance' रूप में अथवा स्तम्भीय 'Plus & Minus' रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है (दोनों स्तम्भों के योग मिलते हैं)।

cash book के Dr. (favourable) शेष से: जोड़िए — निर्गत किन्तु अप्रस्तुत चेक, ग्राहक द्वारा सीधे जमा किए गए चेक, बैंक द्वारा सीधे प्राप्त आय/ब्याज/लाभांश एवं वसूले गए बिल, cash book या pass book में गलत credit, Dr. पक्ष का undercast, Cr. पक्ष का overcast; घटाइए — जमा किन्तु अ-clear चेक, बैंक द्वारा चुकाए गए व्यय/bank charges/locker rent, overdraft पर लगाया गया ब्याज, अनादर, गलत debit, Dr. पक्ष का overcast, Cr. पक्ष का undercast — cash book के Cr. (overdraft) शेष अथवा pass book के Dr. शेष से आरम्भ करने पर प्रत्येक चिह्न उलट जाता है; pass book के Cr. शेष से आरम्भ cash book के Cr. स्तम्भों का दर्पण है।

परिणाम का चिह्न: cash book के Dr. शेष से आरम्भ करने पर धनात्मक अन्तिम अंक = pass book के अनुसार favourable Cr. शेष, ऋणात्मक अंक = pass book के अनुसार unfavourable Dr. (overdraft) शेष; cash book के Cr. शेष से आरम्भ करने पर धनात्मक = pass book के अनुसार Dr. (overdraft)।

Adjusted cash book: cash book को सभी त्रुटियों (गलत राशि, दो बार पोस्ट की गई प्रविष्टि, over/undercasting,

गलत balance b/d तथा छूटों (bank charges, debit किया गया ब्याज, सीधी प्राप्तियाँ/भुगतान, चेक/बिल का अनादर) हेतु शुद्ध कीजिए; BRS में केवल timing differences (निर्गत किन्तु अप्रस्तुत चेक, जमा किन्तु अ-clear चेक) तथा बैंक/pass-book की त्रुटियाँ ले जाइए — cash book में समायोजित मदें BRS में दोबारा नहीं ली जातीं, और pass book की त्रुटियाँ कभी cash book में समायोजित नहीं होतीं।

कब अनिवार्य: बीच के महीनों में cash book समायोजित करना वैकल्पिक है, किन्तु वित्तीय वर्षान्त पर पुस्तकें बन्द करते समय अनिवार्य है, ताकि balance sheet में सही बैंक-शेष आए; तब BRS शुद्ध (adjusted) cash book शेष से आरम्भ होता है।

अनुप्रयोग (Application) प्रक्रिया का अभ्यास कीजिए · 9 प्रश्न

- cash book या pass book के शेष से आरम्भ होने वाले मानक 4/5 अंकीय BRS प्रारूप का अभ्यास कीजिए, तथा चारों प्रारम्भिक शेषों (Dr./Cr. cash book, Dr./Cr. pass book) हेतु add/subtract तालिका लागू कीजिए।
- चिह्न-तर्क का अभ्यास कीजिए: cash book के Dr. शेष से — जोड़िए निर्गत किन्तु अप्रस्तुत चेक, वसूले गए ब्याज/लाभांश, सीधे जमा; घटाइए जमा किन्तु अ-clear चेक, bank charges, सीधे भुगतान, अनादर।
- स्मरण रखिए: Dr. cash book से धनात्मक परिणाम = pass book का Cr. (favourable) शेष; ऋणात्मक परिणाम = pass book का Dr. (overdraft) शेष।

PQ 7.6 · PYQ 2021-Jan [1] (c) {C} · Practical · 4M · Pg 189 3× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	मध्यम
PQ 7.12 · PYQ 2022-May [2] (c) · Practical · 5M · Pg 196 3× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	मध्यम
PQ 7.14 · PYQ 2023-Jun [2] (b) · Practical · 5M · Pg 198	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	मध्यम
PQ 7.16 · PYQ 2024-Jun [5] (b) (ii) · Practical · 5M · Pg 201	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	मध्यम
PQ 7.1 · RTP 2018-May [5] · Practical · Pg 182 3× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	
PQ 7.8 · PYQ 2021-Jul [2] (b) · Practical · 5M · Pg 192 2× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	
PQ 7.10 · MTP 2021-Nov [1] (c) · Practical · 4M · Pg 194 3× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	
PQ 7.20 · PYQ 2025-Jan [2] (b) · Practical · 10M · Pg 206	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	
PQ 7.24 · PYQ 2026-Sep [5] (a) (i) · Practical · 5M · Pg 214	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	

विश्लेषण (Analysis) मिश्रित आँकड़ों पर कार्य कीजिए · 15 प्रश्न

- overdraft-आधारित तथा pass-book-आधारित प्रश्नों का अभ्यास कीजिए (10 अंकीय PYQ प्रतिरूप): cash book के अनुसार overdraft अथवा pass book के अनुसार Dr. शेष से प्रत्येक जोड़/घटाव उलट जाता है — परीक्षक का यही सर्वाधिक प्रचलित पंच है।

- amended-cash-book वाले प्रश्न हल कीजिए: cash book को त्रुटियों एवं छूटों (bank charges, ब्याज, अनादर, सीधी प्राप्तियाँ, दो बार पोस्ट प्रविष्टियाँ, undercasting, ग़लत balance b/d) हेतु शुद्ध कीजिए, फिर BRS में केवल timing differences एवं बैंक की त्रुटियाँ ले जाइए।
- पेचीदा मर्दे सँभालिए: अंकित किन्तु जमा न किया गया चेक, किसी अन्य ग्राहक हेतु बैंक का ग़लत debit/credit, out-of-date चेक, चेकों के समूह की आंशिक प्रस्तुति; साथ ही उलटा कार्य भी साधिए — pass book के शेष से cash book का शेष निकालना।

PQ 7.3 · PYQ 2018-Nov [4] (b) · Practical · 10M · Pg 185	2× पूछा गया	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	मध्यम
PQ 7.7 · RTP 2021-May [5] · Practical · Pg 190	2× पूछा गया	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	मध्यम
PQ 7.13 · RTP 2022-May [5] · Practical · Pg 197		LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	मध्यम
PQ 7.15 · PYQ 2023-Dec [2] (a) · Practical · 8M · Pg 199	3× पूछा गया	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	मध्यम
PQ 7.22 · PYQ 2025-Sep [5] (a) (i) · Practical · 5M · Pg 211		LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	मध्यम
PQ 7.23 · PYQ 2026-Jan [5] (a) (i) · Practical · 5M · Pg 212		LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	मध्यम
PQ 7.2 · PYQ 2018-May [6] (a) · Practical · 10M · Pg 184	2× पूछा गया	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	कठिन
PQ 7.4 · PYQ 2019-Nov [2] (a) · Practical · 10M · Pg 186	9× पूछा गया	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	कठिन
PQ 7.5 · PYQ 2020-Nov [2] (a) · Practical · 10M · Pg 188		LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	कठिन
PQ 7.9 · PYQ 2022-Nov [2] (a) · Practical · 15M · Pg 192	5× पूछा गया	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	कठिन
PQ 7.11 · PYQ 2021-Dec [2] (c) · Practical · 10M · Pg 195	3× पूछा गया	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	कठिन
PQ 7.17 · MTP 2024-Jul [5] (a) · Practical · 10M · Pg 202	2× पूछा गया	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	कठिन
PQ 7.18 · MTP 2024-Aug [2] (b) · Practical · 10M · Pg 203	2× पूछा गया	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	कठिन
PQ 7.19 · PYQ 2024-Sep [2] (a) · Practical · 10M · Pg 204		LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	कठिन
PQ 7.21 · PYQ 2025-May [2] (b) · Practical · 10M · Pg 209	5× पूछा गया	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	कठिन

अध्याय 4

माल-सूची (Inventories)

Inventories

6 विषय • 23 वर्गीकृत प्रश्न • महत्त्व: A

ICAI कौशल प्रोफाइल Level I 5–20% • Level II 80–95% — यह अध्याय है **सिद्धान्त-प्रधान**

Level I — स्मरण एवं समझ	26.2%	93.5 में से 24.5 अंक
Level II — अनुप्रयोग एवं विश्लेषण	73.8%	93.5 में से 69 अंक

विषय 1: अर्थ (Meaning)

P1-C4-U4-T01 • Meaning

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं • पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें \$1 पढ़िए: inventory की त्रि-अंगीय परिभाषा तथा व्यापारिक, विनिर्माणी एवं निर्माण-कार्य संस्थाओं में inventory की संरचना।

नोट्स

परिभाषा: inventory वे सम्पत्तियाँ हैं जो (i) व्यवसाय के सामान्य क्रम में विक्रय हेतु धारित हों, अथवा (ii) ऐसे विक्रय हेतु उत्पादन-प्रक्रिया में हों, अथवा (iii) विक्रय हेतु वस्तुओं/सेवाओं के उत्पादन में उपभोग हेतु हों — इसमें maintenance supplies तथा consumables सम्मिलित हैं, किन्तु machinery spares, servicing equipment एवं standby equipment नहीं।

व्यवसाय के अनुसार प्रकार: व्यापारिक संस्था — पुनर्विक्रय हेतु विद्यमान रूप में क्रय किए गए उत्पाद तथा supplies (wrapping paper, cartons, stationery); विनिर्माणी संस्था — कच्चा माल, work-in-process, तैयार माल, तथा maintenance supplies, consumables, loose tools एवं spare parts; निर्माण-व्यवसाय — निर्माणाधीन परियोजनाएँ; अपवर्जित हैं वे machinery spares/servicing/standby equipment जो केवल किसी स्थायी सम्पत्ति-मद के साथ ही प्रयोग योग्य हों और जिनका उपयोग अनियमित रहने की अपेक्षा हो — इन्हें स्थायी सम्पत्ति माना जाता है।

वर्षान्त पर प्रासंगिकता: प्रत्येक इकाई को अन्तिम inventory (कच्चा माल, WIP, तैयार माल, consumables) ज्ञात करनी होती है — इसका मूल्य Trading Account के credit पक्ष तथा Balance Sheet के सम्पत्ति पक्ष में जाता है, अतः अन्तिम खाते बनाने से पूर्व लेखाकार को इसका ज्ञान अनिवार्य है।

विषय 2: माल-सूची का मूल्यांकन (Inventory Valuation)

P1-C4-U4-T02 • Inventory Valuation

पहले पढ़ें Inventories अध्याय का Section 2 पढ़िए: आय-निर्धारण हेतु inventory valuation का महत्त्व (COGS = प्रारम्भिक inventory + क्रय + प्रत्यक्ष व्यय – अन्तिम inventory), वित्तीय स्थिति, तरलता-विश्लेषण तथा वैधानिक अनुपालन।

नोट्स

आय-निर्धारण: Cost of goods sold = प्रारम्भिक inventory + क्रय + प्रत्यक्ष व्यय – अन्तिम inventory; inventory के किसी भी ग़लत कथन का शुद्ध आय पर प्रभाव सदैव COGS के माध्यम से आता है — अधिक अन्तिम inventory COGS घटाती है और लाभ बढ़ाती है।

अधिक/कम कथन की तालिका: अन्तिम inventory अधिक दिखाई → शुद्ध आय OVERSTATED; अन्तिम inventory कम दिखाई → आय understated; प्रारम्भिक inventory अधिक दिखाई → आय understated; प्रारम्भिक inventory कम दिखाई → आय overstated।

मूल्यांकन क्यों महत्त्वपूर्ण: (i) सही आय का निर्धारण — COGS का अवधि की आय से मिलान; (ii) वित्तीय स्थिति का निर्धारण — inventory एक चालू सम्पत्ति है, ग़लत मूल्य का अर्थ है कि balance sheet सत्य स्थिति नहीं दर्शाती (धीमा/अचल स्टॉक इसका प्रमुख लक्षण); (iii) तरलता-विश्लेषण — inventory शुद्ध कार्यशील पूँजी का अंग है और current ratio को, जिस पर बैंकर निर्भर रहते हैं, अत्यधिक प्रभावित करती है; (iv) वैधानिक अनुपालन — Schedule III, Companies Act 2013 तथा Accounting Standards लेखांकन नीतियों/cost formula तथा कुल carrying amount के प्रकटीकरण की माँग करते हैं, जिसे raw materials, WIP, finished goods, stock-in-trade, stores, spares एवं loose tools में वर्गीकृत करना होता है।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए • 1 प्रश्न

- True/False प्रश्नों हेतु अधिक/कम कथन की तालिका साधिए: अन्तिम inventory अधिक दिखाई → शुद्ध आय OVERSTATED (अतः 'अधिक अन्तिम inventory आय को कम दिखाती है' ग़लत है); प्रारम्भिक inventory अधिक दिखाई → आय understated।
- COGS के माध्यम से तर्क कर सकिए: अधिक अन्तिम inventory cost of goods sold घटाती है और लाभ बढ़ाती है — किसी भी ग़लत कथन का प्रभाव COGS से होकर बहता है।
- समझाइए कि सही मूल्यांकन क्यों आवश्यक है: सही आय, सत्य balance sheet स्थिति, तथा current-ratio/तरलता का विश्लेषण।

TQ 2.1 • RTP 2025-Jan [1] (iv) • True/False • Pg 218 **2x पूछा गया**

LEVEL I
समझ (Understanding)

सरल

विषय 3: माल-सूची मूल्यांकन का आधार (Basis of Inventory Valuation)

P1-C4-U4-T03 · Basis of Inventory Valuation

पहले पढ़ें Section 3 पढ़िए: लागत अथवा net realizable value में जो कम हो उस पर मूल्यांकन (Principle of Conservatism), लागत के घटक (purchase cost, conversion cost, other costs), लागत से चार अपवर्जन, तथा NRV का अर्थ।

नोट्स

आधार: inventories का मूल्यांकन लागत अथवा net realizable value में जो कम हो, उस पर होता है — Principle of Conservatism: विक्रय-मूल्य के लागत से नीचे गिरने की हानि तुरन्त मान्य की जाती है, लाभ केवल वसूली पर; write-down प्रायः मद-दर-मद आधार पर होता है (केवल परस्पर विनिमेय मदों हेतु समूह)।

लागत (AS): इसमें सम्मिलित हैं सभी costs of purchase + costs of conversion + वे अन्य लागतें जो inventories को उनके वर्तमान स्थान एवं दशा तक लाने में लगीं; purchase cost = मूल्य (non-recoverable duties/taxes सहित) + freight inwards + directly attributable व्यय, घटाकर trade discounts, rebates एवं duty drawbacks — वसूली-योग्य GST credit अपवर्जित है (100 इकाई @ ₹100 + 18% GST → लागत ₹10,000, न कि ₹11,800); conversion = प्रत्यक्ष श्रम + स्थिर एवं परिवर्तनशील production overheads का systematic allocation; ब्याज/borrowing costs सामान्यतः अपवर्जित, केवल दीर्घ-उत्पादन वस्तुओं (wine, चावल, timber) को छोड़कर।

लागत से चार अपवर्जन: (a) सामग्री, श्रम या overheads की असामान्य मात्रा में बर्बादी (सामान्य wastage लागत में सम्मिलित है); (b) storage costs, जब तक कि वे किसी अगले उत्पादन-चरण से पूर्व उत्पादन-प्रक्रिया हेतु आवश्यक न हों (wine के fermentation का भंडारण लागत है, तैयार माल के गोदाम का किराया नहीं); (c) वे administrative overheads जो स्थान/दशा में योगदान न करें; (d) selling एवं distribution costs।

NRV (SM): “the estimated selling price in the ordinary course of business less the estimated costs of completion and the estimated costs necessary to make the sale”; WIP हेतु आगे लगने वाली conversion costs भी घटाइए; कच्चे माल हेतु सामान्यतः replacement cost को NRV माना जाता है; यह आकलन प्रत्येक balance sheet तिथि पर किया जाता है।

Adjusted-profit अभ्यास: जाँच की प्रत्येक मद हेतु दोहरा प्रभाव खोजिए — क्रय/COGS पर तथा अन्तिम inventory पर — तभी शुद्ध लाभ पुनःकथित कीजिए (जैसे पूँजीगत व्यय गलती से क्रय में, मार्च में बीजक की गई किन्तु स्टॉक से बाहर वस्तुएँ, goods in transit, निःशुल्क नमूने, approval पर भेजी वस्तुएँ गलती से विक्रय में)।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 4 प्रश्न

- True/False के स्थायी प्रश्न: inventories का मूल्यांकन लागत अथवा NRV में जो कम हो उस पर होता है (कभी अधिक पर नहीं) — आधार है Principle of Conservatism (prudence)।
- inventories की लागत में सम्मिलित हैं सभी costs of purchase + costs of conversion + वे अन्य लागतें जो उन्हें वर्तमान स्थान एवं दशा तक लाने में लगीं; वसूली-योग्य कर (GST credit), trade discounts एवं rebates घटाए जाते हैं।

- अपवर्जन जानिए और उन्हें सिद्ध करने को तैयार रहिए: तैयार माल का गोदाम/भंडारण किराया inventory लागत नहीं है (जब तक भंडारण उत्पादन-प्रक्रिया हेतु आवश्यक न हो, जैसे wine); साथ ही अपवर्जित हैं असामान्य wastage, सामान्य administrative overheads, तथा selling & distribution costs।
- NRV = अनुमानित विक्रय-मूल्य घटा पूर्ण करने की अनुमानित लागत तथा विक्रय हेतु आवश्यक अनुमानित लागत; कच्चे माल हेतु सामान्यतः replacement cost लिया जाता है।

TQ 3.1 · PYQ 2021-Jul [1] (a) (iii) {C} · True/False · 2M · Pg 219	4× पूछा गया	LEVEL I समझ (Understanding)	सरल
TQ 3.2 · MTP 2024-Jul [1] (a) (ii) {C} · True/False · 2M · Pg 219	5× पूछा गया	LEVEL I समझ (Understanding)	सरल
TQ 3.3 · PYQ 2024-Sep [1] (a) (iii) {C} · True/False · 2M · Pg 219	2× पूछा गया	LEVEL I समझ (Understanding)	सरल
TQ 3.4 · PYQ 2026-May [1] (a) (i) {C} · True/False · 2M · Pg 220	2× पूछा गया	LEVEL I समझ (Understanding)	सरल

विश्लेषण (Analysis) मिश्रित आँकड़ों पर कार्य कीजिए · 1 प्रश्न

- adjusted-net-profit प्रश्नों का अभ्यास कीजिए: गलत रूप से पूँजीकृत मदों, goods in transit, अनभिलिखित क्रय तथा गलत मूल्यांकित स्टॉक हेतु क्रय/अन्तिम inventory शुद्ध करके लाभ पुनर्गणित कीजिए (5 अंकीय PYQ प्रतिरूप)।
- प्रत्येक त्रुटि हेतु दोहरा प्रभाव खोजिए — अन्तिम inventory के मूल्य पर तथा क्रय/COGS पर — तभी ₹15,00,000 जैसे शुद्ध लाभ को समायोजित कीजिए।

PQ 3.1 · PYQ 2026-May [5] (a) (i) · Practical · 5M · Pg 220

LEVEL II
विश्लेषण (Analysis)

मध्यम

विषय 4: माल-सूची अभिलेख प्रणालियाँ (Inventory Record Systems)

P1-C4-U4-T04 · Inventory Record Systems

पहले पढ़ें Section 4 पढ़िए: Periodic (physical) Inventory System बनाम Perpetual Inventory System — प्रत्येक COGS/अन्तिम inventory कैसे निर्धारित करता है, तथा 7-बिन्दु अन्तर-तालिका।

नोट्स

Periodic (physical) inventory system: किसी विशेष तिथि पर उपलब्ध सभी मदों की वास्तविक भौतिक गणना/माप/तौल द्वारा inventory ज्ञात की जाती है; $COGS = \text{प्रारम्भिक inventory} + \text{क्रय} - \text{अन्तिम inventory}$ (अवशिष्ट अंक); सरल एवं सस्ता, लघु उद्यमों हेतु उपयुक्त, किन्तु व्यवसाय बन्द करना पड़ता है, चोरी/हानि COGS में छिप जाती है तथा कोई inventory control सम्भव नहीं।

Perpetual inventory system: प्रत्येक प्राप्ति एवं निर्गम के बाद inventory ledger में सतत् आधार पर शेष अंकित किए जाते हैं; निर्गत माल की लागत सीधे निर्धारित होती है तथा अन्तिम inventory अवशिष्ट/सन्तुलनकारी अंक होती है; फिर भी भौतिक inventory की जाँच अभिलिखित शेषों से करनी चाहिए; यह periodic की सीमाएँ दूर करता है किन्तु

अधिक व्ययसाध्य है; दोनों प्रणालियाँ परस्पर पूरक हैं, अपवर्जी नहीं।

भौतिक सत्यापन पर आधारित	पुस्तक-अभिलेखों पर आधारित
किसी विशेष तिथि पर inventory एवं COGS की सूचना	inventory एवं cost of sales की सतत् सूचना
inventory निर्धारित करता है; COGS अवशिष्ट अंक	COGS सीधे निर्धारित करता है; inventory सन्तुलनकारी अंक
COGS में वस्तुओं की हानि सम्मिलित (स्टॉक में न मिली वस्तुएँ बिकी हुई मानी जाती हैं)	अन्तिम inventory में हानि सम्मिलित (सभी अ-विक्रीत वस्तुएँ स्टॉक में मानी जाती हैं)
inventory control सम्भव नहीं	inventory control किया जा सकता है
सरल एवं कम व्ययसाध्य	अधिक व्ययसाध्य विधि
गणना हेतु व्यवसाय बन्द करना पड़ता है	प्रचालन प्रभावित किए बिना inventory निर्धारित

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए • 2 प्रश्न

- सत्य: periodic inventory system किसी विशेष तिथि पर वास्तविक भौतिक गणना द्वारा inventory ज्ञात करता है; COGS अवशिष्ट अंक होता है (प्रारम्भिक + क्रय – गिनी गई अन्तिम)।
- perpetual प्रणाली प्रत्येक प्राप्ति एवं निर्गम के बाद inventory ledger में शेष अंकित करती है; COGS सीधे निर्धारित होता है तथा अन्तिम inventory सन्तुलनकारी अंक होती है।
- 5 अंकीय अन्तर वाले प्रश्न हेतु तालिका कंठस्थ कीजिए: आधार (भौतिक सत्यापन बनाम पुस्तक-अभिलेख), सूचना (विशेष तिथि बनाम सतत्), अवशिष्ट अंक (COGS बनाम अन्तिम स्टॉक), हानि हुई वस्तुओं का उपचार, inventory control केवल perpetual में सम्भव, लागत (सरल/सस्ता बनाम अधिक व्ययसाध्य), तथा व्यवसाय बन्द करना केवल periodic में आवश्यक।

TQ 4.1 • PYQ 2022-Nov [1] (a) (ii) {C} • True/False • 2M • Pg 221 **3x पूछा गया** **LEVEL I**
समझ (Understanding)

सरल

TQ 4.2 • PYQ 2024-Sep [6] (b) • Distinguish Between • 5M • Pg 222 **6x पूछा गया** **LEVEL I**
समझ (Understanding)

मध्यम

विषय 5: माल-सूची की लागत निर्धारित करने के सूत्र/विधियाँ (Formulae/Methods to Determine Cost of Inventory)

P1-C4-U4-T05 • Formulae/Methods to Determine Cost of Inventory

पहले पढ़ें Section 5 पढ़िए: historical cost सूत्र — Specific Identification, FIFO, LIFO, Simple एवं Weighted Average Price — तथा non-historical विधियाँ (Adjusted Selling Price/retail method, Standard Cost), उनकी मान्यताओं सहित।

नोट्स

प्रमुख विधियाँ: historical cost — Specific Identification (उन मदों हेतु जो सामान्यतः परस्पर विनिमेय नहीं तथा उच्च मूल्य की हैं, जैसे महँगे चिकित्सा उपकरण; प्रत्येक चिह्नित lot की वास्तविक लागत), FIFO तथा Weighted Average Price (दोनों Accounting Standards द्वारा अनुमत), LIFO एवं Simple Average (अवांछित/अनुमत नहीं); non-historical — Adjusted Selling Price (retail) तथा Standard Cost (वहाँ प्रयुक्त जहाँ मूल्य बारम्बार बदलते हैं, जैसे crude oil)।

FIFO बनाम LIFO: FIFO मानता है कि सबसे पहले आए lots पहले निर्गत होते हैं, अतः अन्तिम inventory नवीनतम खेपों की होती है और नवीनतम मूल्यों पर मूल्यांकित (यह केवल cost-flow मान्यता है, भौतिक प्रवाह नहीं); LIFO निर्गमों पर नवीनतम लागतें डालता है (वर्तमान लागत का वर्तमान आय से मिलान), जिससे अन्तिम inventory सबसे पुराने मूल्यों पर रह जाती है — LIFO “is based on an irrational assumption”, periodic बनाम perpetual अभिलेखों में भिन्न परिणाम देता है, तथा Accounting Standards द्वारा अनुमत नहीं है।

मुद्रास्फीति का तर्क: बढ़ते मूल्यों में FIFO सबसे कम cost of goods sold देता है (निर्गम पुराने, सस्ते मूल्यों पर) तथा सर्वाधिक अन्तिम inventory एवं प्रतिवेदित लाभ; LIFO इसके विपरीत करता है (500 @ ₹50 फिर 500 @ ₹60, निर्गम 500: FIFO स्टॉक ₹30,000, LIFO ₹25,000, simple average ₹27,500)।

औसत मूल्य विधियाँ: Simple average = मूल्यों का योग ÷ मूल्यों की संख्या (मात्राओं की उपेक्षा; केवल periodic प्रयोग); **Weighted average:** दर = विक्रय हेतु उपलब्ध माल की कुल लागत ÷ उपलब्ध कुल इकाइयाँ; अन्तिम inventory = शेष इकाइयाँ × WAP; perpetual अभिलेखों में प्रत्येक नए क्रय के बाद नई औसत दर निकाली जाती है और अगला निर्गम उसी पर मूल्यांकित होता है; periodic अभिलेखों में पूरी अवधि हेतु एक ही औसत।

Stores ledger अभ्यास: receipts-issues-balance स्तम्भ बनाइए तथा प्रत्येक निर्गम को चुनी हुई विधि से मूल्यांकित कीजिए — जैसे क्रय 100 @ ₹30 तथा 200 @ ₹40, निर्गम 250 इकाई, शेष 50 इकाई: FIFO अन्तिम स्टॉक 50 @ ₹40 = ₹2,000; weighted average (दूसरे क्रय के बाद दर ₹38) = 50 @ ₹38 = ₹1,900।

स्मरण (Remembering) कंठस्थ कीजिए · 2 प्रश्न

- FIFO बनाम LIFO पर संक्षिप्त टिप्पणी के बिन्दु: FIFO मानता है कि पहले आए lots पहले निर्गत होते हैं, अतः अन्तिम inventory नवीनतम मूल्यों पर; LIFO निर्गमों पर नवीनतम लागतें डालता है, अतः अन्तिम inventory पुराने मूल्यों पर; LIFO एक अतार्किक मान्यता पर टिका है तथा Accounting Standards द्वारा अनुमत नहीं।
- लागत ज्ञात करने की प्रमुख विधियाँ: Specific Identification, FIFO, Weighted Average Price (अनुमत); LIFO एवं Simple Average (अवांछित/अनुमत नहीं); non-historical: Adjusted Selling Price तथा Standard Cost।
- Adjusted Selling Price (retail) विधि: लागत = inventory का विक्रय-मूल्य घटा सकल लाभ का उपयुक्त प्रतिशत; खुदरा व्यापार में प्रयुक्त जहाँ पृथक् लागतें सहज ज्ञात नहीं होतीं।

TQ 5.1 · MTP 2023-May [6] (c) (iv) · Short Note · 2.5M · Pg 223

LEVEL I

स्मरण (Remembering)

सरलTQ 5.2 · MTP 2024-Aug [6] (c) · Short Note · 5M · Pg 223 **4× पूछा गया****LEVEL I**

स्मरण (Remembering)

मध्यम

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 1 प्रश्न

- True/False हेतु मुद्रास्फीति का तर्क: बढ़ते मूल्यों में FIFO सबसे कम cost of goods sold देता है (निर्गम पुराने, सस्ते मूल्यों पर) तथा सर्वाधिक अन्तिम inventory एवं लाभ; LIFO इसके विपरीत।

TQ 5.3 · PYQ 2025-Jan [1] (a) (iii) {C} · True/False · 2M · Pg 224

LEVEL I
समझ (Understanding)**मध्यम****अनुप्रयोग (Application)** प्रक्रिया का अभ्यास कीजिए · 1 प्रश्न

- तिथिवार प्रारम्भिक inventory, क्रय एवं निर्गम से FIFO (तथा weighted average) हेतु stores/stock ledger बनाने का अभ्यास कीजिए — जैसे 100 इकाई @ ₹15, 300 @ ₹18, निर्गम 250 इकाई — और अन्तिम inventory सही मूल्यांकित कीजिए।
- weighted average (perpetual) में प्रत्येक नए क्रय के बाद औसत दर पुनर्गणित कीजिए: उपलब्ध माल की कुल लागत ÷ उपलब्ध कुल इकाइयाँ।

PQ 5.1 · PYQ 2025-Jan [5] (Or) (b) (i) · Practical · 5M · Pg 224

5x पूछा गया **LEVEL II**
अनुप्रयोग (Application)**मध्यम****विषय 6: माल-सूची की गणना (Inventories Taking)**

P1-C4-U4-T06 · Inventories Taking

पहले पढ़ें Section 6 पर अधिकार पाइए: वर्षान्त से पहले या बाद हुई भौतिक गणना को पीछे/आगे ले जाना (क्रय का समायोजन, GP margin से विक्रय को लागत पर लाना, वापसी), साथ ही sale-or-return वस्तुएँ, consignment की वस्तुएँ, तथा धीमी गति/क्षतिग्रस्त मर्दों का NRV पर उपचार।

नोट्स

Roll-back (गणना वर्षान्त के बाद): वर्षान्त का स्टॉक = गणना-तिथि का स्टॉक – मध्यवर्ती अवधि के क्रय (केवल वास्तव में प्राप्त वस्तुएँ) + मध्यवर्ती अवधि का cost of sales (शुद्ध विक्रय $\times 100 / (100 + \text{लागत पर markup})$) + विक्रय-वापसी लागत पर; जैसे ₹7,85,000 – ₹1,53,000 + ₹2,50,000 $\times 100 / 125$ = ₹8,32,000; **margin रूपान्तरण:** लागत पर 33.33% = विक्रय पर 25%, लागत पर 25% = विक्रय पर 20%।

गणना वर्षान्त से पहले (जैसे 30 जून हेतु 23 जून): दिशा उलट दीजिए — गिने गए स्टॉक में मध्यवर्ती अवधि के क्रय (तथा goods in transit) जोड़िए और cost of sales घटाइए।

GP-आधारित निर्धारण: अन्तिम inventory = प्रारम्भिक स्टॉक + क्रय + विनिर्माण व्यय – cost of goods sold (विक्रय – सकल लाभ); selling, administrative एवं financial व्यय inventory लागत से अपवर्जित हैं; असामान्य मर्दे पहले अलग कीजिए — उन्हें विक्रय से निकालिए तथा प्रारम्भिक स्टॉक को written-down मूल्य पर लीजिए, और सामान्य GP दर केवल सामान्य विक्रय पर लगाइए।

Sale-or-return एवं consignment: स्वीकृति हेतु ग्राहकों के पास पड़ी वस्तुएँ विक्रय नहीं हैं — उन्हें लागत पर सम्मिलित कीजिए (विक्रय मूल्य $\times 100 / (100 + \text{markup})$) तथा विक्रय से हटाइए; consignment inward स्टॉक

consignor का होता है (consignee उसे अपवर्जित करता है); consignor अपने अ-विक्रीत consignment-outward स्टॉक को लागत पर सम्मिलित करता है।

NRV समायोजन: अत्यन्त पुरानी/धीमी गति की मर्दे तथा ग्राहकों द्वारा अस्वीकृत वस्तुएँ उनके अपेक्षित वसूली-योग्य मूल्य पर ली जाती हैं, लागत पर नहीं (लागत ₹11,250 को ₹5,250 पर लिया गया; बाढ़ से विलम्बित वस्तुएँ लागत ₹15,500, NRV ₹12,500) — प्रत्येक समायोजन की अन्तिम कसौटी है लागत अथवा NRV में जो कम हो।

अनुप्रयोग (Application) प्रक्रिया का अभ्यास कीजिए · 4 प्रश्न

- roll-back प्रारूप का अभ्यास कीजिए: गणना-तिथि का स्टॉक – वर्षान्त के बाद के क्रय + वर्षान्त के बाद का cost of sales (विक्रय $\times 100 / (100 + \text{markup})$) $\pm$ वापसी = वर्षान्त का स्टॉक; margins सावधानी से बदलिए (लागत पर 33.33% = विक्रय पर 25%)।
- adjusted selling price की गणना: GP दर = सकल margin $\div$ (विक्रय + विक्रय-मूल्य पर अन्तिम inventory); अन्तिम स्टॉक की लागत = स्टॉक का विक्रय-मूल्य घटा GP दर।
- अन्तिम inventory निकालिए: प्रारम्भिक स्टॉक + क्रय + विनिर्माण व्यय – COGS (विक्रय घटा GP), और inventory लागत से selling, administrative एवं financial व्यय अपवर्जित रखिए।

PQ 6.8 · PYQ 2021-Jul [2] (c) · Practical · 5M · Pg 236	3× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	मध्यम
PQ 6.10 · PYQ 2025-Sep [6] (b) · Practical · 5M · Pg 238	6× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	मध्यम
PQ 6.7 · MTP 2025-Jan S2 [2] (a) · Practical · 10M · Pg 235	9× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	
PQ 6.11 · PYQ 2026-Sep [5] (a) (Or) (ii) · Practical · 5M · Pg 239		LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	

विश्लेषण (Analysis) मिश्रित आँकड़ों पर कार्य कीजिए · 7 प्रश्न

- बहु-समायोजन वाले प्रश्न हल कीजिए: approval पर भेजी वस्तुएँ (अ-स्वीकृत वस्तुएँ लागत पर सम्मिलित, विक्रय से हटाइए), consignment inward स्टॉक (consignor का — अपवर्जित करें; consignment outward का अ-विक्रीत स्टॉक — लागत पर सम्मिलित), goods in transit, तथा असामान्य/धीमी गति की मर्दे NRV तक write down।
- adjusted-profit प्रश्नों में (₹5,75,000/₹32,00,000 प्रतिरूप) प्रत्येक जाँच-मद का दोहरा प्रभाव — क्रय/विक्रय पर तथा अन्तिम स्टॉक पर — खोजकर ही शुद्ध लाभ पुनःकथित कीजिए।
- जब गणना-तिथि वर्षान्त से पहले पड़े (जैसे 30 जून हेतु 23 जून), दिशा उलट दीजिए: मध्यवर्ती अवधि के क्रय जोड़िए तथा cost of sales घटाइए।

PQ 6.1 · PYQ 2019-Jun [6] (c) · Practical · 5M · Pg 227	3× पूछा गया	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	मध्यम
PQ 6.2 · PYQ 2023-Jun [2] (c) · Practical · 5M · Pg 228	3× पूछा गया	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	मध्यम

PQ 6.3 • RTP 2023-Dec [6] • Practical • Pg 229 5× पूछा गया	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	मध्यम
PQ 6.5 • PYQ 2024-Jun [5] (a) • Practical • 5M • Pg 231 2× पूछा गया	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	मध्यम
PQ 6.6 • PYQ 2024-Sep [5] (a) • Practical • 5M • Pg 233 4× पूछा गया	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	मध्यम
PQ 6.9 • PYQ 2025-May [1] (c) {C} • Practical • 4M • Pg 237 4× पूछा गया	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	मध्यम
PQ 6.4 • MTP 2024-May [2] (a) • Practical • 10M • Pg 230 4× पूछा गया	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	कठिन

अध्याय 5

मूल्यहास एवं परिशोधन (Depreciation and Amortisation)

Depreciation and Amortisation

9 विषय · 40 वर्गीकृत प्रश्न · महत्त्व: B

ICAI कौशल प्रोफाइल Level I 5–20% · Level II 80–95% — यह अध्याय है पेपर के अनुरूप

Level I — स्मरण एवं समझ

12.9%

224 में से 29 अंक

Level II — अनुप्रयोग एवं विश्लेषण

87.1%

224 में से 195 अंक

विषय 1: परिचय

P1-C5-U5-T01 · Introduction

पहले पढ़ें अध्याय 5 (Depreciation and Amortisation) का 'Introduction' खंड पढ़िए: depreciation की अवधारणा, Schedule II (Companies Act, 2013) की परिभाषा, सम्पत्ति के मूल्य में कमी के कारण, component-wise depreciation तथा depreciation लगाने के चार उद्देश्य।

नोट्स

Schedule II (Companies Act, 2013): "Depreciation is the systematic allocation of the depreciable amount of an asset over its useful life" — depreciable amount = लागत (या लागत के स्थान पर प्रतिस्थापित revalued amount) घटा residual value; useful life = वह अवधि जिसमें सम्पत्ति उपयोग हेतु उपलब्ध रहने की अपेक्षा है, अथवा उससे अपेक्षित उत्पादन इकाइयों की संख्या।

मूल्य घटने के कारण: (1) उपयोग से wear and tear, (2) efflux of time (उपयोग न होने पर भी), (3) तकनीकी या अन्य परिवर्तनों से obsolescence, (4) बाज़ार मूल्य में कमी, (5) depletion (खानों एवं प्राकृतिक भंडार); depreciation तब आरम्भ होता है जब सम्पत्ति उपयोग हेतु AVAILABLE हो जाए, न कि केवल वास्तविक उपयोग पर — अतः 'निष्क्रिय सम्पत्ति पर depreciation नहीं' एक भ्रान्ति है, किन्तु land (अनिश्चित जीवन) पर depreciation नहीं लगता।

स्वरूप: यह non-cash operating expense तथा लाभ पर charge है — नकद बहिर्गमन नहीं होता, फिर भी हानि वाले वर्ष में भी लगाना अनिवार्य है; matching principle का पालन: expired cost (depreciation) P&L में, unexpired cost (WDV) Balance Sheet में; इसे लगाने से वितरण-योग्य लाभ भी घटते हैं, जिससे प्रतिस्थापन हेतु धनराशि व्यवसाय में बनी रहती है।

Component depreciation: जिस भाग की लागत सम्पूर्ण मद की लागत की तुलना में significant हो तथा जिसका useful life/method भिन्न हो, उस पर पृथक् रूप से depreciation लगाना अनिवार्य है (विमान: airframe, engines,

interiors); समान जीवन एवं समान विधि वाले भागों को समूहबद्ध किया जा सकता है।

चार उद्देश्य: (1) आय का सही मापन, (2) सही स्थिति-विवरण — सम्पत्ति unexpired cost पर दिखे, (3) प्रतिस्थापन हेतु funds, (4) उत्पादन की वास्तविक लागत का निर्धारण।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 4 प्रश्न

- True/False सिद्ध करने योग्य बनिए: depreciation एक NON-CASH व्यय है (नकद बहिर्गमन नहीं), किन्तु यह operating expense तथा लाभ पर charge — हानि वाले वर्ष में भी लगाना अनिवार्य है, क्योंकि यह उपयोग/समय-व्यतीत से उत्पन्न होता है, लाभप्रदता से नहीं।
- समझाइए कि land एक depreciable asset क्यों नहीं है: इसका useful life अनिश्चित है तथा उपयोग या समय बीतने से इसका मूल्य घटता नहीं।
- परिभाषा से तर्क कीजिए: depreciation, depreciable amount (लागत घटा residual value) का useful life पर systematic allocation है, तथा matching principle का पालन करता है — expired cost P&L को, unexpired cost (WDV) Balance Sheet को।
- तर्क हेतु स्मरण रखिए: depreciation तब आरम्भ होता है जब सम्पत्ति उपयोग हेतु AVAILABLE हो, न कि वास्तविक उपयोग पर; obsolescence तथा wear-and-tear उपयोग के बिना भी होते हैं।

TQ 1.1 · PYQ 2018-Nov [1] (a) (ii) {C} · True/False · 2M · Pg 243	4× पूछा गया	LEVEL I समझ (Understanding)	सरल
TQ 1.3 · PYQ 2025-Sep [1] (a) (iv) {C} · True/False · 2M · Pg 243	3× पूछा गया	LEVEL I समझ (Understanding)	सरल
TQ 1.4 · RTP 2025-Sep [1] (e) · True/False · 2M · Pg 244		LEVEL I समझ (Understanding)	सरल
TQ 1.2 · PYQ 2023-Dec [1] (a) (iii) {C} · True/False · 2M · Pg 243		LEVEL I समझ (Understanding)	मध्यम

विषय 2: मूल्यहास के मापन के कारक

P1-C5-U5-T02 · Factors in the Measurement of Depreciation

पहले पढ़ें 'Factors in the Measurement of Depreciation' खंड पढ़िए: सम्पत्ति की लागत, अनुमानित useful life, अनुमानित residual/scrap value, depreciable amount, तथा Property, Plant and Equipment की लागत के घटक — directly attributable costs एवं वर्जित मर्दे।

नोट्स

तीन कारक: (1) सम्पत्ति की लागत, जिसमें installation, commissioning एवं trial-run व्यय सम्मिलित हैं, (2) अनुमानित useful life (समय में अथवा production units में), (3) useful life की समाप्ति पर अनुमानित scrap/residual value (नगण्य होने पर शून्य मानी जाती है)।

Depreciable amount: historical cost (अथवा revalued amount) घटा अनुमानित residual value; जैसे

machinery ₹1,10,000 – residual ₹10,000 = ₹1,00,000, 5 वर्षों में → depreciation ₹20,000 प्रतिवर्ष।

PPE की लागत: purchase price (non-refundable import duties एवं purchase taxes सहित, trade discounts और rebates घटाकर) + सम्पत्ति को अभीष्ट उपयोग हेतु अपेक्षित स्थान एवं दशा तक लाने की directly attributable लागतें + dismantling, removal एवं site-restoration लागत का प्रारम्भिक अनुमान।

Directly attributable (पूँजीकृत): (a) अधिग्रहण/निर्माण से सीधे उत्पन्न employee benefits, (b) site preparation, (c) initial delivery एवं handling, (d) installation एवं assembly, (e) testing costs — परीक्षण नमूनों की बिक्री से प्राप्ति घटाकर, (f) professional fees (जैसे engineers)।

पूँजीकृत नहीं: नई सुविधा के opening/inauguration व्यय, नया उत्पाद प्रस्तुत करने की लागत (advertisement/promotion), नए स्थान या नए ग्राहक-वर्ग की लागत (staff training सहित), administration एवं general overheads, relocation costs; एक बार अभीष्ट उपयोग हेतु तैयार हो जाने पर आगे कोई लागत पूँजीकृत नहीं होती — भले सम्पत्ति निष्क्रिय या कम उपयोग में हो — जब तक कोई major repair/addition जीवन या क्षमता न बढ़ा दे।

स्मरण (Remembering) कंठस्थ कीजिए · 1 प्रश्न

- depreciation गणना के 3 कारक कंठस्थ कीजिए: (1) सम्पत्ति की लागत (installation, commissioning, trial run सहित), (2) अनुमानित useful life (समय में अथवा production units में), (3) useful life की समाप्ति पर अनुमानित scrap/residual value।
- परिभाषा: Depreciable amount = historical cost (या revalued amount) घटा अनुमानित residual value; Useful life = अपेक्षित उपयोग की अवधि अथवा अपेक्षित उत्पादन इकाइयों की संख्या।
- Cost of PPE = purchase price (non-refundable duties/taxes सहित, trade discounts घटाकर) + directly attributable costs + dismantling/site-restoration लागत का प्रारम्भिक अनुमान।

TQ 2.1 · PYQ 2020-Nov [6] (c) · Descriptive · 5M · Pg 244 2× पूछा गया

LEVEL I
स्मरण (Remembering)

मध्यम

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 1 प्रश्न

- directly attributable costs के पाँच उदाहरण देने को तैयार रहिए: अधिग्रहण/निर्माण से उत्पन्न employee benefits, site preparation, initial delivery एवं handling, installation एवं assembly, testing costs (परीक्षण नमूनों की बिक्री घटाकर), professional fees (जैसे engineers)।
- समझाइए कि क्या पूँजीकृत नहीं होता: inauguration/opening व्यय, नया उत्पाद प्रस्तुत करने की लागत (advertisement), नए स्थान/ग्राहक-वर्ग की लागत (staff training), administration एवं general overheads, relocation costs।

TQ 2.2 · PYQ 2022-Nov [6] (b) · Descriptive · 5M · Pg 245 2× पूछा गया

LEVEL I
समझ (Understanding)

मध्यम

विषय 3: मूल्यहास प्रदान करने की विधियाँ

P1-C5-U5-T03 · Methods for Providing Depreciation

पहले पढ़ें छहों विधियाँ पढ़िए — Straight Line, Reducing/Diminishing Balance (WDV), Sum of Years' Digits, Machine Hour, Production Units तथा Depletion — उनके सूत्र, मान्यताएँ, गुण-दोष एवं Illustrations 1-6 सहित।

नोट्स

SLM (Fixed Instalment): Depreciation = $(\text{Cost of asset} - \text{Scrap value}) \div \text{Useful life}$; Rate = $\text{SLM depreciation} \div \text{Cost} \times 100$; समान उपयोगिता की मान्यता पर प्रतिवर्ष समान भार; सरल, तथा leases एवं plant हेतु उपयुक्त; वर्ष के भाग में उपयोग पर आनुपातिक भार (1 जुलाई को क्रय, ₹15,00,000 पर 10% → 6 माह का ₹75,000)।

WDV / Reducing (Diminishing) Balance: प्रारम्भिक WDV पर निश्चित प्रतिशत; Rate = $[1 - n\sqrt[n]{\text{Residual value} \div \text{Cost}}] \times 100$; भार प्रतिवर्ष घटता है जबकि आयु के साथ repairs बढ़ते हैं, अतः depreciation + repairs मिलकर प्रतिवर्ष लगभग समान भार देते हैं; सम्पत्ति का मूल्य कभी पूर्णतः समाप्त नहीं होता; Income-tax Rules द्वारा निर्धारित (power generation/distribution उपक्रमों को छोड़कर)।

Sum of Years' Digits (accelerated): depreciation = $(\text{Cost} - \text{Scrap}) \times \text{शेष जीवन (चालू वर्ष सहित)} \div [n(n+1) \div 2]$; 10 वर्ष के जीवन हेतु कुल digits = 55, अतः वर्ष 1 = $10/55$, वर्ष 2 = $9/55$ — प्रारम्भिक वर्षों में अधिक भार; यह reducing balance विचार का ही एक रूपान्तर है।

Machine Hour, Production Units, Depletion: hour rate = $(\text{Cost} - \text{Scrap}) \div \text{कुल अनुमानित machine hours}$, वार्षिक भार = कार्य किए गए घंटे $\times$ rate — यह SLM का ही घंटा-आधारित रूप है, जिसे Schedule II extra-shift depreciation के रूप में स्वीकारता है; Production Units = $\text{Depreciable amount} \times \text{अवधि का उत्पादन} \div \text{अनुमानित कुल उत्पादन}$; Depletion (खाने/quarries) rate = $\text{लागत} \div \text{अनुमानित कुल मात्रा}$, भार = निकाली गई मात्रा $\times$ rate (quarry lease ₹1,00,00,000, 2,00,000 टन → 2,000 टन = ₹1,00,000)।

प्रारूप प्रविष्टियाँ (दो विकल्प): (i) सम्पत्ति लागत पर बनी रहे — Dr. Depreciation / Cr. Provision for Depreciation (Accumulated Depreciation); (ii) Dr. Depreciation / Cr. Asset; दोनों में समापन — Dr. Profit and Loss / Cr. Depreciation।

स्मरण (Remembering) कंठस्थ कीजिए · 2 प्रश्न

- Machine Hour Rate विधि: प्रति घंटा depreciation = $(\text{Cost} - \text{Scrap}) / \text{कुल अनुमानित machine hours}$; वार्षिक भार = कार्य किए गए घंटे $\times$ rate; यह SLM का ही रूपान्तर है जो वर्ष के स्थान पर घंटे पर आधारित है; Schedule II इसे extra shift depreciation के रूप में मान्यता देता है।
- सूत्र: SLM depreciation = $(\text{Cost} - \text{Scrap}) / \text{Useful life}$; WDV rate = $[1 - n\sqrt[n]{\text{Residual}/\text{Cost}}] \times 100$; SYD अंश = शेष जीवन (चालू वर्ष सहित) $/ [n(n+1) \div 2]$; Depletion = $(\text{निकाली गई मात्रा} / \text{कुल अनुमानित मात्रा}) \times \text{लागत}$ ।

TQ 3.5 • RTP 2026-May [18] (4) • Short Note • Pg 247

LEVEL I
स्मरण (Remembering)

सरल

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए • 3 प्रश्न

- True/False जाल: SYD एक accelerated विधि है ही — प्रारम्भिक वर्षों में अधिक तथा बाद के वर्षों में कम depreciation (यह कथन कि accelerated विधियाँ प्रारम्भिक वर्षों में कम देती हैं, FALSE है)।
- Diminishing Balance Method समझाइए: प्रारम्भिक WDV पर निश्चित प्रतिशत; भार प्रतिवर्ष घटता है; सम्पत्ति का मूल्य कभी पूर्णतः समाप्त नहीं होता; वहाँ प्रयुक्त जहाँ आयु के साथ repairs बढ़ते हैं।
- तर्क कीजिए कि WDV समान कुल भार क्यों देता है: repairs/maintenance बढ़ने के साथ depreciation घटता है, अतः depreciation + repairs प्रतिवर्ष लगभग समान रहता है (यह कथन TRUE है)।

TQ 3.1 • PYQ 2023-Dec [1] (a) (iv) {C} • True/False • 2M • Pg 245

LEVEL I
समझ (Understanding)

सरल

TQ 3.2 • PYQ 2023-Dec [1] (b) (ii) {C} • Descriptive • 1M • Pg 246

LEVEL I
समझ (Understanding)

सरल

TQ 3.3 • MTP 2024-Apr [1] (a) (iii) {C} • True/False • 2M • Pg 246 6× पूछा गया

LEVEL I
समझ (Understanding)

सरल

अनुप्रयोग (Application) प्रक्रिया का अभ्यास कीजिए • 2 प्रश्न

- leases पर Annuity method का अभ्यास कीजिए: depreciation = लागत × annuity factor; प्रत्येक वर्ष प्रारम्भिक शेष पर ब्याज credit होता है।
- खानों/quarries हेतु Depletion method का अभ्यास कीजिए: प्रति टन rate = लागत/कुल अनुमानित भंडार; depreciation = निकाले गए टन × rate (जैसे ₹2,00,00,000 lease, 4,00,000 टन)।
- Machinery A/c का अभ्यास SLM/WDV दोनों में कीजिए — क्रय/erection तिथि से वर्ष के भाग की depreciation तथा वर्ष के मध्य अप्रचलित मशीन की बिक्री सहित।

PQ 3.2 • RTP 2025-Sep [7] • Practical • Pg 250

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

मध्यम

PQ 3.1 • MTP 2022-Nov [2] S2 (a) • Practical • 10M • Pg 248 3× पूछा गया

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

कठिन

विषय 4: Property, Plant and Equipment की बिक्री/निपटान पर लाभ या हानि

P1-C5-U5-T04 • Profit or Loss on The Sale/Disposal of Property, Plant and Equipment

पहले पढ़ें PPE की बिक्री पर लाभ/हानि वाला खंड तथा Illustrations 7-9 पढ़िए: बिक्री की तिथि तक depreciation लगाना, WDV निकालना, P&L को अन्तरण, और दोनों प्रस्तुतियाँ — Provision for Depreciation Account सहित एवं रहित — साथ ही Machinery Disposal Account।

नोट्स

नियम: बिक्री वाले वर्ष में सम्पत्ति जितनी अवधि प्रयुक्त रही, उतने की depreciation लगाइए; लाभ/हानि = विक्रय-प्राप्ति (या insurance claim) – बिक्री की तिथि पर WDV, जो P&L को अन्तरित होती है; disposal पर लाभ capital profit है जो P&L में credit होता है, revenue/turnover का भाग नहीं।

हल का तर्क (SM): 1-1-2022 को book value ₹50,00,000, घटा 6 माह का depreciation @ 10% ₹2,50,000 → 1-7-2022 को WDV ₹47,50,000; ₹32,00,000 में विक्रय → हानि ₹15,50,000 P&L को।

Provision for Depreciation वाला रूप: Machinery A/c मूल लागत पर बना रहता है; बिक्री पर — लागत Machinery Disposal A/c को अन्तरित, संचित depreciation अन्तरित (Dr. Provision for Depreciation / Cr. Machinery Disposal), विक्रय-प्राप्ति credit; Disposal A/c का शेष = लाभ/हानि, P&L को।

Working-note अनुशासन: मशीनवार लागत, वार्षिक depreciation एवं WDV निकालिए; erection/installation तथा second-hand मशीनों के repair/reconditioning व्यय पूँजीकृत कीजिए (Illus. 9: ₹3,00,000 + ₹60,000 repairs + ₹40,000 installation = ₹4,00,000 लागत); वर्ष के मध्य क्रय-विक्रय पर ठीक-ठीक मशीनों की आनुपातिक depreciation दीजिए।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 1 प्रश्न

- True/False: पूँजीगत सम्पत्ति की बिक्री पर लाभ revenue/turnover में नहीं जोड़ा जाता — यह capital profit है जो P&L में पृथक् रूप से credit होता है, operating revenue से भिन्न।
- disposal का तर्क जानिए: बिक्री वाले वर्ष में प्रयुक्त अवधि की depreciation लगाइए, फिर बिक्री तिथि की WDV की तुलना विक्रय-प्राप्ति/insurance claim से कीजिए — अन्तर ही लाभ या हानि, जो P&L को अन्तरित होता है।

TQ 4.1 · PYQ 2023-Dec [1] (a) (ii) {C} · True/False · 2M · Pg 251

LEVEL I
समझ (Understanding)

सरल

अनुप्रयोग (Application) प्रक्रिया का अभ्यास कीजिए · 14 प्रश्न

- Machinery Account में महारत पाइए — वर्ष के मध्य क्रय, erection/installation लागत का पूँजीकरण, किसी भाग/सम्पूर्ण मशीन की वर्ष-मध्य बिक्री, तथा SLM या WDV पर depreciation — working notes में सदैव मशीनवार WDV निकालिए।
- Provision for Depreciation Account वाले रूप का अभ्यास कीजिए: Machinery A/c लागत पर बना रहे; बिक्री पर लागत Machinery Disposal A/c को अन्तरित कीजिए, संचित depreciation अन्तरित कीजिए, विक्रय-प्राप्ति credit कीजिए, शेष = लाभ/हानि।
- insurance-claim वाले disposals का अभ्यास कीजिए (truck/bus नष्ट, पूर्ण निपटान में claim प्राप्त) तथा उसी तिथि को प्रतिस्थापन क्रय।
- प्रचलित पेच देखिए: प्रारम्भिक शेष जो पहले ही depreciation घटाकर दिया हो (लागत तक पीछे जाइए), second-hand मशीन जहाँ repair/recondition लागत पूँजीकृत होती है, तथा ठीक मशीनों की आनुपातिक depreciation।

PQ 4.1 · PYQ 2019-Nov [1] (c) {C} · Practical · 4M · Pg 252

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

मध्यम

PQ 4.3 • PYQ 2021-Jul [1] (c) {C} • Practical • 4M • Pg 254 3× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	मध्यम
PQ 4.4 • PYQ 2021-Dec [2] (b) • Practical • 5M • Pg 255	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	मध्यम
PQ 4.9 • PYQ 2023-Dec [5] (b) • Practical • 5M • Pg 264	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	मध्यम
PQ 4.12 • PYQ 2025-May [5] (a) • Practical • 5M • Pg 268	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	मध्यम
PQ 4.13 • PYQ 2026-Jan [2] (b) • Practical • 8M • Pg 269	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	मध्यम
PQ 4.2 • PYQ 2021-Jan [2] (b) • Practical • 10M • Pg 253 5× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 4.5 • PYQ 2022-May [2] (a) • Practical • 10M • Pg 256 3× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 4.6 • MTP 2022-May [2] (b) • Practical • 10M • Pg 258	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 4.8 • PYQ 2023-Jun [2] (a) • Practical • 10M • Pg 262	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 4.10 • MTP 2024-Aug [2] (a) • Practical • 10M • Pg 265	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 4.14 • PYQ 2026-May [2] (a) • Practical • 10M • Pg 271	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 4.7 • MTP 2022-Nov S1 [2] (a) • Practical • 10M • Pg 260	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	
PQ 4.11 • MTP 2024-Dec S1 [2] (b) • Practical • 10M • Pg 266	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	

विषय 5: मूल्यहास की विधि में परिवर्तन

P1-C5-U5-T05 • Change in the Method of Depreciation

पहले पढ़ें 'Change in the Method of Depreciation' खंड तथा Illustration 10 पढ़िए: विधि में परिवर्तन एक change in accounting estimate है जो prospectively लागू होता है — परिवर्तन की तिथि की WDV पर नई विधि/दर से depreciation (पूर्व वर्षों की पुनर्गणना नहीं)।

नोट्स

नियम: विधि की समीक्षा कम-से-कम प्रत्येक वित्तीय वर्षान्त पर कीजिए; यदि भावी आर्थिक लाभों के उपभोग का अपेक्षित प्रतिरूप significantly बदल गया हो तो विधि बदलिये; यह परिवर्तन accounting ESTIMATE में परिवर्तन है — परिवर्तन की तिथि की WDV पर prospectively लागू, तथा इसका प्रभाव परिमाणित एवं प्रकट किया जाता है (पूर्व वर्षों की पुनर्गणना नहीं)।

अभ्यास-क्रम: पुरानी विधि से परिवर्तन-तिथि तक मशीनवार WDV बनाइए, फिर उसी WDV पर नई विधि/दर से depreciation लगाइए; जहाँ शेष useful life दी हो, नया वार्षिक depreciation = (परिवर्तन-तिथि की WDV - scrap,

यदि कोई हो) ÷ शेष useful life।

SM उदाहरण: मशीन ₹10,50,000, residual ₹50,000, जीवन 10 वर्ष; 2 वर्ष SLM = ₹2,00,000, WDV ₹8,50,000; 25% WDV पर परिवर्तन → तीसरे वर्ष का depreciation ₹2,12,500 (जबकि SLM चलता रहता तो ₹1,00,000) — पूछे जाने पर यही अन्तर परिमाणित कीजिए (Illustration 10 का प्रतिरूप)।

अनुप्रयोग (Application) प्रक्रिया का अभ्यास कीजिए · 7 प्रश्न

- मानक प्रश्न का अभ्यास कीजिए: पुरानी विधि (प्रायः SLM या WDV) से परिवर्तन-तिथि तक मशीनवार WDV बनाइए, फिर उसी WDV पर शेष जीवन में नई विधि/दर prospectively लागू कीजिए।
- विधि-परिवर्तन को वर्ष-मध्य बिक्री के साथ जोड़िए: बेची गई मशीन पर बिक्री-तिथि तक depreciation लगाइए, लाभ/हानि निकालिए, फिर शेष मशीनों हेतु विधि बदलिए।
- जहाँ परिवर्तन के समय शेष useful life दी हो (जैसे WDV से SLM), नया वार्षिक depreciation = परिवर्तन-तिथि की WDV ÷ शेष useful life (scrap, यदि कोई हो, घटाकर)।
- प्रति मशीन स्वच्छ working notes बनाइए (लागत, वार्षिक depreciation, WDV) — परीक्षक step marks देते हैं; साथ ही, पूछे जाने पर समायोजित की जाने वाली depreciation का अन्तर भी परिमाणित कीजिए।

PQ 5.2 · PYQ 2022-Nov [1] (c) {C} · Practical · 4M · Pg 275	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	मध्यम
PQ 5.4 · PYQ 2024-Jun [2] (b) · Practical · 8M · Pg 278 3× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	मध्यम
PQ 5.5 · PYQ 2024-Sep [5] (b) · Practical · 5M · Pg 280 2× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	मध्यम
PQ 5.1 · PYQ 2019-Jun [2] (b) · Practical · 10M · Pg 273 4× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 5.3 · MTP 2023-Nov [2] (b) · Practical · 10M · Pg 277 2× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 5.6 · PYQ 2025-Jan [2] (a) · Practical · 10M · Pg 281	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 5.7 · RTP 2025-Jan [7] · Practical · Pg 283 5× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन

विषय 6: Property, Plant and Equipment की अनुमानित उपयोगी आयु में संशोधन

P1-C5-U5-T06 · Revision of the Estimated Useful Life of Property, Plant and Equipment

पहले पढ़ें 'Revision of the Estimated Useful Life' खंड तथा Illustration 11 पढ़िए: useful life एवं residual value की समीक्षा प्रत्येक वर्षान्त पर होती है; संशोधन पर शेष WDV (residual value घटाकर) संशोधित शेष useful life में फैलाई जाती है।

नोट्स

नियम: residual value तथा useful life की समीक्षा कम-से-कम प्रत्येक वित्तीय वर्षान्त पर अनिवार्य है; अपेक्षाएँ भिन्न निकलें तो इसे change in accounting estimate मानिए — WDV (शेष depreciable amount) संशोधित शेष useful life पर prospectively लगाई जाती है; पूर्व वर्षों की depreciation कभी पुनर्गणित नहीं होती।

सूत्र: संशोधित depreciation = (संशोधन-तिथि की WDV – residual value) ÷ संशोधित शेष useful life।

Illustration 11: मशीन ₹6,00,000, SLM, 10 वर्ष जीवन, residual शून्य; 3 वर्ष बाद depreciation ₹1,80,000, WDV ₹4,20,000; शेष जीवन 7 से घटाकर 5 वर्ष आँका गया → चौथे वर्ष से depreciation = ₹4,20,000 ÷ 5 = ₹84,000 प्रतिवर्ष; बहु-मशीन तालिकाओं में प्रभावित मशीन का जीवन संशोधित करने से पहले प्रत्येक मशीन की संचित depreciation एवं WDV निकालिए।

अनुप्रयोग (Application) प्रक्रिया का अभ्यास कीजिए · 1 प्रश्न

- अभ्यास-क्रम साधिए: अब तक लगाई गई depreciation → संशोधन-तिथि की WDV → नई depreciation = (WDV – residual value)/संशोधित शेष जीवन, prospectively लागू।
- बहु-मशीन तालिकाएँ सँभालिए (भिन्न क्रय-तिथियाँ, जीवन, scrap values): प्रभावित मशीन(ओं) का जीवन संशोधित करने से पहले प्रत्येक मशीन की संचित SLM depreciation एवं WDV निकालिए।
- स्मरण रखिए कि यह change in accounting estimate है — कोई पूर्वव्यापी समायोजन नहीं, पूर्व वर्षों की depreciation पुनर्गणित नहीं होती।

PQ 6.1 · PYQ 2025-Sep [2] (a) · Practical · 8M · Pg 285 2× पूछा गया

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

मध्यम

विषय 7: Property, Plant and Equipment का पुनर्मूल्यांकन

P1-C5-U5-T07 · Revaluation of Property, Plant and Equipment

पहले पढ़ें 'Revaluation of PPE' खंड तथा Illustration 12 पढ़िए: revaluation model, वृद्धि/कमी का Revaluation Surplus बनाम P&L में उपचार, प्रतिवर्तन (reversal) के नियम, तथा revalued amount पर शेष useful life में depreciation।

नोट्स

Model: जिस सम्पत्ति का fair value विश्वसनीय रूप से मापा जा सके, उसे revalued amount घटा पश्चातवर्ती संचित depreciation एवं impairment पर रखा जा सकता है; पर्याप्त अन्तराल पर पुनर्मूल्यांकन कीजिए; यदि PPE की एक मद का पुनर्मूल्यांकन हो तो सम्पूर्ण CLASS का पुनर्मूल्यांकन अनिवार्य है; revaluation एक accounting policy विकल्प है, अनिवार्यता नहीं।

वृद्धि: Revaluation Surplus में credit (equity में संचित) — किन्तु उसी सम्पत्ति की पूर्व में P&L में डाली गई कमी की प्रतिपूर्ति की सीमा तक P&L में मान्यता।

कमी: P&L में charge — किन्तु उसी सम्पत्ति हेतु Revaluation Surplus में विद्यमान credit शेष की सीमा तक

Surplus को debit; केवल शेष अधिक कमी P&L पर पड़ती है (क्रमिक वार्षिक पुनर्मूल्यांकनों में यही कुंजी है)।

पुनर्मूल्यांकन के बाद depreciation (Illus. 12): लागत ₹12,00,000, SLM 10 वर्ष; 3 वर्ष बाद WDV ₹8,40,000; ₹60,000 की वृद्धि → depreciable amount ₹9,00,000, संशोधित शेष 9 वर्षों में → ₹1,00,000 प्रतिवर्ष।

Surplus का निपटान: Revaluation Surplus को derecognition पर सीधे Retained Earnings को अन्तरित किया जा सकता है, अथवा वृद्धि पर अतिरिक्त depreciation प्रतिवर्ष अन्तरित की जा सकती है — कभी भी Profit or Loss के माध्यम से नहीं।

अनुप्रयोग (Application) प्रक्रिया का अभ्यास कीजिए • 3 प्रश्न

- अभ्यास कीजिए: पुनर्मूल्यांकन-तिथि की WDV ± पुनर्मूल्यांकन राशि = नया depreciable amount; उसके बाद depreciation = नई राशि ÷ संशोधित शेष useful life (जैसे ₹10,00,000, SLM 10 वर्ष, 4 वर्ष बाद ₹40,000 की वृद्धि)।
- वृद्धि/कमी के नियम लागू कीजिए: ऊर्ध्व पुनर्मूल्यांकन → Revaluation Surplus में credit (पूर्व की P&L वाली कमी के प्रतिवर्तन की सीमा तक → P&L में credit); अधोमुखी → P&L में debit (उसी सम्पत्ति के पूर्व surplus की सीमा तक → Revaluation Surplus में debit)।
- विद्यमान Revaluation Surplus शेष के विरुद्ध क्रमिक वार्षिक पुनर्मूल्यांकनों का अभ्यास कीजिए — कमी पहले उसी सम्पत्ति के surplus से समायोजित होती है, केवल शेष अधिक भाग P&L पर पड़ता है।
- ध्यान दीजिए: PPE की एक मद का पुनर्मूल्यांकन होने पर सम्पूर्ण class का पुनर्मूल्यांकन अनिवार्य है; revaluation एक accounting policy विकल्प है, अनिवार्यता नहीं।

PQ 7.1 • PYQ 2018-Nov [1] (c) {C} • Practical • 4M • Pg 288 **8× पूछा गया**

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

मध्यम

PQ 7.2 • MTP 2023-Apr [2] (a) • Practical • 5M • Pg 289

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

मध्यम

PQ 7.3 • PYQ 2026-Sep [2] (a) • Practical • 10M • Pg 290

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

विषय 8: अमूर्त परिसंपत्तियाँ (Intangible Assets)

P1-C5-U5-T08 • Intangible Assets

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं • पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §8 पढ़िए: intangible assets की परिभाषा एवं उदाहरण, मान्यता की चार शर्तें, पृथक् अधिग्रहण की लागत तथा derecognition।

नोट्स

परिभाषा: intangible asset एक identifiable non-monetary सम्पत्ति है, जिसका भौतिक अस्तित्व नहीं होता, तथा जो वस्तुओं/सेवाओं के उत्पादन या प्रदाय, अन्यो को किराये पर देने, अथवा प्रशासनिक प्रयोजनों हेतु धारित की जाती है

— जैसे streaming/broadcasting rights, airport landing slots, patents, trademarks, copyrights, distribution rights, दीर्घकालीन ग्राहक अनुबंध, customer data, purchased goodwill, computer software; intangibles किसी इकाई को उसकी मूर्त सम्पत्तियों से कहीं अधिक मूल्यवान बना सकते हैं (Air India के प्रमुख landing slots)।

मान्यता एवं लागत: मान्यता तभी जब (i) identifiable हो — इकाई उसके विशिष्ट भावी आर्थिक लाभों को अन्य सम्पत्तियों के लाभों का निपटान किए बिना किराये पर दे, बेच, विनिमय या वितरित कर सके, (ii) इकाई उस पर CONTROL रखती हो (लाभ प्राप्त कर सके तथा अन्यो की पहुँच रोक सके), (iii) भावी आर्थिक लाभ probable हों, तथा (iv) लागत विश्वसनीय रूप से मापी जा सके; पृथक् रूप से अर्जित intangible की लागत = purchase price + non-recoverable import duties/taxes + directly attributable व्यय (जैसे legal fees) – trade discounts एवं rebates।

Derecognition एवं तुलना: निपटान पर अथवा जब कोई भावी आर्थिक लाभ अपेक्षित न हो, तब derecognise कीजिए — लाभ/हानि = शुद्ध निपटान-प्राप्ति – carrying amount, जो P&L में मान्य होती है; मूर्त सम्पत्तियों (जिन पर अपेक्षित उपयोग के आधार पर जीवन-भर depreciation लगती है) के विपरीत intangibles पर amortisation लगती है — useful life 10 वर्ष से अधिक नहीं मानी जाती जब तक विपरीत प्रमाण न हो, यद्यपि कुछ (purchased goodwill) का जीवन अनिश्चित हो सकता है।

विषय 9: परिशोधन (Amortisation)

P1-C5-U5-T09 · Amortisation

पहले पढ़ें 'Intangible Assets' तथा 'Amortisation' खंड पढ़िए: intangible assets की परिभाषा, मान्यता की शर्तें, तथा amortisation — intangible के depreciable amount का उसके useful life पर systematic allocation (Illustrations 13-14)।

नोट्स

Amortisation (SM): “the systematic allocation of the depreciable amount of an intangible asset over its useful life” — अर्थात् intangible की depreciation; यह तब आरम्भ होती है जब सम्पत्ति उपयोग हेतु उपलब्ध हो जाए; intangible asset वह identifiable non-monetary सम्पत्ति है जिसका भौतिक अस्तित्व नहीं होता तथा जो उत्पादन/प्रदाय, किराये अथवा प्रशासनिक प्रयोजनों हेतु धारित है।

उदाहरण: patents, trademarks, copyrights, computer software, purchased goodwill, streaming एवं broadcasting rights, airport landing rights/slots, theatrical distribution rights, दीर्घकालीन ग्राहक अनुबंध, customer data।

मान्यता की शर्तें: (i) identifiable (पृथक् किए जा सकने योग्य लाभ), (ii) इकाई का उस पर नियंत्रण (लाभ प्राप्त कर सके तथा अन्यो की पहुँच रोक सके), (iii) भावी आर्थिक लाभ probable, (iv) लागत विश्वसनीय रूप से मापनीय; लागत = purchase price + non-recoverable duties/taxes + directly attributable व्यय (जैसे legal fees), trade discounts घटाकर।

मान्य धारणाएँ: useful life 10 वर्ष से अधिक नहीं मानी जाती जब तक विपरीत प्रमाण न हो (10 वर्ष से आगे के संविदात्मक अधिकार → उसी लम्बी अवधि में amortise); residual value शून्य मानी जाती है जब तक किसी तृतीय पक्ष की क्रय-प्रतिबद्धता या active market न हो; उपभोग-प्रतिरूप विश्वसनीय रूप से निर्धारित न हो सके तो straight-line अपनाइए; अवधि एवं विधि की समीक्षा प्रत्येक वर्षान्त पर कीजिए।

Illustrations 13-14: patent लागत ₹28,00,000 + ₹2,00,000 legal/registration = ₹30,00,000, 10 वर्ष → ₹3,00,000 प्रतिवर्ष (पंजीकरण वाले अर्धवर्ष हेतु ₹1,50,000); streaming rights ₹18,00,000, 10 वर्ष में, तीसरे वर्ष के बाद जीवन घटाकर और 5 वर्ष → carrying amount ₹12,60,000 ÷ 5 = ₹2,52,000 प्रतिवर्ष।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए • 1 प्रश्न

- amortisation समझाइए: intangible सम्पत्ति की depreciation — intangible के depreciable amount (लागत घटा residual value) का उसके useful life पर systematic allocation, जो सम्पत्ति के उपयोग हेतु उपलब्ध होते ही आरम्भ होती है।
- बताने योग्य मुख्य धारणाएँ: useful life 10 वर्ष से अधिक नहीं मानी जाती जब तक विपरीत प्रमाण न हो; residual value शून्य मानी जाती है जब तक तृतीय पक्ष की क्रय-प्रतिबद्धता या active market न हो।
- उपभोग-प्रतिरूप विश्वसनीय रूप से निर्धारित न हो सके तो straight-line विधि अपनाइए; amortisation अवधि एवं विधि की समीक्षा प्रत्येक वर्षान्त पर कीजिए।
- उत्तर को intangibles के उदाहरणों से पुष्ट कीजिए: patents, trademarks, copyrights, computer software, streaming/broadcasting rights, landing slots, purchased goodwill।

TQ 9.1 • PYQ 2021-Dec [1] (c) (ii) {C} • Descriptive • 4M • Pg 291

LEVEL I
समझ (Understanding)

सरल

अध्याय 6

विनिमय बिल एवं प्रतिज्ञा-पत्र (Bills of Exchange and Promissory Notes)

Bills of Exchange and Promissory Notes

19 विषय • 23 वर्गीकृत प्रश्न • महत्त्व: C

ICAI कौशल प्रोफाइल Level I 5-20% • Level II 80-95% — यह अध्याय है **सिद्धान्त-प्रधान**

Level I — स्मरण एवं समझ	32.0%	62.5 में से 20 अंक
Level II — अनुप्रयोग एवं विश्लेषण	68.0%	62.5 में से 42.5 अंक

विषय 1: विनिमय बिल (Bills of Exchange)

P1-C6-U6-T01 • Bills of Exchange

पहले पढ़ें अध्याय 6 का Section 1 पढ़िए: विनिमय बिल की परिभाषा (लिखित रूप में बिना शर्त आदेश), उसकी आठ विशेषताएँ, तीन पक्ष, पृष्ठांकन, तथा विदेशी विनिमय बिल (तीन प्रतियों में लिखे जाने वाले)।

नोट्स

परिभाषा (SM): ऐसा “लिखित लेख जिसमें लेखक द्वारा हस्ताक्षरित बिना शर्त आदेश हो, जो किसी निश्चित व्यक्ति को यह निर्देश दे कि वह एक निश्चित धनराशि केवल किसी निश्चित व्यक्ति को, अथवा उसके आदेश पर, अथवा लेख के वाहक को चुकाए”; यह विधिमान्य बिल तभी बनता है जब उस आदेश को उसी लेख के मुख पर लिखित रूप में स्वीकार कर लिया जाए।

आठ विशेषताएँ: (1) लिखित हो, (2) तिथियुक्त हो, (3) निश्चित धनराशि चुकाने का आदेश हो, (4) बिना शर्त हो, (5) किसी निश्चित व्यक्ति, उसके आदेश अथवा वाहक को देय हो, (6) जिस पक्ष को आदेश दिया गया है उसने भुगतान हेतु स्वीकार किया हो, (7) विधिवत stamp लगा हो (माँग पर देय बिलों को छोड़कर), (8) देश की वैध मुद्रा में देय हो।

तीन पक्ष: लेखक (drawer — जो आदेश देता है, प्रायः लेनदार/विक्रेता), आदेशिती (drawee) जो हस्ताक्षर करते ही स्वीकर्ता (acceptor) बन जाता है, तथा आदाता (payee — जिसे भुगतान किया जाता है); लेखक और आदाता एक ही व्यक्ति हो सकते हैं; और बिल cheque की भाँति पृष्ठांकन से हस्तान्तरित होता है।

दायित्व: प्राथमिक दायित्व स्वीकर्ता का है; यदि वह भुगतान न करे तो धारक किसी भी पूर्ववर्ती पृष्ठांकक अथवा लेखक से वसूली कर सकता है।

विदेशी बिल: जो एक देश में लिखा जाए और दूसरे देश में देय हो (Sec. 12, Negotiable Instruments Act: जो अन्तर्देशीय नहीं, वे सभी विदेशी हैं); सामान्यतः यह तीन प्रतियों में लिखा जाता है और प्रत्येक प्रति अलग-अलग भेजी जाती है — किसी एक प्रति पर भुगतान होते ही शेष प्रतियाँ निष्प्रभावी हो जाती हैं।

स्मरण (Remembering) कंठस्थ कीजिए · 1 प्रश्न

- दोहराने योग्य परिभाषा: 'ऐसा लिखित लेख जिसमें लेखक द्वारा हस्ताक्षरित बिना शर्त आदेश हो, जो किसी निश्चित व्यक्ति को निर्देश दे कि वह निश्चित धनराशि केवल किसी निश्चित व्यक्ति को, उसके आदेश पर, अथवा लेख के वाहक को चुकाए'।
- पक्ष: लेखक (आदेश देता है, प्रायः लेनदार/विक्रेता), आदेशिती/स्वीकर्ता (जिस पर बिल लिखा जाता है; हस्ताक्षर करते ही स्वीकर्ता बन जाता है), आदाता (जिसे भुगतान होता है); लेखक और आदाता एक ही व्यक्ति हो सकते हैं।
- विशेषताएँ गिनाइए: लिखित, तिथियुक्त, निश्चित राशि चुकाने का आदेश, बिना शर्त, निश्चित व्यक्ति/आदेश/वाहक को देय, आदेशिती द्वारा स्वीकृत, विधिवत stamped (माँग पर देय बिलों को छोड़कर), और वैध मुद्रा में देय।
- प्राथमिक दायित्व स्वीकर्ता का है; उसकी चूक पर धारक पूर्ववर्ती पृष्ठांककों अथवा लेखक से वसूली कर सकता है।

TQ 1.1 · MTP 2025-Jan S2 [6] (b) (i) · Short Note · 2.5M · Pg 295 **10x पूछा गया** **LEVEL I**
स्मरण (Remembering)

विषय 2: प्रतिज्ञा-पत्र (Promissory Notes)

P1-C6-U6-T02 · Promissory Notes

पहले पढ़ें Section 2 पढ़िए: प्रतिज्ञा-पत्र की परिभाषा (लेखक द्वारा हस्ताक्षरित बिना शर्त वचन), उसकी ग्यारह विशेषताएँ, तथा प्रारूप।

नोट्स

परिभाषा (SM): ऐसा "लिखित लेख, जो bank note अथवा currency note न हो, जिसमें लेखक द्वारा हस्ताक्षरित बिना शर्त वचन हो कि वह एक निश्चित धनराशि केवल किसी निश्चित व्यक्ति को अथवा उसके आदेश पर चुकाएगा"; RBI Act की Section 31(2) के अनुसार प्रतिज्ञा-पत्र वाहक (bearer) को देय नहीं बनाया जा सकता।

आवश्यक तत्त्व (ग्यारह विशेषताएँ संक्षेप में): लिखित हो; भुगतान का स्पष्ट वचन हो — ऋण की मात्र स्वीकृति प्रतिज्ञा-पत्र नहीं है; बिना शर्त हो — "जैसे ही सम्भव होगा ₹50,000 चुका दूँगा" अमान्य है; राशि निश्चित हो — "₹50,000 तथा सम्पूर्ण जुर्माना" अमान्य है; लेखक और आदाता दोनों निश्चित हों; लेखक के हस्ताक्षर हों; विधिवत stamp लगा हो; वैध मुद्रा में देय हो; और वाहक को देय न हो।

नकारात्मक पक्ष: यह न bank note है न currency note, और इसमें स्वीकृति (acceptance) की आवश्यकता नहीं होती — इसे ऋणी स्वयं लिखता और हस्ताक्षरित करता है।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 1 प्रश्न

- सत्य/असत्य का जाल: प्रतिज्ञा-पत्र वाहक (bearer) को देय नहीं बनाया जा सकता — RBI Act की Section 31(2) इसे वर्जित करती है (अतः 'वाहक को देय' वाला कथन असत्य है)।
- आवश्यक तत्त्व कारण सहित समझाइए: स्पष्ट और बिना शर्त वचन (ऋण की मात्र स्वीकृति प्रतिज्ञा-पत्र नहीं है; 'जैसे ही सम्भव होगा' सशर्त है), निश्चित राशि, निश्चित लेखक और आदाता, तथा हस्ताक्षर एवं stamp।
- नकारात्मक पक्ष भी ध्यान रखिए: यह न bank note है न currency note, और इसमें स्वीकृति की आवश्यकता नहीं होती (इसे ऋणी स्वयं लिखता है)।

TQ 2.1 • PYQ 2024-Sep [1] (a) (iv) {C} • True/False • 2M • Pg 295 3× पूछा गया LEVEL I समझ (Understanding)

सरल

विषय 3: विनिमय बिल और प्रतिज्ञा-पत्र में अंतर

P1-C6-U6-T03 • Differences - Bill of Exchange and Promissory Note

पहले पढ़ें Section 3 की तुलना-तालिका पढ़िए: आदेश बनाम वचन, पक्षों की संख्या, भुगतान कौन करता है, लिखता कौन है, लेखक और आदाता की एकरूपता, दायित्व की प्रकृति, सशर्त स्वीकृति, अनादर की सूचना, तथा noting/protest।

नोट्स

मूल अन्तर: बिल में लेनदार का आदेश होता है कि आदेशिती भुगतान करे; प्रतिज्ञा-पत्र में ऋणी का अपना वचन होता है कि वह भुगतान करेगा — शेष सभी अन्तर इसी से निकलते हैं।

विनिमय बिल	प्रतिज्ञा-पत्र
निश्चित राशि चुकाने का आदेश	केवल भुगतान का वचन
सामान्यतः 3 पक्ष: लेखक, आदेशिती, आदाता	2 पक्ष: लेखक और आदाता
लेनदार द्वारा लिखा जाता है; भुगतान स्वीकर्ता करता है	ऋणी द्वारा लिखा जाता है; भुगतान लेखक करता है
लेखक और आदाता एक ही व्यक्ति हो सकते हैं	लेखक और आदाता एक ही व्यक्ति नहीं हो सकते
लेखक का दायित्व गौण और सशर्त (केवल तब जब स्वीकर्ता चूक करे)	लेखक का दायित्व प्राथमिक और आत्यन्तिक
सशर्त स्वीकृति सम्भव; अनादर की सूचना देना आवश्यक	सशर्त नहीं बनाया जा सकता; अनादर की सूचना आवश्यक नहीं
अनादर पर noting और protest आवश्यक	noting और protest आवश्यक नहीं

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए • 2 प्रश्न

- सत्य/असत्य: बिल में लेखक और आदाता एक ही व्यक्ति हो सकते हैं; प्रतिज्ञा-पत्र में लेखक और आदाता एक नहीं हो सकते (यह उलटकर पूछा जाने वाला सामान्य जाल है — ध्यान से पढ़िए कि किस लेख में पक्षों की एकरूपता स्वीकार्य है)।
- बचाव योग्य सत्य कथन: बिल का भुगतान स्वीकर्ता करता है जबकि प्रतिज्ञा-पत्र का भुगतान उसका लेखक; बिल लेनदार लिखता है, प्रतिज्ञा-पत्र ऋणी।
- दायित्व का अन्तर समझाइए: बिल पर लेखक का दायित्व गौण और सशर्त है; प्रतिज्ञा-पत्र पर लेखक का दायित्व प्राथमिक और आत्यन्तिक।
- कारण के रूप में अन्य अन्तर भी उद्धृत कीजिए: बिल में आदेश होता है (3 पक्ष), प्रतिज्ञा-पत्र में वचन (2 पक्ष); अनादर की सूचना तथा noting/protest केवल बिलों के लिए; और सशर्त स्वीकृति केवल बिल में सम्भव है।

TQ 3.1 • PYQ 2019-Nov [1] (a) (iv) {C} • True/False • 2M • Pg 296 **3x पूछा गया** **LEVEL I**
समझ (Understanding)

सरल

TQ 3.2 • PYQ 2024-Jun [1] (a) (iv) {C} • True/False • 2M • Pg 296 **2x पूछा गया** **LEVEL I**
समझ (Understanding)

सरल

विषय 4: विनिमय बिल एवं प्रतिज्ञा-पत्र का लेखा अभिलेखन

P1-C6-U6-T04 • Record of Bills of Exchange and Promissory Notes

पहले पढ़ें Section 4 पढ़िए: प्राप्य बिल (परिसंपत्ति) बनाम देय बिल (देयता), प्राप्ति की journal entries, धारक के तीन विकल्प (अपने पास रखना, पृष्ठांकित करना, भुनाना), तथा प्रत्येक विकल्प में सम्मान एवं अनादर की entries।

नोट्स

वर्गीकरण: जो पक्ष प्रतिज्ञा-पत्र अथवा स्वीकृत बिल प्राप्त करता है वह परिसंपत्ति दर्ज करता है — प्राप्य बिल (Bills Receivable डेबिट / आदेशिती अथवा लेखक क्रेडिट); और जो पक्ष प्रतिज्ञा-पत्र लिखता है अथवा बिल स्वीकार करता है वह देयता दर्ज करता है — देय बिल (Bills Payable)।

धारक के तीन विकल्प: (i) परिपक्वता तक अपने पास रखना — कोई अतिरिक्त entry नहीं; सम्मान पर Bank डेबिट / Bills Receivable क्रेडिट; (ii) किसी लेनदार Z को पृष्ठांकित करना — Z डेबिट / Bills Receivable क्रेडिट, और सम्मान पर कोई entry नहीं; (iii) बैंक से भुनाना — Bank डेबिट (प्राप्त शुद्ध राशि), Discount डेबिट / Bills Receivable क्रेडिट, और सम्मान पर कोई entry नहीं।

अनादर: आदेशिती/लेखक सदैव डेबिट होता है (वह पुनः दायी हो जाता है); क्रेडिट इस पर निर्भर करता है कि बिल कहाँ था — अपने पास रखा हो तो Bills Receivable, पृष्ठांकित किया हो तो लेनदार का खाता, और भुनाया हो तो Bank।

पृष्ठांकन से निपटान: अपने द्वारा स्वीकृत बिल का भुगतान किसी अन्य पक्ष की स्वीकृति पृष्ठांकित करके करना — Bills Payable डेबिट / Bills Receivable क्रेडिट (Katrak का Patel को देय ₹5,000 का दायित्व Mody की स्वीकृति देकर चुकाना); खाते चुनने से पहले सदैव यह निश्चित कीजिए कि आप किस पक्ष की पुस्तकों में लिख रहे हैं।

अनुप्रयोग (Application) प्रक्रिया का अभ्यास कीजिए — इस संस्करण में कोई प्रश्न नहीं

- धारक के तीनों विकल्पों का अभ्यास कीजिए: अपने पास रखना (परिपक्वता तक कोई entry नहीं), पृष्ठांकित करना (पृष्ठांकिती डेबिट, Bills Receivable क्रेडिट), भुनाना (शुद्ध राशि से Bank डेबिट, Discount डेबिट, Bills Receivable क्रेडिट)।
- अनादर की entries: आदेशिती सदैव डेबिट; क्रेडिट Bills Receivable (यदि अपने पास रखा हो), लेनदार (यदि पृष्ठांकित किया हो) अथवा Bank (यदि भुनाया हो)।
- अपनी स्वीकृति का निपटान किसी अन्य पक्ष की स्वीकृति पृष्ठांकित करके करने का अभ्यास कीजिए: Bills Payable डेबिट, Bills Receivable क्रेडिट (जैसे Katrak का Patel वाला बिल Mody की स्वीकृति से चुकाना)।
- narration सटीक लिखिए और लेखक तथा आदेशिती की पुस्तकें अलग-अलग रखिए — अधिकांश प्रश्न केवल एक ही पक्ष की पुस्तकों में journal entries माँगते हैं।

विषय 5: बिल की अवधि (Term of a Bill)

P1-C6-U6-T05 · Term of a Bill

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §5 पढ़िए: बिल की अवधि, तथा after-sight और after-date बिलों में अवधि कब से आरम्भ होती है।

नोट्स

अवधि: विनिमय बिल की अवधि किसी भी लम्बाई की हो सकती है, किन्तु सामान्यतः बिल की तिथि से 90 दिन से अधिक नहीं होती; after sight लिखे गए बिल में अवधि 'दर्शन' की तिथि से, अर्थात् बिल की स्वीकृति की तिथि से चलती है, जबकि after date लिखे गए बिल में अवधि बिल लिखे जाने की तिथि से चलती है।

विषय 6: बिल की समाप्ति/देय तिथि (Expiry/Due Date)

P1-C6-U6-T06 · Expiry / Due Date of a Bill

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §6 पढ़िए (साथ में §7 — रियायत के तीन दिन): वह तिथि जिस पर बिल की अवधि समाप्त होती है।

नोट्स

देय तिथि: जिस तिथि पर बिल की अवधि समाप्त होती है उसे बिल की "समाप्ति/देय तिथि" कहते हैं; और माँग पर देय के अतिरिक्त प्रत्येक लेख उसके आगे रियायत के तीन दिन (days of grace) का अधिकारी होता है।

विषय 7: अनुग्रह दिवस (Days of Grace)

P1-C6-U6-T07 · Days of Grace

पहले पढ़ें Sections 5-10 पढ़िए: बिल की अवधि, समाप्ति/देय तिथि, रियायत के तीन दिन, परिपक्वता तिथि, तथा at sight बनाम after date बिल।

नोट्स

नियम (SM): "माँग पर देय से भिन्न प्रत्येक लेख रियायत के तीन दिन का अधिकारी है"; परिपक्वता तिथि = समाप्ति/देय तिथि + रियायत के 3 दिन।

जहाँ रियायत नहीं मिलती: जो लेख माँग पर (on demand), दर्शन पर (at sight) अथवा प्रस्तुति पर (on presentment) देय लिखे हों, वे बिना रियायत दिनों के परिपक्व होते हैं ('at sight' और 'presentment' का अर्थ माँग

पर ही है); किन्तु किसी निश्चित तिथि पर देय बिल अवधि-लेख है और उसे 3 दिन की रियायत मिलती ही है।

at sight बिल बनाम after date बिल: at sight — भुगतान की कोई अवधि नहीं लिखी होती, किसी भी प्रस्तुति पर माँग पर देय, रियायत नहीं; after date — अवधि-लेख (निश्चित अवधि के बाद, किसी निश्चित दिन, दर्शन के बाद, अथवा निश्चित रूप से घटित होने वाली घटना पर देय), जिसमें रियायत के दिन जोड़े जाते हैं; cheque सदैव माँग पर देय होता है और कभी अवधि-लेख नहीं होता।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए • 1 प्रश्न

- कारण सहित नियम: माँग पर देय से भिन्न प्रत्येक लेख को रियायत के तीन दिन मिलते हैं; परिपक्वता तिथि = देय/समाप्ति तिथि + रियायत के 3 दिन।
- सत्य/असत्य का जाल: किसी निश्चित तिथि पर देय बिल को भी रियायत के दिन मिलते हैं — रियायत केवल माँग पर/दर्शन पर/प्रस्तुति पर देय लेखों में नहीं मिलती (अतः 'निश्चित देय तिथि पर रियायत के दिन नहीं मिलते' असत्य है)।
- at sight बिल (कोई अवधि नहीं लिखी, माँग पर देय, रियायत नहीं) और after date/after sight बिल (अवधि-लेख, रियायत के दिन जुड़ते हैं) में अन्तर कीजिए।

TQ 7.1 • PYQ 2022-May [1] (a) (iii) {C} • True/False • 2M • Pg 297

LEVEL I
समझ (Understanding)

सरल

विषय 8: बिल की परिपक्वता तिथि (Date of Maturity)

P1-C6-U6-T08 • Date of Maturity of Bill

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं • पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §8 पढ़िए: देय तिथि में रियायत के तीन दिन जोड़ना, और उसके अपवाद।

नोट्स

परिपक्वता: समाप्ति/देय तिथि में रियायत के तीन दिन जोड़कर जो तिथि निकलती है वही परिपक्वता तिथि है — प्रत्येक प्रतिज्ञा-पत्र अथवा विनिमय बिल उस दिन के तीसरे दिन परिपक्व होता है जिस दिन वह देय लिखा गया है, केवल इन अपवादों को छोड़कर: जब वह (i) माँग पर, (ii) दर्शन पर, अथवा (iii) प्रस्तुति पर देय लिखा हो (इनमें रियायत के दिन नहीं मिलते)।

विषय 9: दर्शनी बिल (Bill at Sight)

P1-C6-U6-T09 • Bill at Sight

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं • पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §9 पढ़िए: माँग पर देय वे लेख जिनमें भुगतान की कोई अवधि नहीं लिखी होती।

नोट्स

at sight बिल: ऐसा लेख जिसमें भुगतान की कोई अवधि नहीं लिखी होती; कोई प्रतिज्ञा-पत्र/बिल माँग पर देय तब होता है जब उसमें कोई अवधि न दी गई हो अथवा वह माँग पर, दर्शन पर या प्रस्तुति पर देय लिखा हो ('at sight' और 'presentment' का अर्थ माँग पर ही है) — ऐसे लेख की परिपक्वता निकालते समय रियायत के दिन नहीं जोड़े जाते और उसे किसी भी समय भुगतान हेतु प्रस्तुत किया जा सकता है; cheque सदैव माँग पर देय होता है।

विषय 10: तिथि के बाद देय बिल (Bill after Date)

P1-C6-U6-T10 · Bill after Date

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §10 पढ़िए: अवधि-लेख (time instruments) और 'after sight' का अर्थ; साथ ही बासी (stale) cheque की टिप्पणी।

नोट्स

after date बिल: ऐसा लेख जिसमें भुगतान की अवधि लिखी होती है — कोई प्रतिज्ञा-पत्र/बिल अवधि-लेख तब होता है जब वह (a) किसी निश्चित अवधि के बाद, (b) किसी निश्चित दिन, (c) दर्शन के बाद, अथवा (d) निश्चित रूप से घटित होने वाली किसी घटना पर देय हो; 'after sight' का अर्थ है दर्शन हेतु प्रस्तुति के बाद (प्रतिज्ञा-पत्र में) अथवा स्वीकृति/अस्वीकृति पर noting/protest के बाद (विनिमय बिल में)।

Cheque: cheque अवधि-लेख नहीं हो सकता, क्योंकि वह सदैव माँग पर देय होता है — वह आगे की तिथि का (post-dated) हो सकता है, और उसकी वैधता उसकी तिथि से 90 दिन की होती है, जिसके बाद वह शून्य "Stale Cheque" बन जाता है जिसे बैंक स्वीकार नहीं करता।

विषय 11: बिल की देय तिथि की गणना

P1-C6-U6-T11 · How to Calculate Due Date of a Bill

पहले पढ़ें Section 11 की देय-तिथि निकालने वाली तालिका पढ़िए: किसी निश्चित दिन देय बिल, निश्चित महीनों के बाद देय, निश्चित दिनों के बाद देय (बिल की तिथि छोड़कर), तथा अवकाश के नियम; ध्यान रखिए कि 'after sight' की अवधि स्वीकृति से और 'after date' की अवधि लिखे जाने की तिथि से चलती है।

नोट्स

गणना की तालिका: (a) किसी निश्चित तिथि को देय → वही देय तिथि; (b) तिथि से निश्चित महीनों के बाद देय → अवधि

उस महीने के तत्सम दिन समाप्त होती है, और यदि तत्सम दिन न हो तो उस महीने के अन्तिम दिन (31 जनवरी को लिखा 3 माह का बिल → रियायत सहित 3 मई को देय); (c) तिथि से निश्चित दिनों के बाद देय → दिन जोड़िए, किन्तु बिल की तिथि छोड़कर।

अवकाश के नियम: देय तिथि सार्वजनिक अवकाश पर पड़े → उससे पहले वाला कार्य-दिवस देय तिथि होगी; आपातकालीन/अप्रत्याशित अवकाश हो → उसके बाद वाला दिन।

after sight बनाम after date: after sight बिल की अवधि स्वीकृति की तिथि से आरम्भ होती है, और after date बिल की अवधि लिखे जाने की तिथि से — जैसे 1.1.2022 का 3 माह after sight बिल, जो 6.1.2022 को स्वीकृत हुआ, 9.4.2022 को परिपक्व होगा।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए • 2 प्रश्न

- कारण सहित बताने योग्य अवकाश-नियम: देय तिथि सार्वजनिक अवकाश पर पड़े → उससे पहले वाला कार्य-दिवस (अतः 'अगला कार्य-दिवस' असत्य है); आपातकालीन/अप्रत्याशित अवकाश → उसके बाद वाला दिन।
- महीनों का नियम: अवधि उस महीने के तत्सम दिन समाप्त होती है; तत्सम दिन न हो तो उस महीने के अन्तिम दिन (31 जनवरी का 3 माह वाला बिल → रियायत सहित 3 मई को देय)।
- लाल स्याही वाला ब्याज (औसत देय तिथि के सन्दर्भ में सत्य/असत्य): जब किसी बिल की देय तिथि खाता बन्द करने की तिथि के बाद पड़ती है, तब देय तिथि से बन्द करने की तिथि तक का ब्याज लाल स्याही में लिखा जाता है और घटाया जाता है — प्रश्न में दी गई दिशा ध्यान से पढ़िए।

TQ 11.2 • RTP 2025-Jan [1] (vi) • True/False • Pg 297

LEVEL I
समझ (Understanding)

सरल

TQ 11.1 • MTP 2023-Dec [1] (a) (iv) {C} • True/False • 2M • Pg 297

LEVEL I
समझ (Understanding)

मध्यम

विषय 12: नोटिंग शुल्क (Noting Charges)

P1-C6-U6-T12 • Noting Charges

पहले पढ़ें Section 12 पढ़िए: अनादर के तथ्य और कारण प्रमाणित करने में Notary Public की भूमिका, उसकी फीस के रूप में noting charges, और अनादर के लिए उत्तरदायी पक्ष से उनकी वसूली — साथ ही तब की entries जब बिल अपने पास रखा गया हो, पृष्ठांकित किया गया हो अथवा भुनाया गया हो।

नोट्स

संक्षिप्त टिप्पणी: अनादर के तथ्य और कारण प्रमाणित करने के लिए बिल Notary Public को दिया जाता है, जो उसे भुगतान हेतु प्रस्तुत करता है और अनादर होने पर तथ्य को कारण सहित नोट करके बिल लौटा देता है; उसकी छोटी-सी फीस को NOTING CHARGES कहते हैं, जो अनादर के लिए उत्तरदायी पक्ष (आदेशिती) से वसूल की जाती है।

entries (बिल ₹1,000, charges ₹10): अपने पास रखा हो — Y (आदेशिती) डेबिट 1,010 / Bills Receivable क्रेडिट 1,000, Bank क्रेडिट 10; Z को पृष्ठांकित किया हो और charges Z ने चुकाए हों — Y डेबिट 1,010 / Z क्रेडिट 1,010;

भुनाया हो — Y डेबिट 1,010 / Bank क्रेडिट 1,010; आदेशिती सदैव बिल की राशि तथा noting charges — दोनों से डेबिट होता है।

cheque देकर वापस लेना: जहाँ पृष्ठांकिकी को बाद में चुका दिया जाए — पृष्ठांकिकी डेबिट / Bank क्रेडिट; जैसे Katrak: Gupta को पृष्ठांकित ₹4,000 का बिल अनादृत, Mehta ने ₹20 noting charges चुकाए → Gupta डेबिट 4,020 / Mehta क्रेडिट 4,020, फिर Mehta डेबिट 4,020 / Bank क्रेडिट 4,020।

स्मरण (Remembering) कंठस्थ कीजिए · 1 प्रश्न

- संक्षिप्त टिप्पणी के बिंदु: अनादर होने पर बिल Notary Public को दिया जाता है, जो उसे प्रस्तुत करता है, अनादर का तथ्य और कारण नोट करता है तथा एक छोटी फीस लेता है जिसे noting charges कहते हैं; यह राशि अनादर के लिए उत्तरदायी पक्ष (आदेशिती) से वसूल की जाती है।

TQ 12.1 · RTP 2022-May [20] (i) · Short Note · Pg 298 4× पूछा गया

LEVEL I
स्मरण (Remembering)

सरल

अनुप्रयोग (Application) प्रक्रिया का अभ्यास कीजिए · 1 प्रश्न

- entries: आदेशिती सदैव बिल की राशि तथा noting charges — दोनों से डेबिट होता है; क्रेडिट Bills Receivable / पृष्ठांकिकी / Bank में से उसे मिलता है जिसके पास बिल था और जिसने charges चुकाए।
- पृष्ठांकित बिल वाली दशा का अभ्यास कीजिए: पृष्ठांकिकी noting charges चुकाए → आदेशिती डेबिट (राशि + charges), पृष्ठांकिकी क्रेडिट; और यदि बिल cheque देकर वापस लिया जाए तो पृष्ठांकिकी डेबिट, Bank क्रेडिट।
- GST सहित विक्रय मूल्य वाले भुनाए गए बिल के अनादर का अभ्यास कीजिए (जैसे माल ₹25,000 + IGST 18%, दो बिल, जिनमें एक noting charges सहित अनादृत) — अनादर पर पूरी राशि तथा charges आदेशिती के खाते में लौट आते हैं।

PQ 12.1 · RTP 2025-Jan [8] · Practical · Pg 298 3× पूछा गया

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

कठिन

विषय 13: बिल का नवीनीकरण (Renewal of Bill)

P1-C6-U6-T13 · Renewal of Bill

पहले पढ़ें Section 13 पढ़िए: पुराने बिल का रद्दीकरण, बढ़ाई गई अवधि का ब्याज, और नए बिल की राशि की तीन दशाएँ (कुछ भी न चुकाया जाए / ब्याज नकद चुकाया जाए / आंशिक भुगतान हो) — Illustration 2 सहित।

नोट्स

संक्षिप्त टिप्पणी: भुगतान करने में असमर्थ स्वीकर्ता समय बढ़ाने का अनुरोध करता है और इसके बदले बढ़ाई गई अवधि (पुराने बिल की परिपक्वता से अपेक्षित निपटान तिथि तक) का ब्याज वहन करने पर सहमत होता है; पुराना बिल रद्द किया जाता है — entries ठीक वैसी ही जैसी अनादर में — और नया बिल लिखा जाता है।

नए बिल की राशि: (i) आदेशिती कुछ न चुकाए → मूल राशि + बढ़ी अवधि का ब्याज; (ii) आदेशिती ब्याज नकद चुका दे

→ केवल मूल राशि; (iii) आदेशिती आंशिक भुगतान करे → शेष अदत्त राशि + उस शेष पर बढ़ी अवधि का ब्याज।

entries का क्रम (लेखक की पुस्तकों में): आदेशिती डेबिट / Bills Receivable क्रेडिट (पुराना बिल रद्द); आदेशिती डेबिट / Interest क्रेडिट; फिर Bills Receivable डेबिट (नया बिल) तथा Cash डेबिट (ब्याज/आंशिक भुगतान, यदि कोई हो) / आदेशिती क्रेडिट; आदेशिती की पुस्तकों में यही सब Bills Payable, Interest और Cash के साथ उलटे रूप में।

Illustration 2: Pritam का ₹1,06,000 का तीन माह का बिल 2 माह के लिए नवीनीकृत, 9% वार्षिक ब्याज = ₹1,590 तुरन्त नकद चुकाया गया → नया बिल केवल ₹1,06,000 का, जो देय तिथि पर चुका दिया गया।

स्मरण (Remembering) कंठस्थ कीजिए · 1 प्रश्न

- संक्षिप्त टिप्पणी: नवीनीकरण अर्थात् आदेशिती के अनुरोध पर पुराने बिल का रद्दीकरण और बढ़ाई गई अवधि के लिए नया बिल लिखना, जिसमें पुराने बिल की परिपक्वता से अपेक्षित निपटान तक का ब्याज जुड़ता है; इसकी तुलना accommodation बिल से कीजिए (जो व्यापार के लिए नहीं, वित्त जुटाने के लिए लिखा जाता है)।
- नए बिल की राशि: (i) आदेशिती कुछ न चुकाए → पुरानी राशि + ब्याज; (ii) ब्याज नकद चुका दे → केवल पुरानी राशि; (iii) आंशिक भुगतान करे → शेष अदत्त राशि + उस शेष पर ब्याज।

TQ 13.1 · MTP 2024-Apr [6] (Or) (b) · Short Note · 5M · Pg 300

LEVEL I
स्मरण (Remembering)

सरल

अनुप्रयोग (Application) प्रक्रिया का अभ्यास कीजिए · 2 प्रश्न

- अभ्यास योग्य entry-क्रम: पुराना बिल रद्द कीजिए (आदेशिती डेबिट, Bills Receivable क्रेडिट — आदेशिती की पुस्तकों में Bills Payable उलटा), ब्याज दर्ज कीजिए (लेखक की पुस्तकों में आदेशिती डेबिट / Interest क्रेडिट), फिर शेष + ब्याज का नया बिल लिखिए।
- भुनाए गए/संग्रह हेतु भेजे गए बिल के नवीनीकरण का अभ्यास कीजिए: ऐसे बिल के नवीनीकरण अथवा अनादर पर पहले Bank/Bills for Collection के माध्यम से उलटी entry कीजिए, तब नया बिल लिखिए।
- समेकन वाले प्रश्नों का अभ्यास कीजिए (भिन्न तिथियों/अवधियों के कई बिलों के बदले एक नया बिल), जिनमें प्रत्येक बिल का ब्याज उसकी परिपक्वता से निपटान तिथि तक निकालना होता है।

PQ 13.2 · MTP 2023-Nov [3] (b) · Practical · 5M · Pg 302

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

मध्यम

PQ 13.1 · PYQ 2021-Dec [3] (a) · Practical · 10M · Pg 300

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

कठिन

विषय 14: बिल की पूर्व-परिपक्वता भुगतान एवं छूट (Retirement & Rebate)

P1-C6-U6-T14 · Retirement of Bills of Exchange & Rebate

पहले पढ़ें Section 14 तथा Illustration 3 पढ़िए: retirement अर्थात् स्वीकर्ता द्वारा परिपक्वता से पहले भुगतान और उस पर मिलने वाला rebate/छूट; rebate स्वीकर्ता की आय और आदाता का व्यय है।

नोट्स

संक्षिप्त टिप्पणी: जब स्वीकर्ता के पास परिपक्वता से काफी पहले अतिरिक्त धन हो तो वह आदाता को समय से पहले भुगतान कर देता है और शेष बची अवधि के लिए rebate/ब्याज/छूट प्राप्त करता है; $\text{rebate} = \text{बिल की राशि} \times \text{दर} \times \text{शेष माह} \div 12$ ।

लाभ किसका: rebate आदेशिती/स्वीकर्ता की आय है और आदाता/लेखक का व्यय — यह समय से पहले भुगतान का प्रतिफल है, अतः “retirement पर मिलने वाली छूट आदेशिती का लाभ है” सत्य है।

entries: लेखक — Bank डेबिट (शुद्ध राशि), Rebate on Bills (अथवा Interest/Discount) डेबिट / Bills Receivable क्रेडिट; स्वीकर्ता — Bills Payable डेबिट / Bank क्रेडिट (शुद्ध राशि), Rebate आय (Interest/Discount) क्रेडिट।

Illustration 3: Bhavika ने अपनी ₹5,00,000 की स्वीकृति परिपक्वता से एक माह पहले 12% वार्षिक rebate पर चुकाई → rebate ₹5,000, बैंक से ₹4,95,000; मिश्रित प्रश्नों में rebate केवल शेष बची अवधि के लिए दी गई दर पर निकालिए।

स्मरण (Remembering) कंठस्थ कीजिए • 1 प्रश्न

- संक्षिप्त टिप्पणी: जब स्वीकर्ता के पास परिपक्वता से पहले अतिरिक्त धन हो तो वह जल्दी भुगतान कर देता है और शेष बची अवधि के लिए rebate (ब्याज/छूट) पाता है; $\text{rebate} = \text{बिल की राशि} \times \text{दर} \times \text{शेष माह} / 12$ ।

TQ 14.2 • RTP 2026-May [18] (5) • Short Note • 2.5M • Pg 304

9× पूछा गया

LEVEL I

स्मरण (Remembering)

सरल

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए • 1 प्रश्न

- सत्य/असत्य: ‘retirement के समय मिलने वाली छूट आदेशिती का लाभ है’ — सत्य; rebate आदेशिती/स्वीकर्ता की आय और आदाता/लेखक का व्यय है (यह समय से पहले भुगतान का प्रतिफल है)।

TQ 14.1 • RTP 2026-May [1] (f) • True/False • Pg 304

13× पूछा गया

LEVEL I

समझ (Understanding)

सरल

अनुप्रयोग (Application) प्रक्रिया का अभ्यास कीजिए — इस संस्करण में कोई प्रश्न नहीं

- लेखक की entry: Bank डेबिट (शुद्ध राशि), Rebate/Discount डेबिट, Bills Receivable क्रेडिट; आदेशिती की entry: Bills Payable डेबिट, Bank क्रेडिट (शुद्ध राशि), Rebate/Discount आय क्रेडिट।
- मिश्रित प्रश्नों का अभ्यास कीजिए जिनमें कुछ बिल rebate सहित retire होते हैं और कुछ परिपक्वता पर चुकाए या नवीनीकृत होते हैं — rebate केवल शेष बची अवधि के लिए दी गई दर पर निकालिए।

विषय 15: दिवालियापन (Insolvency)

P1-C6-U6-T15 • Insolvency

पहले पढ़ें Section 15 तथा Illustrations 7-8 पढ़िए: दिवालियापन पर स्वीकृति अनादृत मानी जाती है; सम्पदा से प्राप्त राशि दर्ज होती है और शेष डूबत ऋण के रूप में अपलिखित (आदेशिती अपनी पुस्तकों में कमी को Deficiency Account में क्रेडिट

करता है)।

नोट्स

नियम: दिवालियापन का अर्थ है कि आदेशिती अपनी देयताएँ चुका नहीं सकता, अतः उसकी स्वीकृतियाँ अनादृत मानी जाती हैं — पहले अनादर की entry कीजिए: आदेशिती डेबिट / Bills Receivable क्रेडिट (यदि बिल पास हो), Bank क्रेडिट (यदि भुनाया हो), पृष्ठांकित क्रेडिट (यदि पृष्ठांकित हो)।

वसूली और अपलेखन: सम्पदा से रुपये में x पैसे मिलने पर — Bank डेबिट (वसूली गई राशि), Bad Debts डेबिट (शेष) / आदेशिती क्रेडिट; वसूली और डूबत ऋण ठीक-ठीक निकालने के लिए पहले दिवालिया का व्यक्तिगत खाता बनाइए।

आदेशिती की पुस्तकें: जो राशि वह अन्ततः नहीं चुका पाता, वह DEFICIENCY ACCOUNT में क्रेडिट होती है — लेखक डेबिट / Bank क्रेडिट (रुपये में चुकाए गए पैसे), Deficiency A/c क्रेडिट।

Illustration 8 की श्रृंखला: Rita का ₹1,00,000 का बिल ₹99,000 में भुनाया गया; नवीनीकरण पर ₹50,000 नकद तथा ब्याज ₹1,500 (शेष ₹50,000 पर 12% वार्षिक × 3 माह) प्राप्त हुआ और ₹50,000 का नया बिल लिखा गया; Rita दिवालिया → अनादर की entry, फिर 40% वसूली ₹20,000 और Bad Debts ₹30,000।

अनुप्रयोग (Application) प्रक्रिया का अभ्यास कीजिए · 5 प्रश्न

- अधिकार पाने योग्य मानक श्रृंखला: बिल लिखना → बैंक से भुनाना → नवीनीकरण का अनुरोध (कुछ नकद + दी गई दर पर ब्याज + शेष का नया बिल) → आदेशिती दिवालिया → अनादर की entry → रुपये में x पैसे की वसूली → शेष का डूबत ऋण के रूप में अपलेखन।
- दिवालियापन पर पहले अनादर की entry कीजिए (आदेशिती डेबिट, भुनाया हो तो Bank क्रेडिट / पास हो तो Bills Receivable क्रेडिट), फिर वसूली गई राशि से Bank डेबिट और शेष से Bad Debts डेबिट।
- नवीनीकरण पर ब्याज बकाया शेष पर बढ़ाई गई अवधि के लिए लगता है (जैसे अदत्त भाग पर 12% वार्षिक, 3 माह) — नया बिल लिखने से पहले उसे आदेशिती के खाते में जोड़िए।
- वसूली और डूबत ऋण ठीक-ठीक निकालने के लिए दिवालिया का व्यक्तिगत खाता बनाइए; और आदेशिती की पुस्तकों में अदत्त राशि Deficiency Account में क्रेडिट होती है।

PQ 15.1 · PYQ 2019-Jun [3] (b) · Practical · 5M · Pg 305	4× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	मध्यम
PQ 15.3 · RTP 2024-Sep [8] · Practical · Pg 307	5× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	मध्यम
PQ 15.4 · PYQ 2025-Jan [5] (b) (i) · Practical · 5M · Pg 309		LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	मध्यम
PQ 15.5 · PYQ 2025-Sep [5] (a) (Or) (ii) · Practical · 5M · Pg 310		LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	मध्यम
PQ 15.2 · RTP 2023-Dec [8] · Practical · Pg 306	9× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	

विषय 16: सुविधा बिल (Accommodation Bills)

P1-C6-U6-T16 · Accommodation Bills

पहले पढ़ें Section 16 तथा Illustrations 9-10 पढ़िए: वे बिल जो व्यापार के लिए नहीं, पारस्परिक वित्त-व्यवस्था के लिए लिखे जाते हैं — प्राप्त राशि और भुनाई के व्यय सहमत अनुपात में बँटते हैं, और देय तिथि पर पक्षों के बीच धन-प्रेषण होता है।

नोट्स

अवधारणा: व्यापारिक बिल माल के वास्तविक क्रय/विक्रय को वित्त देते हैं; accommodation बिल उसी प्रक्रिया का प्रयोग विशुद्ध रूप से एक अथवा दोनों पक्षों के लिए धन जुटाने में करते हैं — बिल भुनाया जाता है और प्राप्त राशि आपसी सहमति से बाँट ली जाती है; entries सामान्य बिलों जैसी ही होती हैं, साथ में पक्षों के बीच धन-प्रेषण तथा बाँटी हुई छूट की entries।

बँटवारे का सिद्धान्त: भुनाई के व्यय पक्षों को उसी अनुपात में वहन करने होते हैं जिस अनुपात में भुनाई से प्राप्त राशि बाँटी गई थी; देय तिथि पर स्वीकर्ता दूसरे पक्ष का हिस्सा प्राप्त करके बिल चुकाता है।

देय तिथि पर चूक: यदि लेखक अपना हिस्सा न भेज सके, तो आदेशिती उस पर दूसरा बिल लिखकर उसे भुनाता है और पहला बिल चुकाता है; दूसरी बार की छूट भेजी गई राशि तथा पहले बिल से प्रत्येक पक्ष को मिले लाभ के अनुपात में बाँटी जाती है।

Illustration 10: X का Y पर लिखा ₹30,000 का बिल ₹28,800 में भुनाया गया, ₹9,600 Y को भेजे गए (Y ₹10,000 से डेबिट, जिसमें ₹400 छूट का उसका एक-तिहाई हिस्सा सम्मिलित); चूक होने पर Y ने ₹42,000 का बिल लिखकर ₹40,110 में भुनाया और ₹6,740 भेजे; X दिवालिया, सम्पदा से रुपये में 50 पैसे मिले — X अदत्त ₹14,000 Deficiency A/c में क्रेडिट करता है, और Y ₹14,000 डूबत ऋण के रूप में अपलिखित करता है।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 1 प्रश्न

- व्यापारिक बिल बनाम accommodation बिल: व्यापारिक बिल के पीछे माल का वास्तविक विक्रय होता है (प्रतिफल विद्यमान); accommodation बिल बिना किसी व्यापारिक लेन-देन के एक/दोनों पक्षों के लिए धन जुटाने हेतु लिखा जाता है; लेखांकन entries वही रहती हैं, साथ में धन-प्रेषण और बाँटी हुई छूट की entries जुड़ जाती हैं।
- बँटवारे का सिद्धान्त समझाइए: भुनाई के व्यय पक्षों को उसी अनुपात में वहन करने होते हैं जिसमें भुनाई से प्राप्त राशि बाँटी गई थी।

TQ 16.1 · RTP 2023-Jun [20] (ii) · Short Note · Pg 312 5× पूछा गया

LEVEL I
समझ (Understanding)

सरल

विश्लेषण (Analysis) मिश्रित आँकड़ों पर कार्य कीजिए · 2 प्रश्न

- पारस्परिक accommodation वाले प्रश्न हल कीजिए: बिल भुनाना (प्रभावी छूट दर देखिए), प्राप्त राशि का बँटवारा (जैसे लेखक अपना हिस्सा रखकर शेष भेज देता है), और प्रत्येक पक्ष के खाते में मूल राशि तथा समानुपातिक छूट का हिसाब रखना।
- देय तिथि पर चूक वाला मोड़ सँभालिए: लेखक अपना हिस्सा नहीं भेज पाता, इसलिए आदेशिती (अथवा लेखक) दूसरा बिल लिखता है जिसे भुनाकर पहला बिल चुकाया जाता है; दूसरी छूट प्रत्येक पक्ष को मिले लाभ के अनुपात में बाँटिए; और जहाँ दिया

हो वहाँ दिवालियापन तथा आंशिक वसूली तक हल कीजिए (जैसे T/J का ₹1,80,000 का बिल ₹1,72,800 में भुनाया, ₹57,600 भेजे = एक-तिहाई हिस्सा)।

PQ 16.1 · PYQ 2025-May [5] (b) (i) · Practical · 2.5M · Pg 313	2× पूछा गया	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	मध्यम
PQ 16.2 · PYQ 2026-Jan [5] (a) (Or) (ii) · Practical · 5M · Pg 314	7× पूछा गया	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	मध्यम

विषय 17: वसूली हेतु भेजे गए बिल (Bills for Collection)

P1-C6-U6-T17 · Bills of Collection

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §17 पढ़िए: सुरक्षित अभिरक्षा तथा परिपक्वता पर वसूली हेतु बैंक को भेजे गए बिल, और उनकी तीन journal entries।

नोट्स

अर्थ: बिल का धारक सुरक्षा की दृष्टि से बिल अपने बैंक को इस निर्देश के साथ भेज सकता है कि वह उसे परिपक्वता तक रखे और उसी तिथि पर वसूल करे — यह “संग्रह हेतु भेजा गया बिल” कहलाता है, भुनाई नहीं, क्योंकि बैंक ग्राहक के खाते में तभी क्रेडिट करता है जब राशि वास्तव में वसूल हो जाए।

entries: भेजते समय — Bills for Collection A/c डेबिट / Bills Receivable A/c क्रेडिट; वसूली पर — Bank A/c डेबिट / Bills for Collection A/c क्रेडिट; अनादर पर — जिस पक्ष से बिल मिला था उसका खाता (आदेशिती) डेबिट / Bills for Collection A/c क्रेडिट।

विषय 18: Bills Receivable और Bills Payable Books

P1-C6-U6-T18 · Bills Receivable and Bills Payable Books

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §18 पढ़िए: बिलों की दैनिक बहियाँ (Day Books) और उनके प्रारूप।

नोट्स

स्वरूप: प्राप्य बिल और देय बिल बहियाँ journals (Day Books) हैं, जिनमें B/R और B/P का विवरण तिथि-क्रम में दर्ज होता है — बिलों के लेन-देन अधिक होने पर ये सुविधाजनक हैं; अलग-अलग देनदारों/लेनदारों के खातों में posting इन्हीं Day Books से होती है, और प्राप्त/स्वीकृत बिलों के आवधिक कुल क्रमशः Bills Receivable A/c तथा Bills Payable

A/c में posted किए जाते हैं।

उपयोगिता और प्रारूप: भिन्न-भिन्न तिथियों पर देय बकाया बिलों की स्थिति पर नजर रखने तथा अनादर के कारण पहचानने में ये उपयोगी हैं; B/R बही के स्तम्भ — प्राप्ति की तिथि, voucher संख्या, जिससे प्राप्त हुआ वह पक्ष, स्वीकर्ता, बिल की तिथि, देय तिथि, भुगतान का स्थान, राशि, L.F., तथा निपटान की रीति; B/P बही के स्तम्भ — स्वीकृति की तिथि, लेखक, आदाता, बिल की तिथि, देय तिथि, भुगतान का स्थान, और राशि।

विषय 19: समेकित प्रश्न (Integrated Problems)

P1-C6-U6-T19 · Integrated Problems

पहले पढ़ें बिलों की सम्पूर्ण entries एक साथ दोहराइए — आंशिक नकद और ब्याज सहित नवीनीकरण, noting charges सहित पृष्ठांकित बिल का अनादर, छूट पर retirement, तथा किसी अन्य की स्वीकृति पृष्ठांकित करके अपने दायित्व का निपटान — जैसा Illustration 4 (Katrak-प्रकार के प्रश्नों) में एक साथ आता है।

नोट्स

Katrak (i) — अपनी स्वीकृति का नवीनीकरण: Basu को देय ₹2,500 की स्वीकृति ₹1,000 नकद तथा ₹50 ब्याज सहित नए बिल से चुकाई गई: Bills Payable डेबिट 2,500, Interest डेबिट 50 / Cash क्रेडिट 1,000, Bills Payable क्रेडिट 1,550।

Katrak (ii) — पृष्ठांकित बिल का अनादर: Gupta की ₹4,000 की स्वीकृति, जो Mehta को पृष्ठांकित थी, अनादृत हुई और Mehta ने ₹20 noting charges चुकाए: Gupta डेबिट 4,020 / Mehta क्रेडिट 4,020; cheque देकर बिल वापस लेने पर: Mehta डेबिट 4,020 / Bank क्रेडिट 4,020।

Katrak (iii)-(iv): Dalal ने ₹2,000 का बिल ₹10 छूट पर retire किया — Bank डेबिट 1,990, Discount डेबिट 10 / Bills Receivable क्रेडिट 2,000; और Patel को देय ₹5,000 की स्वीकृति Mody की स्वीकृति पृष्ठांकित करके चुकाई गई — Bills Payable डेबिट 5,000 / Bills Receivable क्रेडिट 5,000।

रीति: प्रत्येक लेन-देन में पहले तय कीजिए कि (a) आप किस पक्ष की पुस्तकों में लिख रहे हैं और (b) बिल कहाँ था — अपने पास, पृष्ठांकित अथवा भुनाया हुआ — तभी क्रेडिट खाता चुनिए; चूक करने वाले आदेशिती के डेबिट में noting charges सदैव जोड़िए, और नवीनीकृत बिल की राशि में ब्याज सम्मिलित कीजिए।

अनुप्रयोग (Application) प्रक्रिया का अभ्यास कीजिए · 1 प्रश्न

- एक ही पक्ष की पुस्तकों में Katrak-प्रकार की चार क्लासिक entries पर अधिकार कीजिए: (1) अपनी स्वीकृति का निपटान आंशिक नकद तथा ब्याज सहित नए बिल से; (2) पृष्ठांकित बिल का अनादर, जहाँ noting charges पृष्ठांकिती ने चुकाए, और फिर cheque देकर बिल वापस लेना; (3) आदेशिती द्वारा छूट पर बिल retire करना; (4) अपने देय बिल का निपटान अपने पास रखे प्राप्य बिल को पृष्ठांकित करके।
- प्रत्येक लेन-देन में क्रेडिट खाता चुनने से पहले यह पहचानिए कि आप किस पक्ष की पुस्तकों में लिख रहे हैं और बिल कहाँ था (पास/पृष्ठांकित/भुनाया हुआ)।
- चूक करने वाले आदेशिती के डेबिट में noting charges सदैव जोड़िए, और नवीनीकृत बिल की राशि में ब्याज सम्मिलित कीजिए।

PQ 19.1 · PYQ 2023-Jun [3] (b) · Practical · 5M · Pg 316

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)**मध्यम**

अध्याय 7

एकल स्वामियों के अंतिम खातों की तैयारी

Preparation of Final Accounts of Sole Proprietors

15 विषय • 32 वर्गीकृत प्रश्न • महत्त्व: B

ICAI कौशल प्रोफाइल Level I 5-20% • Level II 80-95% — यह अध्याय है पेपर के अनुरूप

Level I — स्मरण एवं समझ

8.0%

174 में से 14 अंक

Level II — अनुप्रयोग एवं विश्लेषण

92.0%

174 में से 160 अंक

इकाई 7.1: गैर-विनिर्माण संस्थाओं के अंतिम खाते

Final Accounts of Non-Manufacturing Entities

P1-C7-U7.1 • महत्त्व B • अध्याय में Rank 1 • श्रेणी A • अध्याय के 78.1% प्रश्न • 25 प्रश्न

विषय 1: परिचय

P1-C7-U7.1-T01 • Introduction

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं • पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें इकाई का §1.1 पढ़िए: गैर-विनिर्माण (व्यापारिक) संस्थाओं के वित्तीय विवरण तथा आय-विवरण बनाम स्थिति-विवरण की तुलना-सारणी।

नोट्स

गैर-विनिर्माण संस्थाएँ: वे व्यापारिक संस्थाएँ जो लाभ के लिए माल का क्रय-विक्रय करती हैं, बिना उसका रूप अथवा अन्तर्निहित उपयोग बदले — वे माल मूल रूप में ही बेचती हैं; और वर्षान्त पर आय तथा वित्तीय स्थिति जानने के लिए वित्तीय विवरण बनाती हैं।

दो स्तरों का ढाँचा: आय-विवरण = Trading A/c (सकल लाभ/हानि) + Profit & Loss A/c (शुद्ध लाभ/हानि); स्थिति-विवरण = तुलन-पत्र, जो किसी निश्चित तिथि पर परिसंपत्तियों, देयताओं और पूंजी की स्थिति दिखाता है।

आय-विवरण	स्थिति-विवरण
वर्ष की अर्जित आय में से सभी व्यय घटाकर शुद्ध लाभ/हानि प्रकट करता है	किसी निश्चित तिथि पर परिसंपत्तियों और देयताओं की स्थिति प्रकट करता है

इसके दो भाग हैं — Trading A/c तथा Profit & Loss A/c

तुलन-पत्र के अतिरिक्त अन्य विवरण (रोकड़ प्रवाह, equity में परिवर्तन) भी बन सकते हैं — गैर-निगमित संस्थाओं के लिए अनिवार्य नहीं

विषय 2: अंतिम खातों की तैयारी

P1-C7-U7.1-T02 · Preparation of Final Accounts

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §1.2 पढ़िए: Trading A/c, P&L A/c और तुलन-पत्र बनाने से पहले लेखांकन अवधि के आँकड़े जुटाने के मूल सिद्धांत।

नोट्स

कार्य: अन्तिम खातों को निष्पादन और वित्तीय स्थिति का सत्य और उचित चित्र दिखाना चाहिए; मूल सिद्धांत — पूंजीगत बनाम राजस्वगत प्राप्तियों/भुगतानों में अन्तर कीजिए, एक अवधि की आय और व्यय दूसरी अवधि से अलग रखिए, और मदों को महत्वपूर्ण शीर्षों के अन्तर्गत संचित कीजिए।

ध्यान देने योग्य बातें: (a) स्वामी की व्यक्तिगत आय/व्यय को व्यवसाय से अलग रखिए; (b) पूंजीगत बनाम राजस्वगत का अन्तर, और उपचित किन्तु अदत्त व्ययों का प्रावधान उसी आधार पर जिस पर पिछले वर्ष किया गया था; (c) सभी तात्त्विक सूचना प्रकट कीजिए (जैसे श्रम-प्रभारों में सम्मिलित बोनस, माल-सूची का बड़ा अपलेखन); (d) केवल चालू अवधि के लेन-देन ही दर्ज कीजिए।

विषय 3: व्यापार खाता (Trading Account)

P1-C7-U7.1-T03 · Trading Account

पहले पढ़ें ICAI Study Material का Section 1.3 (Trading Account) पढ़िए: बेची गई वस्तुओं की लागत की गणना, Trading Account का प्रारूप, अलग-अलग मर्दे (प्रारम्भिक माल-सूची, क्रय और वापसी, carriage inwards, मजदूरी, विक्रय और विक्रय-वापसी, अन्तिम माल-सूची) तथा समापन entries।

नोट्स

उद्देश्य (SM 1.3): सकल लाभ विक्रय मूल्य तथा बेची गई वस्तुओं की लागत का अन्तर है; इसे Trading Account बनाकर निकाला जाता है, और शेष हस्तान्तरित होता है — सकल लाभ के लिए Trading A/c डेबिट To Profit and Loss A/c, तथा सकल हानि के लिए P&L A/c डेबिट To Trading A/c।

प्रारूप: डेबिट — प्रारम्भिक स्कन्ध, क्रय में से returns outward घटाकर, प्रत्यक्ष व्यय (freight एवं carriage inwards, सीमा-शुल्क एवं बीमा, मजदूरी, gas/जल/ईंधन, कारखाना-व्यय, उत्पादन पर royalty); क्रेडिट — विक्रय में

से returns inward घटाकर, तथा अन्तिम स्कन्ध; और संतुलनकारी राशि = सकल लाभ c/d (अथवा क्रेडिट पक्ष पर सकल हानि)।

सूत्र: COGS = प्रारम्भिक स्कन्ध + शुद्ध क्रय + प्रत्यक्ष व्यय – अन्तिम स्कन्ध; सकल लाभ = शुद्ध विक्रय – COGS; प्रत्यक्ष व्ययों का नियम — Trading A/c में केवल वे व्यय डेबिट कीजिए जो माल को उसके वर्तमान स्थान और दशा तक लाने में लगे हों (क्रय पर freight, cartage, चुंगी, गोदाम की मजदूरी); किसी स्थायी परिसंपत्ति पर लगा freight अथवा मजदूरी उस परिसंपत्ति की लागत में जुड़ती है, Trading A/c में डेबिट नहीं होती।

अन्तिम स्कन्ध: entry — Closing Inventory A/c डेबिट To Trading A/c (अथवा वैकल्पिक रूप से To Purchases A/c); मूल्यांकन लागत अथवा शुद्ध वसूली-योग्य मूल्य में जो कम हो, उस पर (इसमें consignment अभिकर्ताओं के पास पड़ा माल तथा अनुमोदन पर भेजा गया माल भी सम्मिलित); और यदि अन्तिम स्कन्ध तलपट में दिख रहा हो तो वह पहले ही Purchases के विरुद्ध समायोजित हो चुका है, अतः Trading A/c में नहीं आएगा और केवल तुलन-पत्र में दिखेगा।

समापन entries: (1) Trading A/c डेबिट To प्रारम्भिक माल-सूची / Purchases / Wages / क्रय पर Freight; (2) Sales A/c डेबिट तथा Closing Inventory A/c डेबिट To Trading A/c; वापसी पहले शुद्ध की जाती है (Purchases Return A/c डेबिट To Purchases; Sales A/c डेबिट To Sales Return); और invoice के बिना प्राप्त माल पर — Purchases डेबिट, आपूर्तिकर्ता क्रेडिट।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 1 प्रश्न

- यह सिद्ध कर सके: यदि अन्तिम स्कन्ध तलपट में दिख रहा हो तो वह पहले ही Purchases के विरुद्ध समायोजित हो चुका है, अतः Trading Account में नहीं आएगा और केवल तुलन-पत्र में दिखेगा (सत्य — यह बार-बार आने वाला कथन है)।
- प्रत्यक्ष व्ययों का नियम समझाइए: Trading A/c में केवल वे लागतें डेबिट होती हैं जो माल को उसके वर्तमान स्थान और दशा तक लाती हैं (freight/carriage inwards, चुंगी, गोदाम की मजदूरी); किसी स्थायी परिसंपत्ति पर लगा freight अथवा मजदूरी पूंजीकृत की जाती है।

TQ 3.1 · PYQ 2024-Jun [1](a)(i){C} · True/False · 2M · Pg 323 **7× पूछा गया** **LEVEL I**
समझ (Understanding)

सरल

अनुप्रयोग (Application) प्रक्रिया का अभ्यास कीजिए · 1 प्रश्न

- Trading A/c के प्रारूप का अभ्यास कीजिए: डेबिट — प्रारम्भिक स्कन्ध, क्रय में से returns outward घटाकर, प्रत्यक्ष व्यय; क्रेडिट — विक्रय में से returns inward घटाकर, अन्तिम स्कन्ध; और सकल लाभ संतुलनकारी राशि के रूप में P&L में ले जाया जाता है।
- अभ्यास कीजिए: COGS = प्रारम्भिक स्कन्ध + शुद्ध क्रय + प्रत्यक्ष व्यय – अन्तिम स्कन्ध, तथा सकल लाभ = विक्रय – COGS; और उलटी गणना भी कीजिए (जैसे COGS तथा विक्रय दिए हों तो सकल लाभ और सकल लाभ अनुपात निकालना)।
- 4-5 अंक वाले छोटे प्रश्नों का अभ्यास कीजिए, जैसे दिए गए शेषों (प्रारम्भिक माल-सूची, क्रय, carriage inwards, मजदूरी, विक्रय, दोनों वापसी, अन्तिम माल-सूची) से Trading A/c बनाना।

PQ 3.1 · PYQ 2018-Nov [3](b) · Practical · 5M · Pg 323

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

मध्यम

विषय 4: लाभ एवं हानि खाता (Profit and Loss Account)

P1-C7-U7.1-T04 · Profit and Loss Account

पहले पढ़ें Section 1.4 (Profit and Loss Account) पढ़िए: व्ययों का वर्गीकरण (प्रबन्ध, रख-रखाव, विक्रय एवं वितरण, वित्तीय, असामान्य हानियाँ), समापन entries, तथा आहरण, आयकर, व्यापारिक बनाम नकद छूट, rebate, डूबत ऋण और डूबत ऋणों की वसूली का विशिष्ट व्यवहार।

नोट्स

योजना (SM 1.4): आरम्भ क्रेडिट पक्ष पर सकल लाभ b/d से (सकल हानि डेबिट पक्ष पर); डेबिट में व्यय कार्य के अनुसार समूहित — प्रबन्ध (वेतन, कार्यालय का किराया/कर, मुद्रण, डाक, बीमा, अंकेक्षण एवं विधिक शुल्क), रख-रखाव (मरम्मत, कार्यालय परिसंपत्तियों का मूल्यहास), विक्रय एवं वितरण (विज्ञापन, गोदाम का किराया, carriage outward, डूबत ऋण, डूबत ऋणों का प्रावधान, commission), वित्तीय (बैंक प्रभार, ऋणों पर ब्याज, दी गई छूट) तथा असामान्य हानियाँ (परिसंपत्ति के विक्रय पर हानि, आग से हानि); क्रेडिट में अन्य आय (प्राप्त छूट/commission), गैर-व्यापारिक आय (बैंक ब्याज, किराए पर दी गई सम्पत्ति का किराया, लाभांश) तथा असामान्य लाभ; और शेष = शुद्ध लाभ (P&L A/c डेबिट To Capital A/c) अथवा शुद्ध हानि (Capital A/c डेबिट To P&L A/c)।

केवल nominal खाते: व्यय, हानियाँ, आय और लाभ Trading/P&L A/c में जाते हैं; व्यक्तिगत और वास्तविक खाते तुलन-पत्र में; आहरण तथा एकल स्वामी का आयकर फर्म के व्यय नहीं हैं — इनसे Capital A/c डेबिट कीजिए (Capital A/c डेबिट To Drawings; Capital A/c डेबिट To Income Tax A/c)।

व्यापारिक बनाम नकद छूट: व्यापारिक छूट तब दी जाती है जब आदेश एक निश्चित मात्रा से कम न हो, यह invoice में से घटा दी जाती है और केवल शुद्ध राशि दर्ज होती है — यह P&L में कभी डेबिट नहीं होती; नकद छूट निश्चित तिथि से पहले शीघ्र भुगतान पर दी जाने वाली छूट है और दर्ज होती है — दी गई छूट डेबिट, प्राप्त छूट P&L में क्रेडिट; **Rebate:** वह छूट जो ग्राहक की अवधि-भर की खरीद निर्धारित कुल तक पहुँचने पर दी जाती है (₹5,100 की खरीद पर 4% = ₹204), और जो केवल वर्षान्त पर दर्ज होती है: Rebate A/c डेबिट To ग्राहक, फिर P&L A/c डेबिट To Rebate A/c।

डूबत ऋण: Bad Debts A/c डेबिट To ग्राहक का A/c, फिर P&L A/c डेबिट To Bad Debts (अथवा प्रावधान होने पर Provision for Bad Debts A/c डेबिट); और बाद में वसूल हुई राशि लाभ है, जो Bad Debts Recovered A/c में क्रेडिट होकर P&L के क्रेडिट में जाती है — भुगतान करने वाले पक्ष के खाते में कभी क्रेडिट नहीं होती।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 3 प्रश्न

- व्यापारिक छूट सूची-कीमत में से व्यावसायिक कारणों (जैसे बड़े आदेश) से दी गई कमी है; नकद छूट शीघ्र भुगतान के लिए दी जाती है — सत्य/असत्य का जाल दोनों परिभाषाओं को मिला देता है, इसलिए दोनों ठीक-ठीक याद रखिए।
- Trading/P&L A/c में केवल nominal खाते (व्यय, हानियाँ, आय, लाभ) जाते हैं; व्यक्तिगत और वास्तविक खाते तुलन-पत्र में (अतः 'सभी व्यक्तिगत और वास्तविक खाते P&L में दर्ज होते हैं' असत्य है)।
- डूबत ऋणों का प्रावधान Profit and Loss A/c में डेबिट होता है और तुलन-पत्र में विविध देनदारों में से घटाया जाता है — यह Sundry Debtors Account में डेबिट नहीं होता।
- पूर्व-अवधि की मदें चालू लाभ-हानि विवरण में अलग से प्रकट करनी ही होंगी, ताकि चालू लाभ पर उनका प्रभाव समझा जा सके।

TQ 4.1 · PYQ 2019-Nov · T/F · 2M · Pg 324 2× पूछा गया	LEVEL I समझ (Understanding)	सरल
TQ 4.2 · PYQ 2021-Dec · T/F · 2M · Pg 325 5× पूछा गया	LEVEL I समझ (Understanding)	सरल
TQ 4.3 · RTP 2023-Jun · T/F · Pg 325 2× पूछा गया	LEVEL I समझ (Understanding)	मध्यम

अनुप्रयोग (Application) प्रक्रिया का अभ्यास कीजिए · 1 प्रश्न

- अग्रिम प्राप्त आय की गणना का अभ्यास कीजिए (पत्रिका के अभिदान): वर्ष की आय = प्रारम्भिक अग्रिम + प्राप्त राशि – अन्तिम अग्रिम; और अग्रिम का शेष देयताओं में जाता है।
- दिए गए शेषों से समापन entries सहित P&L A/c बनाने का अभ्यास कीजिए, तथा शुद्ध लाभ/शुद्ध हानि Capital A/c में हस्तान्तरित कीजिए।

PQ 4.1 · PYQ 2021-Jan [5](b) · Practical · 5M · Pg 325

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

मध्यम

विषय 5: कुछ समायोजन और उनका लेखांकन उपचार

P1-C7-U7.1-T05 · Certain Adjustments and their Treatments

पहले पढ़ें Section 1.4 का समायोजन वाला भाग पढ़िए (बकाया/पूर्वदत्त व्यय, उपचित आय, अग्रिम प्राप्त आय, संदिग्ध ऋणों तथा छूट के प्रावधान, मूल्यहास) और साथ में Section 1.5 (आग से असामान्य हानि, अनुमोदन पर भेजा गया माल, विक्रय से भिन्न प्रयोजन में प्रयुक्त माल, प्रबन्धक का लाभ पर commission)।

नोट्स

अवधि-सम्बन्धी समायोजन: बकाया व्यय — Expense A/c डेबिट To Outstanding Expense A/c (P&L में व्यय में जोड़िए, देयता के रूप में दिखाइए); पूर्वदत्त — Prepaid Expense A/c डेबिट To Expense A/c (घटाइए, परिसंपत्ति के रूप में दिखाइए); उपचित आय — Accrued Income A/c डेबिट To Income A/c (जोड़िए, परिसंपत्ति); अग्रिम प्राप्त आय — Income A/c डेबिट To Income Received in Advance A/c (घटाइए, देयता; पत्रिका के अभिदान में वर्ष की आय = प्राप्तियाँ + प्रारम्भिक अग्रिम – अन्तिम अग्रिम); और ये सभी entries अगले वर्ष उलट दी जाती हैं।

प्रावधान: P&L A/c डेबिट To Provision for Bad and Doubtful Debts; पहले डूबत ऋण विद्यमान प्रावधान के विरुद्ध अपलिखित कीजिए, फिर शेष को देनदारों के अपेक्षित प्रतिशत तक बढ़ाइए — P&L पर प्रभार = अपलिखित डूबत ऋण + अन्तिम प्रावधान – प्रारम्भिक प्रावधान; देनदारों पर छूट का प्रावधान संदिग्ध ऋणों का प्रावधान घटाने के बाद निकाला जाता है, क्योंकि छूट केवल अच्छे देनदारों को दी जाती है; तुलन-पत्र में दोनों व्यापारिक प्राप्य में से घटाए जाते हैं, और मूल्यहास का प्रावधान सम्बन्धित परिसंपत्ति में से।

आग से असामान्य हानि (SM 1.5): Loss by Fire A/c डेबिट To Purchases/Trading A/c, पूरी लागत से; फिर Insurance Company's A/c डेबिट (स्वीकृत दावा) तथा P&L A/c डेबिट (जिस भाग की क्षतिपूर्ति नहीं हुई) To Loss by Fire A/c; और प्राप्य दावा मिलने तक परिसंपत्ति पक्ष में दिखता है (माल ₹6,000, दावा ₹4,500 → P&L पर ₹1,500)।

अनुमोदन पर माल: आरम्भ में इसे वास्तविक उधार विक्रय की भाँति दर्ज किया जाता है; वर्षान्त पर अनुमोदन-रहित

विक्रय invoice मूल्य पर उलट दिया जाता है (Sales A/c डेबिट To Trade Receivables A/c) और वह माल लागत पर अन्तिम स्कन्ध में लाया जाता है (Stock on Approval A/c डेबिट To Trading A/c); **विक्रय से भिन्न प्रयोजन में प्रयुक्त माल:** Purchases A/c क्रेडिट कीजिए और उपयोग के अनुसार Drawings (व्यक्तिगत उपयोग), Donation, निःशुल्क नमूने/Advertisement, Building अथवा Plant & Machinery (निर्माण), या Repairs & Maintenance डेबिट कीजिए।

प्रबन्धक का लाभ पर commission: ऐसा commission प्रभारित करने से पहले = लाभ $\times$ दर/100; प्रभारित करने के बाद = commission से पूर्व लाभ $\times$ दर/(100 + दर) — जैसे ₹1,00,000 पर 10%, प्रभारित करने के बाद = ₹1,00,000 $\times$ 10/110 $\approx$ ₹9,091; entry — Commission A/c डेबिट To Commission Payable A/c — commission P&L में डेबिट, और Commission Payable देयता पक्ष में।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 3 प्रश्न

- अनुमोदन पर बेचा गया माल आरम्भ में उधार विक्रय के रूप में ही दर्ज होता है; वर्षान्त पर अनुमोदन-रहित विक्रय उलट दिया जाता है (Sales A/c डेबिट To Trade Receivables) और वह माल लागत पर अन्तिम स्कन्ध में सम्मिलित किया जाता है — सत्य/असत्य के लिए यही दो-entry वाला तर्क जानिए।
- पिछले वर्ष का बकाया वेतन उसी वर्ष की देयता है; यदि वह चालू वर्ष में चुका दिया गया हो तो चालू वर्ष के तुलन-पत्र में नहीं दिखेगा — सत्य/असत्य से पहले यह तर्क ध्यान से लगाइए।
- देनदारों पर छूट का प्रावधान संदिग्ध ऋणों का प्रावधान घटाने के बाद निकाला जाता है, क्योंकि छूट केवल उन्हीं अच्छे देनदारों को मिलती है जो भुगतान करते हैं।

TQ 5.2 · RTP 2025-Jan · T/F · Pg 327

LEVEL I
समझ (Understanding)

सरल

TQ 5.1 · MTP 2023-Dec · T/F · 2M · Pg 326 **2× पूछा गया**

LEVEL I
समझ (Understanding)

मध्यम

TQ 5.3 · RTP 2025-Sep · T/F · 2M · Pg 327

LEVEL I
समझ (Understanding)

मध्यम

अनुप्रयोग (Application) प्रक्रिया का अभ्यास कीजिए · 1 प्रश्न

- वर्ष के बीच परिवर्तन वाले व्यय-प्रश्नों का अभ्यास कीजिए (जैसे किसी तिथि से वेतन-वृद्धि, आधे वेतन पर नए कर्मचारी/प्रशिक्षु): P&L पर सही प्रभार, वास्तविक भुगतान और तुलन-पत्र के लिए बकाया/पूर्वदत्त शेष — तीनों निकालिए।
- प्रबन्धक के commission के सूत्रों का अभ्यास कीजिए: प्रभारित करने से पहले = लाभ $\times$ $r/100$; प्रभारित करने के बाद = लाभ $\times$ $r/(100 + r)$; साथ में journal entry भी (Commission A/c डेबिट To Commission Payable A/c)।

PQ 5.1 · PYQ 2020-Nov [5](b) · Practical · 5M · Pg 327

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

मध्यम

विषय 6: तुलन-पत्र (Balance Sheet)

P1-C7-U7.1-T06 · Balance Sheet

पहले पढ़ें Section 1.6 (Balance Sheet) पढ़िए: परिभाषा और विशेषताएँ, परिसंपत्तियों तथा देयताओं का तरलता अथवा स्थायित्व के क्रम में विन्यास, चालू/स्थायी/अमूर्त परिसंपत्तियों तथा चालू/दीर्घकालिक देयताओं में वर्गीकरण, और पूंजी खाते की प्रस्तुति (शुद्ध लाभ जोड़कर, आहरण घटाकर)।

नोट्स

परिभाषा (SM): “वह विवरण जो किसी निश्चित तिथि पर फर्म अथवा संस्था की परिसंपत्तियाँ और देयताएँ प्रस्तुत करता है” — चूँकि एक भी लेन-देन परिसंपत्तियों या देयताओं को बदल देता है, यह केवल उसी समय-बिन्दु पर सत्य होता है (इसीलिए “as at” का महत्त्व है)।

विशेषताएँ: (i) यह किसी निश्चित तिथि पर बनता है, किसी अवधि के लिए नहीं; (ii) यह P&L A/c के बाद ही बनता है — दोनों मिलकर अन्तिम खाते कहलाते हैं (तुलन-पत्र खाता नहीं है, इसके पक्ष Dr और Cr नहीं होते); (iii) दोनों पक्षों के योग बराबर होने ही चाहिए, क्योंकि पूंजी सदैव परिसंपत्तियों में से देयताएँ घटाने के बराबर होती है — योग बराबर न हों तो कहीं त्रुटि है।

विन्यास और वर्गीकरण: परिसंपत्तियाँ तरलता के क्रम में (पहले रोकड़, अन्त में भूमि एवं भवन) अथवा स्थायित्व के क्रम में (इसके विपरीत) रखी जाती हैं; देयताएँ भुगतान की तात्कालिकता के क्रम में; चालू परिसंपत्तियाँ वे हैं जो एक वर्ष के भीतर रोकड़ में बदल जाएँ (रोकड़, बैंक, व्यापारिक प्राप्य, माल-सूची), स्थायी/दीर्घकालिक परिसंपत्तियाँ निरन्तर उपयोग के लिए होती हैं (machinery, भवन, दीर्घकालिक निवेश), और अमूर्त परिसंपत्तियों का भौतिक अस्तित्व नहीं होता (patents, copyrights); चालू देयताएँ एक वर्ष के भीतर चुकाई जाती हैं (लेनदार, bills payable) और दीर्घकालिक देयताएँ उसके बाद (term loans)।

पूंजी का भाग और समूहन: पूंजी शेष + शुद्ध लाभ (अथवा – शुद्ध हानि) – आहरण, जहाँ आहरण में निकाली गई नकदी, व्यक्तिगत उपयोग के लिए लिया गया माल (Drawings A/c डेबिट To Purchases A/c — लागत पर, कभी Capital अथवा P&L के माध्यम से नहीं) तथा चुकाया गया आयकर सम्मिलित हैं; सामान्य समूह — पूंजी, दीर्घकालिक ऋण, अल्पकालिक ऋण, चालू देयताएँ, प्रावधान, मूर्त स्थायी परिसंपत्तियाँ, अमूर्त परिसंपत्तियाँ, निवेश, चालू परिसंपत्तियाँ।

प्रस्तुति के बिंदु: संदिग्ध ऋणों तथा छूट के प्रावधान कुल पुस्तक-ऋणों में से घटाए जाते हैं और मूल्यहास का प्रावधान परिसंपत्ति की लागत में से; कर्मचारियों की निष्ठा/योग्यता (मानव संसाधन) जैसी अमूर्त शक्तियाँ परिसंपत्ति के रूप में नहीं दिखाई जा सकतीं; अग्रिम चुकाया गया वेतन परिसंपत्ति है (रोकड़ पूर्वदत्त में बदल गई), व्यय नहीं; और पिछले वर्ष का बकाया वेतन देयता के रूप में तभी दिखेगा जब वह तुलन-पत्र की तिथि तक अदत्त हो।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 3 प्रश्न

- आहरण (निकाली गई नकदी अथवा माल) पूंजी में कमी है, जो Capital/Drawings A/c में डेबिट होती है — यह P&L का व्यय कभी नहीं; और व्यक्तिगत उपयोग के लिए लिया गया माल PURCHASES A/c में क्रेडिट होता है, Capital A/c में नहीं।
- मानव संसाधन परिसंपत्ति के रूप में नहीं दिखाए जाते — उनका मुद्रा में मापन सम्भव नहीं (मुद्रा-मापन अवधारणा)।

- अग्रिम चुकाया गया वेतन व्यय नहीं है, किन्तु सही कारण यह है कि वह परिसंपत्ति है (भुगतान से रोकड़ पूर्वदत्त परिसंपत्ति में बदल जाती है) — कथन में दिया कारण 'न परिसंपत्तियाँ घटती हैं, न देयताएँ बढ़ती हैं' गलत है, क्योंकि रोकड़ तो घटती ही है।
- पिछले वर्ष का बकाया वेतन देयता के रूप में तभी दिखेगा जब वह अब भी अदत्त हो; देयता के उपचय और उसके निपटान में अन्तर कीजिए।

TQ 6.1 · RTP 2018-May · T/F · Pg 328 3× पूछा गया

LEVEL I
समझ (Understanding)

सरल

TQ 6.2 · RTP 2025-May · T/F · Pg 329 3× पूछा गया

LEVEL I
समझ (Understanding)

सरल

TQ 6.3 · MTP 2023-Nov · T/F · 2M · Pg 329 5× पूछा गया

LEVEL I
समझ (Understanding)

मध्यम

अनुप्रयोग (Application) प्रश्न हल कीजिए · 1 प्रश्न

- Adjustments सहित पूर्ण Balance Sheet तैयार करें: depreciation, bad debts, provisions, outstanding/prepaid items, closing stock।

PQ 6.1 · PYQ 2026-Jan [4](b) · Practical · 10M · Pg 329

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

कठिन

संश्लेषण (Synthesis) आद्योपान्त तैयार कीजिए — इस संस्करण में कोई प्रश्न नहीं

- शेषों की सूची से समायोजनों सहित पूरा तुलन-पत्र बनाने पर अधिकार कीजिए: मूल्यहास, अपलिखित डूबत ऋण, संदिग्ध ऋणों तथा छूट के प्रावधान, बकाया/पूर्वदत्त मर्दे, और अन्तिम स्कन्ध।
- पूंजी-भाग की प्रस्तुति का अभ्यास कीजिए: प्रारम्भिक पूंजी + शुद्ध लाभ – आहरण (जिसमें निकाला गया माल और आयकर भी सम्मिलित), तथा स्थायी परिसंपत्तियों, निवेशों, चालू परिसंपत्तियों, चालू देयताओं और प्रावधानों के अन्तर्गत समूहन।

विषय 7: लेखांकन प्रक्रिया का क्रम / लेखांकन चक्र

P1-C7-U7.1-T07 · Sequence of Accounting Procedure or the Accounting Cycle

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §1.7 पढ़िए, जिसमें लेखांकन प्रक्रिया के पाँच चरण क्रम से दिए हैं।

नोट्स

लेखांकन चक्र: (i) लेन-देनों का journalising → (ii) ledger में posting → (iii) अंकगणितीय शुद्धता जाँचने के लिए तलपट बनाना → (iv) अवधि के लिए Trading तथा P&L A/c (आय-विवरण) बनाना → (v) अवधि के अन्त की वित्तीय स्थिति दिखाने के लिए तुलन-पत्र बनाना।

विषय 8: प्रारंभिक प्रविष्टि (Opening Entry)

P1-C7-U7.1-T08 · Opening Entry

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §1.8 को Illustration 8 सहित पढ़िए: पिछले वर्ष के अन्तिम शेषों को नए वर्ष की पहली entry के रूप में journalise करना और उसकी posting।

नोट्स

प्रारम्भिक entry: नए वर्ष की पहली journal entry पिछले वर्ष की परिसंपत्तियों और देयताओं के अन्तिम शेषों (पिछले तुलन-पत्र के अनुसार) को प्रारम्भिक शेष के रूप में दर्ज करती है — सभी परिसंपत्तियाँ डेबिट / सभी देयताएँ तथा Capital A/c क्रेडिट ("Being the balances brought forward")।

Posting: प्रत्येक परिसंपत्ति खाता डेबिट पक्ष पर "To Balance b/d" से खुलता है और प्रत्येक देयता/पूंजी खाता क्रेडिट पक्ष पर "By Balance b/d" से — इस प्रकार वर्ष के आरम्भ में सभी परिसंपत्ति और देयता खाते खुल जाते हैं।

विषय 9: प्रावधान और संचय (Provisions and Reserves)

P1-C7-U7.1-T09 · Provisions and Reserves

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §1.9 को Illustration 14 सहित पढ़िए: प्रावधान, संचिति तथा संचिति-कोष की परिभाषाएँ, और लाभ पर प्रभार बनाम लाभ के विनियोजन का अन्तर।

नोट्स

प्रावधान: "वह राशि जो मूल्यहास, नवीकरण अथवा परिसंपत्तियों के मूल्य में कमी के लिए अपलिखित या रखी जाए, अथवा किसी ऐसी ज्ञात देयता के लिए रखी जाए जिसकी राशि पर्याप्त शुद्धता से निर्धारित न की जा सके" — अर्थात् वह देयता जिसका मापन केवल पर्याप्त अनुमान से ही सम्भव है; जैसे संदिग्ध ऋणों का प्रावधान, अभी निर्धारित न हुए कर, तथा स्वीकार्य किन्तु अनिर्धारित दावे।

संचिति: अर्जन, प्राप्तियों अथवा अन्य अधिशेष (पूंजीगत या राजस्वगत) का वह भाग जो प्रबन्ध द्वारा किसी सामान्य या विशिष्ट प्रयोजन के लिए विनियोजित किया जाए — मूल्यहास/मूल्य में कमी अथवा किसी ज्ञात देयता के लिए नहीं; प्रकार — पूंजीगत संचितियाँ और राजस्वगत संचितियाँ; और आवश्यकता से अधिक बनाए गए प्रावधान संचिति ही माने जाते हैं।

मुख्य अन्तर: प्रावधान लाभ पर प्रभार हैं, जबकि संचितियाँ लाभ का विनियोजन; **संचिति-कोष:** वह संचिति-राशि जो व्यवसाय के बाहर शीघ्र वसूली-योग्य प्रतिभूतियों (जैसे सरकारी प्रतिभूतियों) में निवेशित की जाए।

विषय 10: वित्तीय विवरणों की सीमाएँ

P1-C7-U7.1-T10 · Limitations of Financial Statements

पहले पढ़ें Section 1.10 (वित्तीय विवरणों की सीमाएँ) पढ़िए — वे पाँच प्रमुख सीमाएँ जिन्हें वित्तीय विवरणों का मूल्यांकन करते समय, विशेषकर भिन्न कंपनियों की तुलना करते समय, ध्यान में रखना चाहिए।

नोट्स

पाँच प्रमुख सीमाएँ (SM 1.10): (a) ऐतिहासिक लागत — विवरणों में वही मुद्रा-मूल्य आता है जो लेन-देन के समय प्रचलित था, बाद के परिवर्तन उपेक्षित रह जाते हैं (1980 में ₹15,000 में बना मकान वही निवास-लाभ देता है जो 2022 में ₹30,00,000 में बना मकान, फिर भी वह मूल लागत पर ही दिखता है); (b) अमूर्त शक्तियाँ एवं दुर्बलताएँ — जैसे कर्मचारियों की निष्ठा और योग्यता तुलन-पत्र में नहीं दिखाई जा सकती; (c) शाश्वत निरन्तरता और आवधिक खाते — चालू संस्था की मान्यता के कारण गैर-राजस्वगत व्यय को लाभान्वित वर्षों में मनमाने ढंग से बाँटना पड़ता है, अतः खाते पूर्णतः सही नहीं होते; (d) भिन्न लेखांकन नीतियाँ — जैसे पेंशन/ग्रेच्युटी के लिए प्रतिवर्ष कोष बनाना बनाम केवल वास्तविक भुगतान दर्ज करना, अथवा अमूर्त परिसंपत्तियों का अपलेखन किया जाए या नहीं और कैसे; (e) कर्मचारी तथा जन-कल्याण के सम्बन्ध में प्रबन्ध की भिन्न नीतियाँ।

तुलनीयता: ये सीमाएँ तब कम गम्भीर होती हैं जब एक ही कंपनी का कई वर्षों में मूल्यांकन किया जाए; एक ही अवधि के लिए भिन्न कंपनियों की तुलना भ्रामक हो सकती है, जब तक उन्होंने एक ही लेखांकन प्रणाली और आधार न अपनाया हो — इसीलिए वित्तीय विवरणों के आधार पर अन्तर-उद्योग तुलना तभी की जानी चाहिए जब कोई अन्य आधार व्यावहारिक न हो; और ऐतिहासिक लागत ही स्वीकृत आधार बनी हुई है, क्योंकि मुद्रा का मूल्य निरन्तर गिरते रहने पर बार-बार पुनर्मूल्यांकन महंगा और अव्यावहारिक होता है।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 1 प्रश्न

- 4 अंक के उत्तर के लिए पाँचों सीमाएँ बताने को तैयार रहिए: (a) ऐतिहासिक लागत का आधार मुद्रा-मूल्य के परिवर्तन की उपेक्षा करता है (1980 वाले मकान का उदाहरण), (b) कर्मचारियों की निष्ठा जैसी अमूर्त शक्तियाँ/दुर्बलताएँ नहीं दिखती, (c) चालू संस्था की मान्यता व्यय के मनमाने आबंटन को विवश करती है, (d) भिन्न लेखांकन नीतियाँ (जैसे पेंशन का कोष, अमूर्त परिसंपत्तियों का अपलेखन) तुलनीयता घटाती हैं, (e) प्रबन्ध की भिन्न नीतियाँ।
- समझाइए कि जब तक कंपनियाँ एक ही लेखांकन प्रणाली और आधार का पालन न करें, तब तक अन्तर-कंपनी तुलना भ्रामक क्यों रहती है।

TQ 10.1 · MTP 2024-Apr [1](b) · Descriptive · 4M · Pg 333 5× पूछा गया

LEVEL I
समझ (Understanding)

विषय 11: समेकित प्रश्न (Integrated Problems)

P1-C7-U7.1-T11 · Integrated Problems

पहले पढ़ें इकाई 1 के अन्त के विस्तृत illustrations कीजिए, जो Sections 1.3–1.6 को एक साथ जोड़ते हैं — तलपट अथवा शेषों की सूची से अनेक समायोजनों सहित Trading तथा Profit & Loss Account और तुलन-पत्र बनाना।

नोट्स

कार्य का क्रम: तलपट अथवा शेषों की सूची से पहले Trading A/c → फिर P&L A/c → फिर तुलन-पत्र बनाइए (Illustrations 9, 10 और 12); प्रत्येक समायोजन का दोहरा प्रभाव दीजिए — एक बार Trading/P&L में और एक बार तुलन-पत्र में — समायोजन पहले rough working sheets पर लिखिए, और जाँचिए कि तुलन-पत्र के दोनों पक्ष मिल रहे हैं।

मानक समायोजन-समूह (Illustration 12 — Gavaskar Viswanath & Co.): अन्तिम स्कन्ध; दी गई दरों पर मूल्यहास, किन्तु पहले त्रुटियों का सुधार (लागत पर बेची गई steel table की प्राप्ति गलती से Sales A/c में क्रेडिट; ₹40,000 का typewriter क्रय गलती से Purchases में डेबिट — मूल्यहास लगाने से पहले इन्हें हटाकर पूंजीकृत कीजिए); दो माह का बकाया गोदाम किराया; ऋण लेने की तिथि से 12% वार्षिक उपचित ब्याज; तथा विविध देनदारों के 5% पर बनाए रखा गया डूबत ऋणों का प्रावधान।

परीक्षा के रूप: तुलन-पत्र से पहले गलत बने P&L का संशोधन (Illustration 7 — छूटे हुए बकाया व्यय डेबिट कीजिए, पूर्वदत्त बीमा क्रेडिट कीजिए, तब संशोधित शुद्ध लाभ निकलेगा); पिछले वर्ष के तुलन-पत्र से प्रारम्भिक entry करना (परिसंपत्तियाँ डेबिट; व्यापारिक देय, overdraft, संदिग्ध ऋणों का प्रावधान तथा पूंजी क्रेडिट — Illustrations 8 और 11); और GST के शेषों का निपटान — Input CGST/SGST को Output देयता के विरुद्ध प्रयोग कीजिए तथा अप्रयुक्त input credit को तुलन-पत्र में परिसंपत्ति के रूप में आगे ले जाइए (Illustrations 9 और 10 के working notes)।

अनुप्रयोग (Application) प्रश्न हल कीजिए · 10 प्रश्न

- 10-15 अंक के पूर्ण final accounts प्रश्नों का अभ्यास करें और प्रत्येक adjustment का दोहरा प्रभाव दें।

PQ 11.1 · PYQ 2019-Jun [4](b) · Practical · 10M · Pg 334 4× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 11.2 · PYQ 2025-May [4](b) · Practical · 10M · Pg 336 4× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 11.4 · PYQ 2021-Jul [4](a) · Practical · 10M · Pg 341 3× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 11.5 · RTP 2022-May [13] · Practical · Pg 343	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 11.6 · PYQ 2024-Sep [3](a) · Practical · 10M · Pg 346	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 11.7 · RTP 2024-Sep [9] · Practical · Pg 350 5× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 11.8 · PYQ 2025-Jan [3](a) · Practical · 15M · Pg 353 13× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 11.9 · PYQ 2026-May [4](b) · Practical · 10M · Pg 357	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 11.3 · RTP 2018-May [12] · Practical · Pg 338 5× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	
PQ 11.10 · PYQ 2026-Sep [4](b) · Practical · 10M · Pg 360	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	

संश्लेषण (Synthesis) आद्योपान्त तैयार कीजिए — इस संस्करण में कोई प्रश्न नहीं

- 10-15 अंक वाले पूरे अन्तिम-खाते प्रश्न पर अधिकार कीजिए: तलपट/शेषों की सूची से Trading A/c, P&L A/c और तुलन-पत्र बनाइए, working notes सहित, और यह सुनिश्चित कीजिए कि दोनों पक्ष मिलें।
- मानक समायोजन-समूह का अभ्यास कीजिए: अन्तिम स्कन्ध, मूल्यहास (वर्ष के बीच की वृद्धि पर समयानुपात सहित), और डूबत ऋण + संदिग्ध ऋणों का प्रावधान + देनदारों पर छूट का प्रावधान, बकाया/पूर्वदत्त व्यय तथा उपचित/अग्रिम आय, अनुमोदन पर माल, माल का आहरण, बीमा दावे सहित असामान्य हानि, तथा लाभ पर प्रबन्धक का commission।
- परीक्षा में आने वाले रूपों का अभ्यास कीजिए: पहले गलत बने तलपट को पुनः बनाना, नए व्यवसाय के लेन-देनों के विवरण से खाते खड़े करना (पूँजी लाना, बैंक ऋण, परिसंपत्तियों का क्रय), तथा विवरण बनाने से पहले छूटे हुए आँकड़े निकालना।

इकाई 7.2: विनिर्माण संस्थाओं के अंतिम खाते

Final Accounts of Manufacturing Entities

P1-C7-U7.2 · महत्त्व D · अध्याय में Rank 2 · श्रेणी C · अध्याय के 21.9% प्रश्न · 7 प्रश्न

विषय 1: परिचय

P1-C7-U7.2-T01 · Introduction

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें इकाई का §2.1 पढ़िए: विनिर्माण संस्थाएँ Trading A/c, P&L A/c और तुलन-पत्र से पहले अलग Manufacturing Account क्यों बनाती हैं।

नोट्स

Manufacturing Account: विनिर्माण संस्थाएँ अन्तिम खातों के भाग के रूप में Trading A/c, P&L A/c और तुलन-पत्र के अतिरिक्त यह खाता भी बनाती हैं — इसका उद्देश्य तैयार माल की विनिर्माण लागत निकालना है, ताकि विनिर्माण गतिविधियों की लागत-प्रभावशीलता आँकी जा सके; और यही लागत आगे Trading A/c में हस्तान्तरित होती है।

Trading A/c से तुलना: Trading A/c सकल लाभ दिखाता है, जबकि Manufacturing A/c प्रत्यक्ष व्ययों सहित बेची गई वस्तुओं की लागत; Manufacturing A/c कच्चे माल तथा अर्ध-निर्मित माल से सम्बन्ध रखता है, जबकि Trading A/c केवल तैयार माल से।

विषय 2: उद्देश्य

P1-C7-U7.2-T02 · Purpose

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §2.2 पढ़िए, जिसमें Manufacturing Account के तीन कार्य दिए गए हैं।

नोट्स

कार्य: (1) यह तैयार उत्पादों की विनिर्माण की कुल लागत उसके वर्गीकृत घटकों सहित दिखाता है — इसमें सामग्री की लागत, विनिर्माण मजदूरी तथा विनिर्माण के लिए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से किए गए व्यय डेबिट होते हैं; (2) यह कारखाना-लागत का विवरण देता है, जिससे वित्तीय पुस्तकों का लागत-अभिलेखों से मिलान तथा अवधि-दर-अवधि विनिर्माण परिचालनों की तुलना सरल हो जाती है; (3) यदि उत्पादन बाजार मूल्य पर Trading A/c में ले जाया जाए तो यह विनिर्माण पर लाभ/हानि दिखाता है, और इसका उपयोग उत्पादन से जुड़ा बोनस तय करने में भी किया जा सकता है।

विषय 3: विनिर्माण लागत (Manufacturing Costs)

P1-C7-U7.2-T03 · Manufacturing Costs

पहले पढ़ें Section 2.3 (Manufacturing Costs) पढ़िए: उपभुक्त कच्चा माल, प्रत्यक्ष विनिर्माण मजदूरी, प्रत्यक्ष विनिर्माण व्यय तथा विनिर्माण उपरिव्यय में वर्गीकरण, और साथ ही उप-उत्पादों का अर्थ एवं व्यवहार।

नोट्स

लागत का निर्माण (SM 2.3): उपभुक्त कच्चा माल + प्रत्यक्ष विनिर्माण मजदूरी + प्रत्यक्ष विनिर्माण व्यय = प्रत्यक्ष (prime) विनिर्माण लागत; इसमें अप्रत्यक्ष विनिर्माण व्यय/विनिर्माण उपरिव्यय जोड़िए = कुल विनिर्माण लागत; **सूत्र:** उपभुक्त कच्चा माल = कच्चे माल की प्रारम्भिक माल-सूची + क्रय – कच्चे माल की अन्तिम माल-सूची।

प्रत्यक्ष बनाम अप्रत्यक्ष: प्रत्यक्ष विनिर्माण व्यय वे लागतें हैं जो सामग्री या मजदूरी से भिन्न हों और किसी विशिष्ट उत्पाद के लिए की गई हों — जैसे licence/तकनीक की royalty तथा plant का किराया, यदि वे उत्पादित इकाइयों पर आधारित हों (क्योंकि तब वे उत्पादन के साथ सीधे बदलती हैं); उपरिव्यय = अप्रत्यक्ष सामग्री (मरम्मत के भण्डार, छोटे औजार, ईंधन, स्नेहक तेल) + अप्रत्यक्ष मजदूरी (रख-रखाव की मजदूरी, holding pay) + अप्रत्यक्ष व्यय (प्रशिक्षण, plant एवं machinery तथा कारखाना-शेड का मूल्यहास एवं बीमा)।

उप-उत्पाद: वे गौण उत्पाद जो उसी कच्चे माल और उसी प्रक्रिया से बिना अतिरिक्त व्यय के निकलते हैं (चीनी उद्योग में शीरा, डेयरी में छाछ); इनका मूल्य सामान्यतः नगण्य होता है, इसलिए जहाँ लागत अलग से पहचानी न जा सके वहाँ इनका मूल्यांकन शुद्ध वसूली-योग्य मूल्य पर होता है; सही व्यवहार — इनके विक्रय-मूल्य को MANUFACTURING Account में क्रेडिट कीजिए (Trading Account में नहीं, और न ही केवल अन्य परिचालन आय में), ताकि मुख्य उत्पाद की विनिर्माण लागत घट जाए।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 1 प्रश्न

- उप-उत्पाद का विक्रय-मूल्य MANUFACTURING Account में क्रेडिट होता है (Trading Account में नहीं), ताकि मुख्य उत्पाद की विनिर्माण लागत घटे — ठीक यही कथन सत्य/असत्य में पूछा जा चुका है; साथ ही ध्यान रखिए कि उप-उत्पादों का मूल्यांकन शुद्ध वसूली-योग्य मूल्य पर होता है।
- प्रत्यक्ष बनाम अप्रत्यक्ष विनिर्माण व्यय समझा सकें: उत्पादित इकाइयों पर आधारित royalty अथवा किराया प्रत्यक्ष है; जबकि मरम्मत, plant/कारखाना-शेड का मूल्यहास, बीमा, तथा अप्रत्यक्ष सामग्री/मजदूरी उपरिव्यय बनाते हैं।

- जानिए: उपभुक्त कच्चा माल = कच्चे माल की प्रारम्भिक माल-सूची + क्रय - अन्तिम माल-सूची; और लागत का क्रम: prime cost (कच्चा माल + प्रत्यक्ष मजदूरी + प्रत्यक्ष व्यय) में उपरिव्यय जोड़कर कुल विनिर्माण लागत।

TQ 3.1 · MTP 2023-May · T/F · 2M · Pg 366 4× पूछा गया

LEVEL I
समझ (Understanding)

सरल

विषय 4: विनिर्माण खाते का प्रारूप (Design of Manufacturing Account)

P1-C7-U7.2-T04 · Design of A Manufacturing Account

पहले पढ़ें Section 2.4 (Design of a Manufacturing Account) पढ़िए: मात्रा और मूल्य स्तम्भों सहित प्रारूप, prime cost तथा factory cost, अर्ध-निर्मित माल (WIP) का व्यवहार, तैयार माल की लागत का Trading Account में हस्तान्तरण, तथा छूटी हुई मात्राओं/आँकड़ों को निकालने पर दिए गए tutorial notes।

नोट्स

प्रारूप (SM 2.4): कोई मानकीकृत डिज़ाइन नहीं है, पर मात्रा और मूल्य — दोनों के स्तम्भ रखिए; डेबिट — उपभुक्त कच्चा माल, प्रत्यक्ष मजदूरी, प्रत्यक्ष व्यय (= Prime cost), कारखाना उपरिव्यय (royalty, किराया, मरम्मत एवं रख-रखाव, मूल्यहास) (= Factory cost), तथा प्रारम्भिक अर्ध-निर्मित माल; क्रेडिट — उप-उत्पाद शुद्ध वसूली-योग्य मूल्य पर, अन्तिम अर्ध-निर्मित माल, और संतुलनकारी हस्तान्तरण 'By Trading A/c — तैयार माल की लागत'; इसके बाद Trading A/c इसी उत्पादन-लागत को (प्रारम्भिक तैयार माल सहित) विक्रय तथा अन्तिम तैयार माल के विरुद्ध डेबिट करके सकल लाभ दिखाता है।

Tutorial notes: मात्रा-स्तम्भों का प्रयोग कीजिए ताकि दोनों पक्ष मिलें — बेची गई इकाइयाँ = प्रारम्भिक तैयार माल + निर्मित इकाइयाँ - अन्तिम तैयार माल; Manufacturing A/c में केवल कच्चे माल की मात्राएँ तथा WIP के मूल्य आते हैं, और Trading A/c में केवल तैयार माल की मात्राएँ; और विपरीत निर्देश न हो तो विक्रय FIFO आधार पर मानिए, अर्थात् अन्तिम माल-सूची यथासम्भव उसी वर्ष उत्पादित माल की मानी जाए।

इकाई-आधारित गणनाएँ (Illustration 2 — Mr. Vimal): प्रत्येक दर का आधार ध्यान से पढ़िए — प्रत्यक्ष मजदूरी संविदा के अनुसार प्रति निर्मित इकाई ₹0.80 तथा अन्तिम WIP की प्रति इकाई ₹0.40 ($5,00,000 \times 0.80 + 12,000 \times 0.40 = ₹4,04,800$); मशीन का किराया प्रति निर्मित इकाई ₹0.60 प्रत्यक्ष व्यय है, जबकि कारखाना-शेड का किराया तथा मरम्मत एवं रख-रखाव अप्रत्यक्ष व्यय हैं।

छूटे हुए आँकड़ों वाले प्रश्न: उधार क्रय को Creditors A/c की संतुलनकारी राशि के रूप में निकालिए (To Bank + To Balance c/d - By Balance b/d), उसे Raw Material A/c में posted कीजिए और उस खाते को संतुलित करके उपभुक्त कच्चा माल अथवा अन्तिम स्कन्ध निकालिए, फिर Manufacturing A/c से Trading A/c तक पूरा कीजिए; कार्यालय की मदें Manufacturing A/c से बाहर रखिए और P&L में प्रभारित कीजिए (कार्यालय श्रमिकों की मजदूरी, बिजली में कार्यालय का हिस्सा, ग्राहकों तक पहुँचाने के delivery charges), किन्तु ईंधन-व्यय तथा freight inwards प्रत्यक्ष व्यय ही रहेंगे; और अनभिलिखित machinery पर छूटा हुआ मूल्यहास स्मरण रखिए।

विनिर्माता के पूरे अन्तिम खाते (Illustration 3 — Mr. White): तीन माल-सूचियों वाले तलपट से Manufacturing, Trading, P&L A/c तथा तुलन-पत्र बनाइए — साझे व्यय कारखाने और कार्यालय में बाँटिए (किराया अधिकृत क्षेत्रफल

के अनुसार 3/4 : 1/4, प्रकाश-व्यय 2/3 : 1/3), scrap के विक्रय को Manufacturing A/c में क्रेडिट कीजिए, बकाया मजदूरी (Manufacturing) तथा बकाया वेतन (P&L) जोड़िए, plant का मूल्यहास Manufacturing में और कार्यालय के फर्नीचर का P&L में लगाइए, संदिग्ध ऋणों के अपेक्षित प्रावधान में से विद्यमान प्रावधान घटाकर केवल कमी प्रभारित कीजिए, और तीनों अन्तिम स्कन्ध (कच्चा माल, WIP, तैयार माल) तुलन-पत्र में ले जाइए।

अनुप्रयोग (Application) प्रक्रिया का अभ्यास कीजिए · 5 प्रश्न

- Manufacturing A/c बनाने का अभ्यास कीजिए: डेबिट — प्रारम्भिक WIP, उपभुक्त कच्चा माल, प्रत्यक्ष मजदूरी, प्रत्यक्ष व्यय (इकाई-आधारित किराया/royalty), कारखाना उपरिव्यय; क्रेडिट — उप-उत्पाद NRV पर, अन्तिम WIP, तथा Trading A/c में हस्तान्तरित तैयार माल की लागत।
- इकाई-आधारित गणनाओं का अभ्यास कीजिए: प्रति निर्मित इकाई ₹x की प्रत्यक्ष मजदूरी और अन्तिम WIP की प्रति इकाई उससे कम दर, तथा प्रति उत्पादित इकाई किराया — दर का आधार ध्यान से पढ़िए, और मात्रा-स्तम्भों से जाँचिए कि दोनों पक्ष मिल रहे हैं।

PQ 4.1 · PYQ 2019-Nov [5](b) · Practical · 5M · Pg 367	5× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	मध्यम
PQ 4.5 · PYQ 2024-Jun [5](b)(i) · Practical · 5M · Pg 376	4× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	मध्यम
PQ 4.6 · PYQ 2025-Sep [5](b) · Practical · 5M · Pg 377		LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	मध्यम
PQ 4.3 · PYQ 2021-Dec [5](b) · Practical · 15M · Pg 371	3× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 4.4 · PYQ 2022-May [5] · Practical · 20M · Pg 373		LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन

विश्लेषण (Analysis) मिश्रित आँकड़ों पर कार्य कीजिए · 1 प्रश्न

- छूटे हुए आँकड़ों वाले वे प्रश्न कीजिए जिनमें Raw Material A/c, Creditors A/c, Manufacturing A/c और Trading A/c आपस में जुड़े हों: Creditors A/c से उधार क्रय निकालिए, Raw Material A/c संतुलित करके उपभोग ज्ञात कीजिए, फिर Manufacturing तथा Trading A/c पूरे कीजिए।
- अन्तर्सम्बन्ध देखिए: Manufacturing A/c की उत्पादन-लागत ही Trading A/c का डेबिट बनती है; और अन्यथा न कहा हो तो अन्तिम तैयार माल के मूल्यांकन में FIFO मानिए।

PQ 4.2 · PYQ 2020-Nov [5](c) · Practical · 10M · Pg 368	2× पूछा गया	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	कठिन
---	-------------	---------------------------------	------

संश्लेषण (Synthesis) आद्योपान्त तैयार कीजिए — इस संस्करण में कोई प्रश्न नहीं

- 15-20 अंक वाले विनिर्माता के पूरे अन्तिम खातों पर अधिकार कीजिए: तीन माल-सूचियों (कच्चा माल, WIP, तैयार माल) तथा scrap के विक्रय वाले तलपट से Manufacturing, Trading, P&L A/c और तुलन-पत्र बनाना।
- व्ययों को कारखाने (Manufacturing A/c) और कार्यालय (P&L A/c) में बाँटने का अभ्यास कीजिए — किराया, शक्ति, मूल्यहास — तथा सामान्य समायोजनों (अन्तिम स्कन्ध, बकाया मजदूरी, प्रावधान) सहित आद्योपान्त हल कीजिए।

अध्याय 8

गैर-लाभकारी संगठनों के वित्तीय विवरण

Financial Statements of Non-Profit Organisations

5 विषय • 36 वर्गीकृत प्रश्न • महत्त्व: A

ICAI कौशल प्रोफाइल Level I 5–20% • Level II 80–95% — यह अध्याय है पेपर के अनुरूप

Level I — स्मरण एवं समझ	7.4%	243 में से 18 अंक
Level II — अनुप्रयोग एवं विश्लेषण	92.6%	243 में से 225 अंक

विषय 1: परिचय

P1-C8-U8-T01 • Introduction

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं • पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §1 Introduction पढ़ें: गैर-लाभकारी संगठन की प्रकृति तथा उसके द्वारा तैयार किए जाने वाले अंतिम खातों का समूह।

नोट्स

गैर-लाभकारी संगठन (Non-Profit Organisation): ऐसा वैधानिक लेखांकन निकाय जो किसी एक स्वामी, साझेदारों अथवा अंशधारकों के लाभ के बजाय समग्र समाज अथवा अपने सदस्यों की सेवा के लिए संचालित किया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य लाभ कमाना नहीं, बल्कि सेवा प्रदान करना होता है; जैसे - सार्वजनिक अस्पताल, सार्वजनिक शैक्षणिक संस्थाएँ, क्लब, मंदिर और चर्च।

अंतिम खाते: आवधिक कार्य-निष्पादन दिखाने के लिए प्राप्ति एवं भुगतान खाता (Receipts and Payments Account) तथा आय एवं व्यय खाता (Income and Expenditure Account), और अवधि के अंत की वित्तीय स्थिति दिखाने के लिए तुलन-पत्र (Balance Sheet) तैयार किया जाता है।

शब्दावली: आय एवं व्यय खाता, लाभ एवं हानि खाते के समान प्रकृति का है। आय का व्यय से अधिक होना अधिशेष (Surplus) तथा व्यय का आय से अधिक होना घाटा (Deficit) कहलाता है। कुल नकद प्राप्तियों और भुगतानों को प्राप्ति एवं भुगतान खाते में प्रदर्शित किया जाता है।

विषय 2: प्राप्ति एवं भुगतान खाते की प्रकृति

P1-C8-U8-T02 • Nature of Receipts and Payments Account

पहले पढ़ें ICAI Study Material का Section 2 'Nature of Receipts and Payments Account' पढ़ें: नकद बही के सारांश के रूप में इसकी विशेषताएँ, सीमाएँ तथा Section 4.1 से Sports Fund जैसे विशेष कोषों का Fund Accounting।

नोट्स

अर्थ: प्राप्ति एवं भुगतान खाता (Receipts and Payments Account) तिथि-स्तम्भ रहित नकद बही का सारांश है। प्राप्तिyaँ बाई ओर तथा भुगतान दाई ओर लिखे जाते हैं - ठीक नकद बही की भाँति। अस्पताल, क्लब, सोसायटी, मंदिर, चर्च आदि इसे अपनाते हैं।

नकद आधार, उपार्जन आधार नहीं: इसमें सभी प्राप्तिyaँ और भुगतान दर्ज किए जाते हैं, चाहे वे पूंजीगत हों या राजस्वगत और चाहे वे चालू, पिछली अथवा भविष्य की अवधि से संबंधित हों। इसलिए यह उपार्जन पद्धति (Accrual System) पर आधारित नहीं है।

विशेषताएँ: (a) नकद एवं बैंक लेन-देन का सारांश; सभी प्राप्तिyaँ - पूंजीगत या राजस्वगत - डेबिट और सभी भुगतान क्रेडिट किए जाते हैं। (b) प्रारम्भिक नकद/बैंक शेष से शुरू होकर अंतिम नकद/बैंक शेष पर समाप्त होता है। (c) सामान्यतः दोहरा लेखा प्रणाली का भाग नहीं होता। (d) इसका शेष सदैव डेबिट होता है क्योंकि यह हाथ में नकद तथा बैंक शेष से बना होता है।

सीमाएँ: इससे अवधि का अधिशेष या घाटा ज्ञात नहीं किया जा सकता। यह केवल नकद/बैंक स्थिति दिखाता है; बकाया/अग्रिम सदस्यता और मूल्यहास जैसी गैर-नकद मदें छोड़ देता है; पूंजीगत और राजस्वगत मदों तथा पिछली, चालू और भविष्य की अवधियों को मिला देता है। केवल बहुत सरल संगठनों में, जहाँ नकद के अतिरिक्त कोई संपत्ति और कोई देयता न हो, अकेला यह खाता पर्याप्त हो सकता है।

कोष लेखांकन (Fund Accounting): किसी विशेष उद्देश्य के लिए एकत्र राशि - जैसे Sports Fund, मैच हेतु दान और टिकट प्राप्तिyaँ - उसी कोष में क्रेडिट की जाती हैं और संबंधित व्यय उसी कोष में डेबिट किए जाते हैं। इन्हें आय एवं व्यय खाते में नहीं लिया जाता। उपलब्ध कोष से अधिक व्यय होने पर केवल अतिरिक्त राशि आय एवं व्यय खाते में डेबिट की जाती है।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 3 प्रश्न

- प्राप्ति एवं भुगतान खाता नकद/बैंक लेन-देन का सारांश है और नकद आधार पर तैयार होता है, उपार्जन आधार पर नहीं। इसमें पूंजीगत अथवा राजस्वगत, पिछली, चालू और भविष्य की अवधि की सभी नकद प्राप्तिyaँ एवं भुगतान दर्ज होते हैं।
- True/False जाल: 'R&P Account कुल आय और व्यय दर्शाता है' - गलत। यह कुल नकद प्राप्तिyaँ एवं भुगतान दर्शाता है; गैर-नकद मदें न होने के कारण इससे अधिशेष/घाटा ज्ञात नहीं होता।
- यदि Sports Fund जैसा विशिष्ट कोष है, तो खेल आयोजन का व्यय उसी कोष से समायोजित होगा, आय एवं व्यय खाते से नहीं। साथ ही, खाता प्रारम्भिक नकद/बैंक शेष से शुरू और अंतिम शेष पर समाप्त होता है तथा इसका शेष सदैव डेबिट होता है।

TQ 2.1 · MTP 2024-Apr [1] (a) (vi) {C} · True/False · 2M · Pg 382	5× पूछा गया	LEVEL I समझ (Understanding)	सरल
TQ 2.3 · MTP 2024-Dec [1] (a) (v) {C} · True/False · 2M · Pg 383	3× पूछा गया	LEVEL I समझ (Understanding)	सरल
TQ 2.2 · PYQ 2024-Sep [1] (a) (v) {C} · True/False · 2M · Pg 383		LEVEL I समझ (Understanding)	

अनुप्रयोग (Application) प्रश्न हल कीजिए · 1 प्रश्नPQ 2.1 · PYQ 2019-Nov [4] (b) · Practical · 10M · Pg 383 **2x पूछा गया****LEVEL II**
अनुप्रयोग (Application)**कठिन****विश्लेषण (Analysis)** मिश्रित आँकड़ों पर कार्य कीजिए — इस संस्करण में कोई प्रश्न नहीं

- दिए गए आय एवं व्यय खाते और तुलन-पत्रों से उल्टा कार्य करते हुए R&P Account तैयार करने का अभ्यास करें: बकाया/अग्रिम सदस्यता, पूर्वदत्त/बकाया व्यय जैसे उपार्जन समायोजन हटाएँ तथा पूंजीगत प्राप्ति/भुगतान जोड़ें।
- Subscription Account को Ledger के रूप में तैयार करना सीखें - प्रारम्भिक/अंतिम बकाया तथा अग्रिम सदस्यता दोनों पक्षों पर लेकर नकद प्राप्त सदस्यता निकालें।
- परस्पर संबंधों पर ध्यान दें: I&E में मूल्यहास तथा अन्य गैर-नकद मदों को R&P बनाते समय हटाना होगा; परिसंपत्ति क्रय और कोष प्राप्ति/भुगतान केवल R&P में आती हैं।

विषय 3: आय एवं व्यय खाता

P1-C8-U8-T03 · Income and Expenditure Account

पहले पढ़ें Section 3 पढ़ें: Income and Expenditure Account की विशेषताएँ, R&P Account से अंतर, आय के प्रमुख स्रोत - सदस्यता, दान, प्रवेश शुल्क, आजीवन सदस्यता - तथा R&P से I&E तैयार करने की चरणबद्ध प्रक्रिया (3.3)।

नोट्स

प्रकृति: यह गैर-लाभकारी संगठन के लिए लाभ एवं हानि खाते का समकक्ष है और उपार्जन सिद्धांत पर तैयार किया जाता है। केवल चालू अवधि की राजस्वगत मदें ली जाती हैं। आय का व्यय से अधिक होना अधिशेष और व्यय का आय से अधिक होना घाटा है। मूल्यहास जैसी गैर-नकद मदें शामिल होती हैं, सभी पूंजीगत मदें बाहर रहती हैं और कोई प्रारम्भिक शेष नहीं होता। Companies Act, 2013 की धारा 8 के अंतर्गत पंजीकृत NPO Schedule III के अनुसार I&E और Balance Sheet तैयार करते हैं।

आय के प्रमुख स्रोत (3.1): सदस्यता, सामान्य दान, सामान्य/उपनियमों के अनुसार प्रवेश या सदस्यता शुल्क, स्थानीय प्राधिकरणों से आवर्ती अनुदान तथा निवेश से आय। किसी विशेष गतिविधि की प्राप्ति - जैसे मैच टिकटों की बिक्री - उसी गतिविधि के व्यय से घटाकर केवल शुद्ध राशि दिखाई जाती है। पूंजीगत प्राप्ति/भुगतान Capital Fund अथवा विशिष्ट कोष में जाती हैं; स्थायी परिसंपत्ति की बिक्री Asset Account में जाती है। Life Membership Fee गैर-आवर्ती पूंजीगत प्राप्ति है और सीधे Capital Fund में जोड़ी जाती है। अलग व्यापारिक गतिविधि का लाभ समेकन पर I&E में स्थानांतरित होता है।

प्राप्ति एवं भुगतान खाता | आय एवं व्यय खाता

नकद प्राप्ति/भुगतान एवं भुगतानों का वर्गीकृत सारांश; पूंजीगत और राजस्वगत दोनों। | केवल अवधि का राजस्वगत व्यय (Dr) और राजस्वगत आय (Cr)।

नकद आधार - चालू, पिछली या भविष्य की अवधि की मदें शामिल। | उपार्जन आधार - देय हो चुकी राशि, भले प्राप्त/भुगतान न हुई हो, शामिल।

प्रारम्भिक नकद/बैंक शेष से शुरू; शेष सदैव डेबिट। | कोई प्रारम्भिक शेष नहीं; संतुलन राशि अधिशेष या घाटा।

गैर-नकद मदें बाहर; अधिशेष/घाटा ज्ञात नहीं। | मूल्यहास जैसी गैर-नकद मदें शामिल; अधिशेष/घाटा ज्ञात होता है।

R&P → I&E प्रक्रिया (3.3): (i) प्रारम्भिक Balance Sheet से Opening Capital/Accumulated Fund = Assets - Liabilities निकालें; (ii) उपार्जित/बकाया समायोजन वाली आय/व्यय मदों के Ledger Accounts खोलकर चालू अवधि की राशि I&E में स्थानांतरित करें; (iii) बिना समायोजन वाली मदें R&P से सीधे I&E में लें; (iv) पूंजीगत प्राप्ति/भुगतान Asset अथवा Liability Accounts में पोस्ट करें - परिसंपत्ति बिक्री का केवल पूंजीगत लाभ/हानि I&E में जाएगा; (v) I&E का शेष Capital Fund में स्थानांतरित करें; (vi) शेष खातों से Balance Sheet तैयार करें।

सदस्यता गणना: वर्ष की आय = नकद प्राप्ति + अंत में बकाया - प्रारम्भ में बकाया + पिछले वर्ष अग्रिम प्राप्त पर चालू वर्ष से संबंधित राशि - चालू वर्ष में अगले वर्ष के लिए अग्रिम प्राप्त राशि। उदाहरण: ₹42,000 प्राप्त, जिसमें ₹1,600 पिछले वर्ष और ₹600 अगले वर्ष के हैं, तथा ₹3,000 अभी प्राप्त होने हैं → I&E में ₹42,800 क्रेडिट। अंतिम बकाया सदस्यता परिसंपत्ति और अग्रिम सदस्यता देयता है।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 4 प्रश्न

- I&E Account, NPO के लिए P&L का समकक्ष है और उपार्जन आधार पर तैयार होता है; केवल चालू वर्ष की राजस्वगत मदें ली जाती हैं। आय अधिक होने पर Surplus और व्यय अधिक होने पर Deficit होता है।
- True/False जाल: vocation करने वाले व्यक्तियों की शुद्ध आय I&E/Receipts & Expenditure Account से निर्धारित होती है, P&L से नहीं; Life Membership Fee गैर-आवर्ती पूंजीगत प्राप्ति है और Capital Fund में जोड़ी जाती है - इसे राजस्व प्राप्ति कहना गलत है।
- सोसायटी की अलग व्यापारिक गतिविधि का Trading Profit I&E में स्थानांतरित किया जाता है। Additional Information के समायोजन दो स्थानों पर प्रभाव डालते हैं - केवल एक स्थान पर नहीं।

TQ 3.1 · RTP 2023-Jun [1] (vii) · True/False · Pg 386 7× पूछा गया	LEVEL I समझ (Understanding)	सरल
TQ 3.2 · RTP 2023-Dec [1] (ix) · True/False · Pg 386	LEVEL I समझ (Understanding)	सरल
TQ 3.3 · PYQ 2025-May [1] (a) {C} · True/False · 4M · Pg 386 4× पूछा गया	LEVEL I समझ (Understanding)	सरल
TQ 3.4 · PYQ 2026-May [1] (a) (v) {C} · True/False · 2M · Pg 387	LEVEL I समझ (Understanding)	मध्यम

अनुप्रयोग (Application) प्रक्रिया का अभ्यास कीजिए · 7 प्रश्न

- सदस्यता की गणना का अभ्यास करें: नकद प्राप्ति ± बकाया (प्रारम्भ/अंत) ± अग्रिम (प्रारम्भ/अंत) = वर्ष की सदस्यता आय।
- R&P → I&E रूपांतरण में पूंजीगत मदें हटाएँ, बकाया/पूर्वदत्त व्यय और आय समायोजित करें, मूल्यहास लगाएँ तथा विशेष गतिविधि की आय को संबंधित कोष/व्यय से समायोजित करें।
- राजस्व उद्देश्य के दान आय हैं; विशिष्ट दान Fund Accounts में जाते हैं; स्थायी परिसंपत्ति की बिक्री का केवल लाभ/हानि I&E में जाता है।

PQ 3.5 • RTP 2026-Jan [10] • Practical • 8M • Pg 396	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	मध्यम
PQ 3.7 • PYQ 2026-May [5] (b) • Practical • 5M • Pg 402	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	मध्यम
PQ 3.1 • PYQ 2018-Nov [5] (a) • Practical • 10M • Pg 387 4× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 3.2 • PYQ 2019-Jun [5] (b) • Practical • 10M • Pg 389 6× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 3.3 • PYQ 2021-Jan [4] (b) • Practical • 10M • Pg 392 6× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 3.6 • RTP 2026-May [10] • Practical • Pg 399	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 3.4 • MTP 2024-Dec S1 [4] (a) • Practical • 8M • Pg 394 3× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	

संश्लेषण (Synthesis) आद्योपान्त तैयार कीजिए — इस संस्करण में कोई प्रश्न नहीं

- दो तिथियों के शेषों से पूर्ण R&P और I&E Accounts साथ-साथ तैयार करने में दक्षता प्राप्त करें - क्लब अथवा डॉक्टर की प्रैक्टिस वाले सामान्य 8-10 अंक के प्रश्न।
- Opening Balance Sheet से Opening Capital Fund निकालें; इसमें accrued incomes और outstanding expenses भी शामिल करें।
- नकद आधार पर लेखा रखने वाले पेशेवरों के प्रश्नों में borrowings पर interest, depreciation और outstanding items का पूर्ण समायोजन करें।

विषय 4: तुलन-पत्र (Balance Sheet)

P1-C8-U8-T04 • Balance Sheet

पहले पढ़ें Section 4 पढ़ें: Capital Fund/Accumulated Fund, विशेष मदों का व्यवहार (4.1 - donations, entrance fees, subscriptions, life membership, legacy, endowment fund) तथा 4.2 की तैयारी प्रक्रिया।

नोट्स

पूंजी कोष (Capital Fund): कुल परिसंपत्तियों का कुल बाहरी देयताओं से अधिक होना Capital Fund कहलाता है। यह सदस्यों से प्राप्त विरासत, विशिष्ट दान, प्रवेश शुल्क तथा संचित अधिशेषों से बनता है। यदि सदस्यों ने कोई योगदान नहीं दिया हो तो इसे Accumulated Fund कहा जाता है। वर्ष का अधिशेष कोष में जोड़ा और घाटा घटाया जाता है।

विशेष मदें (4.1): विशिष्ट दान, वसीयत से प्राप्त विरासत (Legacy), प्रवेश/Admission Fee तथा Life Membership Fee को देयता पक्ष में पूंजीकृत किया जाता है - Capital Fund अथवा विशेष कोष में जोड़ा जाता है; यदि प्रश्न अलग निर्देश दे तो वही मानें। सामान्य दान और पुराने समाचार-पत्रों की बिक्री I&E की आय हैं। Endowment Fund की आय उसी कोष में जोड़ी और उससे संबंधित व्यय उसी से घटाया जाता है। पुरानी स्थायी परिसंपत्ति की बिक्री पूंजीगत प्राप्ति है केवल बिक्री लाभ/हानि I&E में आता है। Honorarium गैर-कर्मचारी को सेवाओं के लिए भुगतान है और राजस्वगत व्यय है।

'Fund' और 'Account': Fund शब्द का शुद्ध अर्थ तब है जब किसी विशिष्ट उद्देश्य हेतु एकत्र राशि निवेश की गई हो - जैसे Scholarship Fund, Prize Fund; ऐसे निवेश और accrued income अलग दिखाए जाते हैं। राशि निवेशित न होने पर Building Account, Tournament Account जैसे नाम अधिक उपयुक्त हैं। Life-member की एकमुश्त राशि को वैकल्पिक रूप से मृत्यु तक रखा जा सकता है, सामान्य सदस्यता दर से प्रतिवर्ष I&E में छोड़ा जा सकता है, अथवा अपेक्षित जीवन अवधि में फैलाया जा सकता है।

तैयारी के चरण (4.2): Opening Capital Fund = Opening Assets - Opening Liabilities; prepaid expenses और accrued incomes परिसंपत्ति तथा outstanding expenses और advance incomes देयता माने जाएँ। Closing cash/bank R&P Account से आएगा; bank overdraft देयता पक्ष में। Fixed Assets: Opening Balance + Purchases - Sales - Depreciation = Closing Balance; प्रारम्भिक देयताओं को वृद्धि/कमी से समायोजित करें।

मानक Working: केवल Outstanding Subscriptions चालू परिसंपत्ति हैं और Advance Subscriptions देयता; चालू वर्ष में प्राप्त सदस्यता आय है, परिसंपत्ति नहीं। Consumables - जैसे sports material, medicines, foodstuff - का I&E में व्यय = Opening Stock + Purchases (Creditors Account से निकाली गई) - Closing Stock। Entrance Fees/Donations का प्रश्न में दिया गया पूंजीकृत प्रतिशत सीधे Capital Fund में और शेष I&E में जाता है।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 3 प्रश्न

- Capital Fund = कुल परिसंपत्तियाँ - कुल बाहरी देयताएँ। यदि सदस्यों ने कोई योगदान न दिया हो तो इसे Accumulated Fund कहा जाता है।
- True/False जाल: चालू वर्ष के लिए प्राप्त Subscriptions आय हैं, Current Asset नहीं। केवल Outstanding Subscriptions परिसंपत्ति और Advance Subscriptions देयता हैं।
- पूंजीगत बनाम राजस्वगत: Entrance Fees, Legacies, Life Membership Fee, Specific Donations → पूंजीकरण; General Donations और Recurring Grants → आय।

TQ 4.1 · MTP 2023-May [1] (a) (vi) {C} · True/False · 2M · Pg 404

LEVEL I
समझ (Understanding)

सरल

TQ 4.2 · MTP 2024-Jul [1] (a) (iii) {C} · True/False · 2M · Pg 404 **3× पूछा गया**

LEVEL I
समझ (Understanding)

सरल

TQ 4.3 · PYQ 2026-Sep [1] (a) (v) {C} · True/False · 2M · Pg 404

LEVEL I
समझ (Understanding)

अनुप्रयोग (Application) प्रक्रिया का अभ्यास कीजिए · 12 प्रश्न

- Consumable Stores - जैसे sports material - की गणना: Opening Stock + Purchases (Creditors Account के माध्यम से) - Closing Stock = उपभोग की गई राशि, जिसे I&E में डेबिट किया जाएगा।
- Fixed Assets की गणना: Opening Balance + Additions - Sales - Depreciation = Closing Balance।

PQ 4.11 · RTP 2024-Sep [10] · Practical · Pg 433 **9× पूछा गया**

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

मध्यम

PQ 4.15 · PYQ 2025-Sep [4] (b) · Practical · 8M · Pg 442

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

मध्यम

PQ 4.2 · PYQ 2022-May [4] (a) · Practical · 10M · Pg 408	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 4.5 · PYQ 2023-Jun [4] (a) · Practical · 15M · Pg 417 4× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 4.7 · RTP 2023-Dec [16] · Practical · Pg 422 6× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 4.8 · PYQ 2024-Jun [3] (a) · Practical · 12M · Pg 425	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 4.9 · MTP 2024-Aug [3] (a) · Practical · 15M · Pg 428 4× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 4.10 · PYQ 2024-Sep [4] (b) · Practical · 10M · Pg 430 5× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 4.13 · RTP 2025-Jan [10] · Practical · Pg 437 2× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 4.14 · PYQ 2025-May [3] (a) · Practical · 12M · Pg 440	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 4.4 · MTP 2022-Nov S1 [5] (a) · Practical · 15M · Pg 413	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	
PQ 4.17 · PYQ 2026-Sep [5] (b) · Practical · 5M · Pg 448	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	

विश्लेषण (Analysis) मिश्रित आँकड़ों पर कार्य कीजिए · 5 प्रश्न

- I&E Account और Additional Information से R&P Account तथा Opening/Closing Balance Sheets पुनर्निर्मित करने वाले उल्टे प्रश्नों का अभ्यास करें; प्रत्येक समायोजन के दोनों प्रभावों का अनुसरण करें।
- परस्पर संबंध: Surplus/Deficit Capital Fund में जाता है; Tournament, Prize, Building जैसे Specific Fund की आय एवं व्यय I&E को छोड़कर देयता पक्ष के संबंधित Fund में समायोजित होते हैं।
- Pass-book बनाम Cash-book balances, आंशिक वर्ष का Depreciation तथा Entrance Fee के दिए गए capitalisation percentage का सावधानी से व्यवहार करें।

PQ 4.1 · PYQ 2021-Jan [5] (c) · Practical · 10M · Pg 406 2× पूछा गया	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	कठिन
PQ 4.3 · PYQ 2022-Nov [4] (b) · Practical · 10M · Pg 411 2× पूछा गया	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	कठिन
PQ 4.6 · PYQ 2023-Dec [2] (b) · Practical · 12M · Pg 419	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	कठिन
PQ 4.12 · PYQ 2025-Jan [5] (a) · Practical · 10M · Pg 434	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	कठिन
PQ 4.16 · PYQ 2026-Jan [3] (a) · Practical · 10M · Pg 445	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	कठिन

संश्लेषण (Synthesis) आद्योपान्त तैयार कीजिए — इस संस्करण में कोई प्रश्न नहीं

- दिए गए R&P Account से 10-15 अंक की पूरी शृंखला में दक्षता प्राप्त करें: Opening Capital Fund → I&E Account → Closing Balance Sheet।

- सामान्य समायोजन: दोनों सिरों पर outstanding/advance subscriptions, prepaid/outstanding expenses, depreciation, earmarked investments वाले funds और accrued interest, capitalised entrance fees/legacies।

विषय 5: शैक्षणिक संस्था

P1-C8-U8-T05 · Educational Institution

पहले पढ़ें Section 5 'Educational Institutions' पढ़ें: वित्त के स्रोत - donations, fees, चार प्रकार के Government grants - तथा विशेष मदों का व्यवहार: public donations, capitation/admission fees, laboratory/library deposits और term fees का उपयोग।

नोट्स

वित्त के तीन स्रोत (5.1): (1) जनता से दान; (2) शुल्क - वार्षिक शिक्षण शुल्क, Term Fees, Admission Fees, Laboratory Fees आदि; (3) सरकारी अनुदान - Maintenance Grant, Equipment Grant, Building Grant तथा समय-समय पर स्वीकृत अन्य अनुदान।

अनुदान: Maintenance Grant आवर्ती होता है और वर्ष भर किस्तों में मिलता है - I&E की राजस्व आय। Equipment और Building Grants का पूंजीकरण किया जाता है। School Code के अनुसार Grant-in-aid का उपयोग कर्मचारियों के वेतन, किराया-कर-बीमा, मरम्मत, पुरस्कार, Audit Fees आदि में हो सकता है। संस्थाएँ प्रायः Societies Registration Act, 1860 के अंतर्गत सोसायटी होती हैं और वित्तीय वर्ष का पालन करती हैं।

विशेष मदें (5.2): जनता से दान आवर्ती या गैर-आवर्ती उद्देश्य के लिए, नकद या वस्तु रूप - भूमि/भवन, Shares, Furniture - में हो सकता है। Capitation/Admission Fees संस्था चलाने वाली Parent Body द्वारा एकत्र की जाती हैं; ऐसी वसूली पर कठोर आपत्ति हुई है और इसे प्रतिबंधित किया गया है। Laboratory और Library Deposits विद्यार्थी के संस्था छोड़ने तक रखे जाते हैं और वापसी योग्य हैं; अतः Balance Sheet के देयता पक्ष में दिखते हैं।

Term Fees: इसकी प्राप्तियों एवं व्ययों का अलग खाता रखा जाता है और अधिशेष अगले वर्ष आगे ले जाया जाता है। इसका उपयोग Medical Inspection, School Magazine, Examination Expenses, Tournaments, Sports and Games, Newspapers, Excursions, Prizes, Scouting, School Band तथा समान सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में किया जा सकता है।

परीक्षा पैटर्न - Illustration 13, Republic College: Tuition एवं अन्य Fees, पिछड़े वर्ग के विद्यार्थियों हेतु Government से receivable fees, revenue Government grants तथा seminar/consultancy/hostel/mess की शुद्ध प्राप्तियाँ आय हैं। विद्यार्थियों के Security Deposits, Provident Fund, Research Fund और Building Fund देयता पक्ष में तथा उनसे संबंधित earmarked investments अलग परिसंपत्ति के रूप में दिखते हैं। Stores Profit को sales पर दिए Net Profit % से निकाला जाता है और Surplus Capital Fund में जोड़ा जाता है।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए — इस संस्करण में कोई प्रश्न नहीं

- Laboratory और Library Deposits विद्यार्थी के संस्था छोड़ने पर वापस किए जाते हैं; इसलिए वे Balance Sheet के देयता पक्ष में दिखते हैं - कथन सत्य है।
- अनुदानों में अंतर याद रखें: Maintenance Grant आवर्ती आय है; Equipment और Building Grants पूंजीकृत होते हैं।

- वित्त के तीन स्रोत: Public Donations, Fees - Tuition, Term, Admission, Laboratory - और Government Grants।

अनुप्रयोग (Application) प्रश्न हल कीजिए · 1 प्रश्न

PQ 5.1 · PYQ 2020-Nov [4] (b) · Practical · 10M · Pg 449

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

कठिन

संश्लेषण (Synthesis) आद्योपान्त तैयार कीजिए — इस संस्करण में कोई प्रश्न नहीं

- College के लिए balances की सूची से I&E Account और Balance Sheet तैयार करना सीखें: Tuition/Admission Fees को आय, Students' Security Deposits को देयता और Surplus सहित Capital Fund दिखाएँ।
- इन प्रश्नों के सामान्य समायोजन करें: Outstanding Tuition Fees, Prepaid Expenses, Buildings/Equipment पर Depreciation तथा वर्ष में प्राप्त Grants।
- Building Fund, Scholarship Fund जैसे Funds और उनसे संबंधित Earmarked Investments को Capital Fund से अलग प्रस्तुत करें।

अध्याय 9

अपूर्ण अभिलेखों से खाते

Accounts from Incomplete Records

4 विषय • 23 वर्गीकृत प्रश्न • महत्त्व: C

ICAI कौशल प्रोफाइल Level I 5-20% • Level II 80-95% — यह अध्याय है लगभग पूर्णतः समस्या-समाधान

Level I — स्मरण एवं समझ	0.0%	165 में से 0 अंक
Level II — अनुप्रयोग एवं विश्लेषण	100.0%	165 में से 165 अंक

विषय 1: परिचय

P1-C9-U9-T01 • Introduction

पहले पढ़ें ICAI Study Material का Section 1 'Introduction' और Section 2 'Types of Single Entry System' पढ़ें - अपूर्ण अभिलेख क्या हैं, वे क्यों उत्पन्न होते हैं, Single Entry System की विशेषताएँ तथा इसके तीन प्रकार - Pure, Simple और Quasi।

नोट्स

अर्थ: औपचारिक रूप से 'Single Entry System' नाम की कोई पूर्ण लेखा प्रणाली नहीं है, क्योंकि खाते विधिवत केवल Double Entry System से तैयार किए जा सकते हैं। Single Entry वास्तव में अपूर्ण अथवा अनुचित अभिलेखों की पद्धति है: कुछ लेन-देन के दोनों पक्ष दर्ज होते हैं, कुछ में केवल एक पक्ष और कुछ में कोई भी पक्ष नहीं। सामान्यतः केवल नकद प्राप्तियाँ/भुगतान और व्यक्तिगत खाते - देनदार, लेनदार तथा पूंजी - रखे जाते हैं।

अभिलेख अपूर्ण होने के कारण: लेखांकन ज्ञान का अभाव; व्यवसाय इतना छोटा होना कि पूर्ण लेखा रखने में समय/प्रयास उचित न लगे; आग जैसी दुर्घटना से अभिलेख नष्ट हो जाना; अथवा कोई आवश्यक राशि अज्ञात होना जिसे संतुलन राशि के रूप में निकालना हो - जैसे क्षतिग्रस्त या नष्ट Inventory।

Single Entry System की पाँच विशेषताएँ: (1) अभिलेखन की अशुद्ध, अवैज्ञानिक और अव्यवस्थित पद्धति; (2) सामान्यतः Real और Nominal Accounts नहीं रखे जाते - मुख्यतः Cash Transactions और Personal Accounts; (3) Cash Book में स्वामी के व्यावसायिक और व्यक्तिगत लेन-देन मिश्रित रहते हैं; (4) एकरूपता का अभाव - प्रत्येक फर्म अपनी सुविधा के अनुसार पद्धति अपनाती है; (5) लाभ उपलब्ध सूचना के आधार पर केवल अनुमान होता है, इसलिए वास्तविक लाभ और सही वित्तीय स्थिति निर्धारित नहीं की जा सकती।

तीन प्रकार: Pure Single Entry - केवल Personal Accounts; Cash/Bank, Sales, Purchases आदि की सूचना नहीं, व्यवहार में लगभग अनुपयोगी। Simple Single Entry - Personal Accounts + Cash Book। Quasi Single Entry - Personal Accounts + Cash Book + कुछ Subsidiary Books, जैसे Sales Book, Purchases Book और Bills Book; Discounts Personal Accounts में दर्ज होते हैं। व्यवहार में Double Entry के विकल्प के रूप में प्रायः यही

पद्धति अपनाई जाती है।

स्मरण (Remembering) कंठस्थ कीजिए · 1 प्रश्न

- Short Note के लिए Single Entry System की पाँच विशेषताएँ याद रखें: अशुद्ध/अवैज्ञानिक/अव्यवस्थित; सामान्यतः Real और Nominal Accounts नहीं; Cash Book में व्यवसाय और व्यक्तिगत लेन-देन मिश्रित; एकरूपता का अभाव; लाभ केवल अनुमान, अतः वास्तविक लाभ और वित्तीय स्थिति ज्ञात नहीं।
- तीन प्रकार भी याद रखें: Pure - केवल Personal Accounts; Simple - Personal Accounts + Cash Book; Quasi - Personal Accounts + Cash Book + कुछ Subsidiary Books।
- महत्वपूर्ण: 'Single Entry' वास्तव में अपूर्ण अभिलेखों की पद्धति है; विधिवत खाते Double Entry के अंतर्गत ही तैयार होते हैं।

TQ 1.1 · RTP 2025-May [18] (iv) · Short Note · Pg 454

LEVEL I

स्मरण (Remembering)

सरल

विषय 2: Single Entry System के प्रकार

P1-C9-U9-T02 · Types of Single Entry System

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें Unit का §2 पढ़ें: Single Entry System के तीन प्रकार, M/s Small shop तथा t-shirt shop के उदाहरणों सहित।

नोट्स

Pure Single Entry: केवल Personal Accounts रखे जाते हैं। Cash/Bank Balances, Sales, Purchases आदि की सूचना उपलब्ध नहीं होती। इसका व्यावहारिक उपयोग नहीं के बराबर है।

Simple Single Entry: केवल Personal Accounts और Cash Book रखे जाते हैं। Cash Book से Posting केवल Personal Accounts में होती है तथा Debtors से प्राप्त/ Creditors को भुगतान की गई नकद राशि जारी/प्राप्त Bills पर नोट कर दी जाती है।

Quasi Single Entry: Personal Accounts, Cash Book तथा कुछ Subsidiary Books - Sales Book, Purchases Book, Bills Book - रखे जाते हैं। Discounts का अलग अभिलेख नहीं; वे Personal Accounts में दर्ज होते हैं। Wages, Rent, Rates आदि व्ययों की बिखरी सूचना मिल सकती है। Double Entry के विकल्प के रूप में सामान्यतः यही पद्धति अपनाई जाती है।

विषय 3: पूंजी तुलना द्वारा लाभ का निर्धारण

P1-C9-U9-T03 · Ascertainment of Profit by Capital Comparison

पहले पढ़ें Section 3 पढ़ें: Net Worth/Statement of Affairs Method - लाभ का सूत्र, दो तिथियों पर Statements of

Affairs तैयार करना (3.3), तथा Statement of Affairs और Balance Sheet के अंतर (3.2)।

नोट्स

Net Worth / Statement of Affairs Method - सूत्र: लाभ = अंतिम पूंजी + आहरण - नई पूंजी का निवेश - प्रारम्भिक पूंजी। वैकल्पिक रूप से Capital Account की संतुलन राशि के रूप में लाभ निकाला जा सकता है: Dr पक्ष - Drawings, Closing Balance c/d; Cr पक्ष - Opening Balance b/d, Additional Capital, Net Profit।

Statement of Affairs: पूंजी = परिसंपत्तियाँ - देयताएँ। इसे दो तिथियों पर तैयार किया जाता है। Cash Book से Cash, Bank Pass Book से Bank, Personal Ledger से Debtors/Creditors, वास्तविक गणना एवं मूल्यांकन से Inventory तथा उचित Depreciation के बाद Written-down Value पर Fixed Assets लिए जाते हैं।

Statement of Affairs | Balance Sheet

आंशिक Double Entry/आंशिक Single Entry; अनुमान, मान्यताओं और स्मृति पर आधारित। | कठोर Double Entry; प्रत्येक मद Ledger और दस्तावेजों से सत्यापित।

पूंजी केवल संतुलन राशि; सभी मदों का पूर्ण लेखा-संतुलन आवश्यक नहीं। | पूंजी Ledger के Capital A/c से; दोनों पक्ष सदैव बराबर।

छूटी हुई परिसंपत्ति/देयता पहचानना कठिन। | किसी मद के छूटने पर Balance Sheet का मिलान रुक जाता है।

परिसंपत्तियों का मूल्यांकन अनुमानाधारित; पद्धति का प्रकटीकरण आवश्यक नहीं। | वैज्ञानिक मूल्यांकन - Cost less Depreciation; परिवर्तन का प्रकटीकरण।

उद्देश्य: प्रारम्भिक और अंतिम पूंजी ज्ञात करना। | उद्देश्य: किसी निश्चित तिथि की वित्तीय स्थिति दिखाना।

तुलना से पहले समायोजन: अंतिम परिसंपत्तियों में '?' वाली राशि पहले निकाली जाती है - जैसे Opening Building पर 2.5% और Furniture पर 10% Depreciation लगाकर Closing Values। स्वामी की परिपक्व LIC राशि यदि व्यवसाय में रखी गई हो तो Fresh Capital है - लाभ सूत्र में घटाएँ। मासिक घरेलू आहरण, जैसे ₹2,000 × 12, Drawings के रूप में जोड़ें। Accrued Interest, Bad Debts/Provisions तथा एक वर्ष से लंबी अवधि में Drawings और Interest को अनुपातिक रूप से समायोजित करें।

Income-Tax-Officer Pattern (Illustration 5): दो तिथियों पर Assets/Liabilities से Capital निकालें। अवधि की आय = Closing Capital + Domestic Drawings (जैसे ₹4,000 × 24 माह) - Opening Capital। इसे घोषित आय से तुलना करें; अधिक राशि Suppressed Income होगी और ITO की आपत्ति का समर्थन करेगी।

विश्लेषण (Analysis) मिश्रित आँकड़ों पर कार्य कीजिए - 3 प्रश्न

- सूत्र में पूर्ण दक्षता रखें: Profit = Closing Capital + Drawings - Fresh Capital Introduced - Opening Capital; अथवा Capital Account की balancing figure से Profit निकालें।
- बहु-चरणीय प्रश्नों में पहले दोनों तिथियों के Statements of Affairs तैयार करें (Capital = Assets - Liabilities)। '?' वाली Assets को पहले निकालें, जैसे Opening Values पर Depreciation के बाद Closing Building/Furniture।

- Income-Tax-Officer प्रकार के undisclosed income प्रश्नों में दो वर्षों की Capital तुलना करें, Drawings/Household Expenses, Assets में वृद्धि और Fresh Capital समायोजित कर वास्तविक आय निकालें।
- तुलना से पहले Depreciation, Accrued Interest, Bad Debts/Provisions तथा 15 माह जैसी लंबी अवधि में Drawings/Interest का अनुपातिक समायोजन ध्यान से करें।

PQ 3.2 · MTP 2024-Jul [5] (b) · Practical · 5M · Pg 457

LEVEL II
विश्लेषण (Analysis)

मध्यम

PQ 3.3 · PYQ 2025-Jan [4] (b) · Practical · 5M · Pg 459

LEVEL II
विश्लेषण (Analysis)

मध्यम

PQ 3.1 · PYQ 2022-Nov [3] (b) · Practical · 10M · Pg 455

LEVEL II
विश्लेषण (Analysis)

कठिन

विषय 4: पूर्ण लेखांकन सूचना प्राप्त करने की तकनीकें

P1-C9-U9-T04 · Techniques of Obtaining Complete Accounting Information

पहले पढ़ें Section 4 पढ़ें: Conversion Method - Cash and Bank Summary (4.2), Sales/Purchase Ledgers का विश्लेषण और proforma Total Debtors, Total Creditors तथा Bills Receivable/Payable Accounts (4.3), Business Expenses और Drawings में अंतर (4.4), तथा इनसे Final Accounts तैयार करना।

नोट्स

Conversion Method (4.1): केवल Capital Comparison की अपेक्षा अधिक उपयुक्त। Opening Statement of Affairs से Assets, Liabilities और Capital के Opening Balances लेकर Ledger प्रारम्भ करें; Cash Book और प्रत्येक Subsidiary Book के अपोस्टेड पक्षों को पोस्ट करके Double Entry पूर्ण करें; Trial Balance बनाएँ; फिर Trading and P&L Account तथा Balance Sheet तैयार करें। अज्ञात Cash Receipts/Shortfalls को Capital Account में लें - Fresh Capital को Credit और Drawings को Debit।

Cash and Bank Summary (4.2): सभी Cash/Bank Receipts और Payments को महत्वपूर्ण शीर्षकों के अंतर्गत सारणीबद्ध करें, दोनों पक्षों का मिलान करें और Closing Balances का Reconciliation करें। Debit Side कम हो तो कोई Receipt छूटी है - सामान्यतः Cash Sales; Credit Side कम हो तो कोई Payment छूटा है। ऐसी राशि Balancing Figure से निकाली जाती है।

Total Debtors / Creditors / Bills Accounts (4.3): Total Debtors - Dr: Opening Balance, Credit Sales, Dishonoured Bills/Cheques, Interest; Cr: Cash/Bank Received, Discount Allowed, B/R Received, Sales Returns, Bad Debts, Closing Balance। Total Creditors - Dr: Cash/Bank Paid, Discount Received, Purchase Returns, B/P Accepted, B/R Endorsed, Closing Balance; Cr: Opening Balance, Credit Purchases, B/P Dishonoured। किसी एक Missing Figure - Credit Sales, Credit Purchases, Bad Debts, Cash Received आदि - को Balancing Figure से निकाला जाता है। Endorsed और Dishonoured Bills दो Accounts को प्रभावित करते हैं; Debtors-Creditors Ledger Transfer में Contra Entries आवश्यक हैं।

Shortcut - Credit Purchases = Creditors को Cash Paid (Bills Payable सहित) + Closing Creditors एवं B/P -

Opening Creditors एवं B/P I Drawings बनाम Business Expenses (4.4): Drawings में Common Rent/Electricity/Telephone का Residence Share, Proprietor की LIC Premium, Household Expenses, Business Cash से Private Loans/Gifts तथा Personal Use के लिए Goods शामिल हैं। Fresh Capital में LIC Maturity Money, Private Investments का Interest/Dividend जो व्यवसाय में लाया गया हो, तथा Private Funds से चुकाए गए Business Expenses/Creditors शामिल हैं - Dr Expense/Asset, Cr Capital।

पूर्ण प्रश्न की शृंखला: Opening Statement of Affairs → Cash and Bank Summary → Total Debtors, Total Creditors, B/R और B/P Accounts → Trading and P&L Account → Closing Balance Sheet। Missing Sales, Purchases या Closing/Lost Stock को Gross Profit % - जैसे Sales पर 25% GP - अथवा Credit-period Ratios से निकालें; जैसे 1.5 माह का Credit होने पर Closing Debtors = Credit Sales $\times$ 1.5 $\div$ 12। Cash-to-Credit Ratio से Sales Mix निकालें। अंत में Depreciation, Outstanding/Prepaid Expenses, Provision for Doubtful Debts तथा Broken Period का Loan Interest समायोजित करें। Partnership प्रश्नों में Net Profit को सहमत अनुपात में Partners' Capital Accounts में बाँटें और Closing Balance Sheet से मिलान करें।

अनुप्रयोग (Application) प्रश्न हल कीजिए · 15 प्रश्न

PQ 4.1 · PYQ 2018-Nov [3] (a) · Practical · 15M · Pg 461	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 4.2 · PYQ 2019-Nov [4] (b) · Practical · 10M · Pg 464 5× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 4.3 · PYQ 2020-Nov [2] (b) · Practical · 10M · Pg 467	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 4.4 · PYQ 2021-Jan [2] (b) · Practical · 10M · Pg 469	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 4.5 · PYQ 2021-Jul [3] (b) · Practical · 10M · Pg 472	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 4.7 · PYQ 2022-May [3] (a) · Practical · 12M · Pg 477	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 4.8 · MTP 2024-May [4] (b) · Practical · 10M · Pg 480 3× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 4.9 · PYQ 2024-Jun [4] (b) · Practical · 8M · Pg 483 3× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 4.13 · RTP 2025-Jan [11] · Practical · Pg 490	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 4.14 · PYQ 2025-Sep [3] (a) · Practical · 12M · Pg 494	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 4.18 · PYQ 2026-May [3] (b) · Practical · 10M · Pg 503	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 4.11 · MTP 2024-Dec S1 [3] (b) · Practical · 8M · Pg 486	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	
PQ 4.12 · MTP 2024-Dec S1 [5] (b) · Practical · 5M · Pg 489 2× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	

PQ 4.17 · RTP 2026-May [11] PQ · Practical · Pg 500

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

PQ 4.19 · PYQ 2026-Sep [3] (a) · Practical · 10M · Pg 506

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)**विश्लेषण (Analysis)** मिश्रित आँकड़ों पर कार्य कीजिए · 4 प्रश्न

- Single Missing Figures को Balancing Figures के रूप में निकालें: Total Debtors/Total Creditors Accounts से Credit Sales/Credit Purchases; Debtors Account से Bad Debts; Cash and Bank Summary से Cash Sales।
- Ratio-based deductions का अभ्यास करें: Debtors का Credit Period → Credit Sales; Cash-to-Credit Sales Mix; Sales पर निश्चित Gross Profit % से Trading Account पूरा करना अथवा Lost/Missing Inventory निकालना।
- Discount Allowed/Received, Dishonoured Bills और Endorsed Bills पर ध्यान दें - प्रत्येक दो Accounts को प्रभावित करता है। Debtors और Creditors Ledgers के बीच Transfer में Contra Entries आवश्यक हैं।

PQ 4.6 · PYQ 2021-Dec [6] (e) · Practical · 5M · Pg 476

LEVEL II
विश्लेषण (Analysis)**मध्यम**

PQ 4.10 · PYQ 2024-Sep [5] (Or) (b) (ii) · Practical · 5M · Pg 485

LEVEL II
विश्लेषण (Analysis)**मध्यम**PQ 4.15 · RTP 2025-Sep [11] · Practical · Pg 497 **2x पूछा गया****LEVEL II**
विश्लेषण (Analysis)**मध्यम**

PQ 4.16 · PYQ 2026-Jan [5] (b) · Practical · 5M · Pg 499

LEVEL II
विश्लेषण (Analysis)**मध्यम****संश्लेषण (Synthesis)** आद्योपान्त तैयार कीजिए — इस संस्करण में कोई प्रश्न नहीं

- 10-16 अंक के पूर्ण Conversion Question में दक्षता प्राप्त करें: Opening Statement of Affairs → Cash/Bank Summary → Total Debtors, Total Creditors, Bills Accounts → Trading and P&L Account → Closing Balance Sheet।
- मानक समायोजन आरम्भ से अंत तक करें: Depreciation, Outstanding/Prepaid Expenses, Provision for Doubtful Debts, Drawings - जिसमें Goods Withdrawn और Private Funds से चुकाए गए Expenses को Capital में Credit करना शामिल है - तथा Gross Profit Percentage से Sales/Purchases निकालना।
- Partnership variants में Profit को सहमत अनुपात में बाँटकर Partners' Capital Accounts बंद करें और अंत में Closing Balance Sheet का मिलान अवश्य करें।

अध्याय 10

साझेदारी एवं LLP खाते

Partnership and LLP Accounts

46 विषय • 82 वर्गीकृत प्रश्न • महत्त्व: C

ICAI कौशल प्रोफाइल Level I 5–20% • Level II 80–95% — यह अध्याय है पेपर के अनुरूप

Level I — स्मरण एवं समझ

11.1%

574 में से 64 अंक

Level II — अनुप्रयोग एवं विश्लेषण

88.9%

574 में से 510 अंक

इकाई 10.1: साझेदारी खातों का परिचय

Introduction to Partnership Accounts

P1-C10-U10.1 • महत्त्व D • अध्याय में Rank 1 • श्रेणी A • अध्याय के 23.2% प्रश्न • 19 प्रश्न

विषय 1: परिचय: साझेदारी क्यों?

P1-C10-U10.1-T01 • Introduction: Why Partnership?

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं • पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें इकाई का §1.1 पढ़िए: जब एकल स्वामी अकेले व्यवसाय नहीं सँभाल पाता, तब साधनों को एकत्र करने का औचित्य।

नोट्स

साझेदारी क्यों: एकल स्वामी आज के व्यवसाय की वित्तीय और प्रबन्धकीय माँगों को अकेले पूरा नहीं कर पाता, इसलिए दो या अधिक व्यक्ति अपने वित्तीय और गैर-वित्तीय साधन एकत्र करके व्यवसाय चलाते हैं — आगे की इकाइयाँ फर्म के अन्तिम खाते तथा साझेदार के प्रवेश, सेवानिवृत्ति और मृत्यु को समेटती हैं।

विषय 2: साझेदारी की परिभाषा एवं विशेषताएँ

P1-C10-U10.1-T02 • Definition and Features of Partnership

पहले पढ़ें Indian Partnership Act, 1932 की Section 4 की परिभाषा तथा Study Material के Sec 1.2 में दी गई साझेदारी की विशेषताएँ पढ़िए (समझौता, व्यवसाय, लाभ का विभाजन, पारस्परिक अभिकरण, अवयस्क साझेदार, साझेदारों की संख्या)।

नोट्स

Sec 4, Indian Partnership Act, 1932 (SM): “साझेदारी उन व्यक्तियों के बीच का सम्बन्ध है जिन्होंने ऐसे व्यवसाय के लाभ को बाँटने पर सहमति दी है जो उन सबके द्वारा अथवा उनमें से किसी एक के द्वारा सबकी ओर से चलाया जाता है।”

छह विशेषताएँ: (a) समझौता — यह संविदा से उत्पन्न होती है, प्रास्थिति से नहीं (HUF के विपरीत); लिखित deed आवश्यक नहीं (Sec 5); (b) व्यवसाय — इसमें प्रत्येक व्यापार, वृत्ति और व्यवसाय सम्मिलित है (Sec 2(b)); (c) लाभ का विभाजन — Sec 4 हानियों के विभाजन पर आग्रह नहीं करती, अतः हानि-विभाजन की शर्त आवश्यक नहीं; (d) पारस्परिक अभिकरण — व्यवसाय सबके द्वारा अथवा किसी एक के द्वारा सबकी ओर से चलाया जाता है, साझेदार परस्पर स्वामी भी हैं और अभिकर्ता भी; (e) अवयस्क — केवल लाभ में सम्मिलित किया जा सकता है, हानि में नहीं (हानि वयस्क साझेदार PSR में वहन करते हैं); (f) साझेदारों की संख्या — न्यूनतम 2, अधिकतम 50 (Rule 10, Companies (Incorporation) Rules, 2014, Sec 464, Companies Act, 2013 के अन्तर्गत)।

मुख्य निष्कर्ष: यह आवश्यक नहीं कि व्यवसाय प्रत्येक साझेदार चलाए (पारस्परिक अभिकरण पर्याप्त है); PSR समझौते से तय होता है और पूंजी अनुपात से स्वतंत्र है — समझौते के अभाव में लाभ समान रूप से बाँटते हैं, कभी पूंजी अनुपात में नहीं।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 2 प्रश्न

- कारण सहित सत्य/असत्य सिद्ध कर सकें: व्यवसाय सभी साझेदारों द्वारा अथवा उनमें से किसी एक द्वारा सबकी ओर से चलाया जा सकता है (पारस्परिक अभिकरण) — यह आवश्यक नहीं कि उसे प्रत्येक साझेदार चलाए।
- समझाइए कि लाभ-विभाजन अनुपात (PSR) और पूंजी-अंशदान अनुपात समान क्यों नहीं होते — PSR समझौते से तय होता है; समझौते के अभाव में लाभ समान रूप से बाँटते हैं, पूंजी अनुपात में नहीं।
- प्रत्येक विशेषता के पीछे का तर्क जानिए: साझेदारी संविदा से उत्पन्न होती है (HUF की तरह प्रास्थिति से नहीं), Sec 4 के अनुसार हानियों का विभाजन आवश्यक नहीं, और अवयस्क को केवल लाभ में सम्मिलित किया जा सकता है।
- कारण सहित सीमाएँ स्मरण रखिए: न्यूनतम 2 साझेदार, अधिकतम 50 (Companies Act, 2013 की Sec 464 के अन्तर्गत Rule 10, Companies (Incorporation) Rules, 2014)।

TQ 2.1 · PYQ 2005-Nov [5] (xi) · सही/गलत · 2M · Pg 510 **3x पूछा गया****LEVEL I**
समझ (Understanding)**सरल**

TQ 2.2 · PYQ 2025-Sep [1] (a) (iii) {C} · सही/गलत · 2M · Pg 511

LEVEL I
समझ (Understanding)**सरल****विषय 3: सीमित दायित्व साझेदारी (LLP)**

P1-C10-U10.1-T03 · Limited Liability Partnership

पहले पढ़ें Study Material का Sec 1.3 पढ़िए: LLP तथा small LLP की परिभाषा (LLP Act, 2008, यथासंशोधित 2021), LLP की प्रकृति, नामित साझेदार (Sec 7), उनके दायित्व, दायित्व की सीमा, तथा वित्तीय प्रकटीकरण।

नोट्स

परिभाषा (Sec 2, LLP Act, 2008): LLP अर्थात् “इस अधिनियम के अन्तर्गत गठित एवं पंजीकृत साझेदारी”; LLP agreement साझेदारों के बीच (अथवा LLP और साझेदारों के बीच) लिखित समझौता है जो पारस्परिक अधिकार और कर्तव्य तय करता है। **Small LLP (2021 संशोधन):** अंशदान $\leq$ ₹25 लाख (₹5 करोड़ तक विहित किया जा सकता है) तथा Statement of Accounts and Solvency के अनुसार पूर्ववर्ती वर्ष का turnover $\leq$ ₹40 लाख (₹50 करोड़ तक विहित किया जा सकता है)।

प्रकृति: निगमित निकाय, अपने साझेदारों से पृथक विधिक इकाई, शाश्वत उत्तराधिकार; साझेदारों में परिवर्तन से उसका अस्तित्व, अधिकार अथवा दायित्व प्रभावित नहीं होते; Indian Partnership Act, 1932 LLP पर लागू नहीं होता (Sec 1.3.3)।

साझेदार: कोई भी व्यक्ति अथवा निगमित निकाय; व्यक्ति अयोग्य है यदि वह विकृतचित्त पाया गया हो, अनुमोचित दिवालिया हो, अथवा उसके विरुद्ध दिवालिया आवेदन लम्बित हो; न्यूनतम 2 साझेदार — यदि संख्या 2 से घट जाए और व्यवसाय 6 माह से अधिक चलता रहे, तो एकमात्र साझेदार (जिसे इसका ज्ञान हो) उस अवधि के दायित्वों के लिए व्यक्तिगत रूप से उत्तरदायी हो जाता है।

नामित साझेदार (Sec 7): कम-से-कम दो, जो व्यक्ति हों, और उनमें कम-से-कम एक भारत का निवासी हो (ठीक पूर्ववर्ती वर्ष में ≥ 120 दिन भारत में रहा हो); पूर्व सहमति आवश्यक तथा नियुक्ति के 30 दिन के भीतर विवरण Registrar के पास दाखिल; वे अधिनियम के अन्तर्गत सभी कार्यों/अनुपालनों (दस्तावेज़, विवरणियाँ, विवरण दाखिल करना) के लिए उत्तरदायी हैं और उल्लंघन पर LLP पर लगाए गए सभी दंडों के लिए दायी हैं।

दायित्व एवं प्रकटीकरण: LLP के दायित्व केवल उसके अपने हैं और LLP की सम्पत्ति से ही पूरे किए जाते हैं; कोई साझेदार केवल साझेदार होने के नाते व्यक्तिगत रूप से दायी नहीं; जहाँ साझेदार लेनदारों से छल के आशय से कार्य करें वहाँ दायित्व असीमित है; पुस्तकें दोहरा लेखा प्रणाली में नकद अथवा उपार्जन आधार पर; वर्षान्त के 6 माह के भीतर नामित साझेदारों द्वारा हस्ताक्षरित Statement of Account and Solvency Registrar के पास दाखिल; तथा विहित रूप में अंकेक्षण (कुछ वर्गों को छूट दी जा सकती है)।

स्मरण (Remembering) कंठस्थ कीजिए — इस संस्करण में कोई प्रश्न नहीं

- संक्षिप्त टिप्पणी के लिए कंठस्थ कीजिए: प्रत्येक LLP में कम-से-कम 2 नामित साझेदार होने चाहिए जो व्यक्ति हों, और उनमें कम-से-कम एक भारत का निवासी (पूर्ववर्ती वर्ष में कम-से-कम 120 दिन भारत में); पूर्व सहमति तथा 30 दिन के भीतर Registrar के पास दाखिल करना अनिवार्य।
- नामित साझेदारों के दायित्व: LLP Act के अन्तर्गत सभी कार्यों/अनुपालनों (दस्तावेज़, विवरणियाँ, विवरण दाखिल करना) के लिए उत्तरदायी, तथा उल्लंघन पर LLP पर लगाए गए सभी दंडों के लिए दायी।
- LLP और साझेदारों के दायित्व की सीमा: LLP के दायित्व केवल LLP की सम्पत्ति से पूरे होते हैं; साझेदार केवल साझेदार होने के नाते व्यक्तिगत रूप से दायी नहीं; छल की दशा में दायित्व असीमित।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 4 प्रश्न

- LLP की प्रकृति समझाइए: निगमित निकाय, साझेदारों से पृथक विधिक इकाई, शाश्वत उत्तराधिकार; साझेदारों में परिवर्तन से उसका अस्तित्व प्रभावित नहीं होता।

- प्रसिद्ध सत्य/असत्य जाल: LLP पर Indian Partnership Act, 1932 लागू नहीं होता — यह LLP Act, 2008 से शासित है (Sec 1.3.3: 1932 के अधिनियम की अप्रयोज्यता)।
- समझौते के अभाव में साझेदार लाभ समान रूप से बाँटते हैं, पूंजी-अंशदान अनुपात में नहीं — इसका सांविधिक कारण तैयार रखिए।
- जानिए कि साझेदार कौन हो सकता है (व्यक्ति अथवा निगमित निकाय) और कौन नहीं (विकृतचित्त, अनुमोचित दिवालिया, अथवा जिसके विरुद्ध दिवालिया आवेदन लम्बित हो)।

TQ 3.1 · PYQ 2019-Jun [1] (a) (v) · सही/गलत · 2M · Pg 511

LEVEL I
समझ (Understanding)

सरल

TQ 3.3 · MTP 2024-Jun [1] (a) (iv) {C} · सही/गलत · 2M · Pg 512 **2× पूछा गया**LEVEL I
समझ (Understanding)

सरल

TQ 3.4 · PYQ 2025-May [1] (a) {C} · सही/गलत · 4M · Pg 513

LEVEL I
समझ (Understanding)

सरल

TQ 3.2 · PYQ 2022-May [4] (b) DESC 5 Marks · Pg 511

LEVEL I
समझ (Understanding)

विषय 4: साधारण साझेदारी फर्म और LLP में अंतर

P1-C10-U10.1-T04 · Distinction Between an Ordinary Partnership Firm and An LLP

पहले पढ़ें Study Material के Sec 1.4 में दी गई सामान्य साझेदारी फर्म और LLP के बीच तालिकाबद्ध विभेद (14 आधार) याद कीजिए।

नोट्स

Sec 1.4 (14 आधार; तालिका: LLP बनाम सामान्य फर्म): अन्य आधार — पंजीकरण की विधिक प्रक्रिया से सृजन बनाम समझौते से सृजन; नाम के साथ 'LLP' लगाना अनिवार्य बनाम कोई भी नाम; अनुपालनों के लिए केवल नामित साझेदार उत्तरदायी बनाम सभी साझेदार।

नियामक अधिनियम: LLP Act, 2008	Indian Partnership Act, 1932
निगमित निकाय — पृथक विधिक इकाई; परिसंपत्तियाँ अपने ही नाम से रखता है	पृथक विधिक इकाई नहीं; फर्म की परिसंपत्तियों के स्वामी साझेदार संयुक्त रूप से होते हैं
शाश्वत उत्तराधिकार — साझेदार की मृत्यु/विकृतचित्तता/सेवानिवृत्ति/दिवालियापन का कोई प्रभाव नहीं	शाश्वत उत्तराधिकार नहीं; ऐसी घटनाएँ अस्तित्व को प्रभावित कर सकती हैं
दायित्व सहमत अंशदान तक सीमित (केवल जानबूझकर किए गए छल में असीमित)	दायित्व असीमित — साझेदारों की व्यक्तिगत सम्पत्ति तक
साझेदार अपने कार्यों से LLP को बाध्य करता है, अन्य	प्रत्येक साझेदार फर्म को तथा अन्य साझेदारों को भी बाध्य

साझेदारों को नहीं	करता है
पंजीकरण अनिवार्य; न्यूनतम 2, अधिकतम कोई नहीं; ≥ 2 नामित साझेदार	पंजीकरण ऐच्छिक (केवल पंजीकृत फर्म वाद ला सकती है); अधिकतम 50 साझेदार
विदेशी नागरिक साझेदार हो सकते हैं; अवयस्क को लाभ में सम्मिलित नहीं किया जा सकता	विदेशी नागरिक नहीं हो सकते; अवयस्क साझेदारों की सहमति से लाभ में सम्मिलित

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए — इस संस्करण में कोई प्रश्न नहीं

- परीक्षा में पूछे जाने वाले ठीक उन्हीं आधारों पर अन्तर कर सकें: लागू/नियामक विधि (LLP Act, 2008 बनाम Indian Partnership Act, 1932), शाश्वत उत्तराधिकार (LLP साझेदारों की मृत्यु/दिवालियापन से अप्रभावित), परिसंपत्तियों का स्वामित्व (LLP पृथक विधिक इकाई के रूप में स्वयं स्वामी; फर्म में साझेदार संयुक्त रूप से स्वामी), तथा दायित्व (सहमत अंशदान तक सीमित बनाम असीमित)।
- स्वामी-अधिकर्ता सम्बन्ध का अन्तर समझाइए: फर्म में प्रत्येक साझेदार फर्म को तथा अन्य साझेदारों को भी बाध्य करता है; LLP में साझेदार केवल LLP को बाध्य करता है, सह-साझेदारों को नहीं।
- यह भी दोहराइए: पंजीकरण (LLP के लिए अनिवार्य, फर्म के लिए ऐच्छिक), साझेदारों की अधिकतम संख्या (कोई सीमा नहीं बनाम 50), नामित साझेदार, विदेशी नागरिक और अवयस्क।

विश्लेषण (Analysis) विश्लेषण कर तुलना कीजिए · 1 प्रश्न

TQ 4.1 · PYQ 2022-Nov [4] (b) · वर्णनात्मक · 5M · Pg 513

LEVEL II
विश्लेषण (Analysis)

कठिन

विषय 5: साझेदारी विलेख (Partnership Deed) की मुख्य धाराएँ

P1-C10-U10.1-T05 · Main Clauses in A Partnership Deed

पहले पढ़ें Sec 1.5 पढ़िए: साझेदारी deed की 14 सामान्य शर्तें और — सबसे महत्वपूर्ण — Indian Partnership Act, 1932 के अन्तर्गत deed के अभाव में लागू होने वाले नियम।

नोट्स

14 सामान्य शर्तें: (1) फर्म तथा साझेदारों के नाम; (2) आरम्भ और अवधि; (3) प्रत्येक साझेदार की पूंजी; (4) अनुमत आहरण और उनका समय; (5) पूंजी पर, साझेदार के ऋण पर तथा आहरण पर ब्याज की दरें; (6) लाभ/हानि विभाजन अनुपात; (7) साझेदार का वेतन; (8) पारस्परिक अधिकारों एवं कर्तव्यों में परिवर्तन; (9) संरचना में परिवर्तन पर ख्याति के मूल्यांकन की विधि; (10) सेवानिवृत्ति की प्रक्रिया और देय राशि का भुगतान; (11) मृत साझेदार के निष्पादकों की देय राशि का निर्धारण एवं भुगतान; (12) साझेदार के दिवालियापन से हुई हानि का व्यवहार; (13) विवाद-निपटान की प्रक्रिया; (14) खातों की तैयारी और अंकेक्षण।

deed के अभाव में नियम (अधिनियम लागू): किसी साझेदार को वेतन नहीं; पूंजी पर ब्याज नहीं; आहरण पर ब्याज

नहीं; फर्म को दिए गए साझेदार के ऋण पर 6% वार्षिक ब्याज; और लाभ-हानि समान रूप से बँटते हैं (पूँजी अनुपात में नहीं) — deed की शर्त, जहाँ हो, इन डिफॉल्ट नियमों पर भारी पड़ती है।

पंजीकरण: फर्म का पंजीकरण अनिवार्य नहीं है, किन्तु अपंजीकृत रहने पर साझेदार/फर्म विधिक कार्यवाही करने से वंचित रह जाते हैं।

गलत/छूटे विनियोजन का समायोजन: प्रत्येक साझेदार के लिए पहले से क्रेडिट राशि और देय राशि की गणना कीजिए, अधिक राशि उलटिए (वसूली से विभाज्य लाभ बढ़ता है, जो PSR में पुनः क्रेडिट होता है), और शुद्ध प्रभाव की एक ही entry पूँजी/चालू खातों से कीजिए — जैसे 10% के स्थान पर 12% ब्याज क्रेडिट होने पर (A:B:C = 2:3:5, पूँजी 15L:30L:60L): C's Current A/c डेबिट ₹15,000, A क्रेडिट ₹12,000, B क्रेडिट ₹3,000।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 4 प्रश्न

- deed न होने पर लागू डिफॉल्ट नियम कंठस्थ कीजिए और कारण सहित सिद्ध कर सकें: साझेदार को वेतन नहीं, पूँजी पर ब्याज नहीं, आहरण पर ब्याज नहीं, फर्म को दिए गए साझेदार के ऋण पर 6% वार्षिक ब्याज, तथा लाभ/हानि का समान विभाजन।
- बार-बार आने वाले सत्य/असत्य जाल: 'समझौते के बिना लाभ पूँजी अनुपात में बँटते हैं' — असत्य (समान विभाजन); 'deed न होने पर साझेदार के ऋण पर 6% ब्याज' — सत्य; 'साझेदारी फर्म परिसंपत्तियों की स्वामी नहीं हो सकती' — यह केवल सामान्य फर्म के लिए सत्य है (पृथक विधिक इकाई नहीं), जहाँ परिसंपत्तियों के स्वामी साझेदार संयुक्त रूप से होते हैं।
- साझेदारी समझौता न होने की दशा के नियमों को धाराओं के आधार पर गिनाते हुए 5 अंक का वर्णनात्मक उत्तर देने के लिए तैयार रहिए।

TQ 5.1 · PYQ 2005-May [5] (viii) · सही/गलत · 2M · Pg 514	13× पूछा गया	LEVEL I समझ (Understanding)	सरल
TQ 5.2 · PYQ 2018-May [1] (a) (v) {C} · सही/गलत · 2M · Pg 515	3× पूछा गया	LEVEL I समझ (Understanding)	सरल
TQ 5.3 · PYQ 2019-Nov [1] (a) (v) {C} · सही/गलत · 2M · Pg 515	4× पूछा गया	LEVEL I समझ (Understanding)	सरल
TQ 5.4 · PYQ 2021-Jan [6] (b) · वर्णनात्मक · 5M · Pg 515		LEVEL I समझ (Understanding)	मध्यम

अनुप्रयोग (Application) प्रक्रिया का अभ्यास कीजिए · 1 प्रश्न

- deed के प्रावधान लागू करते हुए विवाद/विनियोजन के संख्यात्मक प्रश्नों का अभ्यास कीजिए: किसी साझेदार को वेतन, स्थिर पूँजी पर ब्याज, और शेष लाभ का विभाजन।
- जहाँ विनियोजन (जैसे गलत दर पर ब्याज) छूट गया हो अथवा गलत दर्ज हुआ हो, वहाँ समायोजन/सुधार entries का अभ्यास कीजिए — साझेदारवार शुद्ध प्रभाव निकालिए और पूँजी/चालू खातों से एक ही समायोजक journal entry कीजिए।

PQ 5.1 · PYQ 2021-Dec [3] (c) · व्यावहारिक · 5M · Pg 516	7× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	मध्यम
--	-------------	-------------------------------------	-------

विषय 6: साझेदारों की शक्तियाँ

P1-C10-U10.1-T06 · Powers of Partners

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §1.6 पढ़िए: व्यापारिक फर्म के साझेदार के विवक्षित (implied) अधिकार, तथा वे कार्य जिनमें कोई एकल साझेदार फर्म को बाध्य नहीं कर सकता।

नोट्स

विवक्षित अधिकार (व्यापारिक फर्म): जब तक इसके विपरीत लोक-सूचना न दी जाए, साझेदार की संविदाएँ फर्म को बाध्य करती हैं — (a) माल का क्रय-विक्रय, (b) भुगतान प्राप्त करना और विधिमान्य रसीद देना, (c) फर्म के नाम से cheque काटना तथा विनिमय बिल एवं प्रतिज्ञा-पत्र लिखना/स्वीकार करना/पृष्ठांकित करना, (d) व्यापारिक माल-सूची गिरवी रखकर अथवा बिना गिरवी रखे धन उधार लेना, (e) फर्म के व्यवसाय के लिए सेवक नियुक्त करना।

जहाँ विवक्षित अधिकार नहीं (सभी साझेदारों की सहमति आवश्यक): फर्म के विवाद को मध्यस्थता में देना, किसी साझेदार के नाम से बैंक खाता खोलना, किसी दावे पर समझौता अथवा उसका परित्याग, फर्म की ओर से दायर वाद वापस लेना, फर्म के विरुद्ध वाद में दायित्व स्वीकार करना, फर्म की स्थावर सम्पत्ति का अर्जन, तथा फर्म की ओर से साझेदारी में प्रवेश करना; अधिकार, कर्तव्य और शक्तियाँ पारस्परिक सहमति से बदली जा सकती हैं।

विषय 7: साझेदारी फर्म के खाते (Accounts)

P1-C10-U10.1-T07 · Accounts

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §1.7 पढ़िए: साझेदारी के खाते एकल स्वामित्व के खातों से केवल पूंजी और आहरण खातों में ही भिन्न होते हैं।

नोट्स

फर्म के खाते: साझेदारी अधिनियम कोई प्रारूप निर्धारित नहीं करता, अतः खाते सामान्य नियमों पर ही बनते हैं; एकल स्वामित्व से एकमात्र अन्तर यह है कि एक पूंजी खाते के स्थान पर जितने साझेदार उतने पूंजी खाते होते हैं, और प्रत्येक में उस साझेदार द्वारा लाई गई पूंजी क्रेडिट की जाती है।

आहरण: घरेलू प्रयोजन के लिए साझेदार द्वारा ली गई राशि उसके पूंजी खाते में अथवा पृथक आहरण खाते (जिसे प्रायः चालू खाता कहते हैं) में डेबिट होती है; आहरण खाते को शुद्ध राशि के लिए पूंजी खाते में हस्तान्तरित किया जा सकता है, पर प्रायः वह अलग ही रहता है — इसीलिए फर्म के तलपट में पूंजी और आहरण, दोनों खाते दिख सकते हैं।

विषय 8: लाभ-हानि विनियोजन

P1-C10-U10.1-T08 · Profit and Loss Appropriation

पहले पढ़ें Sec 1.8 पढ़िए: लाभ-हानि विनियोजन खाता बनाना (वेतन, commission, पूंजी और आहरण पर ब्याज, संचिति में हस्तान्तरण, शेष का विभाजन) तथा न्यूनतम लाभ की गारंटी पर Sec 1.9.3।

नोट्स

तकनीक: शुद्ध लाभ P&L A/c से P&L Appropriation A/c के क्रेडिट में हस्तान्तरित होता है; साझेदारों का वेतन/commission तथा पूंजी पर ब्याज डेबिट कीजिए (P&L Appropriation A/c डेबिट, Partner's Capital/Current A/c क्रेडिट), आहरण पर ब्याज क्रेडिट कीजिए, आवश्यक हो तो संचिति में हस्तान्तरण कीजिए, फिर शेष को PSR में बाँटिए; आहरण स्वयं कभी Appropriation A/c में नहीं आते।

यदि deed न हो: पहले साझेदार के ऋण पर 6% ब्याज लाभ में से घटाइए, फिर न वेतन, न पूंजी/आहरण पर ब्याज, और शेष समान रूप से बाँटिए — जैसे लाभ ₹50,600 में से ऋण पर ब्याज ₹600 ($₹20,000 \times 6\% \times 6/12$) घटाकर ₹50,000, जो ₹25,000 : ₹25,000 में बाँटेगा।

न्यूनतम लाभ की गारंटी (Sec 1.9.3): यदि गारंटी प्राप्त साझेदार का सामान्य हिस्सा गारंटी की राशि के बराबर या अधिक है तो सामान्य विभाजन कीजिए; कम हो तो उसे न्यूनतम राशि मिलेगी और कमी वहन करेंगे (a) कोई एक शेष साझेदार, (b) दो/सभी साझेदार सहमत अनुपात में, अथवा (c) शेष साझेदार अपने पारस्परिक PSR में — प्रश्न मौन हो तो भार शेष साझेदारों पर उनके पारस्परिक PSR में पड़ता है।

पूंजी पर ब्याज सहित गारंटी: पहले Appropriation A/c में पूंजी पर ब्याज (और वेतन) प्रभारित कीजिए, फिर बचे हुए लाभ में गारंटी प्राप्त साझेदार का हिस्सा निकालिए, उसकी गारंटी से तुलना कीजिए, और कमी गारंटी देने वाले साझेदार(ों) के हिस्से में डेबिट कीजिए — यही क्रम तब भी है जब नए साझेदार को (जैसे 1/6 हिस्से पर) न्यूनतम लाभ की गारंटी दी गई हो और कमी पुराने साझेदारों से समायोजित होती हो।

अनुप्रयोग (Application) प्रक्रिया का अभ्यास कीजिए · 3 प्रश्न

- मानक प्रारूप का अभ्यास कीजिए: शुद्ध लाभ b/d, उसमें से विनियोजन (साझेदार का वेतन, पूंजी पर ब्याज) घटाइए, आहरण पर ब्याज जोड़िए, फिर शेष लाभ PSR में बाँटिए; स्मरण रखिए कि आहरण स्वयं Appropriation Account में कभी नहीं आते।
- न्यूनतम-लाभ गारंटी वाले प्रश्नों पर अधिकार कीजिए: गारंटी प्राप्त साझेदार का सामान्य हिस्सा कम पड़े तो कमी वहन करती है (a) फर्म, (b) कोई एक गारंटी देने वाला साझेदार, अथवा (c) शेष साझेदार सहमत या पारस्परिक PSR में — तीनों दशाओं का अभ्यास Appropriation Account के रूप में कीजिए।
- दी गई दर (जैसे 5% वार्षिक) पर पूंजी-ब्याज सहित गारंटी का अभ्यास कीजिए — ब्याज प्रभारित करने के बाद गारंटी प्राप्त साझेदार का हिस्सा निकालिए, फिर कमी गारंटर पर प्रभारित कीजिए।
- ऐसे प्रश्न कीजिए जिनमें साझेदार को 1/6 हिस्से पर प्रवेश और लाभ की गारंटी दी गई हो — कुल लाभ के 1/6 की तुलना गारंटी राशि से कीजिए और कमी पुराने साझेदारों से समायोजित कीजिए।

PQ 8.2 · PYQ 2023-Jun [4] (b) · व्यावहारिक · 5M · Pg 519 **2× पूछा गया****LEVEL II**
अनुप्रयोग (Application)**मध्यम**

PQ 8.3 · PYQ 2023-Dec [4] (b) · व्यावहारिक · 5M · Pg 520

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)**मध्यम**

विषय 9: स्थिर एवं परिवर्तनशील पूंजी

P1-C10-U10.1-T09 · Fixed and Fluctuating Capital

पहले पढ़ें Sec 1.9 पढ़िए: स्थिर पूंजी पद्धति (पूंजी + चालू खाते) बनाम परिवर्तनशील पूंजी पद्धति, पूंजी और आहरण पर ब्याज (product method), प्रभावी पूंजी अनुपात तथा पूंजी अनुपात में लाभ का विभाजन।

नोट्स

दो पद्धतियाँ: स्थिर (FIXED) — पूंजी खाता अंशदान पर स्थिर रहता है; ब्याज, वेतन, लाभ का हिस्सा और आहरण चालू खाते (Current A/c) से गुजरते हैं; पूंजी पर ब्याज केवल पूंजी खाते के शेष पर (चालू खाते पर कभी नहीं)। परिवर्तनशील (FLUCTUATING) — चालू खाता नहीं होता, सभी मदें पूंजी खाते से गुजरती हैं, अतः शेष निरन्तर बदलता रहता है।

सम्बन्ध: परिवर्तनशील पूंजी शेष = स्थिर पूंजी + चालू खाते का शेष।

पूंजी पर ब्याज: केवल सहमति होने पर और केवल लाभ में से; प्रारम्भिक शेष पर पूरे वर्ष का तथा वर्ष के बीच की वृद्धि/निकासी पर समानुपातिक — **product method:** $\Sigma(\text{राशि} \times \text{बकाया माह}) \times \text{दर}/100 \times 1/12$; शुद्ध हानि की दशा में ब्याज नहीं; लाभ अपर्याप्त हो (कुल ब्याज से कम) तो उपलब्ध लाभ पूंजी अनुपात में बाँटिए।

आहरण पर ब्याज: असमान आहरण — product method ($\Sigma \text{राशि} \times \text{वर्षान्त तक के माह, एक माह की दर पर ब्याज}$); तिथियाँ न दी हों — कुल आहरण पर 6 माह; समान मासिक आहरण — प्रत्येक माह के आरम्भ में हो तो $6\frac{1}{2}$ माह, अन्त में हो तो $5\frac{1}{2}$ माह; त्रैमासिक आहरण — प्रत्येक तिमाही के आरम्भ में कुल $\times \text{दर} \times 7.5/12$, अन्त में $\times 4.5/12$; entry: Partner's Capital (अथवा Current) A/c डेबिट, P&L Appropriation A/c क्रेडिट।

पूंजी अनुपात (Sec 1.9.4): जहाँ लाभ पूंजी अनुपात में बाँटते हों — स्थिर पूंजी से अनुपात सीधे मिल जाता है; परिवर्तनशील पूंजी में वृद्धि/निकासी होने पर प्रत्येक साझेदार की मासिक भारित औसत (प्रभावी) पूंजी निकालनी पड़ती है; इसके बाद पूंजी और चालू खाते बनाइए (स्थिर पद्धति में वेतन तथा पूंजी/आहरण पर ब्याज चालू खातों से), और शुद्ध लाभ की त्रुटियाँ सुधारकर P&L Appropriation A/c तथा संशोधित तुलन-पत्र बनाइए।

अनुप्रयोग (Application) प्रक्रिया का अभ्यास कीजिए · 3 प्रश्न

- वर्ष के बीच वृद्धि/निकासी होने पर product method (राशि $\times$ माह $\times$ दर/12) से पूंजी पर ब्याज का अभ्यास कीजिए; स्थिर पूंजी पद्धति में ब्याज केवल पूंजी खाते के शेष पर निकलता है, चालू खाते पर नहीं।
- आहरण पर ब्याज का अभ्यास कीजिए: असमान आहरण पर product method; तिथियाँ न दी हों तो औसत 6 माह; मासिक आहरण आरम्भ में हो तो 6.5 माह, अन्त में 5.5 माह; त्रैमासिक आरम्भ में $7.5/12$, अन्त में $4.5/12$ ।
- जहाँ लाभ प्रभावी पूंजी के अनुपात में बाँटते हों वहाँ मासिक आधार पर प्रभावी पूंजी निकालने का अभ्यास कीजिए, फिर पूंजी और चालू खाते बनाइए (स्थिर पद्धति में वेतन तथा पूंजी/आहरण पर ब्याज चालू खातों में क्रेडिट/डेबिट होते हैं)।

PQ 9.3 • PYQ 2025-Jan [3] (b) • व्यावहारिक • 5M • Pg 527	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	मध्यम
PQ 9.4 • RTP 2025-Jan [12] (a) • व्यावहारिक • Pg 528 2× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	मध्यम
PQ 9.1 • MTP 2022-Mar [4] (a) • व्यावहारिक • 20M • Pg 521 2× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन

विश्लेषण (Analysis) मिश्रित आँकड़ों पर कार्य कीजिए • 1 प्रश्न

- उलटी गणना वाली स्थितियाँ हल कीजिए: लाभ-विभाजन और आहरण के बाद के अन्तिम पूंजी शेष दिए हों तो प्रारम्भिक पूंजी पुनः बनाइए, फिर छूटे हुए पूंजी/आहरण ब्याज की पुनर्गणना कीजिए और एक ही समायोजन entry कीजिए — प्रत्येक साझेदार पर शुद्ध प्रभाव देखिए।
- अन्तर्सम्बन्ध पर ध्यान दीजिए: लाभ का PSR में गलत विभाजन बनाम वे राशियाँ जो पहले ब्याज के रूप में जानी चाहिए थीं — सुधार का अनुपात PSR से भिन्न होता है।

PQ 9.2 • RTP 2023-Jun [13] • व्यावहारिक • Pg 526 2× पूछा गया	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	मध्यम
--	---------------------------------	-------

संश्लेषण (Synthesis) आद्योपान्त तैयार कीजिए — इस संस्करण में कोई प्रश्न नहीं

- तलपट/तुलन-पत्र से आद्योपान्त तैयारी पर अधिकार कीजिए: त्रुटियाँ सुधारकर संशोधित शुद्ध लाभ निकालिए, P&L Appropriation Account बनाइए, साझेदारों के पूंजी तथा चालू खाते बनाइए, और संशोधित तुलन-पत्र प्रस्तुत कीजिए।
- स्मरण रखिए: परिवर्तनशील पूंजी शेष = स्थिर पूंजी + चालू खाते का शेष; प्रत्येक पद्धति में ब्याज, वेतन, लाभ का हिस्सा और आहरण सही खाते में ही दिखाइए।

इकाई 10.2: साझेदारी खातों में ख्याति (Goodwill) का व्यवहार

Treatment of Goodwill in Partnership Accounts

P1-C10-U10.2 • महत्त्व D • अध्याय में Rank 6 • श्रेणी C • अध्याय के 11.0% प्रश्न • 9 प्रश्न

विषय 1: ख्याति (Goodwill)

P1-C10-U10.2-T01 • Goodwill

पहले पढ़ें Sec 2.1 पढ़िए: ख्याति (Goodwill) का अर्थ (सामान्य से अधिक लाभ दिलाने वाली साख का मूल्य), उसे प्रभावित करने वाले तत्त्व, तथा Accounting Standard की स्थिति — केवल क्रीत (purchased) ख्याति ही दर्ज की जा सकती है, स्वतःसृजित ख्याति पूंजी खातों से अपलिखित/समायोजित होती है।

नोट्स

अर्थ (SM): “ख्याति किसी फर्म की उस साख का मूल्य है जो भविष्य में सामान्य लाभ दर से अधिक लाभ की अपेक्षा कराती है।” — अर्थात् यह सम्भावना कि पुराने ग्राहक पुराने स्थान पर ही लौटेंगे; यह अमूर्त (intangible) परिसंपत्ति है, काल्पनिक (fictitious) नहीं: दिखाई या स्पर्श नहीं होती, फिर भी पूर्णतः वास्तविक है और उसका मौद्रिक/विक्रय-योग्य

मूल्य है।

मूल्यांकन कब आवश्यक: (a) साझेदारों के बीच PSR बदले; (b) नए साझेदार का प्रवेश हो; (c) कोई साझेदार सेवानिवृत्त हो अथवा उसकी मृत्यु हो; (d) व्यवसाय का विघटन या विक्रय हो। **तत्त्व:** माल की गुणवत्ता, स्वामियों की व्यक्तिगत साख, अवस्थिति, लगभग एकाधिकार जैसे अधिकार (जैसे मुख्य agency), trademarks एवं patents, प्रबन्धकीय कौशल, लागत घटाने वाला R&D, तथा सामग्री के लिए विशेष अनुबन्ध।

AS की स्थिति: अमूर्त परिसंपत्ति तभी मान्य होती है जब वह पहचान-योग्य हो (अलग से विक्रय-योग्य), भावी आर्थिक लाभ सम्भाव्य हों और लागत विश्वसनीय रूप से मापी जा सके — आन्तरिक रूप से सृजित (अन्तर्निहित) ख्याति इनमें से एक भी शर्त पूरी नहीं करती, अतः केवल क्रीत ख्याति ही दर्ज हो सकती है (प्रतिफल धन अथवा धन-मूल्य में, जैसे ₹2,50,000 की शुद्ध परिसंपत्तियों के लिए ₹3,00,000 देने पर ₹50,000 ख्याति)।

पुनर्गठन पर: प्रवेश, सेवानिवृत्ति/मृत्यु अथवा PSR में परिवर्तन पर ख्याति खाता कभी नहीं खोला जाता — मूल्यांकित ख्याति साझेदारों के पूंजी खातों से समायोजित की जाती है; क्रीत ख्याति एक अवधि में अपलिखित (amortised) होती है, और पुनर्गठन के समय पुस्तकों में विद्यमान कोई भी ख्याति — अन्तर्निहित हो या क्रीत — तुरन्त अपलिखित कर दी जाती है।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 2 प्रश्न

- सत्य/असत्य का जाल: 'ख्याति काल्पनिक परिसंपत्ति है' — असत्य; ख्याति अमूर्त परिसंपत्ति है (वास्तविक, विक्रय-योग्य मूल्य वाली), जबकि काल्पनिक परिसंपत्तियों का कोई वसूली-योग्य मूल्य नहीं होता।
- सत्य/असत्य का जाल: ख्याति पर 'मूल्यहास' स्थिर किस्त पद्धति से नहीं लगाया जाता — अमूर्त होने के कारण क्रीत ख्याति एक अवधि में अपलिखित (amortised) की जाती है; मूल्यहास मूर्त स्थायी परिसंपत्तियों पर लगता है।
- यह समझा सकें कि आन्तरिक रूप से सृजित (अन्तर्निहित) ख्याति मान्य क्यों नहीं होती: वह पहचान-योग्य नहीं, भावी लाभ अनिश्चित, और लागत विश्वसनीय रूप से मापी नहीं जा सकती — इसीलिए पुनर्गठन पर ख्याति पूंजी खातों से समायोजित होती है, पुस्तकों में कभी खड़ी नहीं की जाती।

TQ 1.1 · PYQ 2001-Nov [5] · सही/गलत · 2M · Pg 535 **5x पूछा गया**

LEVEL I
समझ (Understanding)

सरल

TQ 1.2 · PYQ 2006-May [5] (x) · सही/गलत · 2M · Pg 535

LEVEL I
समझ (Understanding)

सरल

विषय 2: ख्याति के मूल्यांकन की विधियाँ

P1-C10-U10.2-T02 · Methods for Goodwill Valuation

पहले पढ़ें Sec 2.2 पढ़िए: मूल्यांकन के तीन आधार — औसत लाभ (सरल/भारित), अधिलाभ (super profit — वर्ष-क्रय, annuity, अधिलाभ का पूंजीकरण) तथा औसत लाभ का पूंजीकरण — उनके सूत्रों सहित, और यह भी कि भारित औसत कब उपयुक्त है।

नोट्स

औसत लाभ आधार: ख्याति = औसत लाभ × वर्ष-क्रय की संख्या; जहाँ लाभों में स्पष्ट बढ़ता/घटता रुझान हो वहाँ भारित औसत लीजिए (नवीनतम वर्ष को सर्वाधिक भार — भविष्य का अधिक यथार्थ चित्र), अन्यथा सरल औसत; औसत निकालने से पहले पिछले लाभों को अपेक्षित भावी परिवर्तनों, सुधारों और असामान्य मदों के लिए समायोजित कीजिए।

अधिलाभ आधार: अधिलाभ = औसत धारणीय लाभ – सामान्य लाभ; सामान्य लाभ = सामान्य प्रत्याय दर (NRR) × नियोजित पूंजी; **वर्ष-क्रय:** ख्याति = अधिलाभ × वर्ष-क्रय की संख्या (जैसे पूंजी ₹4,50,000, औसत लाभ ₹92,500, NRR 15% ⇒ अधिलाभ ₹25,000; 3 वर्ष-क्रय ⇒ ख्याति ₹75,000)।

Annuity पद्धति: ख्याति = अधिलाभ × annuity (वर्तमान मूल्य) गुणक — यह वर्ष-क्रय पद्धति के उस दोष को दूर करती है कि उसमें धन के समय-मूल्य की उपेक्षा होती है (जैसे 5 वर्ष तक ₹3,000 अधिलाभ @15%: $3,000 \times 3.3522 = ₹10,056.60$, न कि ₹15,000)।

पूंजीकरण आधार: औसत लाभ का — ख्याति = सामान्य पूंजी – वास्तविक पूंजी, जहाँ सामान्य पूंजी = औसत लाभ ÷ NRR तथा वास्तविक नियोजित पूंजी = कुल परिसंपत्तियाँ – बाह्य देयताएँ (जैसे 60,000 ÷ 12% = ₹5,00,000 में से शुद्ध परिसंपत्तियाँ ₹4,10,000 ⇒ ख्याति ₹90,000); अधिलाभ का — ख्याति = अधिलाभ ÷ NRR (जैसे 17,000 ÷ 12%)।

धारणीय लाभ का समायोजन: औसत निकालने से पहले, जहाँ आवश्यक हो, साझेदार का पारिश्रमिक/नियोजित पूंजी पर ब्याज घटाइए (जैसे औसत ₹2,70,000 में से ₹6,50,000 पर 12% ब्याज = ₹78,000 और वेतन ₹72,000 घटाकर समायोजित लाभ ₹1,20,000) — यहाँ का कोई भी परिवर्तन अधिलाभ और अन्ततः ख्याति को बदल देता है।

अनुप्रयोग (Application) प्रक्रिया का अभ्यास कीजिए · 6 प्रश्न

- सूत्रों का अभ्यास कीजिए: अधिलाभ = औसत धारणीय लाभ – सामान्य लाभ; सामान्य लाभ = NRR × नियोजित पूंजी; ख्याति = अधिलाभ × वर्ष-क्रय की संख्या; Annuity पद्धति: ख्याति = अधिलाभ × annuity गुणक।
- पूंजीकरण पद्धतियाँ: औसत लाभ का — ख्याति = (औसत लाभ ÷ NRR) – नियोजित पूंजी (शुद्ध परिसंपत्तियाँ = कुल परिसंपत्तियाँ – बाह्य देयताएँ); अधिलाभ का — ख्याति = अधिलाभ ÷ NRR। दोनों का अभ्यास एक ही आँकड़ों पर कीजिए।
- मूल्यांकन से पहले औसत धारणीय लाभ समायोजित कीजिए: स्वामी को वैकल्पिक रोजगार से मिलने वाला पारिश्रमिक घटाइए, असामान्य हानियाँ वापस जोड़िए, असामान्य लाभ हटाइए; और जहाँ दिया हो वहाँ बाजार ब्याज दर में जोखिम-प्रत्याय दर जोड़कर NRR निकालिए।
- जहाँ लाभों में स्पष्ट बढ़ता/घटता रुझान हो वहाँ भारित औसत लाभ लीजिए (नवीनतम वर्ष को सर्वाधिक भार), अन्यथा सरल औसत।

PQ 2.2 · PYQ 2022-May [3] (Or) (c) (ii) · व्यावहारिक · 5M · Pg 536	3× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	मध्यम
PQ 2.3 · PYQ 2022-Nov [5] (b) · व्यावहारिक · 5M · Pg 537	8× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	मध्यम
PQ 2.4 · RTP 2023-Jun [14] · व्यावहारिक · Pg 538	5× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	मध्यम
PQ 2.5 · RTP 2025-Jan [12] (b) · व्यावहारिक · Pg 539		LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	मध्यम

PQ 2.1 · RTP 2019-Nov [14] (a) · व्यावहारिक · Pg 535

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

PQ 6.1 · PYQ 2026-Sep [3] (b) · व्यावहारिक · 10M · Pg 540

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)**विश्लेषण (Analysis)** मिश्रित आँकड़ों पर कार्य कीजिए — इस संस्करण में कोई प्रश्न नहीं

- तुलन-पत्र से आरम्भ होने वाले बहु-चरणीय प्रश्न हल कीजिए: पहले नियोजित पूंजी निकालिए (परिसंपत्तियाँ घटाकर बाह्य देयताएँ), फिर पिछले लाभों को सुधारों के लिए समायोजित कीजिए (राजस्व में डाला गया पूंजीगत व्यय, स्कन्ध का अधिक/कम मूल्यांकन, असामान्य मर्दे), और तब निर्धारित पद्धति से ख्याति का मूल्यांकन कीजिए।
- अन्तर्सम्बन्ध देखिए: मूल्यहास नीति में परिवर्तन अथवा समायोजित औसत लाभ निकालने से पहले घटाया गया साझेदार का वेतन/ब्याज — दोनों अधिलाभ और अन्ततः ख्याति को बदल देते हैं।

विषय 3: ख्याति के मूल्यांकन की आवश्यकता

P1-C10-U10.2-T03 · Need for Valuation of Goodwill

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक**पहले पढ़ें** §2.3 पढ़िए: जब भी साझेदारी के अधिकारों में समायोजन हो, ख्याति का मूल्यांकन क्यों आवश्यक है।**नोट्स**

आवश्यकता: साझेदारों के विद्यमान सम्बन्ध में कोई भी परिवर्तन कुछ साझेदारों से भावी लाभ का त्याग कराता है और कुछ को लाभ देता है — लाभ पाने वालों को ख्याति के मूल्य के अनुपात में त्याग करने वालों को क्षतिपूर्ति देनी होती है; ऐसा समायोजन नए साझेदार के प्रवेश, लाभ-विभाजन अनुपात में परिवर्तन, साझेदार की सेवानिवृत्ति या मृत्यु, तथा साझेदारी के विघटन पर उठता है।

विषय 4: साझेदार के प्रवेश पर ख्याति का मूल्यांकन

P1-C10-U10.2-T04 · Valuation of Goodwill in Case of Admission of a Partner

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक**पहले पढ़ें** §2.4 पढ़िए, Nigam-Dhameja-Ghosh वाले लाभ-विभाजन उदाहरण सहित: त्याग अनुपात में ख्याति द्वारा पुराने साझेदारों की क्षतिपूर्ति।**नोट्स**

प्रवेश पर मुख्य समस्या: नया साझेदार लाभ का एक हिस्सा पा जाता है और पुराने साझेदारों को उतना छोड़ना पड़ता है — भले ही लाभ बढ़ें, वह अतिरिक्त लाभ सबके सम्मिलित प्रयास से आता है, अतः छोड़े गए हिस्से के लिए पुराने साझेदार

क्षतिपूर्ति के अधिकारी हैं; यही क्षतिपूर्ति ख्याति के माध्यम से की जाती है।

त्याग अनुपात: ख्याति पुराने साझेदारों को उनके त्याग के बदले मिलती है, अतः वह उन्हें लाभ-त्याग अनुपात (पुराना हिस्सा – नया हिस्सा) में क्रेडिट होती है; नए साझेदार का हिस्सा पुराने साझेदार अपने पुराने लाभ-विभाजन अनुपात में त्याग सकते हैं (तब त्याग अनुपात = पुराना अनुपात), अथवा नया अनुपात विशेष रूप से तय होने पर भिन्न अनुपात में।

विषय 5: नए साझेदार के प्रवेश पर ख्याति (Goodwill) का लेखांकन व्यवहार

P1-C10-U10.2-T05 · Accounting Treatment of Goodwill in Case of Admission of a New Partner

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §2.5 को उदाहरण 1-4 सहित पढ़िए: क्रीत बनाम अन्तर्निहित ख्याति, तथा त्याग अनुपात में premium की entries।

नोट्स

केवल क्रीत ख्याति दर्ज होती है: ख्याति पुस्तकों में तभी दर्ज होती है जब उसके लिए धन अथवा धन-मूल्य में प्रतिफल दिया गया हो; प्रवेश पर ख्याति पुस्तकों में खड़ी नहीं की जा सकती — आने वाले साझेदार द्वारा लाया गया premium त्याग करने वाले पुराने साझेदारों को लाभ-त्याग अनुपात में क्रेडिट होता है (पुराना अनुपात – नया अनुपात; धनात्मक अन्तर = त्याग, ऋणात्मक = प्राप्ति)।

premium नकद में लाया गया हो: Bank/Cash A/c डेबिट (पूंजी + premium) / पुराने साझेदारों के Capital A/c क्रेडिट (premium त्याग अनुपात में) तथा नए साझेदार का Capital A/c क्रेडिट (पूंजी); यदि premium निजी रूप से विद्यमान साझेदारों को दिया गया हो तो फर्म की पुस्तकों में कोई entry नहीं होती।

premium न लाया गया हो: तब भी अन्तर्निहित ख्याति पुस्तकों में खड़ी नहीं की जाती — समायोजन पूंजी खातों से कीजिए: नए साझेदार के Capital A/c को उसके ख्याति-हिस्से से डेबिट कीजिए / त्याग करने वाले साझेदारों के Capital A/c त्याग अनुपात में क्रेडिट कीजिए; यदि केवल नए साझेदार का हिस्सा दिया हो तो पुराने साझेदार अपने पुराने लाभ-विभाजन अनुपात में त्याग करते हैं।

विषय 6: लाभ-विभाजन अनुपात में परिवर्तन पर ख्याति का लेखांकन व्यवहार

P1-C10-U10.2-T06 · Accounting Treatment of Goodwill in Case of Change in Profit Sharing Ratio

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §2.6 को Illustrations 7-8 सहित पढ़िए: लाभ पाने वाला साझेदार त्याग करने वाले साझेदार को पूंजी खातों के माध्यम से क्षतिपूर्ति देता है।

नोट्स

व्यवहार: लाभ-विभाजन अनुपात में परिवर्तन पर ख्याति का मूल्य निर्धारित किया जाता है और उसे लाभ-त्याग अनुपात के आधार पर साझेदारों के पूंजी खातों से समायोजित किया जाता है — लाभ पाने वाले साझेदार का Capital A/c डेबिट / त्याग करने वाले साझेदार का Capital A/c क्रेडिट, राशि = (प्राप्त अंश × ख्याति); जैसे समान साझेदार A, B, C का अनुपात 4:3:2 होने पर, ख्याति ₹90,000 — A को $\frac{1}{9}$ का लाभ और C को $\frac{1}{9}$ की हानि, अतः A's Capital डेबिट ₹10,000 / C's Capital क्रेडिट ₹10,000।

विषय 7: साझेदार की सेवानिवृत्ति अथवा मृत्यु पर ख्याति (Goodwill) का लेखांकन व्यवहार

P1-C10-U10.2-T07 · Accounting Treatment of Goodwill in Case of Retirement or Death of a Partner

पहले पढ़ें Sec 2.7 पढ़िए (आधार के रूप में Sec 2.4-2.5 भी): सेवानिवृत्ति/मृत्यु पर बने रहने वाले साझेदार निवर्तमान साझेदार को उसके ख्याति-हिस्से की क्षतिपूर्ति अपने प्राप्ति (gaining) अनुपात में देते हैं; ख्याति का मूल्यांकन सेवानिवृत्ति/मृत्यु की तिथि पर होता है और समायोजन पूंजी खातों से होता है, ख्याति खाता खोले बिना।

नोट्स

नियम (Sec 2.7): सेवानिवृत्ति पर बने रहने वाले साझेदारों को PSR में लाभ होता है, अतः वे निवर्तमान साझेदार को उसका ख्याति-हिस्सा अपने प्राप्ति अनुपात में देते हैं (प्राप्ति = नया हिस्सा – पुराना हिस्सा); मृत्यु की दशा में भी वे ही मृतक के उत्तराधिकारियों को देय हिस्सा वहन करते हैं; ख्याति का मूल्यांकन सेवानिवृत्ति/मृत्यु की तिथि पर होता है और समायोजन पूंजी खातों से — कोई ख्याति खाता नहीं खोला जाता।

आदर्श entry: बने रहने वाले साझेदारों के Capital A/c डेबिट (प्राप्ति अनुपात में) / निवर्तमान (अथवा मृत) साझेदार का Capital A/c क्रेडिट, राशि = उसका ख्याति-हिस्सा — जैसे समान साझेदार A, B, C, ख्याति ₹90,000, C सेवानिवृत्त: A डेबिट ₹15,000, B डेबिट ₹15,000, C क्रेडिट ₹30,000; यदि नया अनुपात भिन्न हो (3:4:3 में से A निवृत्त, B और C समान रूप से आगे) तो प्राप्ति साझेदारवार निकालिए (नया – पुराना: B $\frac{1}{2} - \frac{4}{10} = \frac{1}{10}$, C $\frac{1}{2} - \frac{3}{10} = \frac{2}{10}$) और ख्याति 1:2 में डेबिट कीजिए।

बहु-चरणीय प्रश्नों की जाँच: पुस्तकों में पहले से खड़ी ख्याति समायोजन से पूर्व तुरन्त अपलिखित कीजिए (पुराने अनुपात में); प्रत्येक अगले पुनर्गठन पर केवल ख्याति के मूल्य में हुए परिवर्तन को उस चरण के त्याग/प्राप्ति अनुपात में समायोजित कीजिए; लाभ पाने वालों के कुल डेबिट निवर्तमान/त्याग करने वाले साझेदार के क्रेडिट के बराबर होने चाहिए, और अन्तिम तुलन-पत्र में ख्याति परिसंपत्ति के रूप में कभी नहीं दिखनी चाहिए।

विश्लेषण (Analysis) मिश्रित आँकड़ों पर कार्य कीजिए · 1 प्रश्न

- समायोजन entry पर अधिकार कीजिए: लाभ पाने वाले साझेदारों के Capital A/c डेबिट (प्राप्ति अनुपात = नया हिस्सा – पुराना हिस्सा) To सेवानिवृत्त/मृत साझेदार का Capital A/c, राशि = उसका ख्याति-हिस्सा; पुस्तकों में विद्यमान ख्याति पहले पुराने अनुपात में अपलिखित करनी होगी।
- बहु-घटना वाले प्रश्नों का अभ्यास कीजिए जहाँ फर्म की संरचना एक से अधिक बार बदलती है (जैसे P द्वारा पहले Q और फिर R का प्रवेश, प्रत्येक तिथि पर ख्याति का पुनर्मूल्यांकन): प्रत्येक चरण पर त्याग/प्राप्ति अनुपात निकालिए और केवल ख्याति के मूल्य में हुए परिवर्तन को पूंजी खातों से समायोजित कीजिए।

- प्रत्येक चरण की जाँच कीजिए: लाभ पाने वालों के कुल डेबिट त्याग करने वाले/निवर्तमान साझेदार के क्रेडिट के बराबर हों; और अन्तिम तुलन-पत्र में ख्याति परिसंपत्ति के रूप में कभी न दिखे।

PQ 7.1 · PYQ 2025-Sep [3] (b) · व्यावहारिक · 8M · Pg 542

LEVEL II
विश्लेषण (Analysis)

कठिन

इकाई 10.3: नए साझेदार का प्रवेश

Admission of a New Partner

P1-C10-U10.3 · महत्त्व C · अध्याय में Rank 3 · श्रेणी A · अध्याय के 17.1% प्रश्न · 14 प्रश्न

विषय 1: परिचय — नए साझेदार का प्रवेश

P1-C10-U10.3-T01 · Introduction

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §3.1 पढ़िए: नए साझेदार के प्रवेश की तिथि पर अद्यतन तुलन-पत्र क्यों आवश्यक है।

नोट्स

प्रवेश का प्रयोजन: नया साझेदार फर्म के हित में लाया जाता है — या तो साझेदारी की पूंजी बढ़ाने के लिए, या फर्म के प्रबन्ध को सुदृढ़ करने के लिए।

प्रवेश पर की जाने वाली entries: प्रवेश की तिथि पर परिसंपत्तियों के मूल्य में हुई सभी वृद्धि/कमी, अनभिलिखित अथवा अदत्त देयताएँ, तथा उपचित किन्तु अनभिलिखित लाभ/हानि — सब खातों में लाइए, ताकि पुराने साझेदारों के पूंजी खाते सही आँकड़े दिखाएँ और उसके बाद के लाभ/हानि आने वाला साझेदार पुराने साझेदारों के साथ स्वतः बाँट सके; ख्याति का मूल्यांकन भी कीजिए और उसे खातों में लाइए (इकाई 2 के अनुसार)।

विषय 2: पुनर्मूल्यांकन खाता अथवा लाभ-हानि समायोजन खाता

P1-C10-U10.3-T02 · Revaluation Account or Profit and Loss Adjustment Account

पहले पढ़ें Sec 3.2 पढ़िए: प्रवेश पर पुनर्मूल्यांकन खाते (जिसे Profit and Loss Adjustment Account भी कहते हैं) का उद्देश्य और entries, संशोधित मूल्य न दिखाने की दशा में Memorandum Revaluation Account, तथा दोनों का अन्तर।

नोट्स

उद्देश्य: प्रवेश पर परिसंपत्तियों का पुनर्मूल्यांकन और देयताओं का पुनराकलन Revaluation Account से किया जाता है — जिसे Profit and Loss Adjustment Account भी कहते हैं — ताकि तुलन-पत्र अद्यतन हो और पुराने साझेदारों की पूंजी उपचित लाभ/हानि दिखाए; परिसंपत्तियों में कमी और देयताओं में वृद्धि डेबिट कीजिए, परिसंपत्तियों में वृद्धि और

देयताओं में कमी क्रेडिट कीजिए; शेष (लाभ/हानि) पुराने साझेदारों को पुराने PSR में जाता है (कभी भी सभी साझेदारों को नए अनुपात में नहीं), और परिसंपत्तियाँ/देयताएँ नए तुलन-पत्र में संशोधित आँकड़ों पर आती हैं।

आदर्श entries: Revaluation A/c डेबिट / परिसंपत्तियाँ क्रेडिट (कमी) तथा देयताएँ क्रेडिट (वृद्धि); परिसंपत्तियाँ डेबिट (वृद्धि) तथा देयताएँ डेबिट (कमी) / Revaluation A/c क्रेडिट; लाभ: Revaluation A/c डेबिट / पुराने साझेदारों के Capital A/c क्रेडिट (पुराने अनुपात में); हानि: पुराने साझेदारों के Capital A/c डेबिट / Revaluation A/c क्रेडिट।

Memorandum Revaluation A/c (जहाँ संशोधित मूल्य नहीं दिखाने): दो भाग — पहला भाग सामान्य रीति से पुनर्मूल्यांकन दर्ज करता है (परिसंपत्ति/देयता खातों में कोई परिवर्तन नहीं), जिसका परिणाम पुराने साझेदारों को पुराने अनुपात में; दूसरा भाग पहले भाग की entries उलट देता है ताकि पुस्तक-मूल्य अपरिवर्तित रहें, और उसका परिणाम नए साझेदार सहित सभी साझेदारों को नए अनुपात में जाता है; पहले भाग का लाभ अनिवार्यतः दूसरे भाग में उतनी ही हानि बनता है (और इसके विपरीत भी)।

Revaluation बनाम Memorandum: Revaluation A/c — परिसंपत्तियाँ/देयताएँ पुनर्मूल्यांकित आँकड़ों पर आती हैं, एक ही खाता, शुद्ध परिणाम पुराने साझेदारों को पुराने अनुपात में; Memorandum — नए तुलन-पत्र में पुराने आँकड़े ही रहते हैं, दो भाग, पहला भाग पुराने साझेदारों को (पुराने अनुपात में) और दूसरा (उलटने वाला) भाग सभी साझेदारों को (नए अनुपात में); वैकल्पिक रूप से ये परिवर्तन पुराने पुस्तक-मूल्यों पर सीधे पूंजी खातों से भी समायोजित किए जा सकते हैं।

पूर्ण प्रश्न का अभ्यास: सामान्य समायोजन — परिसंपत्तियों में वृद्धि/मूल्यहास, संदिग्ध ऋणों का प्रावधान, बकाया/अनभिलिखित देयताएँ, अनभिलिखित परिसंपत्तियाँ, joint life policy, निवेश; इनके साथ ख्याति का समायोजन पूंजी खातों से त्याग अनुपात में (जब premium नकद न लाया गया हो), संचितियों का हस्तान्तरण पुराने अनुपात में, फिर Capital A/c, Cash/Bank A/c और नया तुलन-पत्र — अन्त में पूंजी को नए साझेदार की पूंजी के आधार पर नए PSR के अनुपात में लाया जा सकता है, और अधिक/कम राशि नकद अथवा चालू खातों से निपटाई जाती है (LLP में प्रवेश पर भी यही तकनीक)।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 3 प्रश्न

- बार-बार पूछा जाने वाला सत्य/असत्य जाल: प्रवेश पर पुनर्मूल्यांकन का लाभ/हानि पुराने साझेदारों को पुराने लाभ-विभाजन अनुपात में जाता है — 'सभी साझेदारों को नए अनुपात में हस्तान्तरित' असत्य है।
- 'Revaluation Account को Profit and Loss Adjustment Account भी कहा जाता है' — सत्य; कारण भी जानिए: यह परिसंपत्तियों/देयताओं के मूल्यों में परिवर्तन दर्ज करके पुराने साझेदारों की पूंजी समायोजित करता है।
- Memorandum Revaluation Account समझाइए: पहला भाग पुराने साझेदारों को पुराने अनुपात में, उलटने वाला दूसरा भाग नए सहित सभी साझेदारों को नए अनुपात में, और पुस्तक-मूल्य अपरिवर्तित।

TQ 2.1 · PYQ 2020-Nov [1] (a) (i) {C} · सही/गलत · 2M · Pg 546	4x पूछा गया	LEVEL I समझ (Understanding)	सरल
TQ 2.2 · PYQ 2024-Jun [1] (a) (vi) {C} · सही/गलत · 2M · Pg 547		LEVEL I समझ (Understanding)	सरल
TQ 2.3 · MTP 2025-Jan S2 [1] (a) (iv) · सही/गलत · 2M · Pg 547		LEVEL I समझ (Understanding)	

अनुप्रयोग (Application) प्रश्न हल कीजिए · 5 प्रश्न

- Master end-to-end प्रवेश problems: पुनर्मूल्यांकन खाता, Partners' Capital Accounts, Cash/Bank A/c and
- Combine पुनर्मूल्यांकन के साथ ख्याति (Goodwill) adjustment through पूंजी खाते में त्याग अनुपात (new
- अभ्यास करें पूंजी adjustment requirements: making पूंजीs proportionate को नया PSR based पर new
- साझेदार's पूंजी, के साथ excess/shorts भी settled through नकद अथवा current खाते.

PQ 2.1 · RTP 2023-Jun [15] · व्यावहारिक · Pg 547 3× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 2.2 · PYQ 2024-Jun [4] (a) · व्यावहारिक · 12M · Pg 550 2× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 2.4 · PYQ 2026-Jan [3] (b) · व्यावहारिक · 10M · Pg 556	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 2.5 · PYQ 2026-May [3] (a) · व्यावहारिक · 10M · Pg 559	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 2.3 · MTP 2025-Jan S2 [4] (a) · व्यावहारिक · 10M · Pg 553 6× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	

संश्लेषण (Synthesis) आद्योपान्त तैयार कीजिए — इस संस्करण में कोई प्रश्न नहीं

- प्रवेश के आद्योपान्त प्रश्नों पर अधिकार कीजिए: Revaluation A/c, साझेदारों के पूंजी खाते, Cash/Bank A/c और नया तुलन-पत्र, सामान्य समायोजनों सहित — परिसंपत्तियों में वृद्धि/मूल्यहास, संदिग्ध ऋणों का प्रावधान, बकाया/अनभिलिखित देयताएँ, अनभिलिखित परिसंपत्तियाँ, joint life policy और निवेश।
- पुनर्मूल्यांकन के साथ ख्याति का समायोजन पूंजी खातों से त्याग अनुपात में (जब नया साझेदार premium अथवा ख्याति नकद न लाए) तथा संचितियों का हस्तान्तरण पुराने अनुपात में — दोनों को एक साथ जोड़िए।
- पूंजी समायोजन की माँग का अभ्यास कीजिए: नए साझेदार की पूंजी के आधार पर सभी पूंजी को नए PSR के अनुपात में लाना, और अधिक/कम राशि नकद अथवा चालू खातों से निपटान।
- वे रूप भी कीजिए जहाँ पिछले लाभ गलत अनुपात में बँटे हों अथवा खाते नकद आधार पर रखे गए हों और प्रवेश से पहले सुधार (उपार्जन आधार पर समायोजन) आवश्यक हो, तथा LLP में प्रवेश — तकनीक बिल्कुल वही रहती है।

विषय 3: तुलन-पत्र में आरक्षित निधियाँ

P1-C10-U10.3-T03 · Reserves in the Balance Sheet

पहले पढ़ें Sec 3.3 पढ़िए: प्रवेश पर तुलन-पत्र में दिखने वाली General Reserve, P&L खाते का क्रेडिट शेष अथवा अन्य संचित लाभ, अन्य समायोजनों से पहले पुराने साझेदारों के पूंजी खातों में पुराने लाभ-विभाजन अनुपात में हस्तान्तरित करने चाहिए।

नोट्स

नियम (Sec 3.3): जब भी नया साझेदार प्रवेश करे, तुलन-पत्र में दिखने वाली कोई भी संचिति आदि (General Reserve, P&L A/c का क्रेडिट शेष, अन्य संचित लाभ) पुराने साझेदारों के Capital A/c में पुराने PSR में हस्तान्तरित करनी होगी — **entry:** Reserves/P&L A/c डेबिट / पुराने साझेदारों के Capital A/c क्रेडिट (पुराने अनुपात में); जब

तक स्पष्ट रूप से अपेक्षित न हो, संचितियों को नई फर्म के तुलन-पत्र में मत ले जाइए।

संचित हानियाँ: P&L A/c का डेबिट शेष भी इसी प्रकार पुराने साझेदारों के पूंजी खातों में पुराने अनुपात में हस्तान्तरित (डेबिट) किया जाता है।

पूर्ण प्रश्नों का क्रम: संचितियों का हस्तान्तरण (पुराने अनुपात में) → परिसंपत्ति/देयता परिवर्तनों के लिए Revaluation A/c (पुराने अनुपात में) → ख्याति का समायोजन (त्याग अनुपात में) → नए साझेदार द्वारा पूंजी लाना → Capital A/c और नया तुलन-पत्र; दी गई प्रतिशत दर पर संदिग्ध ऋणों का प्रावधान, भूमि एवं भवन/plant/माल-सूची का पुनर्मूल्यांकन, बकाया देयताएँ, तथा वह नया PSR जहाँ आने वाला साझेदार अपना हिस्सा पुराने साझेदारों से लेता है — इन सबका अभ्यास कीजिए, और अन्तिम तुलन-पत्र मिलना चाहिए।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 1 प्रश्न

PQ 3.1 · PYQ 2021-Dec [4] (b) · व्यावहारिक · 10M · Pg 562 **3× पूछा गया**

LEVEL I
समझ (Understanding)

मध्यम

अनुप्रयोग (Application) प्रश्न हल कीजिए · 3 प्रश्न

- A/c डेबिट To पुराना साझेदार' पूंजी A/cs में पुराना अनुपात; never leave आरक्षित निधिस में the नया फर्म's तुलन-पत्र unless expressly required.
- changes (पुराना अनुपात) → ख्याति (Goodwill) adjustment (त्याग अनुपात) → नया साझेदार brings पूंजी → Capital Accounts और नया तुलन-पत्र.
- likewise डेबिटEd को पुराना साझेदार में पुराना अनुपात.

PQ 3.2 · PYQ 2024-Sep [3] (b) · व्यावहारिक · 10M · Pg 564 **3× पूछा गया**

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

कठिन

PQ 3.3 · PYQ 2025-May [3] (b) · व्यावहारिक · 8M · Pg 567 **2× पूछा गया**

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

कठिन

PQ 3.4 · PYQ 2025-Sep [4] (a) · व्यावहारिक · 12M · Pg 571

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

कठिन

संश्लेषण (Synthesis) आद्योपान्त तैयार कीजिए — इस संस्करण में कोई प्रश्न नहीं

- उस पूरे प्रवेश-प्रश्न पर अधिकार कीजिए जिसमें General Reserve/P&L शेष दिया हो: entry — Reserve/P&L A/c डेबिट To पुराने साझेदारों के Capital A/c पुराने अनुपात में; और जब तक स्पष्ट रूप से अपेक्षित न हो, संचितियों को नई फर्म के तुलन-पत्र में कभी न छोड़िए।
- पूरी श्रृंखला का आद्योपान्त अभ्यास कीजिए: संचितियों का हस्तान्तरण (पुराने अनुपात में) → परिसंपत्ति/देयता परिवर्तनों के लिए Revaluation A/c (पुराने अनुपात में) → ख्याति का समायोजन (त्याग अनुपात में) → नए साझेदार द्वारा पूंजी लाना → पूंजी खाते और नया तुलन-पत्र।
- अभ्यास योग्य सामान्य समायोजन: दी गई प्रतिशत दर पर संदिग्ध ऋणों का प्रावधान, भूमि एवं भवन/plant का पुनर्मूल्यांकन, बकाया देयताएँ, तथा नया PSR निकालना जब आने वाला साझेदार अपना हिस्सा पुराने साझेदारों से लेता है।

- शुद्धता की जाँच: सभी हस्तान्तरणों के बाद तुलन-पत्र मिलना चाहिए; और संचित हानियाँ (P&L का डेबिट शेष) भी पुराने साझेदारों को पुराने अनुपात में डेबिट होती हैं।

विषय 4: नए लाभ-विभाजन अनुपात की गणना

P1-C10-U10.3-T04 · Computation of New Profit Sharing Ratio

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §3.4 की Case I-V हल किए गए उदाहरणों सहित पढ़िए: नए साझेदार को दिए गए हिस्से से नया अनुपात निकालना।

नोट्स

डिफ़ॉल्ट नियम: विपरीत समझौते के अभाव में पुराने साझेदार आपस में पुराने अनुपात में ही बने रहते हैं — नए साझेदार का हिस्सा 1 में से घटाइए और शेष को पुराने साझेदारों में पुराने अनुपात में बाँटिए; जैसे $A:B = 3:2$, C को $1/5$ पर प्रवेश → $A = 4/5 \times 3/5 = 12/25$, $B = 8/25$, नया अनुपात $12:8:5$ ।

अन्य दशाएँ: (II) नया साझेदार पुराने साझेदारों से दिए गए अनुपात में हिस्सा खरीदता है — प्रत्येक साझेदार के पुराने हिस्से में से उसका दिया हुआ भाग घटाइए; (III) पुराने साझेदार अपने ही हिस्से का एक अंश छोड़ते हैं — नया हिस्सा = पुराना हिस्सा – छोड़ा गया अंश, और C का हिस्सा = छोड़े गए अंशों का योग; (IV) पूरा हिस्सा किसी एक साझेदार से लिया गया हो — तब केवल उसी का हिस्सा घटता है; (V) हिस्सा पुराने साझेदारों से किसी निश्चित अनुपात में लिया गया हो।

विषय 5: अप्रत्यक्ष ख्याति (Hidden Goodwill)

P1-C10-U10.3-T05 · Hidden Goodwill

पहले पढ़ें Sec 3.5 पढ़िए: जब ख्याति का मूल्य न दिया हो तो उसे इस प्रकार निकालिए — (आने वाले साझेदार की पूंजी × उसके हिस्से का व्युत्क्रम) में से (नए सहित सभी साझेदारों की कुल पूंजी तथा संचित लाभ/संचितियाँ) घटाइए; इस प्रकार निकली ख्याति पूंजी खातों से त्याग अनुपात में समायोजित होती है।

नोट्स

निष्कर्ष का सूत्र (Sec 3.5): जब ख्याति का मूल्य न दिया हो — छिपी ख्याति = (आने वाले साझेदार की पूंजी × उसके हिस्से का व्युत्क्रम) – (पुराने साझेदारों की कुल पूंजी + शुद्ध संचित लाभ एवं संचितियाँ, यदि कोई हों + आने वाले साझेदार द्वारा लाई गई पूंजी)।

हल किया गया उदाहरण: A और B, प्रत्येक की पूंजी ₹7,000, C को $1/4$ हिस्से पर ₹8,000 की पूंजी के साथ प्रवेश ⇒ निहित फर्म पूंजी = $8,000 \times 4/1 = ₹32,000$; छिपी ख्याति = $32,000 - (7,000 + 7,000 + 8,000) = ₹10,000$ ।

समायोजन entry (ख्याति खाता नहीं खोला जाता): नए साझेदार का Capital A/c उसके ख्याति-हिस्से से डेबिट / पुराने (त्याग करने वाले) साझेदारों के Capital A/c त्याग अनुपात में क्रेडिट — जैसे C's Capital A/c डेबिट ₹2,500 ($₹10,000 \times 1/4$) / A क्रेडिट ₹1,250, B क्रेडिट ₹1,250।

मिश्रित प्रश्न और जाँच: छिपी ख्याति निकालते समय संचित लाभ/संचितियाँ भी घटाई जाने वाली राशि में सम्मिलित कीजिए; इसे संचितियों के हस्तान्तरण, परिसंपत्ति/देयता के पुनर्मूल्यांकन तथा नए अनुपात में पूंजी के पुनर्विन्यास के साथ जोड़िए; और जाँचिए कि नई फर्म की कुल पूंजी तथा देयताएँ पुनर्मूल्यांकित परिसंपत्तियों के बराबर हों और अन्तिम तुलन-पत्र में ख्याति कहीं न दिखे।

अनुप्रयोग (Application) प्रश्न हल कीजिए • 2 प्रश्न

- Master full-length प्रवेश problems जहाँ ख्याति (Goodwill) अवश्य first be INFERRED से the नया साझेदार's
- Pass the ख्याति (Goodwill) adjustment के बिना raising a ख्याति (Goodwill) खाता: नया साझेदार's पूंजी A/c डेबिट To old
- closing तुलन-पत्र.
- CHAPTER 10
- साझेदारी एवं LLP खाते
- अध्याय 10 • साझेदारी एवं LLP खाते
- P1-C10-U10.4 • Rank 5 in chapter • Category C • 12.2% of chapter questions • 10 questions

PQ 5.1 • PYQ 2006-May [4] • व्यावहारिक • 15M • Pg 574

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

कठिन

PQ 5.2 • MTP 2024-Jul [4] (a) • व्यावहारिक • 12M • Pg 578 **5x पूछा गया**

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

कठिन

संश्लेषण (Synthesis) आद्योपान्त तैयार कीजिए — इस संस्करण में कोई प्रश्न नहीं

- उन पूर्ण प्रवेश-प्रश्नों पर अधिकार कीजिए जहाँ ख्याति पहले नए साझेदार की पूंजी और लाभ-हिस्से से निकालनी पड़ती है (जैसे 1/4 हिस्से के लिए ₹18,000 की पूंजी से कुल पूंजी ₹72,000 निकलती है; वास्तविक कुल पूंजी की कमी = छिपी ख्याति), और फिर Revaluation A/c, Capital A/c तथा तुलन-पत्र पूरा कीजिए।
- ख्याति का समायोजन बिना ख्याति खाता खोले कीजिए: नए साझेदार का Capital A/c डेबिट To पुराने साझेदारों के Capital A/c (त्याग अनुपात में), राशि = निकाली गई ख्याति में उसका हिस्सा।
- छिपी ख्याति को संचितियों के हस्तान्तरण, परिसंपत्ति/देयता के पुनर्मूल्यांकन तथा नए अनुपात में पूंजी के पुनर्विन्यास के साथ जोड़कर अभ्यास कीजिए — छिपी ख्याति निकालते समय संचित लाभ और संचितियाँ भी घटाई जाने वाली राशि में लीजिए।
- जाँच कीजिए: नई फर्म की कुल पूंजी तथा देयताएँ पुनर्मूल्यांकित परिसंपत्तियों के बराबर हों; और अन्तिम तुलन-पत्र में ख्याति कहीं न दिखे।

इकाई 10.4: साझेदार की सेवानिवृत्ति

Retirement of a Partner

P1-C10-U10.4 • महत्त्व D • अध्याय में Rank 5 • श्रेणी C • अध्याय के 12.2% प्रश्न • 10 प्रश्न

विषय 1: परिचय — साझेदार की सेवानिवृत्ति

P1-C10-U10.4-T01 · Introduction

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §4.1 पढ़िए: साझेदार की सेवानिवृत्ति पर किए जाने वाले पुनर्समायोजनों का क्रम।

नोट्स

सेवानिवृत्ति: वृद्धावस्था, रुग्णता आदि के कारण कोई साझेदार सेवानिवृत्त हो सकता है; व्यवसाय सामान्यतः समाप्त नहीं होता — बने रहने वाले साझेदार उसे चलाते हैं, और चूँकि लाभ-विभाजन अनुपात में उन्हें लाभ होता है, वे ही निवर्तमान साझेदार का दावा चुकाने की व्यवस्था करते हैं।

पुनर्समायोजन का क्रम: परिसंपत्तियों और देयताओं का पुनर्मूल्यांकन, ख्याति का मूल्यांकन, joint life policy का समर्पण मूल्य (यदि हो) ध्यान में लेना, पुनर्मूल्यांकन का लाभ तथा संचितियाँ साझेदारों के पूंजी/चालू खातों में हस्तान्तरित करना, और अन्त में निवर्तमान साझेदार को देय राशि निर्धारित कर उसका भुगतान करना।

विषय 2: लाभ-प्राप्ति अनुपात (Gaining Ratio) की गणना

P1-C10-U10.4-T02 · Calculation of Gaining Ratio

पहले पढ़ें इकाई 4 (साझेदार की सेवानिवृत्ति) का Section 4.2 पढ़िए: सभी दशाओं में नया लाभ-विभाजन अनुपात तथा प्राप्ति अनुपात निकालना — नया अनुपात दिया हो, न दिया हो, प्राप्ति निर्दिष्ट हो, अथवा निवर्तमान साझेदार का हिस्सा किसी दिए गए अनुपात में लिया गया हो।

नोट्स

मूल नियम: सेवानिवृत्ति पर बने रहने वाले साझेदार निवर्तमान साझेदार का हिस्सा ले लेते हैं, अतः उन्हें सदैव लाभ होता है; प्राप्ति अनुपात = नया हिस्सा - पुराना हिस्सा, तथा नया हिस्सा = पुराना हिस्सा + प्राप्ति — घटाने से पहले सभी हिस्सों को समान हर पर लाइए; यह प्रवेश पर प्रयुक्त त्याग अनुपात (पुराना - नया) का ठीक दर्पण-प्रतिबिम्ब है।

Study Material की चार दशाएँ: (i) नया अनुपात दिया हो — प्राप्ति = नया - पुराना; (ii) नया अनुपात न दिया हो — शेष साझेदार अपने पुराने पारस्परिक अनुपात में ही चलते हैं, अतः प्राप्ति अनुपात = उनके बीच का पुराना अनुपात (निवर्तमान साझेदार का हिस्सा हटा दीजिए, जैसे 3:2:1 में से Bhaskar निवृत्त → 3:1); (iii) प्राप्ति निर्दिष्ट हो — नया = पुराना + प्राप्ति ($2/6+2/6=4/6$, $1/6+1/6=2/6 \rightarrow 2:1$); (iv) निवर्तमान साझेदार का हिस्सा किसी बताए अनुपात में लिया गया हो — प्राप्ति = उसका हिस्सा × बताया गया अंश (Tasha का $2/6$ Deepu:Honey ने 2:1 में लिया → प्राप्ति $4/18$ और $2/18$, नया अनुपात 13:5)।

हल किया गया उदाहरण (SM 4.2): A, B, C का अनुपात 5:3:2; B निवृत्त, A और C 3:2 पर सहमत → A की प्राप्ति $3/5 - 5/10 = 1/10$, C की प्राप्ति $2/5 - 2/10 = 2/10$, प्राप्ति अनुपात 1:2; यदि वे 5:2 पर ही चलते तो प्राप्त हिस्सा उनके

बीच पुराने अनुपात में बँटता।

प्राप्ति अनुपात का उपयोग: निवर्तमान साझेदार को उसका ख्याति-हिस्सा क्रेडिट करने के लिए बने रहने वाले साझेदारों के पूंजी खाते प्राप्ति अनुपात में डेबिट किए जाते हैं (ख्याति पुस्तकों में खड़ी नहीं की जाती); यही अनुपात तब भी प्रयोग होता है जब पुनर्मूल्यांकित आँकड़े/संचिति नए तुलन-पत्र में नहीं दिखाने हों — निवर्तमान साझेदार को देय शुद्ध राशि लाभ पाने वाले साझेदार प्राप्ति अनुपात में वहन करते हैं।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 1 प्रश्न

- इस सत्य/असत्य बिंदु को कारण सहित सिद्ध कर सकें कि साझेदार की सेवानिवृत्ति पर बने रहने वाले साझेदारों को सदैव लाभ होता है — निवर्तमान साझेदार का हिस्सा वे ही ले लेते हैं, जिससे उनका लाभ-हिस्सा बढ़ जाता है।
- समझाइए कि जब कोई नया अनुपात तय न हो तो शेष साझेदार भावी लाभ (और प्राप्ति) अपने पुराने पारस्परिक अनुपात में ही क्यों बाँटते हैं।
- प्राप्ति अनुपात (जिससे ख्याति के लिए बने रहने वाले साझेदारों को डेबिट किया जाता है) और प्रवेश के त्याग अनुपात में अन्तर कीजिए।

TQ 2.1 · MTP 2022-Nov S2 [1] (a) (v) {C} · सही/गलत · 2M · Pg 582 **3x पूछा** **LEVEL I**
गया समझ (Understanding)

अनुप्रयोग (Application) प्रक्रिया का अभ्यास कीजिए — इस संस्करण में कोई प्रश्न नहीं

- अभ्यास कीजिए: प्राप्ति अनुपात = नया हिस्सा – पुराना हिस्सा; नया हिस्सा = पुराना हिस्सा + निवर्तमान साझेदार से प्राप्त हिस्सा।
- Study Material की तालिका की प्रत्येक दशा हल कीजिए: (i) नया अनुपात दिया हो, (ii) नया अनुपात न दिया हो (पुराना अनुपात ही चलता है), (iii) प्राप्ति अनुपात दिया हो (नया = पुराना + प्राप्ति), (iv) निवर्तमान साझेदार का हिस्सा किसी निर्दिष्ट अनुपात में छोड़ा गया हो (जैसे B अपना हिस्सा A और C को मूल अनुपात में बनाम 2:1 जैसे बताए अनुपात में दे)।
- भिन्नों का काम सावधानी से कीजिए — घटाने से पहले सभी हिस्सों को समान हर पर लाइए।

विषय 3: साझेदार की सेवानिवृत्ति पर परिसंपत्तियों एवं देयताओं का पुनर्मूल्यांकन

P1-C10-U10.4-T03 · Revaluation of Assets and Liabilities on Retirement of a Partner

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §4.3 पढ़िए: Revaluation A/c की entries तथा वह विकल्प जब पुनर्मूल्यांकित आँकड़े तुलन-पत्र में नहीं दिखाने हों।

नोट्स

Revaluation A/c: पुनर्मूल्यांकन का लाभ अथवा हानि निवर्तमान साझेदार सहित सभी साझेदारों में विद्यमान लाभ-विभाजन अनुपात में बाँटी जाती है — लाभ के लिए “Revaluation A/c डेबिट / साझेदारों के Capital A/c क्रेडिट” (हानि में इसके विपरीत); यह खाता (जिसे Profit and Loss Adjustment A/c भी कहते हैं) इसी हस्तान्तरण से स्वतः

बन्द हो जाता है।

यदि पुनर्मूल्यांकित आँकड़े नहीं दिखाने: एक ही शुद्ध entry कीजिए — बने रहने वाले साझेदारों के Capital A/c डेबिट (प्राप्ति अनुपात में) / निवर्तमान साझेदार का Capital A/c क्रेडिट, राशि = उसका पुनर्मूल्यांकन-हिस्सा; अथवा पुनर्मूल्यांकन पुराने अनुपात में दर्ज करके नए अनुपात में उसे उलट दीजिए (दो-entry पद्धति) — तब पृथक Revaluation A/c की आवश्यकता नहीं; Memorandum Revaluation A/c भी प्रयोग किया जा सकता है।

विषय 4: संचय (Reserves)

P1-C10-U10.4-T04 · Reserves

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §4.4 को A-B-C तथा X-Y-Z के उदाहरणों सहित पढ़िए: सेवानिवृत्ति पर अवितरित संचितियों का हस्तान्तरण।

नोट्स

नियम: तुलन-पत्र में पड़ा अवितरित लाभ/संचिति सभी साझेदारों के Capital A/c में पुराने लाभ-विभाजन अनुपात में क्रेडिट किया जाता है ("Reserve A/c डेबिट / साझेदारों के Capital A/c क्रेडिट"); वैकल्पिक रूप से केवल निवर्तमान साझेदार का हिस्सा उसके Capital A/c में हस्तान्तरित किया जा सकता है — किन्तु यह तभी चलेगा जब बने रहने वाले साझेदारों का पारस्परिक अनुपात अपरिवर्तित हो।

अनुपात बदल जाए तो: यदि बने रहने वाले साझेदार नए पारस्परिक अनुपात में बाँटते हैं (अर्थात् प्राप्ति अनुपात भिन्न है), तो पूरी संचिति पुराने अनुपात में बाँटनी होगी; और यदि वे संचिति को तुलन-पत्र में बनाए रखना चाहें तो समायोजन कीजिए — बने रहने वाले साझेदारों के Capital A/c प्राप्ति अनुपात में डेबिट / निवर्तमान साझेदार का Capital A/c उसके संचिति-हिस्से से क्रेडिट।

विषय 5: सेवानिवृत्त साझेदार को अंतिम भुगतान

P1-C10-U10.4-T05 · Final Payment to a Retiring Partner

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §4.5 पढ़िए: निवर्तमान साझेदार का दावा निर्धारित करने वाले समायोजन तथा भुगतान की रीतियाँ।

नोट्स

दावा: (i) संचिति का हस्तान्तरण, (ii) ख्याति का हस्तान्तरण तथा (iii) पुनर्मूल्यांकन का लाभ/हानि — इन सबके समायोजन के बाद निवर्तमान साझेदार के Capital A/c का क्रेडिट शेष ही देय राशि है; पूर्ण भुगतान — "Retiring Partner's Capital A/c डेबिट / Bank A/c क्रेडिट"; कुछ राशि ऋण के रूप में रखने पर — "Retiring Partner's

Capital A/c डेबिट / Retiring Partner's Loan A/c क्रेडिट तथा Bank A/c क्रेडिट"।

समझौते के अनुसार रीतियाँ: (a) किस्तों में भुगतान, जहाँ बकाया शेष पर ब्याज निवर्तमान साझेदार के ऋण के रूप में लगे; (b) राशि को फर्म को दिया गया ऋण मानना, जिस पर निश्चित ब्याज अथवा लाभ का हिस्सा देय हो; (c) निवृत्त साझेदार को आजीवन अथवा सहमत वर्षों तक/किसी आश्रित के जीवनकाल तक annuity देना।

विषय 6: साझेदार के ऋण का किस्तों में भुगतान

P1-C10-U10.4-T06 · Paying a Partner's Loan in Instalment

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें \$4.6 को ₹30,000 वाले ऋण के उदाहरण तथा Retiring Partner's Loan Account सहित पढ़िए।

नोट्स

विधि: ऋण को समान भागों में बाँटिए; प्रत्येक भुगतान = ऋण की समान किस्त + उस अवधि का बकाया शेष पर ब्याज; जैसे ₹30,000 का ऋण 4 वार्षिक किस्तों में 6% पर — पहले वर्ष ₹7,500 + ₹1,800 = ₹9,300, शेष ₹22,500; दूसरे वर्ष ₹7,500 + ₹1,350 = ₹8,850, और इसी प्रकार आगे; Retiring Partner's Loan A/c में Capital A/c से हस्तान्तरण तथा प्रतिवर्ष का ब्याज क्रेडिट होता है, और चुकाई गई नकद राशि तथा शेष c/d डेबिट।

विषय 7: संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी (Joint Life Policy)

P1-C10-U10.4-T07 · Joint Life Policy

पहले पढ़ें Section 4.7 पढ़िए: JLP premium के तीन लेखांकन व्यवहार — (1) premium को व्यय मानना, (2) premium को परिसंपत्ति मानना (policy समर्पण मूल्य पर), (3) Joint Life Policy Reserve पद्धति — तथा सेवानिवृत्ति पर समर्पण मूल्य का व्यवहार (Illustrations 7-9)।

नोट्स

JLP (SM): फर्म सभी साझेदारों के जीवन पर policy लेती है, premium चुकाती है, और policy की राशि किसी साझेदार की मृत्यु अथवा परिपक्वता — जो पहले हो — पर फर्म को देय होती है; उद्देश्य यह है कि मृत साझेदार के विधिक प्रतिनिधियों अथवा निवर्तमान साझेदार को बड़ी राशि चुकाने की वित्तीय कठिनाई कम हो।

पद्धति 1 — premium को व्यय मानना: JLP Insurance Premium डेबिट / Bank क्रेडिट, फिर प्रतिवर्ष P&L डेबिट / JLP Premium क्रेडिट; प्राप्त पूरी राशि (सेवानिवृत्ति पर समर्पण मूल्य) लाभ है — Bank डेबिट / निवर्तमान साझेदार सहित सभी साझेदारों के Capital A/c पुराने अनुपात में क्रेडिट।

पद्धति 2 — premium को परिसंपत्ति मानना: JLP A/c डेबिट / Bank क्रेडिट; वर्षान्त पर पुस्तक शेष का समर्पण मूल्य से अधिक भाग P&L में अपलिखित कीजिए, जिससे JLP समर्पण मूल्य पर ही रहे; वसूली पर केवल समर्पण मूल्य से

अधिक राशि लाभ है, जो लाभ-विभाजन अनुपात में पूंजी खातों में क्रेडिट होती है।

पद्धति 3 — JLP Reserve: premium से JLP A/c डेबिट; premium के बराबर राशि P&L Appropriation से JLP Reserve में हस्तान्तरित; और Reserve को डेबिट करके JLP को समर्पण मूल्य पर लाया जाता है — इस प्रकार JLP A/c (परिसंपत्ति) तथा JLP Reserve (देयता) दोनों समर्पण मूल्य पर दिखते हैं; सेवानिवृत्ति/मृत्यु पर पहले Reserve को JLP A/c में हस्तान्तरित कीजिए, फिर शेष साझेदारों के Capital A/c में।

परीक्षा का प्रारूप (III. 7-9): policy ₹50,000, premium ₹3,000 वार्षिक, समर्पण मूल्य 2018 शून्य, 2019 ₹900, 2020 ₹2,000, 2021 ₹3,600; Black (2/10) 2022 में निवृत्त — premium पद्धति: प्राप्त ₹3,600, Red:White:Black को 5:3:2 में क्रेडिट (1,800:1,080:720); समर्पण-मूल्य पद्धति: JLP पहले ही ₹3,600 पर है, अतः Bank डेबिट / JLP क्रेडिट, कोई लाभ नहीं; और यदि समर्पण मूल्य तुलन-पत्र में दिखाए गए JLP से अधिक हो तो केवल अधिक राशि Revaluation A/c में जाती है।

अनुप्रयोग (Application) प्रक्रिया का अभ्यास कीजिए · 1 प्रश्न

- तीनों पद्धतियों में ledger खातों का अभ्यास कीजिए: premium P&L पर प्रभारित; JLP A/c समर्पण मूल्य पर रखा गया (premium में से समर्पण मूल्य की वृद्धि से अधिक भाग P&L में अपलिखित); तथा JLP A/c के साथ JLP Reserve A/c (दोनों समर्पण मूल्य पर दिखाए गए)।
- सेवानिवृत्ति पर समर्पण मूल्य (अथवा उसकी वृद्धि) निवर्तमान साझेदार सहित सभी साझेदारों को पुराने लाभ-विभाजन अनुपात में क्रेडिट कीजिए; reserve पद्धति में पहले JLP Reserve को JLP A/c में हस्तान्तरित कीजिए।
- परीक्षा के प्रारूप का अभ्यास कीजिए (जैसे policy ₹50,000, वार्षिक premium ₹3,000, वर्षवार समर्पण मूल्य): JLP/Premium खाते वर्ष-दर-वर्ष बनाइए, फिर सेवानिवृत्ति का समायोजन कीजिए।

PQ 7.1 · PYQ 2021-Jul [5] (b) (i) · व्यावहारिक · 5M · Pg 583 5× पूछा गया

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

मध्यम

विषय 8: पृथक जीवन बीमा पॉलिसी

P1-C10-U10.4-T08 · Separate Life Policy

पहले पढ़ें Section 4.8 पढ़िए: जहाँ प्रत्येक साझेदार के जीवन पर पृथक policy ली गई हो और premium फर्म चुकाती हो, वहाँ निवर्तमान साझेदार सभी साझेदारों की policies के समर्पण मूल्यों में अपने लाभ-हिस्से का अधिकारी है (Illustration 10)।

नोट्स

नियम (SM 4.8): जहाँ प्रत्येक साझेदार के जीवन पर पृथक policy ली गई हो और premium फर्म ने चुकाया हो, वहाँ निवर्तमान साझेदार सभी साझेदारों की policies के समर्पण मूल्यों में अपने समानुपातिक (लाभ-विभाजन) हिस्से का अधिकारी है — केवल अपनी policy के मूल्य का नहीं।

SM का उदाहरण: Sona, Gabbu, Amit का अनुपात 3:1:1; समर्पण मूल्य ₹10,000 + ₹20,000 + ₹30,000 = ₹60,000; Amit के निवृत्त होने पर उसे $₹60,000 \times \frac{1}{5} = ₹12,000$ मिलेंगे।

मृत्यु से तुलना: मृत्यु पर फर्म को मृतक की policy की पूरी बीमित राशि मिलती है (और उसके हिस्से की गणना में जीवित साझेदारों की policies के समर्पण मूल्य भी गिने जाते हैं); सेवानिवृत्ति पर केवल समर्पण मूल्य ही प्रासंगिक हैं।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए — इस संस्करण में कोई प्रश्न नहीं

- सत्य/असत्य का जाल: यह कथन असत्य है कि निवर्तमान साझेदार को केवल अपनी policy का समर्पण मूल्य मिलता है — उसे सभी साझेदारों की policies के समर्पण मूल्यों में समानुपातिक (लाभ-विभाजन) हिस्सा मिलता है, क्योंकि premium फर्म ने चुकाया था।
- SM के उदाहरण से तर्क दे सकें: समर्पण मूल्य ₹10,000 + ₹20,000 + ₹30,000 = ₹60,000; 1/5 हिस्से वाले निवर्तमान साझेदार को $₹60,000 \times 1/5 = ₹12,000$ ।
- मृत्यु से अन्तर ध्यान रखिए: मृत्यु पर मृतक की policy की बीमित राशि मिलती है; सेवानिवृत्ति पर केवल समर्पण मूल्य प्रासंगिक हैं।

विषय 9: समेकित प्रश्न

P1-C10-U10.4-T09 · Integrated Problems

पहले पढ़ें Sections 4.3–4.6 तथा विस्तृत illustrations पढ़िए: परिसंपत्तियों और देयताओं का पुनर्मूल्यांकन, प्राप्ति अनुपात में पूंजी खातों से ख्याति का समायोजन, संचितियों का हस्तान्तरण, निवर्तमान साझेदार का निपटान (नकद/ऋण खाता), पूंजी समायोजन तथा नया तुलन-पत्र।

नोट्स

पूरा क्रम: (1) Revaluation/P&L Adjustment A/c — लाभ या हानि निवर्तमान सहित सभी साझेदारों को पुराने अनुपात में; (2) General Reserve/अवितरित P&L का हस्तान्तरण पुराने अनुपात में (Reserve डेबिट / सभी पूंजी खाते क्रेडिट); (3) ख्याति — बने रहने वाले साझेदारों के Capital A/c प्राप्ति अनुपात में डेबिट / निवर्तमान साझेदार का Capital उसके हिस्से से क्रेडिट, ख्याति खड़ी नहीं की जाती (AS के अनुपालन हेतु अपलिखित); (4) निपटान: Retiring Partner's Capital डेबिट / Bank क्रेडिट तथा/अथवा Retiring Partner's Loan A/c क्रेडिट।

सामान्य समायोजन: औसत अथवा भारित औसत लाभ के 2-3 वर्ष-क्रय पर ख्याति (III. 10: लाभ 41,000/50,000/55,000, भार 1:2:3 → भारित औसत 51,000, ख्याति ₹1,02,000, निवर्तमान का 1/6 हिस्सा ₹17,000); संदिग्ध ऋणों पर 5% प्रावधान, machinery/फर्नीचर पर मूल्यहास, भवन के मूल्य में वृद्धि, अनभिलिखित परिसंपत्तियाँ/देयताएँ, किसी साझेदार द्वारा ले लिए गए निवेश, तथा अनादृत बिल।

किस्तों में ऋण (SM 4.6): ऋण को समान भागों में बाँटिए, प्रत्येक बार किस्त + बकाया शेष पर ब्याज चुकाइए — ₹30,000 @6% चार वार्षिक किस्तों में: वर्ष1 ₹7,500+1,800=9,300; वर्ष2 ₹7,500+1,350=8,850; वर्ष3 ₹8,400; वर्ष4 ₹7,950; निपटान की अन्य रीतियाँ: पूरा दावा नकद, कुछ नकद + शेष ऋण के रूप में, अथवा आजीवन/सहमत वर्षों तक annuity।

पूंजी समायोजन: जहाँ नई फर्म की कुल पूंजी नियत हो, वहाँ प्रत्येक बने रहने वाले साझेदार की पूंजी नए अनुपात में निकालिए (कुल पूंजी = पुनर्मूल्यांकित परिसंपत्तियाँ – बाह्य देयताएँ – निवर्तमान साझेदार का ऋण); लाई गई/निकाली

गई नकद राशि पूंजी खातों की संतुलनकारी राशि होती है, जिसकी पुष्टि Bank A/c से होती है।

प्रस्तुति (10-15 अंक): चारों वस्तुएँ स्वच्छ रूप से बनाइए — Revaluation A/c, साझेदारों के Capital A/c (स्तम्भाकार), Bank/Cash A/c, तथा सेवानिवृत्ति के बाद का तुलन-पत्र; Bank A/c के योग ही हल की पुष्टि करते हैं।

अनुप्रयोग (Application) प्रश्न हल कीजिए · 8 प्रश्न

- Master the full sequence end-to-end: पुनर्मूल्यांकन खाता (लाभ/हानि को ALL साझेदार में पुराना अनुपात) → transfer
- Handle settlement variants: balance transferred को retiring साझेदार's Loan A/c (के साथ ब्याज), part
- भुगतान में नकद के साथ balance as ऋण, continuing साझेदार bringing पूंजी को pay him off, और adjusting पूंजी में the नया अनुपात.
- Prep हैं सभी four required items neatly: पुनर्मूल्यांकन खाता, Partners' पूंजी खाते (columnar), Bank/Cash A/c
- CHAPTER 10
- साझेदारी एवं LLP खाते
- अध्याय 10 · साझेदारी एवं LLP खाते
- P1-C10-U10.5 · Rank 4 in chapter · Category B · 14.6% of chapter questions · 12 questions

PQ 9.1 · PYQ 2006-Nov [4] · व्यावहारिक · 15M · Pg 584	5× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 9.2 · PYQ 2018-May [4] (b) · व्यावहारिक · 10M · Pg 587	3× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 9.3 · PYQ 2020-Nov [4] (a) · व्यावहारिक · 10M · Pg 589	6× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 9.4 · PYQ 2022-May [4] (b) · व्यावहारिक · 10M · Pg 592	2× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 9.5 · PYQ 2023-Dec [5] (a) · व्यावहारिक · 10M · Pg 594		LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 9.6 · PYQ 2024-Sep [4] (a) · व्यावहारिक · 10M · Pg 597		LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 9.7 · PYQ 2025-May [4] (a) · व्यावहारिक · 10M · Pg 600	2× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 9.8 · PYQ 2026-Jan [4] (a) · व्यावहारिक · 10M · Pg 603		LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन

संश्लेषण (Synthesis) आद्योपान्त तैयार कीजिए — इस संस्करण में कोई प्रश्न नहीं

- पूरे क्रम पर आद्योपान्त अधिकार कीजिए: Revaluation A/c (लाभ/हानि सभी साझेदारों को पुराने अनुपात में) → General Reserve/P&L का हस्तान्तरण पुराने अनुपात में → ख्याति का समायोजन (बने रहने वाले साझेदारों की पूंजी प्राप्ति अनुपात में डेबिट, निवर्तमान साझेदार को उसके हिस्से से क्रेडिट; ख्याति पुस्तकों में खड़ी नहीं) → निवर्तमान साझेदार का निपटान।

- PYQ में आने वाले सामान्य समायोजनों का अभ्यास कीजिए: औसत लाभ के 2-3 वर्ष-क्रय पर ख्याति, संदिग्ध ऋणों पर 5% प्रावधान, machinery/फर्नीचर पर मूल्यहास, भवन के मूल्य में वृद्धि, अनभिलिखित परिसंपत्तियाँ/देयताएँ, तथा तुलन-पत्र में विद्यमान ख्याति का पुराने अनुपात में अपलेखन।
- निपटान के विविध रूप सँभालिए: शेष राशि Retiring Partner's Loan A/c में (ब्याज सहित), कुछ नकद भुगतान और शेष ऋण के रूप में, बने रहने वाले साझेदारों द्वारा पूंजी लाकर भुगतान, तथा नए अनुपात में पूंजी का समायोजन।
- चारों अपेक्षित वस्तुएँ स्वच्छ रूप से बनाइए: Revaluation A/c, साझेदारों के Capital A/c (स्तम्भाकार), Bank/Cash A/c और सेवानिवृत्ति के बाद का तुलन-पत्र — यही 10-15 अंक वाले प्रश्न का प्रारूप है।

इकाई 10.5: साझेदार की मृत्यु

Death of a Partner

P1-C10-U10.5 · महत्त्व D · अध्याय में Rank 4 · श्रेणी B · अध्याय के 14.6% प्रश्न · 12 प्रश्न

विषय 1: परिचय — साझेदार की मृत्यु

P1-C10-U10.5-T01 · Introduction

पहले पढ़ें इकाई 5 (साझेदार की मृत्यु) का Section 5.1 पढ़िए: मृत्यु साझेदारी के पुनर्गठन की दशा है, जिसकी समस्याएँ सेवानिवृत्ति जैसी ही हैं — पुनर्मूल्यांकन, ख्याति, संचितियाँ — किन्तु यहाँ फर्म को joint life policy की पूरी राशि मिलती है।

नोट्स

मृत्यु = पुनर्गठन: किसी साझेदार की मृत्यु से फर्म का व्यवसाय समाप्त नहीं होता — जीवित साझेदार उसे चलाते रहते हैं और साझेदारी पुनर्गठित हो जाती है; फर्म का विघटन तभी होता है जब व्यवसाय ही बन्द हो।

सेवानिवृत्ति से समानताएँ: परिसंपत्तियों और देयताओं का पुनर्मूल्यांकन होता है और लाभ/हानि मृतक सहित सभी साझेदारों को पुराने अनुपात में जाती है; ख्याति और संचितियों का व्यवहार ठीक वैसा ही है जैसा सेवानिवृत्ति पर (प्राप्ति अनुपात से समायोजन)।

भिन्नताएँ: फर्म को joint life policy की पूरी राशि मिलती है (समर्पण मूल्य नहीं); देय राशि Deceased Partner's Executor's A/c में क्रेडिट होती है; और निष्पादक वर्ष के आरम्भ से मृत्यु की तिथि तक के लाभ के हिस्से का भी अधिकारी होता है।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 1 प्रश्न

- सत्य/असत्य का जाल: 'साझेदार की मृत्यु पर साझेदारी का व्यवसाय समाप्त हो जाता है' — असत्य; फर्म पुनर्गठित हो सकती है और जीवित साझेदार व्यवसाय चलाते रह सकते हैं।
- समझाइए कि मृत्यु सेवानिवृत्ति के समान कैसे है (पुनर्मूल्यांकन का लाभ/हानि तथा ख्याति मृतक सहित सभी साझेदारों को पुराने अनुपात में क्रेडिट) और भिन्न कैसे है (देय राशि निष्पादक को जाती है; मृत्यु की तिथि तक के लाभ का हिस्सा भी देय है)।
- साझेदारी के विघटन (पुनर्गठन) और फर्म के विघटन में अन्तर कीजिए।

TQ 1.1 · PYQ 2021-Jul [1] (a) (v) {C} · सही/गलत · 2M · Pg 610 4x पूछा गया

LEVEL I
समझ (Understanding)

सरल

विषय 2: कुछ मामलों में निवर्तमान साझेदार का बाद के लाभ में हिस्सा पाने का अधिकार

P1-C10-U10.5-T02 · Right of Outgoing Partner in Certain Cases to Share Subsequent Profits

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §5.2 पढ़िए, जिसमें Indian Partnership Act की Section 37 उद्धृत है, तथा दोनों विकल्पों का A-B-C वाला हल किया गया उदाहरण दिया है।

नोट्स

Section 37: जहाँ किसी साझेदार की मृत्यु हो गई हो अथवा वह साझेदार न रहा हो और बने रहने वाले साझेदार अन्तिम निपटान के बिना फर्म की सम्पत्ति से व्यवसाय चलाते रहें, वहाँ विपरीत संविदा के अभाव में निवर्तमान साझेदार/उसकी सम्पदा अपने विकल्प पर पाने का अधिकार रखती है — (i) उसके साझेदार न रहने के बाद अर्जित लाभ का वह हिस्सा जो फर्म की सम्पत्ति में उसके अंश के उपयोग के कारण है, अथवा (ii) उसके अंश की राशि पर 6% वार्षिक ब्याज; और जब तक उसका लाभ-हिस्सा निर्धारित न हो जाए, वह विकल्प चुनने को बाध्य नहीं है।

परन्तुक: यदि संविदा द्वारा बने रहने वाले साझेदारों को निवर्तमान/मृत साझेदार का हित क्रय करने का विकल्प प्राप्त हो और वे उसका विधिवत प्रयोग करें, तो सम्पदा को आगे लाभ का कोई हिस्सा नहीं मिलता; किन्तु जो साझेदार उस विकल्प की शर्तों का सभी तात्त्विक बातों में पालन न करे, वह Section 37 के अन्तर्गत लेखा देने के लिए दायी है; जैसे कुल ₹2,45,000 में C की पूंजी ₹1,20,000, तीन माह का पश्चातवर्ती लाभ ₹28,000 — लाभ-हिस्सा ₹13,714 बनाम ब्याज ₹1,800, अतः C की सम्पदा लाभ-हिस्सा चुनती है।

विषय 3: मृत साझेदार के वैधानिक प्रतिनिधियों को देय राशि

P1-C10-U10.5-T03 · Amount Payable to Legal Representatives of Dead Partner

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §5.3 पढ़िए: विधिक प्रतिनिधियों के अधिकार एवं दायित्व, तथा मृत्यु तक के लाभ के लिए समय-आधार और turnover-आधार।

नोट्स

किसके अधिकारी: (a) मृतक के पूंजी खाते का क्रेडिट शेष, (b) मृत्यु की तिथि तक पूंजी पर ब्याज (यदि deed में हो), (c) ख्याति का हिस्सा, (d) अवितरित लाभ/संचितियों का हिस्सा, (e) पुनर्मूल्यांकन लाभ का हिस्सा, (f) मृत्यु की तिथि तक के लाभ का हिस्सा, (g) Joint Life Policy का हिस्सा; **किसके लिए दायी:** आहरण, आहरण पर ब्याज, पुनर्मूल्यांकन

हानि का हिस्सा तथा मृत्यु तक की हानियों का हिस्सा।

मृत्यु तक का लाभ: P&L Suspense A/c के माध्यम से निकाला जाता है — (i) समय-आधार: लाभ को एकसमान मानकर, पिछले वर्ष का लाभ $\times$ माह/12 $\times$ मृतक का हिस्सा; अथवा (ii) turnover/विक्रय-आधार: पिछले वर्ष की लाभ-विक्रय दर को मृत्यु तक के विक्रय पर लगाकर $\times$ मृतक का हिस्सा।

निपटान: मृतक के पूंजी खाते का शेष उसके Executor's A/c में हस्तान्तरित होता है; भुगतान समझौते पर निर्भर है — समझौते के अभाव में विधिक प्रतिनिधि मृत्यु की तिथि से अन्तिम भुगतान तक देय राशि पर 6% वार्षिक ब्याज का अधिकारी है।

विषय 4: मृत्यु की दशा में विशेष लेन-देन: संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी (Joint Life Policy)

P1-C10-U10.5-T04 · Special Transactions in Case of Death: Joint Life Policy

पहले पढ़ें Section 5.4 पढ़िए: journal entries तब — जब JLP पुस्तकों में हो ही नहीं, जब वह समर्पण मूल्य पर हो, और जब वह JLP Reserve के साथ समर्पण मूल्य पर हो; मृत्यु पर फर्म को policy की पूरी (बीमित) राशि मिलती है।

नोट्स

मुख्य नियम: मृत्यु पर फर्म को बीमा कम्पनी से policy की पूरी बीमित राशि मिलती है (समर्पण मूल्य केवल सेवानिवृत्ति/policy समर्पण पर प्रासंगिक है); लाभ — policy की राशि में से JLP का पुस्तक-मूल्य, यदि कोई हो, घटाकर — मृतक सहित सभी साझेदारों को पुराने लाभ-विभाजन अनुपात में क्रेडिट होता है।

पद्धति 1 — JLP पुस्तकों में नहीं: पूरी राशि लाभ है: Bank डेबिट ₹1,00,000 / To JLP A/c; JLP A/c डेबिट ₹1,00,000 / To A, B, C के Capital A/c 50,000:30,000:20,000 (पुराना अनुपात 5:3:2)।

पद्धति 2 — JLP समर्पण मूल्य पर: ₹1,00,000 की policy तुलन-पत्र में ₹10,000 के समर्पण मूल्य पर: Bank डेबिट 1,00,000 / To JLP; JLP डेबिट 90,000 (समर्पण मूल्य से अधिक भाग = लाभ) / To पूंजी खाते पुराने अनुपात में।

पद्धति 3 — JLP Reserve सहित: वही दो entries, और साथ में JLP Reserve A/c डेबिट 10,000 / To पूंजी खाते पुराने अनुपात में (संचिति साझेदारों को वापस लिखी जाती है); अर्थात् JLP A/c बन्द करने से पहले JLP Reserve हस्तान्तरित कीजिए।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 1 प्रश्न

- सत्य/असत्य का जाल: साझेदार की मृत्यु पर फर्म को बीमाकर्ता से policy की पूरी बीमित राशि मिलती है, समर्पण मूल्य नहीं (समर्पण मूल्य सेवानिवृत्ति/policy के समर्पण पर प्रासंगिक है)।
- entries समझाइए: policy की राशि से Bank डेबिट To JLP A/c; और लाभ (policy की राशि में से JLP का पुस्तक-मूल्य, यदि कोई हो) मृतक सहित सभी साझेदारों को पुराने लाभ-विभाजन अनुपात में क्रेडिट।
- जानिए कि तीनों पद्धतियों में व्यवहार कैसे बदलता है: JLP पुस्तकों में न हो (पूरी राशि लाभ), JLP समर्पण मूल्य पर हो (समर्पण मूल्य से अधिक भाग लाभ), और JLP के साथ Reserve हो (पहले Reserve को JLP A/c में हस्तान्तरित कीजिए)।

विषय 5: मृत्यु की दशा में विशेष लेन-देन: पृथक जीवन बीमा पॉलिसी

P1-C10-U10.5-T05 · Special Transactions in Case of Death: Separate Life Policy

पहले पढ़ें Section 5.5 पढ़िए: जहाँ पृथक policies का premium फर्म चुकाती है, वहाँ निष्पादक को मृतक की policy की बीमित राशि तथा जीवित साझेदारों की policies के समर्पण मूल्यों में मृतक का लाभ-हिस्सा मिलता है। परीक्षा में यह पूंजी पर ब्याज और मृत्यु तक के लाभ के साथ मिलाकर पूछा जाता है।

नोट्स

सूत्र (SM 5.5): निष्पादक को क्रेडिट की जाने वाली राशि = (मृत साझेदार की policy की बीमित राशि + जीवित साझेदारों की policies के समर्पण मूल्य) × मृतक का लाभ-हिस्सा; जीवित साझेदारों को भी उसी कुल राशि में उनके लाभ-हिस्से क्रेडिट होते हैं, क्योंकि सभी premium फर्म ने चुकाए और P&L पर प्रभारित किए थे।

SM का उदाहरण: Sona, Gabbu, Amit 3:1:1; Amit (1/5) की मृत्यु — निष्पादकों को $3,00,000 \times 1/5 + 1/5 \times (10,000 + 20,000) = 60,000 + 6,000 = ₹66,000$ मिलेंगे।

आदर्श entry: Bank डेबिट (बीमित राशि) तथा SLP of Remaining Partners डेबिट (समर्पण मूल्य) / To SLP of Deceased Partner, To Executor's A/c तथा To शेष साझेदारों के पूंजी खाते लाभ-विभाजन अनुपात में।

बहु-तत्व deed वाले प्रश्न (III. 2): प्रतिनिधि को देय सब कुछ एक ही खाते में जोड़िए — deed की दर से स्थिर पूंजी पर मृत्यु तिथि/वर्षान्त तक ब्याज, लाभ का हिस्सा (पूंजी पर ब्याज प्रभारित करने के बाद), पूंजी पर ब्याज घटाने के बाद के औसत शुद्ध लाभों के सहमत वर्ष-क्रय पर ख्याति, तथा policy का हिस्सा; स्थिर पूंजी की दशा में आहरण/लाभ चालू खाते से ले जाइए; आहरण और अनभिलिखित देयताएँ घटाइए।

विश्लेषण (Analysis) मिश्रित आँकड़ों पर कार्य कीजिए · 1 प्रश्न

- बहु-तत्व deed वाले प्रश्न हल कीजिए (जैसे P, Q, R वाला स्थिर-पूंजी PYQ): दी गई दर से स्थिर पूंजी पर ब्याज, मृत्यु की तिथि तक लाभ का हिस्सा, deed के अनुसार ख्याति, और life policy की राशियाँ — इन सभी क्रेडिट को Executor's A/c में एक साथ लाइए।
- SM का सूत्र लगाइए: क्रेडिट की जाने वाली राशि = (मृतक की policy की बीमित राशि + जीवित साझेदारों की policies के समर्पण मूल्य) × मृतक का लाभ-हिस्सा; जीवित साझेदारों को भी उनके हिस्से क्रेडिट होते हैं।
- अन्तर्सम्बन्ध देखिए: स्थिर बनाम परिवर्तनशील पूंजी (चालू खातों से समायोजन), प्रतिवर्ष P&L पर प्रभारित premium, तथा मृत्यु की तिथि तक वर्ष के लाभ का बँटवारा।

विषय 6: मृत्यु की दशा में विशेष लेन-देन: मृत साझेदार के हिस्से का भुगतान

P1-C10-U10.5-T06 · Special Transactions in Case of Death: Payment of Deceased Partner's Share

पहले पढ़ें Sections 5.2, 5.3 तथा 5.6 पढ़िए: विधिक प्रतिनिधियों को देय राशियों की पूरी सूची, P&L Suspense A/c के माध्यम से मृत्यु तक के लाभ की गणना (समय-आधार और turnover-आधार), तथा Section 37 के अधिकार (पश्चातवर्ती लाभ अथवा 6% ब्याज)।

नोट्स

निष्पादक किसका अधिकारी (SM 5.3): (a) पूंजी शेष, (b) deed में प्रावधान हो तो मृत्यु तक पूंजी पर ब्याज, (c) ख्याति का हिस्सा, (d) अवितरित लाभ/संचितियों का हिस्सा, (e) पुनर्मूल्यांकन लाभ का हिस्सा, (f) मृत्यु तक के लाभ का हिस्सा, (g) JLP का हिस्सा; **किसके लिए दायी:** आहरण, आहरण पर ब्याज, पुनर्मूल्यांकन हानि तथा मृत्यु तक की हानियों का हिस्सा — अतः 'केवल पूंजी शेष' कहना असत्य है।

मृत्यु तक का लाभ: समय-आधार — पिछले वर्ष का लाभ $\times$ बीते माह/12 $\times$ मृतक का हिस्सा; turnover-आधार — पिछले वर्ष के विक्रय पर लाभ की दर को मृत्यु तक के विक्रय पर लगाइए (विक्रय 4,00,000, लाभ 60,000 $\rightarrow$ 15%; 31 मई तक विक्रय 1,00,000 $\rightarrow$ लाभ 15,000; Neha का $1/6 = ₹2,500$); **entry:** P&L Suspense A/c डेबिट / To Deceased Partner's Capital A/c (वर्षान्त पर Suspense P&L में बन्द)।

Section 37 (SM): "निवर्तमान साझेदार अथवा उसकी सम्पदा, स्वयं अथवा अपने प्रतिनिधियों के विकल्प पर, उसके साझेदार न रहने के बाद अर्जित लाभ के उस हिस्से की अधिकारी है जो फर्म की सम्पत्ति में उसके अंश के उपयोग के कारण हो, अथवा फर्म की सम्पत्ति में उसके अंश की राशि पर छह प्रतिशत वार्षिक ब्याज की" — यह विकल्प तब तक प्रयोग नहीं किया जा सकता जब तक लाभ-हिस्सा निर्धारित न हो जाए; जैसे कुल 2,45,000 में C का धन 1,20,000, तीन माह का लाभ 28,000 $\rightarrow$ लाभ-हिस्सा ₹13,714 बनाम 6% ब्याज ₹1,800, अतः वह लाभ चुनता है।

डिफॉल्ट नियम: समझौते के अभाव में विधिक प्रतिनिधि को मृत्यु की तिथि से अन्तिम भुगतान की तिथि तक देय राशि पर 6% वार्षिक ब्याज मिलता है।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 1 प्रश्न

- सत्य/असत्य का जाल: विधिक उत्तराधिकारी केवल पूंजी शेष के अधिकारी नहीं होते — उन्हें मृत्यु तक पूंजी पर ब्याज, ख्याति का हिस्सा, संचितियों/अवितरित लाभों का हिस्सा, पुनर्मूल्यांकन लाभ तथा मृत्यु की तिथि तक के लाभ का हिस्सा, और JLP का हिस्सा भी मिलता है; और वे आहरण, आहरण पर ब्याज तथा हानियों के हिस्से के लिए दायी हैं।
- मृत्यु तक का लाभ समझाइए: समय-आधार (पिछले वर्ष का लाभ $\times$ माह/12 $\times$ हिस्सा) बनाम turnover-आधार (विक्रय पर लाभ की दर मृत्यु तक के विक्रय पर); entry — P&L Suspense A/c डेबिट To मृतक का Capital A/c।
- Section 37 जानिए: निपटान में विलम्ब होने पर निष्पादक अपने धन के कारण अर्जित पश्चातवर्ती लाभ का हिस्सा अथवा अदत्त राशि पर 6% वार्षिक ब्याज — इनमें से कोई एक चुन सकता है (विकल्प लाभ निर्धारित होने के बाद ही प्रयोग होता है)।

विषय 7: समेकित प्रश्न

P1-C10-U10.5-T07 · Integrated Problems

पहले पढ़ें इकाई 5 के हल किए गए illustrations पढ़िए, जिनमें पुनर्मूल्यांकन, ख्याति, संचितियाँ, मृत्यु तक का लाभ, JLP/पृथक policies तथा Deceased Partner's Executor's Account एक साथ आते हैं, और निपटान किस्तों अथवा annuity से होता है।

नोट्स

आद्योपान्त क्रम: परिसंपत्तियों/देयताओं का पुनर्मूल्यांकन कीजिए, संचितियाँ और ख्याति हस्तान्तरित कीजिए (जीवित साझेदारों की पूंजी प्राप्ति अनुपात में डेबिट, ख्याति खाता नहीं खोला जाता), P&L Suspense के माध्यम से मृत्यु तक का लाभ क्रेडिट कीजिए, JLP/SLP का हिस्सा जोड़िए — ये सब मृतक को पुराने अनुपात में क्रेडिट होते हैं — फिर उसका Capital (और Current) A/c बन्द करके Executor's A/c में ले जाइए; और Revaluation A/c, Capital A/c, Executor's A/c तथा नया तुलन-पत्र बनाइए।

deed की जिन शर्तों को ध्यान से पढ़ना है: ख्याति उन औसत लाभों पर जो पूंजी पर ब्याज प्रभारित करने के बाद निकले हों और जिनमें से असामान्य मदें (परिसंपत्ति-विक्रय का लाभ, बीमा दावे, कम वसूला गया premium) हटा दी गई हों; लाभ का एक भाग संचिति में ले जाना ($B \frac{1}{2}$, $N \frac{1}{3}$, Reserve $\frac{1}{6} \rightarrow B:N = 3:2$); मृत्यु वाले वर्ष में पूंजी पर ब्याज नहीं; और मृत्यु तक का लाभ पिछले वर्ष के लाभ में सहमत प्रतिशत की वृद्धि करके समानुपातिक आधार पर आकलित करना।

PYQ की पेचीदा मदें: travelling expenses में गलती से अपलिखित car — औसत लाभ निकालते समय मूल्यह्रास घटाकर वापस जोड़िए; अनभिलिखित देयता P&L Adjustment से प्रभारित; तुलन-पत्र में JLP समर्पण मूल्य पर हो तो policy की प्राप्ति में से पुस्तक-मूल्य घटाकर ही बाँटिए ($\text{₹}2,00,000 - 60,000 = 1,40,000$, PSR में); और P&L Suspense अन्तरिम तुलन-पत्र के परिसंपत्ति पक्ष में आता है।

निपटान के प्रारूप: तत्काल आंशिक भुगतान और शेष Executor's/Loan A/c में ब्याज सहित (जैसे अभी ₹7,750, शेष पर 9% वार्षिक), अथवा किस्तें; ब्याज मृत्यु की तिथि से निपटान तक चलता है; मानक entries पर ऐसा अभ्यास रखिए कि 15-20 अंक का प्रश्न समय में पूरा हो जाए।

अनुप्रयोग (Application) प्रश्न हल कीजिए · 4 प्रश्न

- Analys है मिश्रित आँकड़ों का विश्लेषण करें · 4 questions
- Handle deed clauses carefully: लाभ allocated partly को आरक्षित निधि, पूंजी पर ब्याज but नहीं पर undrawn
- लाभ, ख्याति (Goodwill) based पर लाभ 'के बाद charging पूंजी पर ब्याज', और survivors purchasing the deceased's sh हैं पर stated terms.
- Watch tricky items में PYQ balance sheets: advertisement suspense (fictitious asset अपलिखित में old
- Master preparing end-to-end: पुनर्मूल्यांकन खाता, Partners' पूंजी खाते, Deceased Partner's Executor's A/c,
- अभ्यास करें settlement patterns: immediate part भुगतान के साथ balance में instalments plus ब्याज, or

- transfer को Executor's Loan A/c; also full-length problems starting से a trial balance requiring the year's लाभ first.
- Be fluent के साथ the standard journal entries (ख्याति (Goodwill) adjustment through लाभ-प्राप्ति अनुपात के बिना raising
- CHAPTER 10
- साझेदारी एवं LLP खाते
- अध्याय 10 · साझेदारी एवं LLP खाते
- P1-C10-U10.6 · Rank 2 in chapter · Category A · 22.0% of chapter questions · 18 questions

PQ 7.5 · PYQ 2023-Jun [5] · व्यावहारिक · 20M · Pg 625	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 7.7 · PYQ 2025-Jan [4] (a) · व्यावहारिक · 15M · Pg 632	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 7.4 · MTP 2022-Nov S1 [4] (a) · व्यावहारिक · 10M · Pg 621	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	
PQ 7.6 · MTP 2024-Dec S1 [4] (b) · व्यावहारिक · 12M · Pg 629 5× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	

विश्लेषण (Analysis) मिश्रित आँकड़ों पर कार्य कीजिए · 4 प्रश्न

- वर्ष के बीच मृत्यु वाले प्रश्न हल कीजिए: मृत्यु की तिथि तक लाभ का बँटवारा (समय अथवा विक्रय आधार), औसत लाभों के 2-3 वर्ष-क्रय पर ख्याति का मूल्यांकन, परिसंपत्तियों का पुनर्मूल्यांकन, संचितियों का हस्तान्तरण — ये सब मृतक को पुराने अनुपात में क्रेडिट कीजिए, फिर उसकी पूंजी बन्द करके Executor's A/c में ले जाइए।
- deed की शर्तें सावधानी से लागू कीजिए: लाभ का कुछ भाग संचिति में, पूंजी पर ब्याज किन्तु अनाहरित लाभों पर नहीं, 'पूंजी पर ब्याज प्रभारित करने के बाद' के लाभों पर ख्याति, तथा जीवित साझेदारों द्वारा बताई गई शर्तों पर मृतक का हिस्सा क्रय करना।
- PYQ के तुलन-पत्रों की पेचीदा मदों पर ध्यान दीजिए: advertisement suspense (काल्पनिक परिसंपत्ति, पुराने अनुपात में अपलिखित), किसी साझेदार द्वारा ले लिए गए निवेश, तथा निष्पादक के अदत्त शेष पर मृत्यु की तिथि से निपटान तक ब्याज।

PQ 7.1 · PYQ 2019-Jun [4] (a) · व्यावहारिक · 10M · Pg 614 5× पूछा गया	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	कठिन
PQ 7.2 · PYQ 2019-Nov [4] (a) · व्यावहारिक · 10M · Pg 617 2× पूछा गया	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	कठिन
PQ 7.3 · PYQ 2021-Jul [5] (c) · व्यावहारिक · 10M · Pg 619 2× पूछा गया	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	कठिन
PQ 7.8 · PYQ 2026-May [4] (a) · व्यावहारिक · 10M · Pg 636	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	कठिन

संश्लेषण (Synthesis) आद्योपान्त तैयार कीजिए — इस संस्करण में कोई प्रश्न नहीं

- आद्योपान्त तैयारी पर अधिकार कीजिए: Revaluation A/c, साझेदारों के Capital A/c, Deceased Partner's Executor's A/c, तथा पुनर्गठित फर्म का नया तुलन-पत्र।

- निपटान के प्रारूपों का अभ्यास कीजिए: तत्काल आंशिक भुगतान और शेष किस्तों में ब्याज सहित, अथवा Executor's Loan A/c में हस्तान्तरण; साथ ही वे पूर्ण प्रश्न भी जो तलपट से आरम्भ होते हैं और जिनमें पहले वर्ष का लाभ निकालना पड़ता है।
- मानक journal entries पर ऐसा अधिकार रखिए (प्राप्ति अनुपात से ख्याति का समायोजन बिना ख्याति खड़ी किए, मृत्यु तक के लाभ के लिए P&L Suspense) कि 15-20 अंक का प्रश्न समय में पूरा हो जाए।

इकाई 10.6: साझेदारी फर्मों एवं LLP का विघटन

Dissolution of Partnership Firms and LLPs

P1-C10-U10.6 · महत्त्व D · अध्याय में Rank 2 · श्रेणी A · अध्याय के 22.0% प्रश्न · 18 प्रश्न

विषय 1: परिचय — साझेदारी फर्म एवं LLP का विघटन

P1-C10-U10.6-T01 · Introduction

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §6.1 पढ़िए: इकाई का विस्तार — विघटन पर पुस्तकें बन्द करना तथा दिवालियापन से जुड़ी समस्याएँ।

नोट्स

विघटन का लेखांकन: अनुपात में परिवर्तन, प्रवेश, सेवानिवृत्ति अथवा मृत्यु पर साझेदारों के अधिकारों के पुनर्समायोजन के अतिरिक्त, साझेदारी लेखांकन का दूसरा प्रमुख पक्ष है विघटन पर पुस्तकों को बन्द करना — यह इकाई विघटन की परिस्थितियाँ, पुस्तकें बन्द करने का लेखांकन व्यवहार, साझेदारों के दिवालियापन की विशेष समस्याएँ तथा साझेदारी की देयताओं के निपटान को समेटती है।

विषय 2: साझेदारी के विघटन की परिस्थितियाँ

P1-C10-U10.6-T02 · Circumstances Leading to Dissolution of Partnership

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §6.2 पढ़िए: साझेदारी का विघटन बनाम फर्म का विघटन, फर्म के विघटन की पाँच दशाएँ, तथा न्यायालय द्वारा विघटन के सात आधार।

नोट्स

साझेदारी का विघटन तब होता है जब: (a) अवधि समाप्त हो जाए, (b) उपक्रम पूरा हो जाए, (c) किसी साझेदार की मृत्यु हो, (d) कोई साझेदार दिवालिया हो — किन्तु शेष साझेदार व्यवसाय चला सकते हैं (नई साझेदारी, फर्म चलती रहती है); फर्म का विघटन तभी होता है जब व्यवसाय ही समाप्त हो जाए।

फर्म विघटित मानी जाती है जब: (i) साझेदार विघटन पर सहमत हों, (ii) एक को छोड़कर सभी साझेदार दिवालिया हो जाएँ, (iii) व्यवसाय अवैध हो जाए, (iv) इच्छाधीन साझेदारी (partnership at will) में कोई साझेदार विघटन की सूचना दे, (v) न्यायालय विघटन का आदेश दे।

न्यायालय विघटन का आदेश दे सकता है जब: कोई साझेदार विकृतचित्त हो, स्थायी रूप से अक्षम हो, व्यवसाय के सम्बन्ध में कदाचार का दोषी हो, साझेदारी समझौते की लगातार अवहेलना करे, अपना हित/अंश किसी तीसरे पक्ष को हस्तान्तरित कर दे, व्यवसाय हानि पर ही चलाया जा सकता हो, अथवा विघटन न्यायोचित एवं साम्यपूर्ण प्रतीत हो।

विषय 3: विघटन के परिणाम

P1-C10-U10.6-T03 · Consequences of Dissolution

पहले पढ़ें Section 6.3 पढ़िए: साझेदारी अधिनियम की Section 48 के अन्तर्गत निपटान का क्रम, साझेदारी के विघटन और फर्म के विघटन का अन्तर, तथा Section 6.3.1 — नियत अवधि से पहले फर्म के विघटन पर premium की वापसी।

नोट्स

Section 48 का क्रम: (a) पूंजी की कमी सहित हानियाँ पहले लाभों में से, फिर पूंजी में से, और अन्ततः साझेदारों द्वारा व्यक्तिगत रूप से लाभ-विभाजन अनुपात में चुकाई जाती हैं; (b) परिसंपत्तियाँ (कमी पूरी करने के लिए लाई गई राशियों सहित) इस क्रम में लगाई जाती हैं: (i) तीसरे पक्षों के प्रति फर्म के ऋण, (ii) पूंजी से भिन्न, साझेदारों के अग्रिम/ऋण — समानुपातिक रूप से, (iii) पूंजी, (iv) शेष राशि लाभ-विभाजन अनुपात में।

साझेदारी का विघटन बनाम फर्म का विघटन: पुनर्गठन बनाम समाप्ति — मुख्य अन्तर इस प्रकार हैं:

साझेदारी का विघटन	साझेदारी फर्म का विघटन
केवल साझेदारों के बीच का सम्बन्ध पुनर्समायोजित होता है (प्रवेश/सेवानिवृत्ति/मृत्यु)	पूरी फर्म का अस्तित्व समाप्त हो जाता है, सभी साझेदारों के सम्बन्ध समाप्त
व्यवसाय यथावत चलता रहता है; फर्म पुनर्गठित होती है	व्यवसाय पूर्णतः बन्द हो जाता है
परिसंपत्तियों और देयताओं का पुनर्मूल्यांकन; Revaluation A/c; नया तुलन-पत्र	परिसंपत्तियाँ बेची जाती हैं, देयताएँ चुकाई जाती हैं; Realization A/c बनता है
न्यायालय का कोई हस्तक्षेप नहीं	न्यायालय फर्म के विघटन का आदेश दे सकता है
लेखा-पुस्तकें बन्द नहीं होतीं	लेखा-पुस्तकें बन्द कर दी जाती हैं

premium की वापसी (6.3.1): जिस साझेदार ने नियत अवधि की शर्त के साथ प्रवेश पर premium चुकाया हो, वह अवधि समाप्त होने से पहले फर्म के विघटन पर उचित/समानुपातिक वापसी का अधिकारी है — इसमें प्रवेश की शर्तें, सहमत अवधि और बीत चुकी अवधि देखी जाती है (5 वर्ष के लिए ₹50,000, 3 वर्ष बाद विघटन → शेष 2/5 =

₹20,000); यह वापसी अन्य साझेदार लाभ-विभाजन अनुपात में वहन करते हैं।

वापसी का दावा नहीं बनता यदि: (1) फर्म का विघटन किसी साझेदार की मृत्यु से हुआ हो; (2) विघटन मुख्यतः दावा करने वाले साझेदार के अपने कदाचार से हुआ हो; (3) विघटन ऐसे समझौते के अनुसरण में हुआ हो जिसमें premium लौटाने का कोई प्रावधान न हो।

अनुप्रयोग (Application) प्रश्न हल कीजिए · 1 प्रश्न

- Be ready को judge premium-refund claims (Amit-type PYQ): a साझेदार who भुगतान किया a premium पर प्रवेश
- परिसंपत्तियाँ applied first को outside debts, then साझेदार advances/ऋण, then पूंजी, residue में लाभ-विभाजन अनुपात (PSR).

PQ 3.1 · PYQ 2018-Nov [6] (e) · व्यावहारिक · 5M · Pg 642

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

मध्यम

मूल्यांकन (Evaluation) निर्णय दीजिए और औचित्य सिद्ध कीजिए — इस संस्करण में कोई प्रश्न नहीं

- premium वापसी के दावों पर निर्णय देने के लिए तैयार रहिए (Amit-प्रकार का PYQ): जिस साझेदार ने नियत अवधि की शर्त के साथ प्रवेश पर premium चुकाया हो, वह फर्म के समय से पहले विघटन पर उचित/समानुपातिक वापसी का अधिकारी है — जैसे 5 वर्ष के लिए ₹50,000, 3 वर्ष बाद विघटन, तो शेष $2/5 = ₹20,000$ की वापसी, जो अन्य साझेदार लाभ-विभाजन अनुपात में वहन करेंगे।
- अपवादों का औचित्य भी बताइए — वापसी का दावा नहीं बनता यदि विघटन किसी साझेदार की मृत्यु से हुआ हो, दावा करने वाले साझेदार के अपने कदाचार से हुआ हो, अथवा ऐसे समझौते से हुआ हो जिसमें वापसी का कोई प्रावधान न हो।
- उत्तर को Section 48 के क्रम से पुष्ट कीजिए: हानियाँ पहले लाभों में से, फिर पूंजी में से, फिर साझेदारों से व्यक्तिगत रूप से; और परिसंपत्तियाँ पहले बाह्य ऋणों में, फिर साझेदारों के अग्रिम/ऋण में, फिर पूंजी में, और शेष लाभ-विभाजन अनुपात में।

विषय 4: विघटन पर साझेदारी की पुस्तकों का समापन

P1-C10-U10.6-T04 · Closing of Partnership Books on Dissolution

पहले पढ़ें Section 6.4 पढ़िए: Realization Account का प्रारूप — कौन-सी परिसंपत्तियाँ/देयताएँ हस्तान्तरित होती हैं, वसूली-व्यय की entries, साझेदारों द्वारा ली गई परिसंपत्तियाँ/देयताएँ, अनभिलिखित मर्दे, ख्याति का व्यवहार, तथा पूंजी और रोकड़ खातों का बन्द होना।

नोट्स

Realization A/c — इसमें क्या जाता है: डेबिट पक्ष — रोकड़/बैंक, P&L का डेबिट शेष (काल्पनिक परिसंपत्तियाँ) तथा साझेदारों के चालू/पूंजी/ऋण खातों को छोड़कर सभी विविध परिसंपत्तियाँ सकल पुस्तक-मूल्य पर; देयताओं तथा अनभिलिखित देयताओं का भुगतान; वसूली-व्यय; क्रेडिट पक्ष — बाह्य देयताएँ तथा प्रावधान (जैसे संदिग्ध ऋणों का प्रावधान) पुस्तक आँकड़ों पर, वास्तव में वसूली गई राशियाँ, तथा साझेदारों द्वारा ली गई परिसंपत्तियाँ (उस साझेदार का Capital डेबिट); शेष = वसूली पर लाभ/हानि, जो लाभ-विभाजन अनुपात में पूंजी खातों में जाती है।

विघटन पर ख्याति: यदि वह तुलन-पत्र में हो तो किसी अन्य परिसंपत्ति की भाँति Realization A/c में हस्तान्तरित होती है; पुस्तकों में न हो तो कोई entry नहीं; और उसके बदले जो कुछ वसूल हो (अथवा किसी साझेदार द्वारा क्रय) वह Realization A/c में क्रेडिट होता है।

भुगतान के क्रम का अन्तर्सम्बन्ध: रोकड़ पहले बाह्य लेनदारों को, फिर साझेदारों के ऋणों को (जो कभी Realization A/c से नहीं जाते), और तब पूंजी को; संचित लाभ/संचितियाँ सीधे पूंजी खातों में जाती हैं, संचित हानियाँ PSR में पूंजी खातों में डेबिट होती हैं; अनभिलिखित परिसंपत्ति वसूल होने पर Realization क्रेडिट, अनभिलिखित देयता चुकाने पर Realization डेबिट।

मृत्यु-फिर-विघटन वाले प्रश्न: पहले मृत साझेदार की देय राशि पुनर्गठन के रूप में निपटाइए (पुनर्मूल्यांकन, ख्याति, मृत्यु तक का लाभ, Executor's A/c), फिर विघटन कीजिए — सब कुछ Realization A/c में ले जाइए और पूंजी तथा रोकड़ खाते शून्य पर बन्द कीजिए।

अनुप्रयोग (Application) प्रश्न हल कीजिए · 1 प्रश्न

- Analys है मिश्रित आँकड़ों का विश्लेषण करें · 1 question
- Work problems that combine a साझेदार's मृत्यु के साथ subsequent विघटन (as में the M, N, O PYQ): first
- Watch interlinkages: साझेदार' ऋण हैं भुगतान किया के बाद outside लेनदार but से पहले पूंजी; अलेखित

PQ 4.2 · PYQ 2026-Sep [4] (a) · व्यावहारिक · 10M · Pg 648

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

विश्लेषण (Analysis) मिश्रित आँकड़ों पर कार्य कीजिए · 1 प्रश्न

- उन प्रश्नों पर कार्य कीजिए जिनमें साझेदार की मृत्यु के बाद विघटन होता है (जैसे M, N, O वाला PYQ): पहले मृतक की देय राशि निपटाइए (पुनर्मूल्यांकन, ख्याति, लाभ का हिस्सा), फिर Realization A/c से पुस्तकें बन्द कीजिए।
- Realization A/c की प्रक्रिया स्पष्ट रखिए: रोकड़/बैंक, काल्पनिक परिसंपत्तियों तथा साझेदारों के ऋण खातों को छोड़कर सभी परिसंपत्तियाँ हस्तान्तरित कीजिए; वसूली गई राशियाँ तथा साझेदारों द्वारा ली गई परिसंपत्तियाँ क्रेडिट कीजिए; देयताओं का भुगतान और व्यय डेबिट कीजिए; और लाभ/हानि लाभ-विभाजन अनुपात में पूंजी खातों में ले जाइए।
- अन्तर्सम्बन्धों पर ध्यान दीजिए: साझेदारों के ऋण बाह्य लेनदारों के बाद किन्तु पूंजी से पहले चुकाए जाते हैं; वसूली गई अनभिलिखित परिसंपत्तियाँ Realization A/c में क्रेडिट और चुकाई गई अनभिलिखित देयताएँ डेबिट होती हैं।

PQ 4.1 · PYQ 2022-Nov [4] (a) · व्यावहारिक · 15M · Pg 643

LEVEL II
विश्लेषण (Analysis)

कठिन

विषय 5: साझेदार की दिवालियापन के परिणाम

P1-C10-U10.6-T05 · Consequences of Insolvency of a Partner

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §6.5 पढ़िए: दिवालिया घोषित होने के चार विधिक परिणाम तथा डेबिट शेष पर Garner vs. Murray का व्यवहार।

नोट्स

परिणाम: (1) दिवालिया घोषित साझेदार अधिनिर्णय के आदेश की तिथि से साझेदार नहीं रहता, (2) विपरीत संविदा न हो तो उसी तिथि से फर्म विघटित हो जाती है, (3) उस तिथि के बाद फर्म के किसी कार्य के लिए दिवालिया साझेदार की सम्पदा दायी नहीं, (4) उस तिथि के बाद दिवालिया साझेदार के किसी कार्य के लिए फर्म दायी नहीं।

कमी (deficiency): दिवालिया साझेदार के पूंजी खाते का अवसूल्य डेबिट शेष विलायक साझेदार वहन करते हैं — या तो लाभ-विभाजन अनुपात में, अथवा **Garner vs. Murray** के अनुसार अपनी पूंजी के अनुपात में, न कि लाभ-विभाजन अनुपात में।

विषय 6: साझेदार की दिवालियापन से उत्पन्न हानि

P1-C10-U10.6-T06 · Loss arising from Insolvency of a Partner

पहले पढ़ें Sections 6.5 और 6.6 पढ़िए: Garner vs. Murray का नियम — वसूली की हानि सभी साझेदार लाभ-विभाजन अनुपात में वहन करते हैं, किन्तु दिवालिया साझेदार की पूंजी की कमी विलायक (solvent) साझेदार अपने पूंजी अनुपात में वहन करते हैं — साथ ही पूंजी अनुपात का निर्धारण (स्थिर बनाम परिवर्तनशील) तथा सभी साझेदारों के दिवालिया होने की दशा (Deficiency Account)।

नोट्स

Garner vs. Murray का नियम: वसूली पर होने वाली सामान्य हानि सभी साझेदार (दिवालिया सहित) लाभ-विभाजन अनुपात में वहन करते हैं, किन्तु दिवालिया साझेदार की पूंजी की कमी विलायक साझेदार अपने पूंजी अनुपात में वहन करते हैं — अतः कमी को लाभ-विभाजन अनुपात में बाँटने वाला कथन असत्य है; यदि deed में कोई विशेष विधि दी हो तो deed ही मान्य होगी।

पूंजी अनुपात: स्थिर पूंजी — कमी स्थिर पूंजियों के अनुपात में बाँटती है (लाभ, आहरण, ब्याज, वेतन के सभी समायोजन चालू खातों से होते हैं); परिवर्तनशील पूंजी — विघटन की तिथि तक संचितियों, संचित लाभों, आहरण और ब्याज का समायोजन करने के बाद, किन्तु Realization A/c के लाभ/हानि से पहले की पूंजियों का अनुपात।

Garner vs. Murray कब लागू नहीं होता: (i) किसी विलायक साझेदार का पूंजी शेष डेबिट हो (उससे कमी वहन कराने को नहीं कहा जा सकता); (ii) फर्म में केवल दो ही साझेदार हों; (iii) साझेदारों के बीच कमी बाँटने का समझौता हो; (iv) सभी साझेदार दिवालिया हों; और जब भी deed अपनी विधि निर्धारित करती हो।

सभी साझेदारों का दिवालियापन: लेनदारों को Realization A/c में मत ले जाइए — जो कुछ उपलब्ध हो (साझेदारों के अंशदान सहित) उसमें से लेनदारों को भुगतान कीजिए, अवशिष्ट अप्रदत्त राशि Deficiency A/c में / लाभ-विभाजन अनुपात में पूंजी खातों में ले जाइए, और सबसे कमजोर स्थिति वाला Capital A/c पहले बन्द कीजिए — अन्तिम खाता स्वतः बन्द हो जाएगा।

कार्य की रीति: Realization A/c, Cash/Bank A/c तथा Capital A/c बनाइए; दिवालिया साझेदार की सम्पदा से जो कुछ वसूल हो उसे लीजिए, फिर उसका शेष डेबिट शेष विलायक साझेदारों में पूंजी अनुपात में बाँटिए (जैसे हानि विलायक P और Q में पूंजी 18,000:9,000 = 2:1 के अनुपात में)।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 2 प्रश्न

- सत्य/असत्य का जाल: Garner vs. Murray के अन्तर्गत दिवालियापन से हुई कमी पूंजी अनुपात में वहन की जाती है, लाभ-विभाजन अनुपात में नहीं — लाभ-विभाजन अनुपात कहने वाला कथन असत्य है।
- कंठस्थ कीजिए कि Garner vs. Murray कब लागू नहीं होता: जब साझेदारी deed कोई विशेष विधि दे; जब केवल एक ही विलायक साझेदार बचे; जब सभी साझेदार दिवालिया हों; और जब किसी विलायक साझेदार का पूंजी खाता डेबिट शेष दिखाए (उससे कमी वहन कराने को नहीं कहा जा सकता)।
- पूंजी अनुपात समझाइए: स्थिर पूंजी — कमी स्थिर पूंजी अनुपात में (समायोजन चालू खातों से होते हैं); परिवर्तनशील पूंजी — संचितियों, आहरण और ब्याज का समायोजन करने के बाद किन्तु वसूली के लाभ/हानि से पहले की पूंजियों का अनुपात।

TQ 6.2 · PYQ 2026-May [1] (a) (ii) {C} · सही/गलत · 2M · Pg 651

LEVEL I
समझ (Understanding)

सरल

TQ 6.1 · PYQ 2021-Dec [4] (b) · वर्णनात्मक · 6M · Pg 650

LEVEL I
समझ (Understanding)

मध्यम

अनुप्रयोग (Application) प्रश्न हल कीजिए · 4 प्रश्न

- Master the full 4-साझेदार विघटन के साथ one/two insolvent साझेदार (P,Q,R,S 4:3:2:1-type): Realization
- A/c, Cash/Bank A/c और पूंजी खाते, distributing प्रत्येक insolvent साझेदार's deficiency over solvent साझेदार में पूंजी अनुपात.
- अभ्यास करें variants: राशियाँ recovered partly से the insolvent साझेदार's estate, परिसंपत्तियाँ taken over by

PQ 6.2 · RTP 2025-Jan [14] · व्यावहारिक · Pg 654

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

कठिन

PQ 6.3 · RTP 2025-May [14] · व्यावहारिक · Pg 658

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

कठिन

PQ 6.4 · RTP 2026-Jan [13] · व्यावहारिक · Pg 660

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

कठिन

PQ 6.1 · MTP 2024-Dec S1 [3] (a) · व्यावहारिक · 12M · Pg 651 **2x पूछा गया**

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

संश्लेषण (Synthesis) आद्योपान्त तैयार कीजिए — इस संस्करण में कोई प्रश्न नहीं

- एक/दो दिवालिया साझेदारों वाले चार-साझेदार विघटन (P,Q,R,S 4:3:2:1 प्रकार) पर अधिकार कीजिए: Realization A/c, Cash/Bank A/c तथा Capital A/c बनाइए, और प्रत्येक दिवालिया साझेदार की कमी विलायक साझेदारों में पूंजी अनुपात में बाँटिए।

- विविध रूपों का अभ्यास कीजिए: दिवालिया साझेदार की सम्पदा से आंशिक वसूली, साझेदारों द्वारा ली गई परिसंपत्तियाँ, तथा सभी साझेदारों के दिवालिया होने पर Deficiency Account का प्रयोग (जहाँ लेनदार Realization A/c में हस्तान्तरित नहीं होते)।

विषय 7: क्रमिक भुगतान (Piecemeal Payments)

P1-C10-U10.6-T07 · Piecemeal Payments

पहले पढ़ें Section 6.7 पढ़िए: जब परिसंपत्तियाँ किस्तों में वसूल हों तब क्रमिक (piecemeal) वितरण — Maximum Loss Method (6.7.1) तथा Highest Relative Capital / Proportionate Capital Method (6.7.2), और यह सब बाह्य देयताओं तथा साझेदारों के ऋणों का क्रमानुसार भुगतान करने के बाद।

नोट्स

प्रत्येक किस्त में भुगतान का क्रम: पहले वसूली-व्यय के लिए प्रावधान, फिर बाह्य लेनदार (रोकड़ कम पड़े तो समानुपातिक रूप से) — साझेदारों की पत्नियों/पतियों से लिए गए ऋणों पर ब्याज बाह्य देयता ही माना जाता है, फिर साझेदारों के ऋण (और उन पर ब्याज), और तब कहीं जाकर पूंजी; वितरण से पहले संचितियाँ/अवितरित लाभ पूंजी खातों में ले जाइए और काल्पनिक परिसंपत्तियाँ अपलिखित कीजिए।

Maximum Loss Method (6.7.1): प्रत्येक किस्त को अन्तिम भुगतान मानिए — शेष परिसंपत्तियों को शून्य मूल्य मान लीजिए; अधिकतम सम्भावित हानि = पूंजियों का योग – उपलब्ध रोकड़, जो लाभ-विभाजन अनुपात में बाँटकर पूंजियों में से घटाई जाती है; इससे बनने वाला काल्पनिक डेबिट शेष अन्य साझेदारों पर पूंजी अनुपात में (Garner vs. Murray) अथवा यथास्थिति PSR में अपलिखित कीजिए; और जो क्रेडिट शेष बचें, उतना भुगतान कीजिए।

Highest Relative Capital / Proportionate Capital Method (6.7.2): प्रत्येक पूंजी को उसके लाभ-हिस्से से भाग दीजिए — सबसे छोटा भागफल आधार पूंजी देता है; उस आधार के अनुपात में काल्पनिक पूंजियाँ निकालिए और वास्तविक पूंजी का उससे अधिक भाग (excess) ज्ञात कीजिए (यही प्रक्रिया शेष साझेदारों में दोहराइए); सबसे अधिक excess वाले साझेदार को पहले भुगतान कीजिए, जब तक पूंजियाँ लाभ-विभाजन अनुपात में न आ जाएँ (पूंजी 15,000:18,000:9,000, PSR 2:2:1 → भागफल 7,500/9,000/9,000, अतः A को कुछ मिलने से पहले B को ₹3,000 और C को ₹1,500)।

दोनों पद्धतियाँ एक ही बिंदु पर मिलती हैं: अन्त में पूंजियाँ लाभ-विभाजन अनुपात में ही बचनी चाहिए, जिसके बाद प्रत्येक अगला रुपया PSR में बाँटता है; प्रस्तुति के लिए Statement of Distribution of Cash बनाइए, जिसमें लेनदारों, साझेदारों के ऋणों और प्रत्येक साझेदार की पूंजी के लिए किस्तवार स्तम्भ हों — यही 15-20 अंक का मानक प्रारूप है।

अनुप्रयोग (Application) प्रश्न हल कीजिए · 3 प्रश्न

- Analys है मिश्रित आँकड़ों का विश्लेषण करें · 2 questions
- Comp हैं विधिसः both अवश्य leave साझेदार' final पूंजीs में लाभ-विभाजन अनुपात (PSR); choose per the question's requirement.
- लेनदार, साझेदार' ऋणs और प्रत्येक साझेदार's पूंजी.
- Under Highest Relative Capital Method: divide पूंजीs द्वारा लाभ हिस्से को find the base पूंजी, compute

- hypothetical पूंजी और excess पूंजी (repeat the process among शेष साझेदार) --- pay the साझेदार के साथ the largest excess first until पूंजी प्रत्येक the लाभ-विभाजन अनुपात (PSR).
- अभ्यास करें adjustments से पहले distribution: transfer आरक्षित निधिस/अवितरित लाभ को पूंजी, अपलिखित करना

PQ 7.1 · PYQ 2018-Nov [4] (a) · व्यावहारिक · 20M · Pg 662	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 7.3 · PYQ 2021-Jan [3] (a) · व्यावहारिक · 15M · Pg 668	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 7.4 · MTP 2024-Apr [4] (a) · व्यावहारिक · 10M · Pg 671 2x पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन

विश्लेषण (Analysis) मिश्रित आँकड़ों पर कार्य कीजिए · 2 प्रश्न

- प्रत्येक किस्त में भुगतान के क्रम का विश्लेषण कीजिए: पहले वसूली-व्यय/प्रावधान, फिर बाह्य लेनदार (रोकड़ कम पड़े तो समानुपातिक रूप से), फिर साझेदारों के ऋण (और साझेदार की पत्नी/पति से लिए ऋण पर ब्याज बाह्य देयता ही माना जाता है), और तब कहीं जाकर पूंजी।
- Maximum Loss Method में प्रत्येक किस्त को अन्तिम मानिए: शेष परिसंपत्तियों को शून्य मूल्य मानकर अधिकतम सम्भावित हानि निकालिए, उसे लाभ-विभाजन अनुपात में बाँटिए, काल्पनिक कमी बनने पर Garner vs. Murray लगाइए, और जो शेष बचे उसका भुगतान कीजिए।
- दोनों पद्धतियों की तुलना कीजिए: दोनों में अन्तिम पूंजियाँ लाभ-विभाजन अनुपात में ही बचनी चाहिए; प्रश्न की माँग के अनुसार पद्धति चुनिए।

PQ 7.2 · PYQ 2019-Nov [2] (a) · व्यावहारिक · 15M · Pg 665	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	कठिन
PQ 7.5 · MTP 2024-Jun [4] (a) · व्यावहारिक · 8M · Pg 672	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	कठिन

संश्लेषण (Synthesis) आद्योपान्त तैयार कीजिए — इस संस्करण में कोई प्रश्न नहीं

- 15-20 अंक वाले प्रश्नों के लिए पूरे Statement of Distribution of Cash पर अधिकार कीजिए: लेनदारों, साझेदारों के ऋणों और प्रत्येक साझेदार की पूंजी के लिए किस्तवार स्तम्भ।
- Highest Relative Capital Method में: पूंजियों को लाभ-हिस्सों से भाग देकर आधार पूंजी ज्ञात कीजिए, काल्पनिक पूंजियाँ और excess पूंजियाँ निकालिए (यही प्रक्रिया शेष साझेदारों में दोहराइए) — सबसे अधिक excess वाले साझेदार को पहले भुगतान कीजिए, जब तक पूंजियाँ लाभ-विभाजन अनुपात में न आ जाएँ।
- वितरण से पहले के समायोजनों का अभ्यास कीजिए: संचितियाँ/अवितरित लाभ पूंजी खातों में ले जाना, काल्पनिक परिसंपत्तियाँ अपलिखित करना, तथा वसूली-व्यय के लिए अलग रखी गई निश्चित राशि जैसी आकस्मिकताएँ सँभालना।

विषय 8: सीमित दायित्व साझेदारी (LLP) का समापन

P1-C10-U10.6-T08 · Winding up of a Limited Liability Partnership (LLP)

पहले पढ़ें Section 6.8 पढ़िए: LLP का समापन ऐच्छिक हो सकता है अथवा Tribunal द्वारा; वे छह परिस्थितियाँ कंठस्थ कीजिए जिनमें Tribunal किसी LLP का समापन कर सकता है।

नोट्स

रीतियाँ: किसी LLP का समापन या तो ऐच्छिक हो सकता है या Tribunal द्वारा, और इस प्रकार समापित LLP विघटित की जा सकती है; केन्द्र सरकार LLP के समापन एवं विघटन के लिए नियम बना सकती है।

Tribunal के छह आधार (SM 6.8): (1) LLP स्वयं समापन चाहती हो; (2) उसमें 6 माह से अधिक समय तक 2 से कम साझेदार रह गए हों; (3) वह अपने ऋण चुकाने में असमर्थ हो; (4) उसने भारत की सम्प्रभुता और अखंडता के हित के विरुद्ध कार्य किया हो; (5) उसने लगातार पाँच वित्तीय वर्षों तक Registrar के पास Statements of Accounts and Solvency अथवा वार्षिक विवरणियाँ दाखिल न की हों; (6) Tribunal को समापन न्यायोचित एवं साम्यपूर्ण प्रतीत हो।

संख्याओं का जाल: ठीक-ठीक आँकड़े उद्धृत कीजिए — 2 साझेदार / 6 माह, तथा दाखिल न करने के लगातार 5 वित्तीय वर्ष ('तीन वर्ष' कहना असत्य है)।

स्मरण (Remembering) कंठस्थ कीजिए • 1 प्रश्न

- Tribunal द्वारा समापन के आधार कंठस्थ कीजिए: (1) LLP स्वयं समापन चाहती हो; (2) 6 माह से अधिक समय तक 2 से कम साझेदार हों; (3) वह अपने ऋण चुकाने में असमर्थ हो; (4) उसने भारत की सम्प्रभुता और अखंडता के विरुद्ध कार्य किया हो; (5) लगातार 5 वित्तीय वर्षों तक Statements of Accounts and Solvency अथवा वार्षिक विवरणियाँ दाखिल न की हों; (6) Tribunal की राय में समापन न्यायोचित एवं साम्यपूर्ण हो।
- स्मरण रखिए: समापन ऐच्छिक भी हो सकता है और Tribunal द्वारा भी; केन्द्र सरकार LLP के समापन एवं विघटन के लिए नियम बना सकती है।

TQ 8.1 • PYQ 2020-Nov [6] (a) • वर्णनात्मक • 5M • Pg 674 **2x पूछा गया****LEVEL I**

स्मरण (Remembering)

मध्यम**समझ (Understanding)** कारण सहित समझाइए • 1 प्रश्न

- दाखिल न करने वाले आधार पर सत्य/असत्य का जाल: अवधि लगातार पाँच वित्तीय वर्ष है जिनमें Statements of Accounts and Solvency अथवा वार्षिक विवरणियाँ दाखिल न की गई हों — 'लगातार तीन वर्ष' कहने वाला कथन असत्य है।
- ऐसे कथनों पर निर्णय देते समय सही आधार के साथ कारण भी दीजिए, और ठीक-ठीक संख्या उद्धृत कीजिए (2 साझेदार/6 माह; 5 वित्तीय वर्ष)।

TQ 8.2 • PYQ 2026-Jan [1] (a) (v) {C} • सही/गलत • 2M • Pg 675

LEVEL I

समझ (Understanding)

सरल**विषय 9: समेकित प्रश्न**

P1-C10-U10.6-T09 • Integrated Problems

पहले पढ़ें इकाई 6 के विस्तृत विघटन illustrations पढ़िए, जिनमें Realization Account, पूंजी समायोजन, साझेदार का दिवालियापन तथा छल से हुई हानि, ली गई परिसंपत्तियाँ और अनभिलिखित मदों जैसी विशेष बातें एक साथ आती हैं।

नोट्स

पूर्ण विघटन का समूह: Realization A/c, साझेदारों के Capital A/c तथा Cash/Bank A/c — तीनों शून्य शेष तक ले जाइए; Bank A/c के योग ही हल की पुष्टि करते हैं; और पूंजी के अन्तिम निपटान से पहले वसूली का लाभ/हानि लाभ-विभाजन अनुपात में बाँटिए।

विशेष मदें: किसी साझेदार द्वारा सहमत मूल्य पर ली गई परिसंपत्ति — उसका Capital डेबिट, Realization क्रेडिट; बट्टे पर चुकाई गई देयता — Realization केवल वास्तव में चुकाई गई राशि से डेबिट; किसी साझेदार द्वारा वहन/चुकाए गए वसूली-व्यय — Realization डेबिट, उसका Capital क्रेडिट; छल/दुर्विनियोग पकड़ में आने पर — सम्बन्धित साझेदार के विरुद्ध अथवा पूंजी खातों से अपलेखन; तथा अनभिलिखित परिसंपत्तियाँ एवं देयताएँ Realization A/c से ही गुजरती हैं।

समय-प्रबन्धन (8-15 अंक): पहले सभी परिसंपत्तियाँ (रोकड़ और काल्पनिक मदों को छोड़कर) तथा बाह्य देयताएँ Realization A/c में ले जाइए, फिर एक-एक करके प्रत्येक समायोजन कीजिए, और उसके बाद साझेदारों के ऋण, पूंजी तथा रोकड़ को Section 48 के क्रम में बन्द कीजिए।

अनुप्रयोग (Application) प्रश्न हल कीजिए • 2 प्रश्न

- nil balances, के साथ the Bank A/c कुल proving the solution.
- अभ्यास करें PYQ-style complications: frauds discovered से पहले विघटन (अपलिखित करना against

PQ 9.1 • PYQ 2022-May [4] (a) • व्यावहारिक • 15M • Pg 675

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)**कठिन**PQ 9.2 • PYQ 2024-Jun [3] (b) • व्यावहारिक • 8M • Pg 678 **3x पूछा गया**LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)**कठिन****संश्लेषण (Synthesis)** आद्योपान्त तैयार कीजिए — इस संस्करण में कोई प्रश्न नहीं

- पूर्ण विघटन-समूह पर अधिकार कीजिए: Realization A/c, साझेदारों के Capital A/c तथा Cash/Bank A/c — शून्य शेष तक, जहाँ Bank A/c के योग हल की पुष्टि करते हैं।
- PYQ जैसी जटिलताओं का अभ्यास कीजिए: विघटन से पहले पकड़े गए छल (साझेदारों/लाभों के विरुद्ध अपलेखन), साझेदारों द्वारा सहमत मूल्यों पर ली गई परिसंपत्तियाँ, बट्टे पर चुकाई गई देयताएँ, किसी साझेदार द्वारा वहन किए गए वसूली-व्यय, तथा अनादृत/आकस्मिक मदें।
- 8-15 अंक के प्रश्नों में समय सँभालिए: पहले सब कुछ Realization A/c में ले जाइए, फिर एक-एक समायोजन कीजिए, और अन्तिम निपटान से पहले वसूली का लाभ/हानि लाभ-विभाजन अनुपात में बाँटिए।

अध्याय 11

कंपनी खाते

Company Accounts

42 विषय • 74 वर्गीकृत प्रश्न • महत्त्व: A

ICAI कौशल प्रोफाइल Level I 5–20% • Level II 80–95% — यह अध्याय है पेपर के अनुरूप

Level I — स्मरण एवं समझ

7.8%

500 में से 39 अंक

Level II — अनुप्रयोग एवं विश्लेषण

92.2%

500 में से 461 अंक

इकाई 11.1: कंपनी खातों का परिचय

Introduction to Company Accounts

P1-C11-U11.1 • महत्त्व D • अध्याय में Rank 6 • श्रेणी C • अध्याय के 2.7% प्रश्न • 2 प्रश्न

विषय 1: परिचय

P1-C11-U11.1-T01 • Introduction

पहले पढ़ें इकाई 1 (कंपनी खातों का परिचय) के paras 1.2 और 1.3 पढ़िए: Companies Act, 2013 के अन्तर्गत कंपनी का अर्थ और कंपनी की ग्यारह प्रमुख विशेषताएँ — विशेषकर पृथक विधिक इकाई, शाश्वत अस्तित्व, सीमित दायित्व और common seal।

नोट्स

विधि की दृष्टि में कंपनी (SM 1.2): वह संस्था जो Companies Act, 2013 के अन्तर्गत गठित एवं निगमित हो, अथवा कोई विद्यमान कंपनी जो किसी पूर्ववर्ती कंपनी विधि के अन्तर्गत गठित और पंजीकृत हो; गठित होते ही वह पृथक विधिक इकाई बन जाती है, जिसे शाश्वत उत्तराधिकार, अपना विशिष्ट नाम और common seal प्राप्त होता है, और सदस्यों के बदलने से उसका अस्तित्व प्रभावित नहीं होता।

न्यायिक परिभाषाएँ (SM): Justice Marshal — “निगम एक कृत्रिम सत्ता है, अदृश्य, अमूर्त, और केवल विधि की परिकल्पना में विद्यमान”; Lord Justice Hanay — “विधि द्वारा सृजित कृत्रिम व्यक्ति, जिसे शाश्वत उत्तराधिकार और common seal प्राप्त है”।

ग्यारह प्रमुख विशेषताएँ (para 1.3): (1) निगमित संघ — अधिनियम के अन्तर्गत पंजीकरण अनिवार्य है, उसके बिना कोई कंपनी नहीं; (2) पृथक विधिक इकाई — अपने निगमित नाम से संविदा कर सकती है, वाद ला सकती है और उस पर वाद लाया जा सकता है; (3) शाश्वत अस्तित्व — सदस्यों की मृत्यु, दिवालियापन अथवा परिवर्तन से प्रभावित नहीं होती; (4) common seal; (5) सीमित दायित्व — केवल अंशों पर देने को सहमत राशि तक; पूर्णदत्त अंशों पर आगे कोई

दायित्व नहीं; (6) स्वामित्व और प्रबन्ध का पृथक्करण; (7) नागरिक नहीं — विधिक अस्तित्व है, पर नागरिकता के अधिकार नहीं; (8) अंशों की हस्तान्तरणीयता (private company में प्रतिबन्धित); (9) पुस्तकों का रख-रखाव; (10) चार्टर्ड अकाउंटेंट्स द्वारा आवधिक अंकेक्षण; (11) Articles के अनुसार सूचना प्राप्त करने का अधिकार।

common seal अब वैकल्पिक: जिन दस्तावेजों पर seal आवश्यक था (विनिमय बिल, अंश-प्रमाणपत्र आदि), उन पर अब दो directors अथवा एक director और company secretary के हस्ताक्षर हो सकते हैं; और भारत में पंजीकृत प्रत्येक कंपनी को Registrar से एक विशिष्ट Corporate Identification Number (CIN) लेना होता है।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 1 प्रश्न

- कंपनी की विशेषताओं पर आधारित सत्य/असत्य कथनों का कारण सहित उत्तर दे सकें — जैसे शाश्वत अस्तित्व: कंपनी अपने सदस्यों से स्वतंत्र रूप से विद्यमान रहती है, अतः सदस्य की मृत्यु, दिवालियापन अथवा परिवर्तन से उसका अस्तित्व प्रभावित नहीं होता (सत्य)।
- पृथक विधिक इकाई समझाइए: कंपनी अपने ही नाम से संविदा कर सकती है, वाद ला सकती है और उस पर वाद लाया जा सकता है; यह विधि द्वारा सृजित कृत्रिम विधिक व्यक्ति है, किन्तु नागरिक नहीं।
- सीमित दायित्व को अंशों पर अदत्त राशि से जोड़िए — पूर्णदत्त अंशों के धारक का इसके आगे कोई दायित्व नहीं रहता।
- सामान्य जाल: 'प्रत्येक public company सूचीबद्ध (listed) कंपनी होती है' असत्य है; यह भी ध्यान रखिए कि common seal अब वैकल्पिक है (दो directors अथवा एक director + company secretary हस्ताक्षर कर सकते हैं)।

TQ 1.1 · PYQ 2019-Nov [1] (a) (vi) {C} · True/False · 2M · Pg 682 asked 5x **LEVEL I**
पूछा गया समझ (Understanding)

सरल

विषय 2: कंपनी का अर्थ

P1-C11-U11.1-T02 · Meaning of Company

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §1.2 पढ़िए: शब्द की व्युत्पत्ति, Companies Act की परिभाषा, तथा Justice Marshal और Lord Justice Hanay की न्यायिक परिभाषाएँ।

नोट्स

अर्थ: विधि की दृष्टि में कंपनी वह है जो Companies Act, 2013 के अन्तर्गत गठित एवं निगमित हो, अथवा किसी पूर्ववर्ती कंपनी विधि के अन्तर्गत पंजीकृत विद्यमान कंपनी हो — गठित होते ही वह पृथक विधिक इकाई बन जाती है, जिसे शाश्वत उत्तराधिकार, विशिष्ट नाम और common seal प्राप्त है और जो सदस्यों के बदलने से अप्रभावित रहती है; उसकी पूंजी सामान्यतः हस्तान्तरणीय अंशों में होती है और सदस्यों का दायित्व सीमित रहता है।

न्यायिक परिभाषाएँ: Justice Marshal — “निगम एक कृत्रिम सत्ता है, अदृश्य, अमूर्त, और केवल विधि की परिकल्पना में विद्यमान”; Lord Justice Hanay — “विधि द्वारा सृजित कृत्रिम व्यक्ति, जिसे शाश्वत उत्तराधिकार और common

seal प्राप्त है"; दोनों का सार यही है कि यह विधि द्वारा किसी विशेष प्रयोजन के लिए पृथक निकाय के रूप में सृजित व्यक्तियों का संघ है।

विषय 3: कंपनी की प्रमुख विशेषताएँ

P1-C11-U11.1-T03 · Salient Features of a Company

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §1.3 पढ़िए, जिसमें कंपनी की ग्यारह प्रमुख विशेषताएँ गिनाई गई हैं।

नोट्स

ग्यारह विशेषताएँ: (1) निगमित संघ — विधि के प्रवर्तन से सृजित, कृत्रिम विधिक व्यक्ति; (2) पृथक विधिक इकाई — अपने नाम से संविदा कर सकती है, वाद ला सकती है और उस पर वाद लाया जा सकता है; (3) सदस्यों की मृत्यु/दिवालियापन/परिवर्तन के बाद भी शाश्वत अस्तित्व; (4) common seal — अब वैकल्पिक, दस्तावेजों पर दो directors अथवा एक director और company secretary के हस्ताक्षर हो सकते हैं; और प्रत्येक भारतीय कंपनी को विशिष्ट Corporate Identification Number (CIN) मिलता है; (5) सीमित दायित्व — अंशधारी केवल आबंटित अंशों पर सहमत राशि तक दायी, पूर्णदत्त होने पर आगे कोई दायित्व नहीं।

आगे: (6) स्वामित्व और प्रबन्ध का पृथक्करण; (7) नागरिक नहीं — विधिक अस्तित्व है, पर नागरिकता के अधिकार नहीं; (8) अंशों की हस्तान्तरणीयता (private company प्रतिबन्ध लगा सकती है); (9) विहित पुस्तकों का रख-रखाव, चूक पर दंड; (10) Board की संस्तुति पर अंशधारियों द्वारा नियुक्त चार्टर्ड अकाउंटेंट्स से आवधिक अंकेक्षण; (11) Articles, बैठकों तथा आवधिक प्रतिवेदनों के अनुसार अंशधारियों को सूचना प्राप्त करने का अधिकार।

विषय 4: कंपनियों के प्रकार

P1-C11-U11.1-T04 · Types of Companies

पहले पढ़ें para 1.4 पढ़िए: Companies Act, 2013 के अन्तर्गत कंपनियों के बारह प्रकार, धारा-संख्या सहित — Government (Sec 2(45), ≥51% प्रदत्त पूंजी), Foreign (2(42)), Private (2(68)), Public (2(71)), One Person (2(62)), Small (2(85)), Listed (2(52)), Unlimited, अंशों/गारंटी द्वारा सीमित, तथा Holding और Subsidiary कंपनियाँ।

नोट्स

बारह प्रकार (para 1.4): Government 2(45) · Foreign 2(42) · Private 2(68) · Public 2(71) · One Person 2(62) · Small 2(85) · Listed 2(52) · Unlimited 2(92) · अंशों द्वारा सीमित 2(22) · गारंटी द्वारा सीमित 2(21) · Holding 2(46) · Subsidiary 2(87) — सभी Companies Act, 2013 की धाराएँ।

Government company (Sec 2(45)): जिसकी प्रदत्त अंश पूंजी का कम-से-कम 51% केन्द्र सरकार और/अथवा एक

या अधिक राज्य सरकारों के पास हो, तथा इसमें ऐसी कंपनी की subsidiary भी सम्मिलित है; **Foreign (2(42))**: जो भारत के बाहर निगमित हो, भारत में उसका कोई व्यवसाय-स्थल हो (स्वयं, किसी अभिकर्ता के माध्यम से, अथवा इलेक्ट्रॉनिक रीति से) और जो भारत में कोई व्यावसायिक गतिविधि करती हो।

Private 2(68) बनाम Public 2(71): private company अपने articles द्वारा (i) अंशों के हस्तान्तरण के अधिकार पर प्रतिबन्ध लगाती है, (ii) सदस्यों की संख्या 200 तक सीमित रखती है (वर्तमान और भूतपूर्व कर्मचारी-सदस्यों को छोड़कर; संयुक्त धारक एक ही गिने जाते हैं), और (iii) प्रतिभूतियों के अभिदान के लिए जनता को किसी भी आमंत्रण का निषेध करती है; public company वही है जो private न हो — public company की subsidiary, भले ही अपने articles से private हो, public मानी जाती है; और अब दोनों के लिए कोई न्यूनतम प्रदत्त पूंजी निर्धारित नहीं है।

Listed 2(52) और Small 2(85): सूचीबद्ध कंपनी वह है जिसकी कोई भी प्रतिभूति किसी भी मान्यता प्राप्त stock exchange पर सूचीबद्ध हो — असूचीबद्ध कंपनी public भी हो सकती है और private भी, और सूचीबद्ध public company असूचीबद्ध हो जाने पर भी public ही रहती है; small company वह गैर-public कंपनी है जिसकी प्रदत्त पूंजी ₹4 करोड़ से अधिक न हो और पूर्ववर्ती वित्तीय वर्ष का turnover ₹40 करोड़ से अधिक न हो, तथा जिसमें holding/subsidiary कंपनियाँ, Sec 8 कंपनियाँ और विशेष अधिनियम के अन्तर्गत निकाय सम्मिलित नहीं हैं।

Holding-Subsidiary 2(46)/2(87): subsidiary वह कंपनी है जिसमें holding company या तो Board की संरचना नियंत्रित करती हो (सभी अथवा बहुसंख्यक directors को नियुक्त या हटाने की शक्ति) या कुल अंश पूंजी के आधे से अधिक का प्रयोग/नियंत्रण करती हो, चाहे स्वयं अथवा अपनी subsidiaries के साथ मिलकर — subsidiaries के माध्यम से अप्रत्यक्ष नियंत्रण भी गिना जाता है; **अन्य**: OPC 2(62) में केवल एक सदस्य होता है; unlimited company 2(92) में सदस्यों के दायित्व की कोई सीमा नहीं; और गारंटी द्वारा सीमित कंपनी 2(21) में दायित्व उस राशि तक सीमित है जो सदस्य समापन के समय देने का वचन देते हैं।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 1 प्रश्न

- सूचीबद्ध कंपनी (Sec 2(52)) वह है जिसकी कोई भी प्रतिभूति किसी भी मान्यता प्राप्त stock exchange पर सूचीबद्ध हो — केवल equity shares अथवा केवल NSE तक सीमित नहीं; इसे एक ही exchange तक सीमित करने वाला कथन असत्य है।
- परिभाषा-आधारित प्रत्येक सत्य/असत्य के लिए कारण तैयार रखिए: private company में सदस्यों की अधिकतम संख्या 200 और अंश-हस्तान्तरण पर प्रतिबन्ध; public company वह है जो private नहीं है; असूचीबद्ध कंपनी public भी हो सकती है और private भी।
- सीमाएँ स्मरण रखिए: Government company में सरकार की धारिता $\geq 51\%$; small company (public के अतिरिक्त) — प्रदत्त पूंजी $\leq ₹4$ करोड़ और turnover $\leq ₹40$ करोड़; subsidiary — जहाँ holding company Board की संरचना अथवा कुल अंश पूंजी के आधे से अधिक को नियंत्रित करती है।

TQ 4.1 · RTP 2023-Jun [1] (viii) · True/False · Pg 683 **2× पूछा गया**

LEVEL I
समझ (Understanding)

सरल

विषय 5: लेखा-पुस्तकों का रख-रखाव

P1-C11-U11.1-T05 · Maintenance of Books of Account

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §1.5 पढ़िए, जो Companies Act, 2013 की Section 128 पर है।

नोट्स

Section 128: प्रत्येक कंपनी अपने पंजीकृत कार्यालय में प्रत्येक वित्तीय वर्ष के लिए लेखा-पुस्तकें, अन्य सुसंगत पुस्तकें एवं कागजात तथा वित्तीय विवरण तैयार करके रखेगी, जो कार्य-स्थिति का सत्य और उचित चित्र दें (शाखा कार्यालयों सहित) और पंजीकृत कार्यालय तथा शाखाओं के लेन-देनों को स्पष्ट करें; पुस्तकें उपार्जन आधार पर तथा दोहरा लेखा प्रणाली के अनुसार रखी जाएंगी; और विहित रीति से इन्हें इलेक्ट्रॉनिक रूप में भी रखा जा सकता है।

विषय 6: वित्तीय विवरणों की तैयारी

P1-C11-U11.1-T06 · Preparation of Financial Statements

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §1.6 पढ़िए: Section 129, Section 2(40) के घटक, तथा Schedule III के तीन Divisions।

नोट्स

Section 129: वित्तीय विवरण सत्य और उचित चित्र देंगे, अधिसूचित लेखांकन मानकों का पालन करेंगे और Schedule III के प्रारूप में होंगे; निदेशक मंडल उन्हें प्रत्येक वार्षिक साधारण सभा के समक्ष रखता है।

घटक — Sec 2(40): (i) तुलन-पत्र, (ii) लाभ-हानि खाता (अलाभकारी गतिविधि के लिए आय-व्यय खाता), (iii) रोकड़ प्रवाह विवरण, (iv) लागू हो तो equity में परिवर्तन का विवरण, (v) व्याख्यात्मक टिप्पणियाँ; One Person Company, small company तथा dormant company रोकड़ प्रवाह विवरण छोड़ सकती हैं।

Schedule III: Part I — तुलन-पत्र का प्रारूप, Part II — Statement of Profit and Loss; Division I उन कंपनियों के लिए जो Accounting Standards लागू करती हैं, Division II उनके लिए जो Ind AS लागू करती हैं, तथा Division III Ind AS लागू करने वाली NBFCs के लिए; बीमा, बैंकिंग और विद्युत कंपनियों पर विशेष अधिनियम लागू होते हैं।

इकाई 11.2: अंशों का निर्गम, जब्ती और पुनर्निर्गम

Issue, Forfeiture and Re-Issue of Shares

P1-C11-U11.2 · महत्त्व A · अध्याय में Rank 1 · श्रेणी A · अध्याय के 37.8% प्रश्न · 28 प्रश्न

विषय 1: परिचय

P1-C11-U11.2-T01 · Introduction

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §2.1 पढ़िए: संगठन के विभिन्न रूपों में पूंजी की व्यवस्था, और कंपनी-रूप क्यों उभरा।

नोट्स

रूप के अनुसार पूंजी: एकल स्वामित्व — स्वामी की पूंजी, असीमित दायित्व; साझेदारी — साझेदारों की पूंजी, असीमित दायित्व और सीमित पूंजी, क्योंकि सदस्यों की संख्या सीमित है; कंपनी — अंशधारियों से प्राप्त अंश पूंजी, जहाँ दायित्व धारित अंशों के निर्गम मूल्य तक सीमित रहता है।

कंपनी-रूप का उदय: औद्योगिक क्रान्ति के साथ पूंजी की आवश्यकता कई गुना बढ़ी और तकनीकी गति के कारण असफलता का जोखिम भी; गैर-निगमित संस्थाएँ बढ़ी हुई पूंजी और जोखिम के इस दबाव को नहीं सँभाल सकीं, जिससे संगठन का कंपनी-रूप सामने आया।

विषय 2: अंश पूंजी (Share Capital)

P1-C11-U11.2-T02 · Share Capital

पहले पढ़ें para 2.2 पढ़िए: अंश और अंश पूंजी का अर्थ, तथा उसकी श्रेणियाँ — अधिकृत/नाममात्र, निर्गमित, अभिदत्त, माँगी गई, प्रदत्त और आरक्षित पूंजी (Sec 65) — साथ ही Notes to Accounts में अंश पूंजी का प्रकटीकरण।

नोट्स

अंश (SM 2.2): कुल पूंजी को निश्चित राशि की अनेक छोटी अविभाज्य इकाइयों में बाँटा जाता है, और प्रत्येक इकाई ही अंश है; प्रमाणपत्र पर छपा निश्चित मूल्य नाममात्र/सम/अंकित मूल्य कहलाता है, किन्तु निर्गम मूल्य इससे भिन्न हो सकता है; अंशधारी का दायित्व अर्जित अंशों के निर्गम मूल्य तक सीमित रहता है।

छह श्रेणियाँ: अधिकृत/नाममात्र (Memorandum के Capital Clause के अनुसार अधिकतम) · निर्गमित (वह भाग जो नकद अथवा नकद से भिन्न प्रतिफल के बदले निर्गमित किया गया; शेष अनिर्गमित है, जो तुलन-पत्र में नहीं दिखाया जाता) · अभिदत्त (निर्गमित पूंजी का वह भाग जिसके लिए आवेदन आए और आबंटन हुआ) · माँगी गई (निर्गम मूल्य का वह भाग जिसकी माँग की गई; शेष अप्राप्त/uncalled है) · प्रदत्त (माँगी गई में से calls-in-arrears घटाकर) · आरक्षित पूंजी (Sec 65 — अभिदत्त अप्राप्त पूंजी, जिसे संकल्प द्वारा केवल समापन पर माँगा जा सकता है)।

श्रृंखला: अधिकृत = निर्गमित + अनिर्गमित; माँगी गई = प्रदत्त + calls-in-arrears - calls-in-advance; Notes to Accounts में प्रत्येक स्तर प्रकट किया जाता है, किन्तु तुलन-पत्र के योग में केवल प्रदत्त पूंजी (माँगी गई में से अदत्त calls घटाकर) ही गिनी जाती है।

Reserve Capital बनाम Capital Reserve (जाल): reserve capital अप्राप्त अंश पूंजी है, जो केवल समापन पर

माँगी जा सकती है; capital reserve Reserves and Surplus का भाग है, जो केवल पूंजीगत लाभों से बनता है और लाभांश घोषित करने के लिए उपलब्ध नहीं होता।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 1 प्रश्न

- कारण सहित सत्य/असत्य का उत्तर दे सकें: पूर्वाधिकार अंशधारी उसी कंपनी के equity shares भी रख सकता है — इस पर कोई रोक नहीं; अतः कथन असत्य है।
- श्रृंखला समझाइए: Authorised = Issued + Unissued; Called-up = Paid-up + Calls-in-arrears; तुलन-पत्र के योग में केवल प्रदत्त (paid-up) पूंजी आती है।
- Reserve Capital (अप्राप्त पूंजी, जो केवल समापन पर माँगी जा सकती है) और Capital Reserve (पूंजीगत लाभों से बना, Reserves and Surplus का भाग) में अन्तर कीजिए — यही सबसे प्रिय जाल है।

TQ 2.1 · PYQ 2021-Jul [1] (a) (iv) {C} · True/False · 2M · Pg 687 **3x पूछा गया** **LEVEL I**
समझ (Understanding)

सरल

विषय 3: अंशों के प्रकार

P1-C11-U11.2-T03 · Types of Shares

पहले पढ़ें para 2.3 पढ़िए: पूर्वाधिकार अंश (Sec 43) और उनके आठ प्रकार — संचयी/असंचयी, सहभागी/गैर-सहभागी, शोध/अशोध, परिवर्तनीय/अपरिवर्तनीय — तथा इनकी तुलना equity shares और उनके अधिकारों से।

नोट्स

पूर्वाधिकार अंश (Sec 43): इनमें दो सुनिश्चित पूर्वाधिकार होते हैं — (a) निश्चित दर पर लाभांश का भुगतान और (b) समापन पर पूंजी की वापसी; धारकों को सामान्यतः मताधिकार नहीं मिलता; अशोध पूर्वाधिकार अंश निषिद्ध हैं — शोधन निर्गम से 20 वर्ष के भीतर (20 वर्ष से अधिक केवल विनिर्दिष्ट infrastructure परियोजनाओं के लिए, Sec 55)।

डिफ़ॉल्ट स्थिति (कारण-आधारित सत्य/असत्य): जब तक स्पष्ट रूप से अन्यथा न कहा जाए, पूर्वाधिकार अंश संचयी, गैर-सहभागी और अपरिवर्तनीय माने जाते हैं; और यदि संचयी पूर्वाधिकार लाभांश कम-से-कम 2 वर्ष से बकाया हो, तो धारक साधारण सभा के प्रत्येक प्रस्ताव पर मत दे सकते हैं।

आठ प्रकार: संचयी (लाभांश चुकाए जाने तक जुड़ता रहता है; बकाया अलग से प्रकट किया जाता है) / असंचयी (उस वर्ष का अधिकार समाप्त हो जाता है) · सहभागी (अधिशेष लाभों में तथा equity को चुकाने के बाद समापन-अधिशेष में भागीदारी) / गैर-सहभागी · शोध (Sec 55 के अनुसार शोध) / अशोध · परिवर्तनीय (निर्गम की शर्तों के अनुसार धारक के विकल्प पर equity में परिवर्तन) / अपरिवर्तनीय।

Equity shares: वे अंश जो पूर्वाधिकार अंश नहीं हैं — लाभांश अथवा पूंजी-वापसी में कोई पूर्वाधिकार नहीं; लाभांश की दर परिवर्तनशील है, जिसकी संस्तुति Board नीति तथा पूर्वाधिकार चुकाने के बाद बचे लाभ को देखकर करता है; इन पर मताधिकार होता है; और लाभांश/मताधिकार के सम्बन्ध में differential rights वाले equity shares विहित नियमों के अन्तर्गत अनुमत हैं।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 1 प्रश्न

- पूर्वाधिकार अंशधारियों को सामान्यतः मताधिकार नहीं मिलता — अतः 'गैर-सहभागी पूर्वाधिकार अंशधारियों को मताधिकार प्राप्त है' असत्य है; अपवाद: संचयी पूर्वाधिकार लाभांश 2 वर्ष या अधिक से बकाया हो तो प्रत्येक प्रस्ताव पर मताधिकार मिल जाता है।
- डिफॉल्ट स्थिति कारण सहित समझिए: जब तक स्पष्ट रूप से अन्यथा न कहा जाए, पूर्वाधिकार अंश संचयी, गैर-सहभागी और अपरिवर्तनीय माने जाते हैं।
- यह जानिए कि अशोध्य (irredeemable) पूर्वाधिकार अंश निषिद्ध हैं; 20 वर्ष से अधिक अवधि में शोधन केवल विनिर्दिष्ट infrastructure परियोजनाओं के लिए अनुमत है (Sec 55)।
- equity shares से तुलना कीजिए: लाभांश अथवा पूंजी-वापसी में कोई पूर्वाधिकार नहीं, लाभांश परिवर्तनशील और Board की संस्तुति पर, मताधिकार संलग्न, तथा निर्धारित नियमों के अन्तर्गत differential rights वाले equity shares भी अनुमत।

PQ 3.1 · PYQ 2021-Dec [1] (a) (iv) {C} · True/False · 2M · Pg 687 **2x पूछा गया** **LEVEL I**
समझ (Understanding)

सरल**विषय 4: नकद के लिए अंशों का निर्गम**

P1-C11-U11.2-T04 · Issue of Shares for Cash

पहले पढ़ें paras 2.4–2.5 पढ़िए: prospectus के माध्यम से निर्गम की प्रक्रिया, न्यूनतम अभिदान (SEBI के अनुसार 90%), आवेदन/आबंटन/call की किस्तें, तथा पूर्ण, अल्प और अति अभिदान की journal entries।

नोट्स

प्रक्रिया: public company prospectus जारी करती है; निर्गम मूल्य किस्तों में वसूला जाता है — आवेदन, आबंटन, प्रथम call ... अन्तिम call; न्यूनतम अभिदान मिले बिना आबंटन नहीं हो सकता; **Sec 39:** आवेदन राशि अंकित (face) मूल्य की कम-से-कम 5%; **SEBI:** न्यूनतम आवेदन राशि निर्गम मूल्य की 25%, तथा न्यूनतम अभिदान प्रस्ताव का 90% — 90% न मिलने पर सारी आवेदन राशि बन्द होने के 15 दिन के भीतर लौटानी होगी (underwritten निर्गम में 70 दिन)।

आदर्श entries: Bank डेबिट / Share Application क्रेडिट (राशि प्राप्त); Share Application डेबिट / Share Capital क्रेडिट (आबंटन पर); Share Allotment डेबिट / Share Capital क्रेडिट (आबंटन देय), फिर Bank डेबिट / Share Allotment क्रेडिट; प्रत्येक call — Share Call डेबिट / Share Capital क्रेडिट (देय), Bank डेबिट / Share Call क्रेडिट; प्रत्येक राशि = अंशों की संख्या × प्रति अंश किस्त दर।

संयुक्त खाते वाला रूप: Bank डेबिट / Share Application and Allotment A/c क्रेडिट; आबंटन पर Share Application and Allotment डेबिट / Share Capital क्रेडिट, आवेदन तथा आबंटन की कुल राशि से; और प्राप्ति पर Bank डेबिट / Share Application and Allotment क्रेडिट।

अल्प अभिदान: प्रस्तावित अंशों से कम आवेदन आना — वही तिथिवार entries कीजिए, पर सभी राशियाँ वास्तव में आवेदित/आबंटित अंशों पर निकालिए (जैसे 43,000 निर्गमित में से 40,000); आबंटन तभी विधिमान्य है जब न्यूनतम अभिदान मिल गया हो; और अदत्त राशि पर — Bank डेबिट + Calls-in-Arrears डेबिट / Share Allotment (अथवा Call) A/c क्रेडिट, कुल देय राशि से।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 1 प्रश्न

- Sec 39: आवेदन राशि अंकित (face) मूल्य की कम-से-कम 5% होनी चाहिए; SEBI निर्गम (issue) मूल्य का न्यूनतम 25% माँगता है — अतः 25% को Sec 39 की सीमा बताने वाला कथन असत्य है।
- Calls-in-arrears पर ब्याज अंशधारी कंपनी को देता है (Table F के अनुसार अधिकतम 10%); कंपनी ब्याज केवल calls-in-advance पर देती है — इस उलटफेर वाले जाल से सावधान रहिए।

TQ 4.1 · PYQ 2026-May [1] (a) (iv) {C} · True/False · 2M · Pg 688

LEVEL I
समझ (Understanding)**सरल****अनुप्रयोग (Application)** प्रक्रिया का अभ्यास कीजिए · 1 प्रश्न

- पूरी journal-entry श्रृंखला का अभ्यास कीजिए: आवेदन राशि प्राप्त → पूंजी में हस्तान्तरण → आबंटन देय/प्राप्त → प्रत्येक call देय/प्राप्त, जहाँ राशि = अंशों की संख्या × किस्त दर।
- अल्प-अभिदान (under-subscription) सँभालिए — सभी entries वास्तव में आबंटित अंशों पर आधारित कीजिए (जैसे 43,000 निर्गमित में से 40,000 आबंटित) और अदत्त राशि Calls-in-Arrears A/c में दर्ज कीजिए।
- तिथिवार entries (आबंटन, निर्धारित तिथियों पर calls) और वर्षान्त की समापन entries का अभ्यास कीजिए, तथा तिथियाँ दी हों तो calls-in-arrears/advance पर ब्याज भी।

PQ 4.1 · RTP 2022-May [17] · Practical · Pg 688 **5× पूछा गया****LEVEL II**
अनुप्रयोग (Application)**मध्यम****विषय 5: अंशों की सदस्यता**

P1-C11-U11.2-T05 · Subscription of Shares

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक**पहले पढ़ें** \$2.5 को Illustrations 2-4 सहित पढ़िए: पूर्ण, अल्प और अति अभिदान तथा उनकी entries।**नोट्स**

पूर्ण अभिदान: प्रस्तावित अंश = अभिदत्त अंश; entries — आवेदन प्राप्त: Bank डेबिट / Share Application A/c क्रेडिट; आबंटन पर: Share Application डेबिट / Share Capital क्रेडिट; आबंटन देय: Share Allotment डेबिट / Share Capital क्रेडिट; आबंटन प्राप्त: Bank डेबिट / Share Allotment क्रेडिट; call देय: Share Call डेबिट / Share Capital क्रेडिट, और प्राप्ति पर Bank डेबिट / Share Call क्रेडिट।

अल्प अभिदान: आवेदित अंश प्रस्तावित अंशों से कम — entries वही, पर राशियाँ वास्तव में आवेदित और आबंटित अंशों पर निकाली जाती हैं; और आबंटन तभी किया जा सकता है जब न्यूनतम अभिदान प्राप्त हो।

अति अभिदान: कुछ आवेदन अस्वीकृत (Share Application A/c डेबिट / Bank क्रेडिट — वापसी) और कुछ को आंशिक (pro-rata) आबंटन — अतिरिक्त आवेदन राशि समायोजित की जाती है: Share Application A/c डेबिट /

Share Allotment A/c क्रेडिट, Calls-in-Advance A/c क्रेडिट, तथा Bank क्रेडिट (लौटाई गई अतिरिक्त राशि)।

विषय 6: छूट पर अंशों का निर्गम

P1-C11-U11.2-T06 • Shares Issued at Discount

पहले पढ़ें para 2.6 तथा Companies Act, 2013 की Section 53 पढ़िए: बट्टे पर अंश निर्गमित करने का निषेध और sweat equity का अपवाद।

नोट्स

अर्थ: नाममात्र/सम मूल्य से कम पर निर्गम; नाममात्र मूल्य का निर्गम मूल्य से अधिक भाग = बट्टा (₹100 का अंश ₹98 पर निर्गमित होने पर 2% बट्टा)।

Sec 53: कंपनी बट्टे पर अंश निर्गमित नहीं कर सकती — ऐसा कोई भी निर्गम शून्य है और कंपनी जुर्माने से दंडनीय है; एकमात्र अपवाद: know-how, बौद्धिक सम्पदा अधिकार अथवा मूल्य-वर्धन के बदले directors या कर्मचारियों को बट्टे पर अथवा नकद से भिन्न प्रतिफल पर निर्गमित sweat equity shares।

परीक्षा का विरोधाभास: debentures किसी भी बट्टे पर निर्गमित किए जा सकते हैं (कोई सांविधिक सीमा नहीं), और जब्त अंशों का अंकित मूल्य से कम पर पुनर्निर्गम विक्रय है, बट्टे पर नया निर्गम नहीं।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए • 2 प्रश्न

- Sec 53: कंपनी अंशों का निर्गम बट्टे (discount) पर नहीं कर सकती — ऐसा निर्गम शून्य है और कंपनी दंडनीय है; अतः 'कंपनी जनता को बट्टे पर अंश निर्गमित नहीं कर सकती' सत्य है।
- एकमात्र अपवाद जानिए: know-how, IPR अथवा मूल्य-वर्धन के बदले directors/कर्मचारियों को निर्गमित sweat equity shares।
- परीक्षा में पूछे जाने वाला विरोधाभास ध्यान रखिए: अंश बट्टे पर निर्गमित नहीं हो सकते, पर debentures हो सकते हैं; और जब्त अंशों का अंकित मूल्य से कम पर पुनर्निर्गम बट्टे पर नया निर्गम नहीं माना जाता।

TQ 6.1 • PYQ 2021-Jul [1] (a) (ii) {C} • True/False • 2M • Pg 690 **3x पूछा गया** **LEVEL I**
समझ (Understanding)

सरल

TQ 6.2 • PYQ 2025-Sep [1] (a) (vi) {C} • True/False • 2M • Pg 690 **LEVEL I**
समझ (Understanding)

सरल

विषय 7: प्रीमियम पर अंशों का निर्गम

P1-C11-U11.2-T07 • Shares Issued at Premium

पहले पढ़ें para 2.7 तथा Section 52 पढ़िए: premium का अर्थ, Securities Premium Account में क्रेडिट (जो Reserves and Surplus के अन्तर्गत दिखाया जाता है), तथा उस खाते के पाँच अनुमत उपयोग।

नोट्स

अर्थ: अंकित मूल्य से अधिक पर निर्गम; premium = निर्गम मूल्य का अंकित मूल्य से अधिक भाग (₹100 का अंश ₹105 पर अर्थात् 5% premium); premium सामान्यतः आबंटन के साथ माँगा जाता है, कभी आवेदन के साथ, और विरले ही calls के साथ।

व्यवहार: premium अंश पूंजी नहीं है — यह पूंजीगत प्रकृति का लाभ है, जो अलग “Securities Premium Account” में क्रेडिट होता है, Reserves and Surplus (shareholders' funds) के अन्तर्गत दिखाया जाता है और लाभांश के लिए उपलब्ध नहीं होता।

पाँच उपयोग (Sec 52): (a) सदस्यों को पूर्णदत्त बोनस अंश; (b) प्रारम्भिक व्ययों का अपलेखन; (c) प्रतिभूतियों अथवा debentures के निर्गम पर हुए व्यय, दिए गए commission अथवा बट्टे का अपलेखन; (d) शोध्य पूर्वाधिकार अंशों अथवा debentures के शोधन पर premium; (e) स्वयं के अंशों अथवा अन्य प्रतिभूतियों का क्रय (buy-back)।

Ind AS की सीमा: Sec 133 के अन्तर्गत विहित वर्ग की कंपनियाँ (Ind AS लागू करने वाली) securities premium का प्रयोग (b) प्रारम्भिक व्ययों तथा (d) शोधन पर premium के लिए नहीं कर सकतीं।

entry (premium आबंटन के साथ): Share Allotment डेबिट / Share Capital क्रेडिट + Securities Premium क्रेडिट; और यदि आवेदन के साथ माँगा गया हो तो आबंटन पर — Share Application डेबिट / Share Capital क्रेडिट + Securities Premium क्रेडिट।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 1 प्रश्न

- Securities Premium के पाँच उपयोग कंठस्थ कीजिए (Sec 52): सदस्यों को पूर्णदत्त बोनस अंश; प्रारम्भिक व्ययों का अपलेखन; प्रतिभूतियों अथवा debentures के निर्गम पर व्यय/commission/बट्टे का अपलेखन; पूर्वाधिकार अंशों अथवा debentures के शोधन पर premium; तथा स्वयं के अंशों का buy-back — अतः प्रारम्भिक व्यय अपलिखित करने में इसका प्रयोग सत्य है।
- समझाइए कि premium अंश पूंजी क्यों नहीं है: यह पूंजीगत लाभ है जो अलग खाते में क्रेडिट होता है और लाभांश के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता।
- ध्यान दीजिए: Ind AS लागू कंपनियाँ (Sec 133 वर्ग) इसका प्रयोग प्रारम्भिक व्ययों अथवा शोधन पर premium के लिए नहीं कर सकतीं।

TQ 7.1 · PYQ 2026-Jan [1] (a) (vi) {C} · True/False · 2M · Pg 691 **2× पूछा गया** **LEVEL I**
समझ (Understanding)

सरल

विषय 8: अधिक सदस्यता और आनुपातिक आवंटन

P1-C11-U11.2-T08 · Over Subscription and Pro-Rata Allotment

पहले पढ़ें paras 2.5.3 और 2.8 पढ़िए: अति अभिदान का व्यवहार — अस्वीकृति तथा वापसी, pro-rata आबंटन, और अतिरिक्त आवेदन राशि का आबंटन तथा calls के विरुद्ध समायोजन।

नोट्स

अति अभिदान: आवेदन प्रस्तावित अंशों से अधिक होना; कंपनी कुछ आवेदन अस्वीकार कर सकती है (राशि लौटाकर), कुछ को पूरा आबंटन कर सकती है, अथवा pro-rata आबंटन कर सकती है — अर्थात् आवेदित अंशों के अनुपात में आबंटन (10,000 के प्रस्ताव पर 12,000 आवेदित = 6:5, अतः 6 अंशों के आवेदक को 5 अंश)।

अतिरिक्त राशि का समायोजन: अतिरिक्त आवेदन राशि पहले आबंटन-देय के विरुद्ध और फिर भावी calls के विरुद्ध समायोजित होती है; शेष लौटा दी जाती है — entries: Share Application डेबिट / Bank क्रेडिट (अस्वीकृत आवेदन); Share Application डेबिट / Share Allotment क्रेडिट + Calls-in-Advance क्रेडिट + Bank क्रेडिट (pro-rata समायोजन तथा वापसी)।

चूककर्ता की गणना (15 अंक वाले प्रश्नों की धुरी): चूककर्ता द्वारा आवेदित अंश = आबंटित अंश × (आवेदित ÷ आबंटित अनुपात); आवेदन पर चुकाई गई अतिरिक्त राशि = (आवेदित – आबंटित) × आवेदन दर; वास्तविक बकाया = आबंटन/call पर देय राशि – पहले से समायोजित अतिरिक्त राशि (जैसे Raj: आवेदित 1,500, आबंटित 1,125, अतिरिक्त ₹3,375 call के विरुद्ध समायोजित, बकाया ₹3,375)।

premium की टिप्पणी: जहाँ pro-rata अंश premium पर निर्गमित हों, वहाँ अतिरिक्त आवेदन राशि पहले पूंजी के विरुद्ध और उसके बाद securities premium के विरुद्ध समायोजित होती है।

अनुप्रयोग (Application) प्रक्रिया का अभ्यास कीजिए · 1 प्रश्न

- pro-rata की गणना पर अधिकार पाइए: आवेदित अंश ÷ आबंटित अंश का अनुपात (जैसे 6,00,000 के लिए 8,00,000 आवेदित); अतिरिक्त आवेदन राशि Share Allotment में क्रेडिट होती है (और आबंटन देय से अधिक हो तो Calls-in-Advance में), शेष लौटा दी जाती है।
- pro-rata में चूक करने वाले अंशधारी के लिए पहले आवेदित अंश निकालिए = आबंटित × अनुपात, फिर पहले से चुकाई गई अतिरिक्त राशि, तब वास्तविक आबंटन/call की बकाया राशि — 15 अंक के प्रश्नों की यही धुरी है।
- premium सहित आबंटन, दो समान किस्तों में calls, तथा अन्तिम वापसी राशि सहित सम्पूर्ण journal entries का अभ्यास कीजिए।

PQ 8.1 · PYQ 2024-Sep [6] (a) · Practical · 15M · Pg 691 **2× पूछा गया****LEVEL II**
अनुप्रयोग (Application)**कठिन****विषय 9: बकाया कॉल और अग्रिम कॉल**

P1-C11-U11.2-T09 · Calls-In-Arrears and Calls-In Advance

पहले पढ़ें para 2.9 पढ़िए: Calls-in-Arrears (जो माँगी गई पूंजी में से घटाई जाती है) तथा Calls-in-Advance (जो call देय होने तक देयता है) का अर्थ और journal entries, Table F की सीमाओं सहित।

नोट्स

Calls-in-arrears: एक या अधिक किस्तों (आबंटन/calls) पर अदत्त कुल राशि; इसे माँगी गई पूंजी में से घटाकर प्रदत्त पूंजी निकाली जाती है; entry — Calls-in-Arrears A/c डेबिट (अदत्त) + Bank डेबिट (प्राप्त) / Share Allotment

अथवा Share Call A/c क्रेडिट (कुल देय)।

Calls-in-advance: वे calls जो अभी माँगे नहीं गए, पर अंशधारी ने पहले ही चुका दिए — यह देयता है (Other Current Liabilities), पूंजी कभी नहीं; entry — Bank डेबिट / Calls-in-Advance क्रेडिट; और call देय होने पर — Calls-in-Advance डेबिट + Bank डेबिट (शेष प्राप्त) / सम्बन्धित Call A/c क्रेडिट।

Table F की सीमाएँ: calls-in-arrears पर अधिकतम 10% वार्षिक ब्याज लिया जा सकता है (कंपनी की आय) और calls-in-advance पर अधिकतम 12% वार्षिक देना होता है (कंपनी का व्यय); calls-in-advance पर कोई लाभांश देय नहीं; तुलन-पत्र में माँगी गई पूंजी में से calls-in-arrears घटाकर दिखाइए, और calls-in-advance अलग देयता के रूप में।

अनुप्रयोग (Application) प्रक्रिया का अभ्यास कीजिए · 3 प्रश्न

- entries का अभ्यास कीजिए: अदत्त राशि से Calls-in-Arrears A/c डेबिट; भावी call की राशि प्राप्त होने पर Bank डेबिट / To Calls-in-Advance; और call देय होने पर Calls-in-Advance को उसी call के विरुद्ध समायोजित कीजिए।
- 15 अंक वाले ऐसे प्रश्न हल कीजिए जिनमें premium, किसी एक धारक द्वारा आंशिक भुगतान (जैसे 2,000 अंशों के धारक द्वारा आबंटन राशि न देना) और बाद में ब्याज सहित प्राप्ति — तीनों एक साथ हों।
- journal के साथ-साथ Bank/Cash Book भी बनाइए और तुलन-पत्र का अंश दिखाइए: called-up पूंजी में से calls-in-arrears घटाकर; calls-in-advance को Other Current Liabilities में।
- जहाँ तिथियों सहित नया निर्गम दिया हो, वहाँ arrears/advance के शेष निकालने से पहले प्रत्येक किस्त को धारकवार देखिए।

PQ 9.3 · RTP 2024-Sep [14] · Practical · Pg 697 **5× पूछा गया**

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

मध्यम

PQ 9.1 · PYQ 2022-May [6] (a) · Practical · 15M · Pg 693 **4× पूछा गया**

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

कठिन

PQ 9.2 · PYQ 2021-Jan [6] (a) · Practical · 15M · Pg 695 **9× पूछा गया**

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

कठिन

विषय 10: बकाया कॉल और अग्रिम कॉल पर ब्याज

P1-C11-U11.2-T10 · Interest on Calls-in-Arrears and Calls-in-Advance

पहले पढ़ें para 2.10 पढ़िए: Table F की अधिकतम दरें — calls-in-arrears पर 10% वार्षिक (आय) और calls-in-advance पर 12% वार्षिक (व्यय) — गणना की अवधि तथा journal entries।

नोट्स

नियम (para 2.10): ब्याज Articles के अनुसार, किन्तु Table F की अधिकतम सीमा के भीतर — calls-in-arrears पर 10% वार्षिक (जो कंपनी अंशधारी से वसूलती है) और calls-in-advance पर 12% वार्षिक (जो कंपनी चुकाती है); ठीक तिथियों से महीनों की गिनती में ही अंक कटते हैं।

Calls-in-Arrears पर ब्याज	Calls-in-Advance पर ब्याज
देय किन्तु अदत्त calls पर अंशधारी कंपनी को देता है	देय होने से पहले प्राप्त call राशि पर कंपनी देती है
Table F की अधिकतम सीमा: 10% वार्षिक	Table F की अधिकतम सीमा: 12% वार्षिक
अवधि: call देय होने की तिथि से राशि की अन्तिम प्राप्ति तक	अवधि: राशि प्राप्ति की तिथि से call के देय होने तक
Directors व्यक्तिगत मामलों में इसे छोड़ सकते हैं	calls-in-advance पर कोई लाभांश देय नहीं
Nominal खाता — Statement of P&L में आय के रूप में क्रेडिट	Nominal खाता — Statement of P&L में व्यय

entries: बकाया — Shareholders'/Sundry Members' A/c डेबिट / Interest on Calls-in-Arrears क्रेडिट, फिर Bank डेबिट / Shareholders' क्रेडिट; अग्रिम — Interest on Calls-in-Advance डेबिट / अंशधारी का A/c क्रेडिट, फिर भुगतान पर अंशधारी का A/c डेबिट / Bank क्रेडिट।

हल का संकेत (Illustration 9): ₹25,000 का अग्रिम 3 माह तक 12% पर = ₹750, जो Mr. Nair को चुकाया गया; और ₹2,500 का बकाया 2 माह तक 10% पर = ₹41.67, जो call की राशि के साथ प्राप्त हुआ।

अनुप्रयोग (Application) प्रक्रिया का अभ्यास कीजिए · 2 प्रश्न

- बकाया पर ब्याज call की देय तिथि से वास्तविक प्राप्ति की तिथि तक, और अग्रिम पर ब्याज प्राप्ति की तिथि से call के देय होने की तिथि तक गणना कीजिए — महीनों की गिनती में ही अंक कटते हैं।
- entries का अभ्यास कीजिए: Shareholder/Sundry Members A/c डेबिट To Interest on Calls-in-Arrears (आय); Interest on Calls-in-Advance A/c डेबिट To Shareholder, फिर भुगतान — अग्रिम पर ब्याज Statement of P&L में व्यय है।
- पूरे 15 अंक वाले निर्गम हल कीजिए (जैसे ₹5 premium पर 3,00,000 अंश) जिनमें एक धारक call देर से चुकाता है और दूसरा calls पहले ही चुका देता है — pro-rata, premium तथा दोनों प्रकार के ब्याज एक साथ।

PQ 10.1 · PYQ 2025-Jan [6] (a) · Practical · 15M · Pg 699 **5x पूछा गया**

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

कठिन

PQ 10.2 · PYQ 2025-May [6] (a) · Practical · 15M · Pg 702

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

कठिन

विषय 11: अंशों की जब्ती (Forfeiture)

P1-C11-U11.2-T11 · Forfeiture of Shares

पहले पढ़ें para 2.11 पढ़िए: सम मूल्य पर तथा premium पर निर्गमित अंशों की जब्ती की शर्तें और entries — माँगी गई राशि से Share Capital डेबिट, प्राप्त राशि से Forfeited Shares A/c क्रेडिट, अदत्त Calls-in-Arrears रद्द; और Securities

Premium तभी उलटिए जब premium प्राप्त न हुआ हो।

नोट्स

अर्थ: आबंटन अथवा calls की राशि न चुकाने पर कंपनी द्वारा अंशों का रद्दीकरण (यह शक्ति Articles में हो और उचित सूचना के बाद प्रयोग हो); धारक का स्वत्व समाप्त हो जाता है और पहले चुकाई गई राशि लौटाई नहीं जाती; directors पुनः आबंटन से पहले जब्ती रद्द भी कर सकते हैं; और पूर्णदत्त अंश केवल तभी जब्त किए जा सकते हैं जब Articles सदस्य के ऋणों की वसूली के लिए ऐसा प्रावधान करते हों।

entry, सम मूल्य पर निर्गम: Share Capital A/c को अंशों की संख्या × प्रति अंश माँगी गई (called-up) राशि से डेबिट कीजिए / देय किन्तु अदत्त राशियों से Share Allotment / Call A/c (अथवा Calls-in-Arrears) क्रेडिट, और वास्तव में प्राप्त राशि से Forfeited Shares A/c क्रेडिट — calls-in-arrears से नहीं।

premium का नियम: पहले प्राप्त premium जब्ती पर कभी रद्द नहीं होता; किन्तु यदि premium देय था और अप्राप्त रह गया, तो आबंटन के समय किया गया क्रेडिट उलटने के लिए Securities Premium A/c भी डेबिट कीजिए — जैसे ₹100 के 5,000 अंश 20% premium पर, जिन पर केवल ₹20 आवेदन राशि चुकाई गई: Share Capital डेबिट ₹5,00,000 + Securities Premium डेबिट ₹1,00,000 / Allotment क्रेडिट ₹2,50,000 + First and Final Call क्रेडिट ₹2,50,000 + Forfeited Shares क्रेडिट ₹1,00,000।

अभ्यास योग्य रूप: पूर्णतः माँगे गए अंश (कुल प्राप्त राशि से Forfeited Shares क्रेडिट, अदत्त अन्तिम call रद्द), आंशिक रूप से माँगे गए अंश (पूँजी केवल माँगी गई ₹8 से डेबिट, अंकित ₹10 से नहीं), तथा pro-rata वाली दशाएँ — जहाँ पहले आवेदित अंश और अतिरिक्त आवेदन राशि निकालिए (जो पहले पूँजी और फिर premium के विरुद्ध समायोजित होती है), तब बकाया और जब्त अंशों पर प्राप्त राशि निकालिए।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए • 1 प्रश्न

- मानक entry ही सत्य/असत्य का चारा है: जब्त अंशों की called-up पूँजी से Share Capital A/c डेबिट होता है और प्राप्त राशि से Forfeited Shares A/c क्रेडिट (calls-in-arrears से नहीं) — अतः जिस रूप में कथन दिया जाता है वह असत्य है।
- premium का नियम समझाइए: पहले प्राप्त premium जब्ती पर कभी रद्द नहीं होता; देय किन्तु अप्राप्त premium के लिए Securities Premium A/c डेबिट करना पड़ता है।

TQ 11.1 • MTP 2024-Jul [1] (a) (iv) {C} • True/False • 2M • Pg 705 asked 7× **LEVEL I**
पूछा गया समझ (Understanding)

सरल

अनुप्रयोग (Application) प्रक्रिया का अभ्यास कीजिए • 2 प्रश्न

- letters of regret और pro-rata आबंटन के बाद होने वाली जब्ती का अभ्यास कीजिए (जैसे ₹25 premium पर ₹100 के 25,000 अंश) — जब्त अंशों पर प्राप्त राशि सावधानी से निकालिए।
- तीन रूपों का अभ्यास कीजिए: पूर्णतः माँगे गए अंशों की जब्ती, आंशिक रूप से माँगे गए अंशों की जब्ती, और premium पर निर्गमित उन अंशों की जब्ती जिनका आबंटन (premium सहित) अदत्त रह गया हो।

PQ 11.1 · PYQ 2023-Dec [6] (a) · Practical · 15M · Pg 705 3× पूछा गया

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

कठिन

PQ 11.2 · PYQ 2026-Sep [5] (c) · Practical · 10M · Pg 708

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

विषय 12: जब्त अंशों का पुनर्निर्गम

P1-C11-U11.2-T12 · Re-issue of Forfeited Shares

पहले पढ़ें para 2.12 पढ़िए: पुनर्निर्गम की entries, यह नियम कि पुनर्निर्गम पर हानि (बट्टा) उन अंशों पर जब्त राशि से अधिक नहीं हो सकती, अधिशेष का Capital Reserve में हस्तान्तरण, तथा जब्त अंशों का केवल एक भाग पुनर्निर्गमित होने पर समानुपातिक हस्तान्तरण।

नोट्स

स्वरूप: जब्त अंश केवल निपटान के लिए कंपनी में निहित रह जाता है — पुनर्निर्गम विक्रय है, आबंटन नहीं; अंश किसी भी मूल्य पर पुनर्निर्गमित किए जा सकते हैं, बस कुल प्राप्ति (मूल आबंटिती तथा नए क्रेता से मिलाकर) अंकित मूल्य से कम न हो।

entries: Bank डेबिट (वास्तव में प्राप्त राशि) + Forfeited Shares A/c डेबिट (पुनर्निर्गम पर हानि/बट्टा) / Share Capital क्रेडिट; अधिशेष — Forfeited Shares डेबिट / Capital Reserve क्रेडिट; और यदि पुनर्निर्गम मूल्य अंकित मूल्य से अधिक हो, तो अधिक राशि Securities Premium A/c में क्रेडिट होती है।

नियम: पुनर्निर्गम पर हानि उन अंशों पर जब्त राशि से अधिक नहीं हो सकती; पुनर्निर्गम से पहले Forfeited Shares A/c का शेष अधिशेष नहीं माना जाता (कंपनी नए क्रेता को उस क्रेडिट तक बट्टा दे सकती है); और जो अंश अभी पुनर्निर्गमित नहीं हुए उन पर जब्त राशि 'Share Capital' के अन्तर्गत दिखाई जाती है (Add: Forfeited shares)।

सूत्र: Capital Reserve = पुनर्निर्गमित अंशों पर जब्त राशि – पुनर्निर्गम पर दिया गया बट्टा, जो lot-wise निकाला जाता है (Ram: ₹3 जब्त – ₹2 हानि = ₹1 × 500; Shyam: ₹6 – ₹2 = ₹4 × 750; कुल ₹3,500)।

आंशिक पुनर्निर्गम: Capital Reserve में हस्तान्तरण केवल पुनर्निर्गमित भाग के लिए — जैसे 2,000 जब्त अंशों में से 1,500 अंश ₹75 प्रदत्त पर ₹65 में पुनर्निर्गमित: जब्त ₹25 प्रति अंश – हानि ₹10 = ₹15 × 1,500 = ₹22,500; और शेष 500 अंशों का क्रेडिट पुनर्निर्गम तक Forfeited Shares A/c में आगे ले जाया जाता है।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 2 प्रश्न

- जब्त अंशों का पुनर्निर्गम विक्रय है, आबंटन नहीं — जब्त अंश केवल निपटान हेतु कंपनी में निहित हो जाता है; अतः 'पुनर्निर्गम आबंटन है, विक्रय नहीं' असत्य है।
- जब्त की entry ठीक-ठीक दोहराइए (called-up से Share Capital डेबिट; प्राप्त राशि से Forfeited Shares क्रेडिट) और कारण बताइए कि पुनर्निर्गम से पहले Forfeited Shares A/c का शेष अधिशेष क्यों नहीं माना जाता।
- यदि पुनर्निर्गम मूल्य अंकित मूल्य से अधिक हो, तो अधिक राशि Securities Premium A/c में जाती है।

TQ 12.1 · PYQ 2021-Jan [1] (a) (i) {C} · True/False · 2M · Pg 710 5× पूछा गया

LEVEL I
समझ (Understanding)

सरल

TQ 12.2 · RTP 2023-Dec [1] (x) · True/False · Pg 711

LEVEL I
समझ (Understanding)

सरल

अनुप्रयोग (Application) प्रक्रिया का अभ्यास कीजिए · 10 प्रश्न

- सूत्र पर अधिकार कीजिए: Capital Reserve = पुनर्निर्गमित अंशों पर जब्त राशि – पुनर्निर्गम पर दिया गया बढ़ा; हस्तान्तरण केवल पुनर्निर्गमित भाग के लिए (जैसे 4,000 में से 3,000 अंश पुनर्निर्गमित)।
- आद्योपान्त 15 अंक वाले प्रश्नों का अभ्यास कीजिए: अति-अभिदान + pro-rata + premium + दो लॉट की जब्ती + पूर्णदत्त के रूप में पुनर्निर्गम, तथा journal, Cash Book और तुलन-पत्र का अंश बनाना।
- भिन्न-भिन्न व्यक्तियों को भिन्न मूल्यों पर आंशिक पुनर्निर्गम (जैसे 600 में से 400 अंश Z को) और 4 अंक वाले छोटे जब्ती/पुनर्निर्गम entry-समूहों का अभ्यास कीजिए।

PQ 12.1 · PYQ 2019-Jun [6] (a) · Practical · 10M · Pg 711	7× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	मध्यम
PQ 12.4 · RTP 2022-May [18] · Practical · Pg 717		LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	मध्यम
PQ 12.5 · MTP 2023-Apr [6] (a) · Practical · 10M · Pg 718	2× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	मध्यम
PQ 12.7 · PYQ 2018-Nov [6] (a) (i) · Practical · 4M · Pg 724	12× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	मध्यम
PQ 12.9 · PYQ 2026-Jan [5] (c) · Practical · 10M · Pg 729	2× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	मध्यम
PQ 12.2 · PYQ 2021-Jul [6] (a) · Practical · 15M · Pg 713		LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 12.3 · PYQ 2021-Dec [6] (a) · Practical · 15M · Pg 715	4× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 12.6 · PYQ 2023-Jun [6] (a) · Practical · 15M · Pg 720	5× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 12.8 · PYQ 2025-Sep [6] (a) · Practical · 15M · Pg 725		LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 12.10 · PYQ 2026-May [6] (a) · Practical · 15M · Pg 732		LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन

विषय 13: नकद के अतिरिक्त प्रतिफल के लिए अंशों का निर्गम

P1-C11-U11.2-T13 · Issue of Shares for Consideration other than Cash

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §2.13 को Illustration 18 सहित पढ़िए: परिसंपत्तियों के बदले अथवा प्रवर्तकों/अधिवक्ताओं की सेवाओं के बदले निर्गमित अंश।

नोट्स

स्वरूप: अंश सीधे भूमि, भवन अथवा अन्य परिसंपत्तियों के बदले निर्गमित किए जा सकते हैं, अथवा कंपनी के गठन में प्रवर्तकों/अधिवक्ताओं की सेवाओं के भुगतान में; इन्हें 'Share Capital' के अन्तर्गत अलग से दिखाया जाता है; और आबंटन के निर्धारित समय के भीतर कंपनी को Registrar के समक्ष विक्रय/सेवाओं का लिखित संविदा प्रस्तुत करना होता है, जिसके बदले अंश आबंटित हुए।

मापन: लेखांकन मानकों के अनुसार अंशों/प्रतिभूतियों के निर्गम से अर्जित परिसंपत्ति की अर्जन-लागत निर्गमित प्रतिभूतियों का उचित मूल्य होती है (जिसका संकेत सांविधिक प्राधिकरणों द्वारा निर्धारित निर्गम मूल्य से मिल सकता है) — यह आवश्यक नहीं कि वह नाममात्र/सम मूल्य के बराबर ही हो।

entries: क्रय पर Asset A/c डेबिट / Vendor A/c क्रेडिट, फिर पूर्णदत्त अंशों के आबंटन पर Vendor A/c डेबिट / Share Capital A/c क्रेडिट (अथवा सीधे Assets A/c डेबिट / Share Capital A/c क्रेडिट)।

इकाई 11.3: डिबेंचरों का निर्गम

Issue of Debentures

P1-C11-U11.3 • महत्त्व D • अध्याय में Rank 2 • श्रेणी A • अध्याय के 20.3% प्रश्न • 15 प्रश्न

विषय 1: परिचय

P1-C11-U11.3-T01 • Introduction

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं • पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §3.1 पढ़िए: कंपनियाँ ऋण-वित्त और debentures की ओर क्यों जाती हैं।

नोट्स

ऋण-वित्त: निगमित विस्तार और वृद्धि की निरन्तर बढ़ती आवश्यकताओं के सामने equity वित्त पर्याप्त नहीं रहता — जनता के अभिदान के लिए ऋण-लेख निर्गमित करने से पूंजी की लागत भी घटती है और उपयुक्त पूंजी-संरचना बनाने में सहायता भी मिलती है; और debenture कंपनियों द्वारा धन जुटाने के लिए प्रयुक्त सबसे सामान्य ऋण-लेखों में से एक है।

विषय 2: अर्थ

P1-C11-U11.3-T02 • Meaning

पहले पढ़ें para 3.2 पढ़िए: Companies Act, 2013 की Sec 2(30) के अन्तर्गत debenture की परिभाषा (जिसमें debenture stock, bonds अथवा ऋण को प्रमाणित करने वाला कोई भी लेख सम्मिलित है, चाहे परिसंपत्तियों पर प्रभार हो या न हो) तथा para 3.4 में debentures और अंशों का अन्तर।

नोट्स

Debenture, Sec 2(30) (SM): “‘Debenture’ में debenture stock, bonds अथवा कंपनी का कोई भी अन्य ऐसा लेख सम्मिलित है जो ऋण को प्रमाणित करता हो, चाहे वह कंपनी की परिसंपत्तियों पर प्रभार सृजित करता हो अथवा नहीं” — अर्थात् debenture प्रतिभूत भी हो सकता है और अप्रतिभूत भी।

स्वरूप: यह कंपनी द्वारा अपनी seal के अन्तर्गत निर्गमित वह bond है जो ऋण को स्वीकार करता है और जिसमें मूलधन तथा ब्याज की वापसी के प्रावधान होते हैं; प्रभार, यदि सृजित हो, तभी विधिमान्य है जब वह Registrar के पास पंजीकृत हो; बन्धक-debenture धारकों की रक्षा के लिए प्रायः trustees नियुक्त किए जाते हैं; और कोई भी कंपनी मताधिकार वाले debentures निर्गमित नहीं कर सकती — धारक लेनदार हैं, स्वामी नहीं।

Debentures	अंश
धारक कंपनी के लेनदार हैं	धारक कंपनी के स्वामी हैं
मताधिकार नहीं — नियंत्रण पर कोई खतरा नहीं	मताधिकार — कंपनी के कार्यों पर नियंत्रण
निश्चित दर पर ब्याज, लाभ हो या न हो, देय	लाभांश परिवर्तनशील (equity), लाभ पर निर्भर
ब्याज लाभ पर प्रभार है, कर-कटौती योग्य	लाभांश लाभ का विनियोजन है, कटौती योग्य नहीं
Long Term Borrowings के अन्तर्गत दिखाए जाते हैं	Shareholders' Funds — Share Capital के अन्तर्गत
जब्त नहीं किए जा सकते; निर्गम की शर्तों पर परिवर्तनीय	calls न चुकाने पर जब्त; कभी परिवर्तनीय नहीं
समापन पर अंशधारियों से पहले भुगतान	अंशधारियों को सबसे अन्त में भुगतान

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 1 प्रश्न

- Debenture holders लेनदार हैं, स्वामी नहीं — उन्हें मताधिकार नहीं मिलता; अधिनियम मताधिकार वाले debentures के निर्गम को स्पष्टतः वर्जित करता है, अतः ‘debenture holders को मताधिकार प्राप्त है’ असत्य है।
- कारण सहित समझाइए: debentures प्रतिभूत (secured) अथवा अप्रतिभूत हो सकते हैं; ब्याज लाभ पर प्रभार है (कर-कटौती योग्य) जबकि लाभांश लाभ का विनियोजन है।
- स्मरण रखिए: debentures Long Term Borrowings के अन्तर्गत दिखाए जाते हैं; समापन पर debenture holders को अंशधारियों से पहले भुगतान होता है।

TQ 2.1 · MTP 2024-May [1] (a) (vi) {C} · True/False · 2M · Pg 738 asked
3× पूछा गया

LEVEL I
समझ (Understanding)

सरल

विषय 3: डिबेंचरों की विशेषताएँ

P1-C11-U11.3-T03 • Features of Debentures

पहले पढ़ें para 3.3 (debentures की छह विशेषताएँ) तथा प्रभारों पर दी गई पादटिप्पणी पढ़िए: स्थिर प्रभार = विशिष्ट परिसंपत्तियों पर बन्धक; चल प्रभार = भावी परिसंपत्तियों सहित सभी परिसंपत्तियों पर।

नोट्स

छह विशेषताएँ (para 3.3): (1) कंपनी को दिए गए ऋण को प्रमाणित करने वाला दस्तावेज; (2) निश्चित ब्याज देने वाली प्रतिभूति, जिसका ब्याज निश्चित तिथियों को देय होता है; (3) ब्याज पूर्व-निर्धारित निश्चित दर पर, लाभ के स्तर से निरपेक्ष; (4) मूलधन किसी विनिर्दिष्ट भावी तिथि पर चुकाया जाता है अथवा अंशों/अन्य debentures में परिवर्तित होता है; (5) प्रतिभूति के रूप में परिसंपत्तियों पर प्रभार सृजित हो भी सकता है और नहीं भी; (6) सामान्यतः stock exchange के माध्यम से अंकित मूल्य से ऊपर या नीचे क्रय-विक्रय योग्य।

स्थिर बनाम चल प्रभार (पादटिप्पणी): स्थिर प्रभार विशिष्ट परिसंपत्तियों पर बन्धक है, जिन्हें debenture धारकों की सहमति के बिना बेचा नहीं जा सकता और जिनके विक्रय से पहले धारकों का भुगतान होता है; चल प्रभार सामान्यतः कंपनी की सभी परिसंपत्तियों को समेटता है, भावी परिसंपत्तियों सहित — इन दोनों को उलटकर दिया गया कथन ही मानक 'असत्य' जाल है।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए • 1 प्रश्न

- स्थिर (FIXED) प्रभार विशिष्ट परिसंपत्तियों पर होता है, जिन्हें debenture holders की सहमति के बिना बेचा नहीं जा सकता; चल (FLOATING) प्रभार ही सामान्यतः भावी परिसंपत्तियों सहित सभी परिसंपत्तियों को समेटता है — दोनों को उलटकर दिया गया कथन असत्य है।
- विशेषताएँ समझाइए: ऋण का प्रमाण-पत्र, लाभ हो या न हो निश्चित दर पर निर्धारित तिथियों को देय ब्याज, भावी तिथि पर शोध्य अथवा परिवर्तनीय, तथा stock exchange पर अंकित मूल्य से ऊपर या नीचे क्रय-विक्रय योग्य।

TQ 3.1 • PYQ 2022-Nov [1] (a) (vi) {C} • True/False • 2M • Pg 739 asked 2x **LEVEL I**
पूछा गया समझ (Understanding)

सरल

विषय 4: डिबेंचर और अंशों में अंतर

P1-C11-U11.3-T04 • Distinction Between Debentures and Shares

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं • पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §3.4 पढ़िए: debentures और अंशों के बीच दस बिंदुओं वाला तालिकाबद्ध अन्तर।

नोट्स

Debentures	अंश
धारक कंपनी के लेनदार हैं	धारक कंपनी के स्वामी हैं
मताधिकार नहीं — विद्यमान नियंत्रण पर कोई खतरा नहीं	मताधिकार — कंपनी के कार्यों पर नियंत्रण
पूर्व-निर्धारित निश्चित दर पर ब्याज, लाभ हो या न हो देय; सभी अंशों से पहले	equity लाभांश परिवर्तनशील दर पर, लाभ से प्रभावित (पूर्वाधिकार लाभांश निश्चित)
ब्याज लाभ पर प्रभार है, कर-कटौती योग्य	लाभांश लाभ का विनियोजन है, कटौती योग्य नहीं
अनेक प्रकार: प्रतिभूत/अप्रतिभूत, शोध/अशोध, पंजीकृत/वाहक, परिवर्तनीय/अपरिवर्तनीय	केवल दो प्रकार — equity और पूर्वाधिकार
तुलन-पत्र में “Long Term Borrowings” के अन्तर्गत	“Shareholders’ Funds” — Share Capital के अन्तर्गत
निर्गम की शर्तों के अनुसार अन्य debentures अथवा अंशों में परिवर्तनीय	अंशों को अन्य अंशों में परिवर्तित नहीं किया जा सकता
calls न चुकाने पर जब्त नहीं किए जा सकते	आबंटन/call की राशि न चुकाने पर जब्त किए जा सकते हैं
शोधन की शर्तों के अनुसार परिपक्वता पर धन वापस	equity का धन केवल समापन पर वापस (पूर्वाधिकार पहले)
समापन पर अंशधारियों से पहले भुगतान	समापन पर debenture धारकों, व्यापारिक देय आदि के बाद सबसे अन्त में

विषय 5: डिबेंचरों के प्रकार

P1-C11-U11.3-T05 · Types of Debentures

पहले पढ़ें para 3.5 पढ़िए: वर्गीकरण — प्रतिभूति के आधार पर (प्रतिभूत/अप्रतिभूत), परिवर्तनीयता के आधार पर (परिवर्तनीय/अपरिवर्तनीय), स्थायित्व के आधार पर (शोध/अशोध अथवा शाश्वत), परक्राम्यता के आधार पर (पंजीकृत/वाहक) तथा प्राथमिकता के आधार पर (प्रथम/द्वितीय बन्धक)।

नोट्स

पाँच आधार (para 3.5): प्रतिभूति — प्रतिभूत (स्थिर/चल प्रभार सहित) बनाम अप्रतिभूत/नग्न (केवल भुगतान का वचन, निवेशकों के लिए जोखिमपूर्ण); परिवर्तनीयता — परिवर्तनीय (पूर्णतः अथवा आंशिक रूप से, निर्गम की शर्तों के अनुसार सम/premium/बट्टे पर equity में — धारकों को अंशधारी बनने का अवसर) बनाम अपरिवर्तनीय (जो केवल चुका दिए जाते हैं); स्थायित्व — शोध (शर्तों के अनुसार शोध, जैसे 8 वर्ष बाद) बनाम अशोध/शाश्वत (कंपनी के जीवनकाल में शोध नहीं, केवल समापन पर चुकाए जाते हैं); परक्राम्यता — पंजीकृत बनाम वाहक; प्राथमिकता —

प्रथम बनाम द्वितीय बन्धक।

पंजीकृत बनाम वाहक: पंजीकृत — उस धारक को देय जिसका नाम/पता/धारिता Register of Debenture holders में दर्ज है, सरलता से हस्तान्तरणीय नहीं, हस्तान्तरण Companies Act, 2013 की औपचारिकताओं से; वाहक — परक्राम्य लेख, जो केवल सुपुर्दगी से हस्तान्तरित होते हैं, न हस्तान्तरण-लेख चाहिए न कंपनी में कोई अभिलेख, और ब्याज वाहक को उसकी पहचान से निरपेक्ष रूप से चुकाया जाता है।

प्राथमिकता: प्रथम बन्धक debentures का भुगतान प्रभारित सम्पत्ति में से सबसे पहले होता है; द्वितीय बन्धक debentures का भुगतान प्रथम बन्धक debentures की सन्तुष्टि के बाद ही होता है।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 1 प्रश्न

- अशोध्य (शाश्वत) debentures कंपनी के जीवनकाल में शोध्य नहीं होते और केवल समापन पर चुकाए जाते हैं — अतः 'शाश्वत debentures समापन के समय देय होते हैं' सत्य है।
- पंजीकृत debentures (जिनका हस्तान्तरण Companies Act की औपचारिकताओं से होता है) और वाहक (bearer) debentures (परक्राम्य, केवल सुपुर्दगी से हस्तान्तरणीय, ब्याज वाहक को देय) में अन्तर कीजिए।
- First mortgage debentures का भुगतान प्रभारित सम्पत्ति में से पहले होता है; second mortgage debentures का उनके बाद ही।
- परिवर्तनीयता पर भी स्पष्ट रहिए: परिवर्तनीय debentures (पूर्णतः अथवा आंशिक रूप से) निर्गम की शर्तों के अनुसार equity shares में बदल सकते हैं, जिससे धारक को अंशधारी बनने का अवसर मिलता है; अपरिवर्तनीय debentures केवल चुका दिए जाते हैं।

TQ 5.1 · PYQ 2023-Jun [1] (a) (v) {C} · True/False · 2M · Pg 739

LEVEL I
समझ (Understanding)

सरल

विषय 6: डिबेंचरों का निर्गम

P1-C11-U11.3-T06 · Issue of Debentures

पहले पढ़ें para 3.6 पढ़िए: सम, बट्टे अथवा premium पर निर्गमित debentures की journal entries (premium Securities Premium A/c में क्रेडिट), किस्तों में देय राशि, तथा भिन्न-भिन्न शोधन शर्तों वाले निर्गम।

नोट्स

मूल श्रृंखला (सम मूल्य पर): Bank डेबिट / Debenture Application क्रेडिट; आबंटन पर Debenture Application डेबिट / ...% Debentures क्रेडिट; आबंटन की माँग — Debenture Allotment डेबिट / ...% Debentures क्रेडिट, फिर Bank डेबिट / Debenture Allotment क्रेडिट; calls में भी यही क्रम; अति अभिदान होने पर वापसी की तिथि पर अतिरिक्त राशि लौटाइए: Debenture Application डेबिट / Bank क्रेडिट।

बट्टे पर: Debenture Application (नकद) डेबिट + Discount on Issue of Debentures A/c डेबिट / ...% Debentures क्रेडिट नाममात्र मूल्य पर — अधिनियम debenture के बट्टे पर कोई सीमा नहीं लगाता; **premium पर:**

Securities Premium A/c क्रेडिट — debentures 'प्रतिभूतियाँ' हैं, अतः इस premium का उपयोग Sec 52 से शासित होता है।

premium पर शोधन: शोधन पर देय premium को आबंटन के समय ही मान्यता दीजिए (विवेकशीलता) — Loss on Issue of Debentures डेबिट / Premium on Redemption of Debentures A/c क्रेडिट (जो व्यक्तिगत खाता तथा देयता है); सम मूल्य पर निर्गम होने पर हानि शोधन premium के बराबर होती है (जैसे ₹110 पर शोधन ₹100 का debenture: हानि ₹10)।

बट्टा तथा शोधन premium साथ: Debenture Allotment डेबिट + Discount/Loss on Issue डेबिट (बट्टा + शोधन पर premium) / ...% Debentures क्रेडिट + Premium on Redemption क्रेडिट — जैसे ₹100 पर 6% बट्टे से निर्गम और 5% premium पर शोधन: कुल हानि ₹11 प्रति debenture।

मूल्य-निर्धारण का तर्क: जब बाजार ब्याज दर coupon दर से अधिक हो तब debentures बट्टे पर निर्गमित होते हैं (वास्तविक दर $12 \div 90 \times 100 = 13.33\%$), और जब बाजार दर कम हो तब premium पर (प्रभावी $12 \div 110 \times 100 = 10.91\%$)।

अनुप्रयोग (Application) प्रक्रिया का अभ्यास कीजिए · 3 प्रश्न

- मूल श्रृंखला का अभ्यास कीजिए: Bank डेबिट To Debenture Application; Debenture Application डेबिट To ...% Debentures (premium पर निर्गम हो तो To Securities Premium भी); तथा आबंटन देय/प्राप्त की entries।
- debentures के अति-अभिदान को सँभालिए — अतिरिक्त आवेदन राशि वापसी की तिथि पर लौटाइए (जैसे 3,50,000 निर्गमित के विरुद्ध 3,85,000 आवेदित)।
- आंशिक परिवर्तनीय debentures में equity में परिवर्तित भाग को अपरिवर्तनीय शेष से अलग कीजिए, और बकाया राशि पर उस अवधि का ब्याज निकालिए।
- बट्टे पर निर्गम और premium/बट्टे पर शोधन का अभ्यास कीजिए: Discount/Loss on Issue of Debentures को बट्टे तथा शोधन पर देय premium — दोनों से डेबिट कीजिए और Premium on Redemption of Debentures A/c क्रेडिट कीजिए।

PQ 6.1 · PYQ 2021-Jul [5] (b) · Practical · 10M · Pg 740 **2× पूछा गया**

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

मध्यम

PQ 6.2 · RTP 2024-Sep [15] · Practical · Pg 742 **4× पूछा गया**

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

मध्यम

PQ 6.3 · RTP 2025-May [16] · Practical · Pg 742

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

मध्यम

विषय 7: सहायक प्रतिभूति के रूप में डिबेंचरों का निर्गम

P1-C11-U11.3-T07 · Issue of Debentures as Collateral Security

पहले पढ़ें para 3.7 पढ़िए: संपार्श्विक प्रतिभूति का अर्थ तथा प्रकटीकरण की दो रीतियाँ — रीति 1 (कोई entry नहीं; प्रतिभूत देयता के नीचे टिप्पणी) और रीति 2 (Debentures Suspense A/c डेबिट To % Debentures A/c)।

नोट्स

अर्थ: कंपनी अपने ही debentures किसी ऋण अथवा उतार-चढ़ाव वाले overdraft के लिए गौण/सहायक प्रतिभूति के रूप में निर्गमित करती है; ऋणदाता उन्हें तभी लागू कर सकता है जब ऋण देय तिथि पर न चुकाया जाए (तब वह सभी अधिकारों सहित debenture धारक बन जाता है); ब्याज केवल ऋण पर देय होता है, संपार्श्विक debentures पर नहीं; और ऋण चुकते ही debentures मुक्त कर दिए जाते हैं।

रीति 1 (श्रेयस्कर, कोई entry नहीं): पुस्तकों में कोई entry नहीं होती — निर्गम का तथ्य Notes to Accounts में प्रतिभूत देयता के नीचे टिप्पणी से दिखाया जाता है, जैसे IDBI ऋण ₹1,00,00,000 “₹1,50,00,000 के 14% First Mortgage Debentures के निर्गम से संपार्श्विक रूप से प्रतिभूत”।

रीति 2: Debentures Suspense A/c डेबिट / ...% Debentures A/c क्रेडिट; Debentures Suspense परिसंपत्ति पक्ष में Other Non-Current Assets के अन्तर्गत आता है और उसके प्रति debentures देयता पक्ष में per contra — इसे देयता पक्ष में बताने वाला कथन असत्य है; और ऋण चुकते ही यह entry उलट दी जाती है।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 1 प्रश्न

- Debentures Suspense Account परिसंपत्ति पक्ष (Other Non-Current Assets) में आता है, और उसके प्रति debentures देयता पक्ष में per contra दिखाए जाते हैं — अतः इसे देयता पक्ष में बताने वाला कथन असत्य है।
- प्रक्रिया समझाइए: ऋण न चुकाए जाने पर ही ऋणदाता इन debentures को लागू कर सकता है; ब्याज केवल ऋण पर देय होता है, संपार्श्विक debentures पर नहीं; और ऋण चुकते ही यह entry उलट दी जाती है।

TQ 7.1 · PYQ 2022-May [1] (a) (v) {C} · True/False · 2M · Pg 744 **4x पूछा गया** **LEVEL I**
समझ (Understanding)

सरल

विषय 8: नकद के अतिरिक्त प्रतिफल के लिए डिबेंचरों का निर्गम

P1-C11-U11.3-T08 · Issue of Debentures in Consideration other than for Cash

पहले पढ़ें para 3.8 पढ़िए: जब debentures विक्रेताओं को परिसंपत्तियों/व्यवसाय के अधिग्रहण के बदले निर्गमित हों तब की entries — Sundry Assets डेबिट, To Liabilities, To Vendors; फिर Vendors डेबिट To Debentures (और Securities Premium, अथवा Discount on Issue डेबिट के साथ), जिसमें ख्याति अथवा capital reserve संतुलनकारी होते हैं।

नोट्स

entries (विक्रेता/व्यवसाय का अधिग्रहण): Sundry Assets डेबिट (ली गई परिसंपत्तियाँ) / Sundry Liabilities क्रेडिट (ली गई देयताएँ) + Vendors क्रेडिट (क्रय प्रतिफल); फिर Vendors डेबिट / Debentures क्रेडिट — premium पर निर्गम हो तो Securities Premium क्रेडिट, और बट्टे पर हो तो Discount on Issue of Debentures डेबिट।

debentures की संख्या: क्रय प्रतिफल ÷ प्रति debenture निर्गम मूल्य — सम मूल्य पर: प्रतिफल ÷ सम मूल्य; premium पर: प्रतिफल ÷ (सम + premium); बट्टे पर: प्रतिफल ÷ (सम - बट्टा)।

ख्याति/Capital Reserve: क्रय प्रतिफल का ली गई शुद्ध परिसंपत्तियों से अधिक भाग Goodwill में डेबिट होता है; और

कम पड़ने पर वह Capital Reserve में क्रेडिट होता है।

मिश्रित निर्गम (Illustration 10): प्रत्येक भाग को अलग-अलग मानिए — 90% पर नकद निर्गम (10% से Discount on Issue डेबिट), स्थायी परिसंपत्तियों के बदले विक्रेता को निर्गम, तथा ऋण के लिए बैंक को संपार्श्विक निर्गम (कोई entry नहीं; देयता के नीचे टिप्पणी)।

अनुप्रयोग (Application) प्रक्रिया का अभ्यास कीजिए · 2 प्रश्न

- निर्गमित debentures की संख्या = क्रय प्रतिफल ÷ प्रति debenture निर्गम मूल्य (सम, premium अथवा बट्टे पर) — जैसे ₹9,90,000 की machinery का भुगतान ₹100 वाले debentures से सम मूल्य पर, 10% premium पर (9,000 debentures) अथवा 10% बट्टे पर (11,000 debentures)।
- व्यवसाय के अधिग्रहण पर दर्ज कीजिए: परिसंपत्तियाँ डेबिट, देयताएँ क्रेडिट, Vendor क्रय प्रतिफल से क्रेडिट; प्रतिफल का शुद्ध परिसंपत्तियों से अधिक होना = ख्याति (Goodwill), कम होना = Capital Reserve (जैसे परिसंपत्तियाँ ₹9,00,000, देयताएँ ₹1,20,000, प्रतिफल ₹8,80,000 → Goodwill ₹1,00,000)।
- एक ही प्रश्न में मिश्रित निर्गमों का अभ्यास कीजिए: vendor को debentures, 90% पर नकद निर्गम, और बैंक को संपार्श्विक — प्रत्येक भाग को अलग-अलग मानकर चलिए।

PQ 8.1 · PYQ 2020-Nov [6] (b) · Practical · 5M · Pg 745 **8× पूछा गया**

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

मध्यम

PQ 8.2 · RTP 2025-Jan [17] · Practical · Pg 746 **4× पूछा गया**

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

मध्यम

विषय 9: डिबेंचर निर्गम पर छूट/हानि का उपचार

P1-C11-U11.3-T09 · Treatment of Discount/Loss on Issue of Debentures

पहले पढ़ें para 3.9 पढ़िए: निर्गम पर बट्टा/हानि पूंजीगत हानि है, जो debentures की अवधि में अपलिखित होती है — निश्चित अवधि के अन्त में शोधन हो तो समान रूप से, और किस्तों में शोधन हो तो बकाया debentures के अनुपात में।

नोट्स

नियम: निर्गम पर बट्टा/हानि पूंजीगत हानि है, जो निर्गम और शोधन के बीच की अवधि में अपलिखित की जाती है (सामान्यतः 3-5 वर्ष, debenture की अवधि से आगे कभी नहीं); वार्षिक अपलेखन की entry — Profit and Loss A/c डेबिट / Discount (अथवा Loss) on Issue of Debentures A/c क्रेडिट; और अपलिखित न हुआ शेष अपलेखन अवधि के अनुसार Non-current/Current परिसंपत्ति के रूप में दिखाया जाता है।

निश्चित अवधि पर शोधन (सरल रेखा): कुल बट्टा प्रतिवर्ष समान रूप से अपलिखित कीजिए — जैसे 1,00,000 debentures × ₹6 बट्टा = ₹6,00,000, जो 5 वर्षों में ₹1,20,000 प्रति वर्ष।

वार्षिक drawings से शोधन: प्रत्येक वर्ष बकाया debentures के अनुपात में अपलिखित कीजिए — प्रतिवर्ष 1/5 शोधन पर अनुपात 5:4:3:2:1, अतः ₹1,20,000 इस प्रकार बाँटेगा: ₹40,000, ₹32,000, ₹24,000, ₹16,000,

₹8,000।

बट्टा और premium पर शोध: कुल Loss on Issue = बट्टा + शोधन पर देय premium, जिसे आबंटन के समय ही दर्ज कीजिए और Premium on Redemption of Debentures A/c क्रेडिट कीजिए — जैसे ₹10,00,000 का 10% बट्टे पर निर्गम, 5% premium पर शोध: हानि ₹1,50,000, जो 5 वर्षों में ₹30,000 प्रति वर्ष अपलिखित।

अनुप्रयोग (Application) प्रक्रिया का अभ्यास कीजिए · 3 प्रश्न

- निश्चित अवधि पर शोधन: कुल बट्टा समान रूप से अपलिखित कीजिए, जैसे $₹0.60 \times 1,00,000 = ₹60,000$, 5 वर्षों में ₹12,000 प्रति वर्ष (P&L डेबिट To Discount on Issue of Debentures)।
- वार्षिक drawings द्वारा शोधन: बकाया राशि के अनुपात में अपलेखन कीजिए (समान वार्षिक शोधन पर 5:4:3:2:1 का क्रम)।
- जब निर्गम बट्टे पर हो और शोधन premium पर, तो कुल Loss on Issue = बट्टा + शोधन premium — यह आबंटन के समय ही दर्ज कीजिए और Premium on Redemption of Debentures A/c क्रेडिट कीजिए।
- अपलिखित न हुआ शेष अपलेखन अवधि के अनुसार Non-current/Current परिसंपत्ति में बाँटकर दिखाइए; यदि प्रश्न पूरे वर्ष का हो तो साथ में ब्याज की entries भी स्मरण रखिए।

PQ 9.1 · PYQ 2018-Nov [6] (b) · Practical · 5M · Pg 748 5× पूछा गया

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

सरल

PQ 9.3 · RTP 2025-Sep [15] · Practical · Pg 749

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

मध्यम

PQ 9.2 · MTP 2022-Nov S1 [6] (b) · Practical · 5M · Pg 748 2× पूछा गया

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

विषय 10: डिबेंचरों पर ब्याज

P1-C11-U11.3-T10 · Interest on Debentures

पहले पढ़ें para 3.10 पढ़िए: नाममात्र मूल्य पर coupon दर से ब्याज लाभ पर प्रभार है, जो लाभ हो या न हो देय होता है और जिस पर स्रोत पर कर कटौती (TDS) होती है; ब्याज देय होने, TDS घटाकर भुगतान, TDS जमा करने तथा P&L में हस्तान्तरण की entries।

नोट्स

स्वरूप: नाममात्र मूल्य पर coupon दर से ब्याज लाभ पर प्रभार है — लाभ हो या न हो, देय है; और debentures सभी अंशों से पहले आते हैं, अतः ब्याज पूर्वाधिकार तथा equity — दोनों लाभांशों से पहले चुकाया जाता है; इसके विपरीत लाभांश लाभ का विनियोजन है और कर-कटौती योग्य नहीं।

TDS: कंपनी Income-tax Act, 1961 के अनुसार स्रोत पर कर काटकर शुद्ध ब्याज चुकाती है और काटा गया TDS आयकर अधिकारियों के पास जमा करती है।

entry-समूह: (1) ब्याज देय — Interest A/c डेबिट / Debenture holders' A/c क्रेडिट; (2) भुगतान — Debenture holders' डेबिट / TDS Payable क्रेडिट + Bank क्रेडिट; (3) जमा — TDS Payable डेबिट / Bank क्रेडिट; (4) वर्षान्त

— Profit and Loss डेबिट / Interest A/c क्रेडिट।

गणना (Illustration 13): अर्धवार्षिक ब्याज = नाममात्र मूल्य $\times$ coupon $\times 6 \div 12$ — ₹10,00,000 पर 12% अर्थात् 30 जून और 31 दिसम्बर को ₹60,000 प्रत्येक; 10% TDS = ₹6,000, अतः धारकों को ₹54,000 मिलते हैं; इसके साथ निर्गम पर बट्टे/हानि का वार्षिक अपलेखन भी जोड़िए (₹1,50,000 $\times$ 1/5 = ₹30,000 P&L में)।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए • 2 प्रश्न

- Debenture का ब्याज प्रभार है, जो लाभ हो या न हो देय है — हानि होने से भुगतान टलता नहीं; और यह पूर्वाधिकार तथा equity दोनों लाभांशों से पहले आता है, अतः 'पूर्वाधिकार लाभांश के बाद देय' असत्य है।
- उत्तर को कारण सहित पुष्ट करने के लिए ब्याज (नाममात्र मूल्य पर लगने वाला, कर-कटौती योग्य प्रभार) और लाभांश (लाभ का विनियोजन) का अन्तर स्पष्ट कीजिए।

TQ 10.1 • MTP 2024-Aug [1] (a) (vi) {C} • True/False • 2M • Pg 752 asked
5× पूछा गया

LEVEL I
समझ (Understanding)

सरल

TQ 10.2 • RTP 2025-Jan [1] (x) • True/False • Pg 752 3× पूछा गया

LEVEL I
समझ (Understanding)

सरल

अनुप्रयोग (Application) प्रक्रिया का अभ्यास कीजिए • 1 प्रश्न

- entry-समूह का अभ्यास कीजिए: Interest A/c डेबिट To Debenture holders; Debenture holders डेबिट To TDS Payable तथा Bank; TDS Payable डेबिट To Bank; वर्षान्त पर P&L डेबिट To Interest।
- अंकित मूल्य पर अर्धवार्षिक ब्याज निकालिए (जैसे ₹20,00,000 पर 10% = 30 जून और 31 दिसम्बर को ₹1,00,000 प्रत्येक) 10% TDS सहित, और इसके साथ निर्गम पर बट्टे का वार्षिक अपलेखन भी जोड़िए।

PQ 10.1 • PYQ 2019-Jun [6] (b) • Practical • 5M • Pg 753 6× पूछा गया

LEVEL II
अनुप्रयोग (Application)

मध्यम

इकाई 11.4: बोनस निर्गम और अधिकार निर्गम का लेखांकन

Accounting for Bonus Issue and Rights Issue

P1-C11-U11.4 • महत्त्व D • अध्याय में Rank 4 • श्रेणी C • अध्याय के 12.2% प्रश्न • 9 प्रश्न

विषय 1: बोनस अंशों का निर्गम

P1-C11-U11.4-T01 • Issue of Bonus Shares

पहले पढ़ें Companies Act, 2013 की Section 63 पढ़िए (बोनस निर्गम के स्रोत और शर्तें), पूर्णदत्त बोनस अंशों तथा आंशिक प्रदत्त अंशों को पूर्णदत्त बनाने की journal entries, और बोनस के बाद के तुलन-पत्र के अंश — Share Capital तथा Reserves and Surplus की Notes सहित।

नोट्स

बोनस निर्गम (SM): “विद्यमान अंशधारियों को उनकी धारिता के अनुपात में निःशुल्क दिए जाने वाले अतिरिक्त अंशों का निर्गम” — इसे लाभों का पूंजीकरण अथवा scrip issue भी कहते हैं; इसमें कोई नया धन नहीं आता, net worth अपरिवर्तित रहती है; प्रभाव: अंश पूंजी बढ़ती है, EPS तथा प्रति-अंश मूल्य घटते हैं, संचित लाभ घटते हैं, और बाजार इसे अनुकूल मानकर मूल्य समायोजित कर लेता है।

Sec 63 के स्रोत और शर्तें: पूर्णदत्त बोनस अंश केवल (i) मुक्त संचितियों, (ii) securities premium तथा (iii) capital redemption reserve से — पुनर्मूल्यांकन संचिति से कभी नहीं; शर्तें: articles द्वारा प्राधिकृत हो, Board की संस्तुति पर साधारण सभा की स्वीकृति हो, जमाओं अथवा ऋण-प्रतिभूतियों के ब्याज/मूलधन में तथा कर्मचारियों के सांविधिक देय (PF, ग्रेच्युटी, बोनस) में कोई चूक न हो, आंशिक प्रदत्त अंश पहले पूर्णदत्त कर दिए गए हों, बोनस लाभांश के स्थान पर न हो, और घोषणा के बाद Board उसे वापस नहीं ले सकता।

आदर्श entries (पूर्णदत्त बोनस): (1) Capital Redemption Reserve / Securities Premium / General Reserve / P&L डेबिट → Bonus to Shareholders क्रेडिट; (2) Bonus to Shareholders डेबिट → Equity Share Capital क्रेडिट; ‘मुक्त संचितियों में न्यूनतम कमी’ के लिए पहले CRR तथा (नकद में प्राप्त) Securities Premium समाप्त कीजिए, फिर General Reserve, और P&L को संतुलनकारी राशि रखिए।

आंशिक प्रदत्त अंश: securities premium तथा CRR केवल पूर्णदत्त बोनस अंशों के लिए प्रयोग हो सकते हैं — विद्यमान अंशों की अदत्त राशि केवल मुक्त संचितियों से चुकाई जा सकती है; entries: General Reserve / P&L डेबिट → Bonus to Shareholders क्रेडिट; Share Final Call डेबिट → Share Capital क्रेडिट; Bonus to Shareholders डेबिट → Share Final Call क्रेडिट; और जहाँ अन्तिम call नकद में प्राप्त हो (Bank डेबिट → Final Call क्रेडिट), वहाँ बोनस पूर्णदत्त अंशों पर निकाला जाता है (जैसे 4 पर 1)।

तुलन-पत्र का अंश: Notes में प्रत्येक संचिति के नीचे “Less: Utilised for bonus issue” दिखाइए और निर्गमित पूंजी के भीतर बोनस के रूप में निर्गमित अंश प्रकट कीजिए; यह भी सुनिश्चित कीजिए कि अधिकृत पूंजी बोनस के बाद की निर्गमित पूंजी से कम न हो — अन्यथा साधारण सभा में संकल्प पारित करके उसे बढ़ाइए, और बोनस निर्गम की विवरणी संकल्प की प्रति सहित ROC के पास दाखिल कीजिए।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 1 प्रश्न

TQ 1.1 · PYQ 2026-Sep [1] (a) (vi) · True/False · 2M · Pg 758

LEVEL I

समझ (Understanding)

अनुप्रयोग (Application) प्रक्रिया का अभ्यास कीजिए · 6 प्रश्न

- दो चरणों की entries का अभ्यास कीजिए: CRR / Securities Premium / General Reserve / P&L डेबिट → Bonus to Shareholders क्रेडिट; फिर Bonus to Shareholders डेबिट → Equity Share Capital क्रेडिट।
- ‘मुक्त संचितियों में न्यूनतम कमी’ के लिए प्राथमिकता क्रम का पालन कीजिए: पहले CRR और (नकद में प्राप्त) Securities Premium, फिर General Reserve, और P&L को संतुलनकारी राशि के रूप में; Revaluation Reserve को कभी हाथ न लगाइए।
- जहाँ अंश आंशिक प्रदत्त हों (₹7.50 अथवा ₹8 प्रदत्त, या calls-in-arrear हों), वहाँ पहले अन्तिम call की entries कीजिए (Share Final Call डेबिट to Share Capital; Bank डेबिट to Final Call) — बोनस केवल पूर्णदत्त अंशों पर गणना होता है;

ध्यान रहे कि CRR/Securities Premium से आंशिक प्रदत्त अंशों को पूर्णदत्त नहीं किया जा सकता (यह केवल मुक्त संचितियों से सम्भव है)।

- अनुपात से बोनस अंशों की गणना (जैसे 4 पर 1), बोनस के बाद निर्गमित पूंजी अधिकृत पूंजी से अधिक हो जाने पर अधिकृत पूंजी की जाँच/वृद्धि, तथा तुलन-पत्र का वह अंश बनाने का अभ्यास कीजिए जिसमें संचितियों के नीचे 'Less: Utilised for bonus issue' दिखाया जाता है।

PQ 1.1 · PYQ 2024-Jun [5] (c) · Practical · 10M · Pg 759	8× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	मध्यम
PQ 1.2 · MTP 2024-Jul [5] (c) · Practical · 10M · Pg 761	3× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	मध्यम
PQ 1.3 · MTP 2024-Aug [5] (b) · Practical · 10M · Pg 763		LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	मध्यम
PQ 1.6 · PYQ 2026-May [5] (c) · Practical · 10M · Pg 770		LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	मध्यम
PQ 1.4 · MTP 2024-Dec S1 [5] (c) · Practical · 10M · Pg 766	5× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	
PQ 1.5 · RTP 2026-May [14] (b) PQ · Practical · Pg 768		LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	

विषय 2: अधिकार निर्गम (Right Issue)

P1-C11-U11.4-T02 · Right Issue

पहले पढ़ें Section 62(1)(a) के rights प्रस्ताव सम्बन्धी प्रावधान, right issue के लाभ-हानि, rights अंशों का लेखांकन (सामान्य निर्गम जैसा ही, securities premium सहित), तथा cum-right/ex-right मूल्य और value-of-right के सूत्र पढ़िए।

नोट्स

Sec 62(1)(a) — अग्रक्रय का अधिकार: आगे निर्गमित अंश पहले विद्यमान equity अंशधारियों को उनकी धारिता के अनुपात में देने होंगे; प्रस्ताव सूचना द्वारा दिया जाएगा जिसमें अंशों की संख्या हो और जो 15 दिन से कम तथा 30 दिन से अधिक की न हो (स्वीकार न होने पर अस्वीकृत मानी जाएगी); सूचना में किसी अन्य व्यक्ति के पक्ष में परित्याग (renunciation) के विवक्षित अधिकार का उल्लेख होना चाहिए (जब तक articles अन्यथा प्रावधान न करें); और अवधि बीतने या पहले अस्वीकार होने पर Board उन अंशों का निपटान ऐसी रीति से कर सकता है जो अंशधारियों और कंपनी के लिए अहितकर न हो।

अपवाद (Sec 62): इन दशाओं में विद्यमान धारकों को प्रस्ताव देना आवश्यक नहीं — (1) ESOP के अन्तर्गत कर्मचारियों को निर्गम; (2) पंजीकृत मूल्यांकक के मूल्य पर नकद/अन्य प्रतिफल के बदले किसी भी व्यक्ति को निर्गम (विशेष संकल्प से); (3) विशेष संकल्प से अनुमोदित debentures/ऋणों से संलग्न परिवर्तन-विकल्प के प्रयोग पर; (4) लोकहित में सरकार के निर्देश पर debentures/ऋणों के परिवर्तन पर।

पाँच लाभ: (1) आनुपातिक धारिता तथा वित्तीय-अभिशासन के अधिकार बने रहते हैं (प्रबन्ध द्वारा जान-पहचान वालों को अंश निर्गमित करने पर रोक); (2) विरलन से विद्यमान धारकों को हानि नहीं होती — रियायती मूल्य अथवा परित्याग

से cum-right मूल्य सुरक्षित रहता है; (3) सार्वजनिक निर्गम के व्ययों के विरुद्ध स्वाभाविक बचाव; (4) छवि में सुधार; (5) सफलता की अधिक सम्भावना और सार्वजनिक निर्गम की तुलना में सरल व्यवस्था। **दो हानियाँ:** अंश के बाजार मूल्य में अनिवार्य विरलन; और आकर्षक मूल्य का वास्तविक मूल्य के सापेक्ष वस्तुनिष्ठ आकलन आवश्यक।

सूत्र: Ex-right मूल्य = $[(\text{विद्यमान अंशों का Cum-right मूल्य} + (\text{Rights अंश} \times \text{निर्गम मूल्य})) \div (\text{विद्यमान अंश} + \text{Rights अंश})]$; अधिकार का मूल्य = Cum-right मूल्य – Ex-right मूल्य; जैसे cum-right मूल्य ₹150 होने पर ₹125 पर 4 पर 1 का निर्गम: ex-right = $(150 \times 4 + 125 \times 1) \div 5 = ₹145$, और अधिकार का मूल्य = ₹5 प्रति अंश।

लेखांकन: सामान्य निर्गम जैसा ही — Bank डेबिट → Equity Share Capital क्रेडिट, तथा निर्गम मूल्य का अंकित मूल्य से अधिक भाग Securities Premium में क्रेडिट (जैसे ₹10 वाले 10,000 rights अंश ₹31 पर: Bank डेबिट 3,10,000; Share Capital 1,00,000; Securities Premium 2,10,000)।

स्मरण (Remembering) कंठस्थ कीजिए · 1 प्रश्न

- right issue के पाँच लाभ कंठस्थ कीजिए: आनुपातिक धारिता तथा अभिशासन के अधिकार बने रहना; रियायती मूल्य अथवा परित्याग से cum-right मूल्य की सुरक्षा; निर्गम-व्ययों के विरुद्ध स्वाभाविक बचाव; छवि में सुधार; तथा सार्वजनिक निर्गम की तुलना में सफलता की अधिक सम्भावना और सरल व्यवस्था।
- दो हानियाँ कंठस्थ कीजिए: अंश के बाजार मूल्य में अनिवार्य विरलन; और आकर्षक मूल्य का वास्तविक मूल्य के सापेक्ष वस्तुनिष्ठ आकलन आवश्यक होना।
- Sec 62(1)(a) की प्रस्ताव-शर्तें स्मरण रखिए: सूचना 15–30 दिन तक खुली, परित्याग का विवक्षित अधिकार (जब तक articles मना न करें), और अस्वीकृत अंशों का निपटान Board कर सकता है।

TQ 2.1 · RTP 2025-May [18] (v) · Short Note · Pg 773

LEVEL I

स्मरण (Remembering)

सरल

अनुप्रयोग (Application) प्रक्रिया का अभ्यास कीजिए · 1 प्रश्न

- अभ्यास कीजिए: Ex-right मूल्य = $(\text{विद्यमान अंशों का Cum-right मूल्य} + \text{Rights अंश} \times \text{निर्गम मूल्य}) \div (\text{विद्यमान अंश} + \text{Rights अंश})$; अधिकार का मूल्य (Value of right) = Cum-right मूल्य – Ex-right मूल्य।
- ऐसे प्रश्न हल कीजिए जो equity पूंजी (₹ लाख में) और प्रति अंश बाजार मूल्य से आरम्भ होते हैं (जैसे पूंजी ₹40 लाख, बाजार मूल्य ₹45) — पहले अंशों की संख्या निकालिए, फिर प्रस्ताव अनुपात लगाइए, तब ex-right मूल्य और अधिकार का मूल्य निकालिए।
- अभिदान पर journal entry का अभ्यास कीजिए: Bank डेबिट → To Equity Share Capital तथा To Securities Premium (निर्गम मूल्य का अंकित मूल्य से अधिक भाग), और वे प्रश्न भी जिनमें अन्तिम call, बोनस और फिर rights issue एक साथ आते हैं।

PQ 2.1 · PYQ 2025-May [5] (c) · Practical · 10M · Pg 774

LEVEL II

अनुप्रयोग (Application)

मध्यम

इकाई 11.5: अधिमान अंशों का मोचन

Redemption of Preference Shares

P1-C11-U11.5 • महत्त्व D • अध्याय में Rank 3 • श्रेणी A • अध्याय के 18.9% प्रश्न • 14 प्रश्न

विषय 1: परिचय

P1-C11-U11.5-T01 • Introduction

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं • पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक**पहले पढ़ें** §5.1 पढ़िए: शोधन का अर्थ और पूर्वाधिकार अंशों की शोधन तिथि।**नोट्स**

शोधन: पूर्व-निर्धारित राशि और समय पर किसी दायित्व को चुकाने की प्रक्रिया — अर्थात् वह संविदा जो पूर्वाधिकार अंशों को किसी दी गई अवधि के भीतर अथवा उसके अन्त में सहमत मूल्य पर शोधित करने का दायित्व निर्धारित करती है; शोधन (परिपक्वता) की तिथि सामान्यतः पूर्वाधिकार अंश-प्रमाणपत्र पर छपी होती है।

उपयोग: शोधन के माध्यम से कंपनी अपनी वित्तीय संरचना समायोजित कर सकती है, जैसे पूर्वाधिकार अंश समाप्त करके उनके स्थान पर अन्य प्रतिभूतियाँ लाना, जहाँ भावी वृद्धि को देखते हुए यह परिवर्तन लाभप्रद हो।

विषय 2: प्रतिदेय अधिमान अंश जारी करने का उद्देश्य

P1-C11-U11.5-T02 • Purpose of Issuing Redeemable Preference Shares

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं • पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक**पहले पढ़ें** §5.2 पढ़िए, जिसमें शोध्य पूर्वाधिकार अंश निर्गमित करने के चार कारण दिए गए हैं।**नोट्स**

प्रयोजन: (1) मन्दे प्राथमिक बाजार में वित्त जुटाने का उपयुक्त उपाय; (2) जो निवेशक असूचीबद्ध और कठिनाई से बिकने वाले अंश लेने में हिचकते हैं, वे अंशों के कंपनी द्वारा शोध्य होने पर प्रोत्साहित होते हैं; (3) जब पूंजी का ऐसा अधिशेष हो जिसका व्यवसाय में लाभप्रद उपयोग सम्भव न हो, तब अंश शोधित किए जा सकते हैं; (4) हानि अथवा लाभ न होने की दशा में कोई लाभांश देय नहीं — पूर्वाधिकार लाभांश लाभ का विनियोजन है, जबकि debentures/ऋणों का ब्याज लाभ पर प्रभार है और हानि में भी देय होता है।

विषय 3: Companies Act के प्रावधान - Section 55

P1-C11-U11.5-T03 · Provisions of the Companies Act (Section 55)

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §5.3 पढ़िए: Companies Act, 2013 की Section 55 की शर्तें, जिनमें Capital Redemption Reserve की अपेक्षा भी सम्मिलित है।

नोट्स

निर्गम: अंशों द्वारा सीमित कंपनी, यदि उसके Articles प्राधिकृत करते हों, ऐसे पूर्वाधिकार अंश निर्गमित कर सकती है जो उसके विकल्प पर निर्गम से सामान्यतः 20 वर्ष से अनधिक अवधि में शोध्य हों — अशोध्य पूर्वाधिकार अंश निर्गमित नहीं किए जा सकते।

शर्तें: (a) शोधन केवल विभाज्य/वितरण-योग्य लाभों में से, अथवा इसी प्रयोजन के लिए किए गए अंशों के नए निर्गम की राशि में से; (b) केवल पूर्णदत्त अंश ही शोधित किए जा सकते हैं; (c) शोधन पर premium लाभों में से दिया जाए (विहित AS-अनुपालक कंपनियों के लिए), अथवा लाभों या securities premium खाते में से (अन्य कंपनियों तथा अधिनियम-पूर्व निर्गमों के लिए)।

CRR: जहाँ अंश लाभों में से शोधित हों, वहाँ शोधित अंशों के नाममात्र मूल्य के बराबर राशि (नए निर्गम की राशि घटाकर) विभाज्य लाभों में से Capital Redemption Reserve Account में हस्तान्तरित की जाती है — कमी के प्रावधानों के लिए इसे प्रदत्त पूंजी माना जाता है और इसका उपयोग केवल पूर्णदत्त बोनस अंश निर्गमित करने में हो सकता है; इसका उद्देश्य यही है कि लेनदारों की प्रतिभूति कम न हो।

विषय 4: पूर्ण भुगतान किए गए अंशों के मोचन की विधियाँ

P1-C11-U11.5-T04 · Methods of Redemption of Fully Paid-Up Shares

पहले पढ़ें Section 55 की शर्तें, तीनों रीतियाँ (नया निर्गम, लाभों का पूंजीकरण, दोनों का सम्मिलन), नए equity निर्गम से शोधन के लाभ-हानि, journal entries, तथा न्यूनतम नए निर्गम की गणना पढ़िए (paras 5.4.1–5.4.5)।

नोट्स

Sec 55 की शर्तें: पूर्वाधिकार अंश (जो सामान्यतः 20 वर्ष के भीतर शोध्य हों) केवल विभाज्य/वितरण-योग्य लाभों में से, अथवा इसी प्रयोजन के लिए किए गए अंशों के नए निर्गम की राशि में से शोधित हो सकते हैं (debentures की राशि प्रयोग नहीं हो सकती); केवल पूर्णदत्त अंश शोधित हो सकते हैं; शोधन पर premium लाभों में से दिया जाता है (Sec 133 के अन्तर्गत AS का पालन करने वाली कंपनियाँ इसके लिए securities premium का प्रयोग नहीं कर सकती); और जहाँ शोधन लाभों में से हो, वहाँ शोधित नाममात्र मूल्य के बराबर राशि विभाज्य लाभों से Capital Redemption Reserve में हस्तान्तरित की जाए — CRR का उपयोग केवल पूर्णदत्त बोनस अंशों में हो सकता है; और यह 'अन्तर' (a) नए निर्गम, (b) लाभों के पूंजीकरण, अथवा (c) दोनों के सम्मिलन से भरा जाता है।

नया equity क्यों, और लाभ-हानि: यह तब निर्गमित किया जाता है जब पूंजी स्थायी रूप से चाहिए (पूर्वाधिकार पर निश्चित लाभांश देना पड़ता है), विभाज्य लाभ अपर्याप्त हों, अथवा तरलता कमजोर हो; लाभ: न अभी नकद बाहर जाती है न आगे, नए अंश premium पर मूल्यांकित हो सकते हैं, और अंशधारियों का equity हित बना रहता है; हानि: भावी आय का विरलन, तथा बाहरी व्यक्तियों को निर्गम होने पर अंशधारिता में परिवर्तन (rights issue से यह कम किया जा सकता है)। 'Proceeds' का अर्थ है वह राशि जो Share Capital में क्रेडिट हुई — नए निर्गम का premium नकद में मिलता तो है, पर शोधन/CRR के प्रयोजन के लिए proceeds नहीं माना जाता।

आदर्श entries: Bank डेबिट → Share Capital क्रेडिट (premium पर हो तो Securities Premium क्रेडिट भी); Redeemable Pref. Share Capital डेबिट + Premium on Redemption of Pref. Shares डेबिट → Preference Shareholders क्रेडिट; Preference Shareholders डेबिट → Bank क्रेडिट; P&L डेबिट → Premium on Redemption क्रेडिट; P&L / General Reserve डेबिट → CRR क्रेडिट, राशि = (शोधित अंकित मूल्य - नए निर्गम की राशि)।

न्यूनतम नया निर्गम (4 चरण): (1) उपलब्ध अधिकतम संचितियाँ = शेष में से वह न्यूनतम घटाकर जो बनाए रखना है; (2) न्यूनतम proceeds = पूर्वाधिकार अंशों का नाममात्र मूल्य - उपलब्ध अधिकतम संचितियाँ (लाभों से देय शोधन premium समायोजित करने के बाद); (3) अंशों की न्यूनतम संख्या = न्यूनतम proceeds ÷ एक अंश का अंकित मूल्य; (4) भिन्न को ऊपर की ओर पूर्णांकित कीजिए (और यदि प्रश्न कहे तो 50/100 के अगले गुणक तक)। जैसे ₹5,00,000 का शोधन, लाभ ₹3,00,000, ₹9 के अंश → $2,00,000 \div 9 = 22,222.22 \rightarrow 22,223$ अंश (50 के गुणकों में 22,250)।

धन जुटाने के लिए नया निर्गम: पूर्वाधिकार अंशधारियों को देय राशि (अंकित मूल्य + premium) की तुलना उपलब्ध धन से कीजिए — निवेशों के विक्रय की राशि (विक्रय पर लाभ/हानि P&L में) तथा बनाए रखने योग्य न्यूनतम से ऊपर का बैंक शेष — और कमी को एक अंश के निर्गम मूल्य से भाग दीजिए; जैसे देय ₹71,500 - निवेश ₹15,000 - उपलब्ध बैंक ₹19,000 = ₹37,500 ÷ ₹50 = 750 अंश, और तब CRR = 65,000 - 37,500 = ₹27,500।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए · 2 प्रश्न

- समझाइए कि शोधन के लिए equity shares क्यों निर्गमित किए जाते हैं (स्थायी पूंजी की आवश्यकता, अपर्याप्त लाभ, कमजोर तरलता), साथ ही लाभ (नकद बहिर्वाह नहीं, premium सम्भव, equity बनी रहती है) बनाम हानि (आय का विरलन, और rights issue न हो तो अंशधारिता में परिवर्तन)।
- सत्य/असत्य का जाल: शोधन के लिए केवल अंशों के नए निर्गम की राशि ही प्रयोग हो सकती है — debentures की राशि नहीं; और 'proceeds' में नए निर्गम का securities premium भी सम्मिलित नहीं होता।

TQ 4.2 · PYQ 2025-Jan [1] (a) (iv) {C} · True/False · 2M · Pg 780

LEVEL I
समझ (Understanding)

सरल

TQ 4.1 · PYQ 2018-Nov [6] (d) · Descriptive · 5M · Pg 779

LEVEL I
समझ (Understanding)

मध्यम

अनुप्रयोग (Application) प्रक्रिया का अभ्यास कीजिए · 4 प्रश्न

- entries का क्रम अभ्यास कीजिए: नया निर्गम; Pref. Share Capital + Premium on Redemption डेबिट → Pref. Shareholders; भुगतान; CRR = शोधित अंकित मूल्य - नए निर्गम की राशि; शोधन पर premium P&L से अपलिखित (securities premium से नहीं)।

- न्यूनतम नया निर्गम: राशि = अंकित मूल्य – उपलब्ध संचितियाँ (धारण-शर्तों और शोधन premium के बाद); अंशों की संख्या = राशि ÷ अंकित मूल्य, ऊपर की ओर पूर्णांकित।
- शोधन केवल पूर्णदत्त अंशों का होता है — calls-in-arrear पर पहले अन्तिम call वसूल कीजिए; और केवल विभाज्य लाभ (divisible profits) ही गिनिए।

PQ 4.4 · PYQ 2022-Nov [6] (c) · Practical · 5M · Pg 791 2× पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	मध्यम
PQ 4.7 · RTP 2025-May [17] · Practical · Pg 800	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	मध्यम
PQ 4.8 · PYQ 2025-Sep [5] (c) · Practical · 10M · Pg 802	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	मध्यम
PQ 4.10 · PYQ 2026-Sep [6] (a) · Practical · 15M · Pg 807	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	

विश्लेषण (Analysis) मिश्रित आँकड़ों पर कार्य कीजिए · 6 प्रश्न

- पूरे तुलन-पत्र वाले प्रश्न हल कीजिए जिनमें निवेशों का विक्रय (लाभ/हानि), बनाए रखने योग्य न्यूनतम बैंक शेष, न्यूनतम नया निर्गम, CRR और भुगतान — सब एक साथ हों; फिर शोधन के बाद का तुलन-पत्र बनाइए।
- ध्यान दीजिए: नए निर्गम का premium नकद तो है, पर CRR के लिए 'proceeds' नहीं माना जाता; और जिन न्यूनतम राशियों को बनाए रखना है, वे उपलब्ध संचितियाँ घटा देती हैं।
- 15-20 अंक वाले वे प्रश्न कीजिए जिनमें शोधन के बाद CRR से बोनस निर्गम होता है, अथवा आंशिक प्रदत्त पूर्वाधिकार अंशों पर अन्तिम call माँगना पड़ता है (या उन्हें यथावत छोड़ दिया जाता है)।

PQ 4.1 · PYQ 2019-May [5] (a) · Practical · 10M · Pg 780	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	कठिन
PQ 4.2 · PYQ 2021-Dec [4] · Practical · 20M · Pg 783	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	कठिन
PQ 4.3 · PYQ 2022-May [5] (a) · Practical · 10M · Pg 788	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	कठिन
PQ 4.5 · PYQ 2024-Jun [6] (a) · Practical · 15M · Pg 794 4× पूछा गया	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	कठिन
PQ 4.6 · RTP 2025-Jan [16] · Practical · Pg 797	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	कठिन
PQ 4.9 · PYQ 2026-Jan [6] (a) · Practical · 15M · Pg 804 2× पूछा गया	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	कठिन

विषय 5: अवितरित लाभों के पूंजीकरण द्वारा अधिमान अंशों का मोचन

P1-C11-U11.5-T05 · Redemption of Preference Shares by Capitalisation of Undistributed Profits

पहले पढ़ें para 5.5 पढ़िए: पूर्णतः/आंशिक रूप से विभाज्य लाभों से शोधन, शोधित अंशों के नाममात्र मूल्य के बराबर राशि का Capital Redemption Reserve में हस्तान्तरण, कौन-से लाभ विभाज्य हैं, तथा इस रीति के लाभ और हानियाँ।

नोट्स

नियम (SM): जब अंश नए निर्गम से भिन्न रीति से शोधित हों, तब “उन लाभों में से, जो अन्यथा लाभांश के लिए उपलब्ध होते ... Capital Redemption Reserve Account नामक संचिति में शोधित अंशों के नाममात्र मूल्य के बराबर राशि हस्तान्तरित की जाएगी”; विभाज्य लाभ वह लाभ है जो विधितः लाभांश के रूप में बाँटा जा सकता है (General Reserve, P&L, Investment Allowance Reserve का मुक्त भाग) — securities premium और capital reserve अविभाज्य हैं और CRR के लिए प्रयोग नहीं हो सकते; CRR में हस्तान्तरण से वे लाभ अविभाज्य हो जाते हैं, जिससे लेनदारों की प्रतिभूति कम नहीं होती।

entries: General Reserve / P&L / अन्य विभाज्य लाभ डेबिट → CRR क्रेडिट; Redeemable Pref. Share Capital डेबिट (+ Premium on Redemption डेबिट) → Preference Shareholders क्रेडिट; Preference Shareholders डेबिट → Bank क्रेडिट; P&L (विभाज्य लाभ) डेबिट → Premium on Redemption of Preference Shares क्रेडिट।

लाभ/हानि: लाभ — equity अंशधारिता के प्रतिशत में कोई परिवर्तन नहीं, और अधिशेष धन का उपयोग हो जाता है; हानि — तरलता घटती है और निवेश बेचने पड़ सकते हैं (विक्रय से नकदी मिलती है; विक्रय पर लाभ/हानि P&L में जाती है)।

सम्मिलन रीति — सूत्र: सृजित किया जाने वाला CRR = शोधित अंशों का अंकित मूल्य – नए निर्गम से प्राप्त राशि; और इसी प्रकार, नए निर्गम से आवश्यक राशि = शोधित अंकित मूल्य – वितरण के लिए उपलब्ध लाभ; CRR की गणना तथा निर्गमित अंशों की संख्या working notes के रूप में दिखाइए — जैसे ₹1,00,000 का शोधन 10% premium पर: उपलब्ध लाभ GR (80,000–20,000 बनाए रखने योग्य) 60,000 + P&L (20,000–10,000 premium के लिए) 10,000 + मुक्त IAR 5,000 = ₹75,000, अतः नया निर्गम ₹25,000 = ₹10 के 2,500 अंश; और नए निर्गम, निवेश-विक्रय तथा भुगतान के बाद बैंक का क्रम जाँचिए।

अनुप्रयोग (Application) प्रश्न हल कीजिए · 1 प्रश्न

PQ 5.2 · MTP 2025-Jan S2 [5] (c) · Practical · 10M · Pg 811 3x पूछा गया

LEVEL II

अनुप्रयोग (Application)

विश्लेषण (Analysis) मिश्रित आँकड़ों पर कार्य कीजिए · 1 प्रश्न

- मिश्रित प्रश्न हल कीजिए: शोधन का एक भाग नए निर्गम से और शेष लाभों से — CRR = शोधित अंकित मूल्य – नए निर्गम की राशि; केवल विभाज्य लाभ प्रयोग कीजिए (General Reserve, P&L, Investment Allowance Reserve का मुक्त भाग; securities premium अथवा capital reserve नहीं)।
- बहु-तत्व वाले आँकड़े सँभालिए: पूर्वाधिकार अंशों के दो वर्ग (पूर्णदत्त वर्ग का शोधन कीजिए, अथवा पहले शेष राशि माँगिए), शोधन पर premium का P&L पर प्रभार, और नकदी जुटाने के लिए निवेशों का विक्रय।
- नकदी का क्रम जाँचिए: नए निर्गम, निवेश-विक्रय और भुगतान के बाद बैंक शेष कितना बचता है; पूंजीकृत राशि तय करते समय निर्धारित न्यूनतम संचिति/बैंक शेष बनाए रखिए।
- journal entries के साथ CRR की राशि और निर्गमित अंशों की संख्या के working notes भी दीजिए — CRR की working पर अंक मिलते हैं।

विषय 6: आंशिक रूप से माँगे गए अधिमान अंशों का मोचन

P1-C11-U11.5-T06 · Redemption of Partly Called-Up Preference Shares

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §5.6 को Illustration 9 सहित पढ़िए: जहाँ पूर्वाधिकार अंश आंशिक रूप से माँगे गए हों, वहाँ की जाने वाली मान्यताएँ।

नोट्स

नियम: केवल पूर्णदत्त पूर्वाधिकार अंश ही शोधित हो सकते हैं — (1) यदि आंशिक रूप से माँगे गए अंशों का शोधन करना हो, तो यह मान लीजिए कि शोधन से पहले अन्तिम call माँगा और प्राप्त कर लिया गया; (2) यदि पूर्णदत्त और आंशिक प्रदत्त — दोनों प्रकार के अंश हों, तो यह मानिए कि केवल पूर्णदत्त अंश ही शोधित हुए और आंशिक प्रदत्त अंश यथावत छोड़ दिए गए; (3) यदि स्मरण-पत्रों के बाद भी call की राशि न मिले, तो कंपनी उन अंशों को जब्त कर सकती है।

विषय 7: पूर्णतः माँगे गए किंतु आंशिक भुगतान वाले अधिमान अंशों का मोचन

P1-C11-U11.5-T07 · Redemption of Fully Called but Partly Paid-Up Preference Shares

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §5.7 को Illustration 10 सहित पढ़िए: शोधन से पहले calls-in-arrears प्राप्त होने बनाम जब्ती का व्यवहार।

नोट्स

बकाया प्राप्त होने पर: “Bank A/c डेबिट / Calls-in-Arrears A/c क्रेडिट” — अंश पूर्णदत्त हो जाते हैं और शोधन सामान्य क्रम में हो जाता है।

जब्ती: यदि उचित सूचना के बाद भी calls अदत्त रह जाएँ, तो Board उन अंशों को जब्त और रद्द कर सकता है — “Preference Share Capital A/c डेबिट (माँगी गई राशि से) / Calls-in-Arrears A/c क्रेडिट तथा Shares Forfeited A/c क्रेडिट (वास्तव में वसूली गई राशि से)”; शोधित किए जाने वाले अंश जब्त अंशों की संख्या से घट जाते हैं, और चूँकि जब्त अंश पुनर्निर्गमित नहीं होते, Shares Forfeited का शेष capital reserve में चला जाता है — “Shares Forfeited A/c डेबिट / Capital Reserve A/c क्रेडिट”।

इकाई 11.6: डिबेंचरों का मोचन

Redemption of Debentures

P1-C11-U11.6 · महत्त्व D · अध्याय में Rank 5 · श्रेणी C · अध्याय के 8.1% प्रश्न · 6 प्रश्न

विषय 1: परिचय

P1-C11-U11.6-T01 · Introduction

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §6.1 पढ़िए: debenture की परिभाषा तथा परिवर्तनीय debentures, मताधिकार और DRR पर Section 71 के प्रावधान।

नोट्स

Debenture: कंपनी द्वारा अपनी seal के अन्तर्गत निर्गमित वह लेख जो ऋण को स्वीकार करता है और जिसमें मूलधन तथा ब्याज की वापसी के प्रावधान होते हैं; परिसंपत्तियों पर प्रभार, यदि सृजित हो, उसी में वर्णित होता है और Registrar के पास पंजीकृत हुए बिना विधिमाम्य नहीं होता; और बन्धक debentures में धारकों के हितों की रक्षा के लिए प्रायः trusteeship बनाई जाती है।

Section 71: (1) debentures ऐसे विकल्प के साथ निर्गमित किए जा सकते हैं कि शोधन के समय वे पूर्णतः अथवा आंशिक रूप से अंशों में परिवर्तित हो जाएँ — इसके लिए साधारण सभा में विशेष संकल्प आवश्यक है; (2) कोई कंपनी मताधिकार वाले debentures निर्गमित नहीं कर सकती; (4) लाभांश के लिए उपलब्ध लाभों में से debenture redemption reserve बनाना होगा, जिसका उपयोग केवल debentures के शोधन में ही हो सकता है।

विषय 2: डिबेंचरों का मोचन

P1-C11-U11.6-T02 · Redemption of Debentures

अवधारणा आधार — अभी तक कोई परीक्षा प्रश्न नहीं · पूर्ण तैयारी के लिए आवश्यक

पहले पढ़ें §6.2 पढ़िए: शोध्य debentures किन-किन रीतियों से शोधित किए जा सकते हैं।

नोट्स

रीतियाँ: debentures सामान्यतः शोध्य होते हैं — या तो नकद में, या एक अवधि के बाद equity अंशों में परिवर्तनीय; शोधन (i) निश्चित वर्षों के बाद, (ii) निर्गम से कुछ वर्ष बीत जाने के बाद किसी भी समय, (iii) निर्धारित सूचना देकर, अथवा (iv) वार्षिक drawings द्वारा हो सकता है; कंपनी अपने ही debentures खुले बाजार से भी खरीद सकती है — जब वे stock exchange पर बट्टे पर चल रहे हों, तब उन्हें खरीदकर रद्द करना लाभप्रद होता है।

विषय 3: डिबेंचर मोचन आरक्षित निधि

P1-C11-U11.6-T03 • Debenture Redemption Reserve

पहले पढ़ें §6.3 पढ़िए, Rule 18(7) की पर्याप्तता-तालिका सहित: DRR का प्रयोजन, entries तथा कंपनी के वर्ग के अनुसार DRR की अपेक्षाएँ।

नोट्स

प्रयोजन और entries: DRR प्रतिवर्ष लाभांश के लिए उपलब्ध लाभों में से तब तक बनाया जाता है जब तक debentures शोधित न हो जाएँ, और उसका उपयोग किसी अन्य प्रयोजन में नहीं हो सकता — इससे शोधन के समय तरल धन उपलब्ध रहता है; entry: Profit and Loss A/c डेबिट / Debenture Redemption Reserve क्रेडिट; साथ ही बाहर निवेश कीजिए — DRR Investment डेबिट / Bank क्रेडिट; शोधन के समय ये निवेश भुनाए जाते हैं; और चूक होने पर Tribunal कंपनी को मूलधन तथा ब्याज सहित तत्काल शोधन का आदेश दे सकता है।

पर्याप्तता — Rule 18(7): RBI द्वारा विनियमित AIFs तथा बैंकिंग कंपनियों, सभी सूचीबद्ध कंपनियों (सूचीबद्ध NBFCs/HFCs सहित), और निजी नियोजन से निर्गमित debentures के लिए असूचीबद्ध NBFCs/HFCs को DRR बनाने की आवश्यकता नहीं; अन्य असूचीबद्ध कंपनियों को निर्गमित बकाया debentures के मूल्य का 10% DRR बनाना होगा।

समझ (Understanding) कारण सहित समझाइए • 1 प्रश्न

TQ 3.1 • PYQ 2026-Sep [1] (a) (iv) {C} • True/False • 2M • Pg 818

LEVEL I
समझ (Understanding)

विषय 4: डिबेंचरों के मोचन की विधियाँ

P1-C11-U11.6-T04 • Methods of Redemption of Debentures

पहले पढ़ें Section 71, शोधन की रीतियाँ (एकमुश्त, किस्तों में, खुले बाजार से क्रय, अंशों में परिवर्तन), DRR की पर्याप्तता (अन्य असूचीबद्ध कंपनियों के लिए 10%; AIFI/बैंकों/सूचीबद्ध/NBFC/HFC के लिए शून्य), 15% Debenture Redemption Investment का नियम, तथा सम्बन्धित journal entries और ledger खाते पढ़िए (paras 6.3–6.4)।

नोट्स

Sec 71: debentures ऐसे विकल्प के साथ निर्गमित किए जा सकते हैं कि शोधन पर वे पूर्णतः/आंशिक रूप से अंशों में परिवर्तित हो जाएँ (विशेष संकल्प आवश्यक); किसी debenture पर मताधिकार नहीं हो सकता; DRR लाभांश के भुगतान के लिए उपलब्ध लाभों में से बनाया जाएगा और शोधन के अतिरिक्त किसी प्रयोजन में प्रयुक्त नहीं होगा; ब्याज तथा शोधन निर्गम की शर्तों के अनुसार होंगे — चूक होने पर debenture धारकों/trustee के आवेदन पर Tribunal ब्याज सहित तत्काल शोधन का आदेश दे सकता है। **चार रीतियाँ:** परिपक्वता पर अथवा उससे पहले एकमुश्त भुगतान; निर्धारित अन्तरालों पर किस्तों में भुगतान; खुले बाजार से क्रय (Foundation स्तर पर सम्मिलित नहीं); तथा अंशों में परिवर्तन।

DRR की पर्याप्तता (Rule 18(7), 2019): 'अन्य असूचीबद्ध कंपनियों' के लिए DRR = बकाया debentures के मूल्य का 10%; AIFIs तथा बैंकिंग कंपनियों, सभी सूचीबद्ध कंपनियों (सूचीबद्ध NBFCs/HFCs सहित), और निजी नियोजन वाले debentures के लिए असूचीबद्ध NBFCs/HFCs को DRR आवश्यक नहीं; और आंशिक परिवर्तनीय debentures में DRR केवल अपरिवर्तनीय भाग पर बनाया जाता है।

15% DRI का नियम: प्रत्येक वर्ष 30 अप्रैल तक, अगले 31 मार्च को समाप्त होने वाले वर्ष में परिपक्व हो रहे debentures के कम-से-कम 15% को अनुसूचित बैंक की जमाओं (जो प्रभार/धारणाधिकार से मुक्त हों), भारमुक्त केन्द्र/राज्य सरकार की प्रतिभूतियों, अथवा Indian Trusts Act में विनिर्दिष्ट प्रतिभूतियों/bonds में जमा/निवेश कीजिए; यह राशि केवल उन्हीं debentures के शोधन में प्रयोग हो सकती है और किसी भी समय 15% से नीचे नहीं जानी चाहिए; प्रश्नों में DRR का विनियोजन तथा DRI निवेश आबंटन के तुरन्त बाद कीजिए (तिथि न दी हो तो वर्ष के पहले दिन)।

entries की श्रृंखला: P&L डेबिट → DRR क्रेडिट (बकाया debentures का 10%, विद्यमान DRR शेष घटाकर); DRR Investment डेबिट → Bank क्रेडिट (15%); Bank डेबिट → Interest on DRR Investment क्रेडिट (जो P&L में हस्तान्तरित होता है); शोधन पर: Bank डेबिट → DRR Investment क्रेडिट (भुनाना); Debentures डेबिट + Premium on Redemption डेबिट → Debentureholders क्रेडिट; Debentureholders डेबिट → Bank क्रेडिट; P&L डेबिट → Premium on Redemption क्रेडिट (debenture की अवधि न दी हो तो पूरा प्रभार शोधन वाले वर्ष में); और अन्त में DRR डेबिट → General Reserve क्रेडिट।

परिवर्तन एवं ledger: निर्गमित equity अंश = परिवर्तित debentures का शोधन मूल्य (अंकित मूल्य + premium) ÷ एक equity अंश का निर्गम मूल्य, और शेष का नकद भुगतान — जैसे ₹105 पर 40 debentures = ₹4,200 ÷ ₹20 = 210 अंश; ledger/वर्ष के बीच वाले प्रश्नों में अन्तिम Bank शेष निकालने से पहले debenture ब्याज तथा DRI ब्याज शोधन की तिथि तक समानुपातिक रूप से बाँटिए (जैसे Debenture Interest = $10,00,000 \times 6\% \times 2/12$; DRI ब्याज = $1,50,000 \times 4\% \times 2/12$), और Debentures, Premium on Redemption, DRR, DRR Investment, Interest तथा Bank खाते वर्षवार बनाइए।

अनुप्रयोग (Application) प्रक्रिया का अभ्यास कीजिए · 4 प्रश्न

- DRR/DRI की श्रृंखला का अभ्यास कीजिए: P&L डेबिट → DRR (बकाया debentures का 10%, विद्यमान शेष घटाकर); DRI डेबिट → Bank (परिपक्व हो रहे debentures का 15%); शोधन पर DRI भुनाइए, धारकों को भुगतान कीजिए (शोधन पर premium P&L में), फिर DRR को General Reserve में हस्तान्तरित कीजिए।
- स्वयं के debentures के निरसन में cum-interest और ex-interest मूल्यों में अन्तर कीजिए, पिछली ब्याज तिथि से उपचित ब्याज का हिसाब रखिए, और निरसन पर लाभ (अंकित मूल्य – लागत) capital reserve में हस्तान्तरित कीजिए।
- आंशिक परिवर्तनीय debentures में परिवर्तन शोधन मूल्य (अंकित + premium) ÷ equity अंश के निर्गम मूल्य से कीजिए; शेष का भुगतान नकद; और DRR केवल अपरिवर्तनीय भाग पर।
- बट्टे पर निर्गमित तथा premium पर शोध्य debentures के समान वार्षिक किस्तों में शोधन का अभ्यास कीजिए — Debentures, DRR, DRI, Interest और Bank खाते वर्षवार बनाइए।

PQ 4.5 • PYQ 2025-Jan [5] (c) • Practical • 5M • Pg 828 8x पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	मध्यम
PQ 4.3 • PYQ 2022-Nov [5] (a) • Practical • 12M • Pg 822 2x पूछा गया	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन
PQ 4.4 • PYQ 2024-Sep [5] (c) • Practical • 10M • Pg 824	LEVEL II अनुप्रयोग (Application)	कठिन

विश्लेषण (Analysis) मिश्रित आँकड़ों पर कार्य कीजिए • 1 प्रश्न

- अनेक तिथियों वाले प्रश्न कीजिए: वर्ष के बीच में होने वाले शोधन तक debenture ब्याज और DRI ब्याज का समानुपातिक बँटवारा कीजिए, तभी अन्तिम Bank शेष निकालिए।
- विकल्प-आधारित शोधन का विश्लेषण कीजिए (परिपक्वता पर सम मूल्य बनाम खुले बाजार से क्रय बनाम सूचना देकर ₹102): लागतों की तुलना कीजिए और निरसन पर लाभ/हानि निकालिए।
- ध्यान दीजिए: DRR केवल लाभांश के लिए उपलब्ध लाभों से; DRI का प्रयोग केवल शोधन के लिए; और अवधि न दी हो तो शोधन पर premium पूरा P&L पर प्रभारित होता है।

PQ 4.2 • PYQ 2018-Nov [5] (b) • Practical • 8M • Pg 821	LEVEL II विश्लेषण (Analysis)	कठिन
---	--	-------------